प्रस्तावना.

श्रीजिनवरेंद्रायनमः ॥ श्री जैनधर्मी साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघने ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए ४ मोक्ष मार्गना पायु छे तेहमां पण ज्ञान ए मुख्य हेतु छे. श्री दशवैकालिक अध्ययन चोथे पढमंनाणं तओदया कह्यु छे वलि नंदिसूत्रमां नवपूर्वना भणनार ने सम्यक्त्व भजना कहि छे ने उपरना पूर्व भणनारमां नियमा सम्यक्त्व कह्युं छे. तेमज भगवतीमां एकला शीलसंपन्न ने देशआराधक कह्या छे. ने एकला श्रुतसंपन्न ने देशविराधक कह्या छे माटे सूत्र सिद्धांत भणवामां तेनमां ज्ञान विशेष छे. ते ज्ञान भणवाथि हेय ज्ञेय ने उपादेय पदार्थनुं जाणपणुं थाय छे. जेथि जिवने वैराग्य दशा प्राप्त थाय छे. ने परंपराए मोक्षनि गतिना लाभ थाय छे, एवं ज्ञाननुं महात्म्य जाणिने आजना अल्प बुद्धि जिवोने थोडा काळमां विशेष ज्ञान थवा माटे श्री सिद्धांत प्रकरण संग्रह ३० थोकडानुं पुस्तक मर्हुम श्रीमन्मंगळजी महाराजना शिष्य मुनि करमनजी महाराज पासे शुद्ध करावी छपावि प्रसिद्ध कर्यु छे तेमां कोइ भूल चुक रहि गइ होय तो पंडित जन अमारा उपर कृपा करि सिद्धांत तथा ग्रंथ जोइ सुधारि लेशो ए अमारि विज्ञप्ति छे आ पुस्तक उघाडे मुखे तथा दिवाने अजवाळे वांचवुं नहि जेथि ज्ञाननि असातना न थाय.

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सोम संवत १९७८.

ली. श्री मोहनदास रुगनाथदास शाह.
आकाशेठना कुवानी पोळ—अमदावाद.

॥ अनुक्रमणिका ॥

आ पुस्तक अमदावाद प्रसिद्ध कर्ता पासेथी तेमज निचेना ठेकाणेथी मळशे. जैनस्थानकवासी विद्यालय सी. पी. टेंकरोड नं. ५३–५७ मुंबाइ. श्रावक भीमसी माणेक–मांडवी बंदर–मुंबाइ. शा. बालाभाइ छगनलाल कीकाभटनी पोळ–अमदावाद. संघवी–वाडीलाल काकुभाइ सारंगपर तळीयानी पोळ–अमदावाद.

॥ अथ श्री नवतत्वनो थोकडो. ॥

॥ अथ श्री नवतत्व लिख्यते ॥ हवे विवेकि सम्यक्त्वदृष्टि जीवने । नव
धा । तथारूप बुद्धिप्रमाणे गुरु आम्नायथि धारवा ॥ ते नवपदार्थना
वतत्व ॥ १ ॥ अजीवतत्व ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ॥ ३ ॥ पापतत्व ॥ ४ ॥ आश्रव
संवरतत्व ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ॥ ७ ॥ बंधतत्व ॥ ८ ॥ मोक्षतत्व ॥ ९ ॥ हवे
कहिये ॥ चैतन्यलक्षण ॥ सदासउपयोगी ॥ असंख्यात प्रदेशी । सुख
खनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते जेहने
चैतन्यरहित ॥ तेहने अजीवतत्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ते शुभ
शुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवतां मीठां लागे
पुण्यतत्व कहिये ॥ ३ ॥ पापतत्व ते अशुभ कर्माणिये करी ॥ अशुभ कर्मने उदये
जेहना फल आत्माने भोगवता कडुवां लागे । तेहने पापतत्व कहिये ॥४॥ आश्रव-
तने अपच्चखाणे करी । विषय कषायने सेववे करी ॥ आत्मारूपतलावने विषे ॥

ज्यादिक घरनाले छिद्रेकरी । कर्म पापरूप जलनो प्रवाह आवे । तेहने आश्रवतत्व कहिये ॥५॥ संवरतत्व ते जीवरूप तलावने विषे ॥ कर्मरूप जल आवतां व्रतपच्चखाणादिक द्वार देवेकरी रोकीये ॥ तेहने संवरतत्व कहिये ॥६॥ निर्जरातत्व ते ॥ आत्माना प्रदेशथि बार भेदे तपस्याये करी देशथकि कर्मनुं निर्जरवुं करीने दुर थावुं ॥ तेहने निर्जरातत्व कहिये ॥ ७ ॥ बंधतत्व ते । आत्माना प्रदेशने कर्मपुद्गलना दल खीरनीरनी परे ॥ लोहपिंड अग्निनी परे । लोलीभूत थइबंधाय ॥ तेहने बंधतत्व कहिये ॥८॥ मोक्षतत्व ते सकल आत्माना प्रदेशथि सकल कर्मनुं छुटवुं ॥ सकल बंधनुं मुकावबुं ॥ सकल कार्यनि सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥९॥ ए नव पदार्थनुं जाणपणुं ॥ तेहने तत्व कहिये ॥ हवे जीवनो एक भेद छे ॥ सकल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे संग्रहनये करि एक भेदे जीव कहिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥१॥ थावर ॥२॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥ ने संसारी ॥२॥ तथा त्रण भेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुंसकवेद ॥ ३ ॥ तथा भवसिद्धिया ॥१॥ अभवसिद्धिया ॥२॥ नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया ॥३॥ तथा-च्यार भेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा

चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥३॥ केवलदर्शनी ॥४॥ तथा पांच प्रकार जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बे इंद्रिय ॥२॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥ तथा । सजोगी ॥ १ ॥ मनजोगी ॥ २ ॥ वचनजोगी ॥ ३ ॥ कायजोगी ॥ ४ ॥ अजोगी ॥ ५ ॥ तथा । छ प्रकार जीव ॥ पृथवीकाय ॥१॥ अपकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥३॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ तथा ॥ सकषायी ॥ १ ॥ क्रोधकषायी ॥ २ ॥ मानकषायी ॥ ३ ॥ मायाकषायी ॥ ४ ॥ लोभकषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥६॥ तथा सात प्रकारे जीव । नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥ देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥ तथा । आठ प्रकार जीव सलेशी ॥१॥ कृष्णलेशी ॥२॥ नीललेशी ॥ ३ ॥ कापुतलेशी ॥ ४ ॥ तेजुलेशी ॥ ५ ॥ पद्मलेशी ॥ ६ ॥ शुक्ललेशी ॥ ७ ॥ अलेशी ॥ ८ ॥ तथा नव । प्रकार जीव ॥ पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥२॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥ बेइंद्रिय ॥६॥ तेइंद्रिय ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ८ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ९ ॥ तथा दश भेद जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥२॥ ते इंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥

ए. ५ ना अप्रजाप्ता । ने । प्रजाप्ता । एवं ॥१०॥ तथा ॥ इग्यार भेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥१॥ बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ नारकी ॥५॥ तिर्यंच ॥६॥ मनुष्य ॥ ७ ॥ भवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यंतर ॥ ए ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥ तथा ॥ १२ ॥ भेदे जीव ॥ पृथवी ॥१॥ अप ॥ २ ॥ तेउ ॥३॥ वाउ ॥४॥ वनस्पति ॥५॥ त्रसकाय ॥६॥ ए छना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ १२ ॥ तथा तेरभेदे जीव ॥ कृष्णलेशी ॥ १ ॥ निललेशी ॥ २ ॥ कापुतलेशी ॥ ३ ॥ तेजुलेशी ॥ ४ ॥ पद्मलेशी ॥ ५ ॥ शुकललेशी ॥ ६ ॥ ए। छना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं ॥ १२ ॥ ने । एक अलेशी ॥ १३ ॥ एवं ॥ १३ ॥ हवे जीवना ॥ १४ ॥ भेद कहे छे ॥ सुक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ बादर एकेंद्रियनो. अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ बेइंद्रियनो । अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने । प्रजाप्तो ॥६॥ तेइंद्रियनो । अप्रजाप्तो ॥७॥ ने । प्रजाप्तो ॥८॥ चउरिंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ए ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥१२॥ संज्ञी पंचेंद्रियनो अप्रजाप्तो ॥१३॥ ने प्रजाप्तो ॥१४॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पांचभेद-

सव नेद जीवना कह्यं ठे ॥ तेहमां त्रणसेंनेत्रणनेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुनेद देवताना ॥
अमतालीस नेद तिर्यंचना ॥ चउदनेद नारकीना ॥ एवं ॥५६३॥ नेद जीवना कह्या ॥ हवे
तेहमां ॥ मनुष्यना ॥३०३॥ नेद कहेठे ॥ ते ॥ १५ कर्म नूमिना मनुष्य ॥३०॥ अकर्मनूमिना
मनुष्य ॥ ५६ ॥ अंतर द्धिपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ क्षेत्रना गर्नज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता
ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २०२ ॥ न एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एवं ॥३०३
नेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मनूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी ॥ ३ ॥
ए ॥ ३ ॥ प्रकारना व्यापार करी जीवे तेहने कर्मनूमिनां मनुष्य कहिये ॥ ते कर्मनूमिना
क्षेत्र केटलाठे ॥५॥ नरत ॥५॥ इरवत ने ॥ ५ महाविदेह । एवं ॥१५॥ ते कर्मनूमि किहां
ठे ॥ एकलाख जोजननो जंबुद्धिप ठे ॥ तेहमां ॥ १ ॥ नरत ॥ १ ॥ इरवत ॥ १ ॥ महाविदेह
ए ॥३॥ क्षेत्र कर्मनूमिनां जंबुद्धिपमां ठे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र
ठे ॥ तेहने फरतो चारलाख जोजननो धातकीखंडद्धिप ठे ॥ तेहमां ॥ २ ॥ नरत ॥ २ ॥
इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह ठे ॥ तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र ठे ॥

तेहने फरतो ॥८॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर । द्विप छे ॥ तेहमां ॥ २ भरत ॥ २ इरवत ॥२
महाविदेह छे ॥ एवं । छ ॥१२॥ ने ॥३॥ पनर कर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अकर्मभू-
मिना मनुष्य कहे छे ॥ अकर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ ३ कर्मरहित दशप्रकारना कल्पवृक्षे करीने
जीवे तेहने अकर्मभूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥५॥ हेमवय ॥ ५ हिरणवय ॥ ५ हरि-
वास ॥ ५ रमकवास ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उतरकुरु ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य जाणवा ॥
हवे जंबुद्विपमां ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १
उतरकुरु ॥ एवं ॥ ६ ॥ क्षेत्रजंबुद्विपमां छे ॥ धातकिखंडमां बेवे जाणवा ॥ एवं ॥ १८ ॥
अर्द्धपुष्करद्विपमां बेवे जाणवा ॥ एवं ॥३०॥ अकर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपनअं-
तरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंबुद्विपना भरतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार । चुल हिमवंतनामा
पर्वत छे ॥ ते पीला सोनामय छे ॥ ते सो जोजननो उंचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एकहजार
बावन जोजन ने बार कलानो पहोलो छे ॥ चोविशहजार नवसेंबत्रिश जोजननो लांबो छे ॥
तेहने पूर्व पश्चिमने छेहडे बेबे डाढा निकलि छे ॥ एकेकि डाढा चोरासीशें चोरासीशें जोजननी

गाढेरी दाढि छे॥ते एकेकि दाढाउपरे॥सातसात अंतरद्विपाछे॥ तेअंतरद्विपा किहांछे॥ जग-
तिना कोटथकि ॥३००॥ जोजनलवणसमुद्रमां जाइये । तिवारें पहेलो अंतरद्विपो आवे ॥ते॥
३००॥जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥४००॥ जोजन जाइये ॥ तिवारें बिजो अंतर
द्विपो आवे ते ॥ ४०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ५०० ॥ जोजन
जाइये तिवारें ॥ त्रिजो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥५००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहां
थि ६०० जोजन जाइये तिवारें ॥ चोथो अंतरद्विपो आवे ते ॥६००॥ जोजननो लांबो ने पहो
लो छे ॥ तिहांथि ॥७००॥ जोजन जाइये तिवारें । पांचमो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ७०० ॥
जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥८००॥ जोजन जाइयें तिवारें छठो अंतरद्विपो
आवे ॥ ते ॥८००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥९००॥ जोजन जाइये तिवारें
सातमो अंतरद्विपो आवे ते ॥९००॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ एवं । सात चोकुं ॥२८॥
अंतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरवतक्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरीनामे पर्वत छे ॥ ते चुल
हिमवंत सरिखो जाणवो ॥ तिहां पण ॥२८॥ अंतरद्विपा छे ॥ एवंविस हु ॥५६॥ अंतर द्विपा

जाणवा॥ अंतरद्विपाना मनुष्य ते कहते कहिये॥ हवे समुद्र ते ॥ अने उपर अधर
फाडामां छिपाना रहेनार छे॥ माटे अंतर छिपाना मनुष्य कहिये। हवे १०१ क्षेत्रना समुर्छिम
मनुष्य ॥१४ स्थानकमा उपजे छे ते कहे छे ॥ उच्चारसुवा ते वडिनितमां उपजे॥१॥ पासवण-
सुवा ते लघुनितमां उपजे ॥२॥ खेल सुवा ते बलखामां उपजे ॥३॥ सघाणसुवा ते लिटमां
उपजे ॥४॥ वंतसुवा ते वमनमां उपजे ॥५॥ पीतसुवा ते निलापिला पीतमा उपजे ॥६॥
पुइणसुवा ते परुमा उपजे ॥७॥ सोणितसुवा ते रुधिरमां उपजे ॥८॥ सुक्रसुवा ते विर्यमा उपजे
॥९॥ सुकपोगलपरिसाडिसुवा ते विर्यादिकना पुद्गलसुकाणा ते फरि तिना थाय तहमां
उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरसुवा ते मनुष्यना कलेवरमा उपजे ॥ ११ ॥ इत्रिपुरिस
संजोगसुवा ते स्त्रीपुरुषना सजोगमा उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणसुवा ते नगरनी खालोमां
उपजे ॥१३॥ सव्वसचेवअसुच्चाणसुवा ते सर्वमनुष्य सबधिअशुचिस्थानकोमां उपजे ॥१४॥
एवं ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनुष्यना अपजाप्ता ॥ ए सर्व मिली ॥३०३॥ भेद मनुष्यना
कह्या ॥ हवे देवताना ॥ १९८ ॥ भेद कहे छे ॥ तहमां। दश भवनपतिना नाम ॥ असुर

कुमार ॥१॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ५ ॥
द्वीपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ९ ॥ थणितकु-
मार ॥१०॥ हवे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥२॥ शाम ॥३॥
सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥
धनुष्य ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥
सोल वाणव्यंतरना नाम पिशाच ॥१॥ भूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किन्नर ॥५॥
किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसि-
वाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥१२॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंग-
देव ॥१६॥ दश जंभकाना नाम ॥ आणजंभका ॥१॥ पाणजंभका ॥ २ ॥ लयणजंभका ॥३॥
शयणजंभका ॥४॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुप्फजंभका ॥ ६ ॥ फलजंभका ॥ ७ ॥ बीय जंभका
॥८॥ विज्जुजंभका ॥९॥ अवियत्त जंभका ॥१०॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चंद्रमा ॥ १ ॥
सूर्य ॥२॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥४॥ तारा ॥५॥ ए ॥५॥ चल ते अढि द्वीपमा छे । ते ॥ ५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] देवता [illegible]

[illegible]

[illegible] विजय [illegible]

[illegible] तन्त्रा देवता श्रप-

[illegible] निर्विचना[illegible]

[illegible] मुख्य [illegible]

[illegible]

सुक्ष्म ॥१॥ प्रत्येक ॥ २ ॥ ते । साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ते ॥ ३ ॥ ना ।
प्रजाप्ता ॥ ए ॥६॥ एवं ॥२२॥ एकेंद्रियना ॥ त्रण विकलेंद्रिय ॥ बे इंद्रिय ॥ १ ॥ ते इंद्रिय
॥२॥ चउरिंद्रिय ॥३॥ ए ॥३॥ ना अप्रजाप्ता ते ॥३॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥ ६ ॥ एवं ॥२८॥
जलचर ॥१॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥ ३ ॥ भुजपर ॥ ४ ॥ खेचर ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ समु-
र्छिम ते ॥५॥ गर्भज ॥ एवं ॥१०॥ ना । अप्रजाप्ता ते ॥ १० ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ ए ॥ २० ॥
एवं ॥४८॥ भेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥१४॥ भेद नारकिना कहेछे ॥ सात नरकना नाम॥
घमा ॥१॥ वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥४॥ रिठा ॥५॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥७॥ हवे ए
॥ ७ ॥ ना गोत्र कहेछे रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा
॥ ४ ॥ धुमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ ना अप्रजाप्ता ।
ते ॥७॥ ना प्रजाप्ता । एवं ॥१४॥ भेद नारकिना कह्या ॥ एवं । सर्व मिलीने ॥५६३॥ भेद
जीवना जाणवा ॥ इति जीवतत्त्व समाप्तं ॥१॥ हवे अजीवतत्त्वना ॥ १४ ॥ भेद कहेछे ॥
धर्मास्तिकायनो स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कंध ॥४॥

देश ॥ ५ ॥ प्रदेश ॥ ६ ॥ आकाशास्ति कायनो स्कंध ॥ ७ ॥ देश ॥ ८ ॥ प्रदेश ॥ ९ ॥
अद्धासमय काल ॥१०॥ ए ॥१०॥ तेह अरूपि अजीवना कह्या ॥ हवे रूपि अजीवना ॥ ४
भेद कहे छे ॥ पुद्गलास्तिकाय नो स्कंध ॥ ११ ॥ देश ॥ १२ ॥ प्रदेश ॥ १३ ॥ परमाणु
पुद्गल ॥ १४ ॥ एवं ॥ १५ ॥ हवे व्यवहार विस्तारनयेकरी ॥ ५६० ॥ भेद अजीवतत्वना
कहे छे ॥ भेदमां ॥३०॥ भेद । अरूपि अजीवना कहे छे ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक॥१॥
क्षेत्रथकि आखा लोक प्रमाणे ॥२॥ कालथकि अनादिअनंत ॥३॥ भावथकि । अवर्णे अगंधे ।
अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥४॥ गुणथकि चलणसहाय ॥ ५ ॥ अधर्मास्तिकाय द्रव्यथकि
एक ॥६॥ क्षेत्रथकि आखा लोकप्रमाणे ॥७॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥ भावथकि ।
अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥९॥ गुणथकि स्थिर सहाय ॥१०॥ आकाशा-
स्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥११॥ क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादि
अनंत ॥ १३ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥
अवगाहनादान ॥१५॥ हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥१६॥ क्षेत्रथकि । अढिद्वीपप्रमाणे॥१७॥

अवर्णं । अगंधं । अरसं । अफासं । अमूर्त्ति ॥१७॥
कालथकि अनादिअनंत ॥१८॥ नावथकि । अवर्णं । अगंधं । अरसं । अफासं । अमूर्त्ति ॥१९॥
गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ते ॥ १० ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एवं ॥ ३० ॥ तेह
अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥५३०॥ तेहरूपि अजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥ ५ ॥
काळो ॥ १ ॥ निलो ॥ २ ॥ रातो ॥ ३ ॥ पिळो ॥ ४ ॥ धोळो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमांहि वीश
बोल ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ५ ॥ फरस ॥ ८ ॥ संठाण ॥ ५ ॥ एवं । वीश पंचा
वीश भेद थाय ॥ ते ॥१०॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ एवं । त्रेवीश त्रे-
बीश भेद थाय ॥ हवे ॥२॥ गंध ते । सुरनिगंध ॥ १ ॥ दुरनिगंध ॥ २ ॥ एकेका गंधमांहि त्रेवीश त्रे-
णो ॥ हवे ॥२॥ गंध ते । सुरनिगंध ॥ १ ॥ दुरनिगंध ॥ २ ॥ एकेका गंधमांहि त्रेवीश त्रे-
बीश भेद थाय ॥५॥ वर्ण ॥५॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एवं ॥ २३ छेंतालिश
भेद जाणवा ॥ हवे ॥५॥ रस ते ॥ तिखो ॥ १ ॥ कडुवो ॥ २ ॥ कसायलो ॥ ३ ॥ खाटो
॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ एकेका रसमां वीश वीश भेद थाय ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गंध ॥ ५ ॥
संठाण ॥८॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा सो ॥ हवे ॥५॥ संठाण ॥ परिमंडल संठाण ॥ १ ॥
वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश संठाण ॥३ ॥ चउरस संठाण ॥ ४ ॥ आयतसंठाण ॥ ५ ॥ एकेका
संठाणमां वीश वीश भेद थाय ॥५॥ वर्ण ॥२॥ गंध ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श । एवं । वीश पंचा

[illegible] ॥ ५ ॥
[illegible] भेद सातं ॥ ५
[illegible] भेद सातं । [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] भेद । [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ हवे नव भेदे पुन्य उपार्जे ते कहे छे ॥ अन्नपुन्ने ॥१॥
पाणपुन्ने ॥२॥ वत्थपुन्ने ॥३॥ लेणपुन्ने ॥४॥ सयणपुन्ने ॥५॥ मनपुन्ने ॥६॥ वचन
पुन्ने ॥७॥ कायपुन्ने ॥८॥ नमस्कार पुन्ने ॥९॥ ए ॥९॥ भेदे पुन्य उपार्जे ॥ तेहना शुभ
फल ॥४२॥ भेदे भोगवे ॥ शातावेदनिय ॥१॥ उच्च गोत्र ॥२॥ मनुष्यगति ॥३॥ मनुष्यानु
पूर्वी ॥४॥ देवगति ॥५॥ देवानुपूर्वी ॥६॥ पंचेंद्रियनि जाति ॥७॥ उदारिक शरिर॥८॥
वैक्रिय शरिर ॥९॥ आहारक शरिर ॥१०॥ तैजस शरिर ॥११॥ कार्मण शरिर ॥१२॥ उदारिकना
अंग उपांग ॥१३॥ वैक्रना अंग उपांग ॥१४॥ आहारकना अंग उपांग ॥१५॥ वज्ररिषभ-

नाराचसंघयण ॥ १६ ॥ समचउरंशसंठाण ॥ १७ ॥ शुभवर्ण ॥ १८ ॥ शुभगंध ॥ १९ ॥ शुभरस ॥ २० ॥ शुभस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥ २३ ॥ उस्वास नाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुभचालवानि गति ॥ २७ ॥ निर्माणनाम ॥२८॥ त्रसनाम ॥२९॥ बादरनाम ॥३०॥ प्रजाप्तनाम ॥३१॥ प्रत्येकनाम ॥३२॥ स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेय नाम ॥ ३७ ॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउष्य ॥३९॥ मनुष्यनुं आउष्य ॥४०॥ तिर्यंचनुं आउष्य जुगलयत ॥ ४१ ॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४२ ॥ एवं ॥ ४२ ॥ नेद पुण्यना जाणवा इति पुण्यतत्वं समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ॥ १८ ॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहे छे ॥ प्राणातिपात ॥१॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥४॥ परिग्रह ॥५॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥९॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥१३॥ पैशून्य ॥१४॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ मायामोसो ॥ १७ ॥ मिथ्यादंसणसल्ल ॥ एवं ॥१८॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥ ८२ ॥ प्रकारे नोगवे ते कहे छे ॥

मतिज्ञानावरणिय ॥१॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥ ३ ॥ मनपर्जवज्ञानावरणिय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणिय ॥ ५ ॥ दानांतराय ॥ ६ ॥ लानांतराय ॥ ७ ॥ नोगांतराय ॥ ८ ॥ उपनोगांतराय ॥ ९ ॥ वीर्यांतराय ॥ १० ॥ निद्रा ॥ ११ ॥ निद्रानिद्रा ॥ १२ ॥ प्रचला ॥ १३ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ १४ ॥ थीणद्धिनिद्रा ॥१५॥ चक्षुदर्शनावरणिय ॥ १६ ॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥ १७ ॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥ १८ ॥ केवलदर्शनावरणिय ॥ १९ ॥ निचगोत्र ॥ २० ॥ अशातावेदनीय ॥ २१ ॥ मिथ्यात्वमोहनिय ॥२२॥ स्थावरपणुं ॥२३॥ सूक्ष्मपणुं ॥२४॥ अपर्जाप्तपणुं ॥२५॥ साधारपणुं ॥२६॥ अस्थिरनाम ॥२७॥ अशुननाम ॥ २८ ॥ दौर्नाग्यनाम ॥ २९ ॥ दुःस्वरनाम ॥ ३० ॥ अनादेयनाम ॥ ३१ ॥ अजशोकीर्तिनाम ॥ ३२ ॥ नरकनिगति ॥ ३३ ॥ नरकनुंआउखुं ॥ ३४ ॥ नरकानुपूर्वी ॥ ३५ ॥ अनंतानुबंधि क्रोध ॥ ३६ ॥ मान ॥ ३७ ॥ माया ॥ ३८ ॥ लोन ॥ ३९ ॥ अपच्चखाणावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४० ॥ मान ॥ ४१ ॥ माया ॥ ४२ ॥ लोन ॥ ४३ ॥ पच्चखाणावरणिय ॥ क्रोध ॥ ४४ ॥ मान ॥४५॥ माया ॥ ४६ ॥ लोन ॥ ४७ ॥ संजलनो ॥ क्रोध

॥ ४८ ॥ मान ॥ ४९ ॥ माया ॥ ५० ॥ लोभ ॥५१॥ हास्य ॥५२ ॥ रति ॥ ५३ ॥ अरति ॥ ५४ ॥ भय ॥ ५५ ॥ शोक ॥ ५६ ॥ दुगंछा ॥ ५७ ॥ स्त्रीवेद ॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९॥ नपुंसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यंचनी गति ॥६१॥ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंद्रियपणुं ॥६३॥ बेइंद्रियपणुं ॥ ६४ ॥ तेइंद्रियपणुं ॥ ६५ ॥ चउरिंद्रियपणुं ॥६६॥ अशुभ चालवानि गति ॥६७॥ उपघातनामकर्म ॥६८॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥ अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ रुषभनाराच संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥ ७४ ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ७५ ॥ किलकुसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवट्ठुसंघयण ॥ ७७ ॥ निग्रोहपरिमंडलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥ ७९ ॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कुब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एवं ॥८२॥ भेद पापतत्वना जाणवा ॥ इति पापतत्वं समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे आश्रवना सामान्य प्रकार ॥२०॥ भेद कहे छे ॥ मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥३॥ कषाय ते आश्रव ॥४॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आश्रव ॥ ६ ॥ मृषावाद ते आ० ॥७॥ अदत्तादान ते आ० ॥८॥ मैथुन ते आ० ॥ ९ ॥

मतिज्ञानावरणिय ॥१॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥२॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥३॥ मनपर्जवज्ञा-
नावरणिय ॥४॥ केवलज्ञानावरणिय ॥५॥ दानांतराय ॥६॥ लाभांतराय ॥७॥
भोगांतराय ॥८॥ उपभोगांतराय ॥९॥ वीर्यांतराय ॥१०॥ निद्रा ॥११॥ निद्रा-
निद्रा ॥१२॥ प्रचला ॥१३॥ प्रचलाप्रचला ॥१४॥ थीणद्धिनिद्रा ॥१५॥ चक्षुदर्शना-
वरणिय ॥१६॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥१७॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥१८॥ केवलदर्श-
नावरणिय ॥१९॥ नीचगोत्र ॥२०॥ अशातावेदनीय ॥२१॥ मिथ्यात्वमोहनिय ॥२२॥
स्थावरपणुं ॥२३॥ सूक्ष्मपणुं ॥२४॥ अपज्जत्तपणुं ॥२५॥ साधारणपणुं ॥२६॥ अस्थिरनाम ॥२७॥
अशुभनाम ॥२८॥ दौर्भाग्यनाम ॥२९॥ दुःस्वरनाम ॥३०॥ अनादेयनाम ॥३१॥
अजशोकीर्तिनाम ॥३२॥ नरकनिगति ॥३३॥ नरकनुंआउखुं ॥३४॥ नरकानुपूर्वी
॥३५॥ अनंतानुबंधि क्रोध ॥३६॥ मान ॥३७॥ माया ॥३८॥ लोभ ॥३९॥
अपच्चखाणावरणिय ॥ क्रोध ॥४०॥ मान ॥४१॥ माया ॥४२॥ लोभ ॥४३॥ पच्चखा-
णावरणिय ॥ क्रोध ॥४४॥ मान ॥४५॥ माया ॥४६॥ लोभ ॥४७॥ संजलनो ॥ क्रोध

॥ ४८ ॥ मान ॥ ४९ ॥ माया ॥ ५० ॥ लोभ ॥५१॥ हास्य ॥५२॥ रति ॥ ५३ ॥ अरति ॥ ५४ ॥ भय ॥ ५५ ॥ शोक ॥ ५६ ॥ दुगंछा ॥ ५७ ॥ स्त्रीवेद ॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९॥ नपुंसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यंचनी गति ॥६१॥ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंद्रियपणुं ॥६३॥ बेइंद्रियपणुं ॥ ६४ ॥ तेइंद्रियपणुं ॥ ६५ ॥ चउरिंद्रियपणुं ॥६६॥ अशुभ चालवानि गति ॥६७॥ उपघातनामकर्म ॥६८॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥ अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ ऋषभनाराच संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥ ७४ ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ७५ ॥ किलकुसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवट्ठुसंघयण ॥ ७७ ॥ निगोहपरिमंडलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥ ७९ ॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कुब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एवं ॥८२॥ भेद पापतत्वना जाणवा ॥ इति पापतत्वं समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे आश्रवना सामान्य प्रकार ॥२०॥ भेद कहेछे ॥ मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥३॥ कषाय ते आश्रव ॥४॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आश्रव ॥ ६ ॥ मृषावाद ते आ० ॥७॥ अदत्तादान ते आ० ॥८॥ मैथुन ते आ० ॥ ९ ॥

परिग्रह ते श्या० ॥१०॥ श्रोतेंड्रियश्रसंवरे ते श्या०॥११॥ चक्षुइंड्रियश्र०श्या०॥१२॥ घाणेंड्रियश्र० श्या० ॥१३॥ रसेंड्रियश्र०श्या० ॥१४॥ स्पर्शेंड्रियश्र०श्या० ॥१५॥ मनश्र०श्या० ॥ १६ ॥ वचन श्र०श्या० ॥१७॥ कायश्र०श्या० ॥१८॥ नंमनउपगरणउपधिजिमतिमलियेमुके ते श्या० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग करे ते श्या० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ४२ ॥ नेद कहेने ॥ ५ ॥ श्राश्रव ॥ ५ ॥ इंड्रिय मोकलि मुके एवं ॥ १० ॥ ने ॥ ४ ॥ कषाय ॥ एवं ॥ १४ ॥ ने त्रण श्रशुन्न जोग। एवं ॥ १७ ॥ ने ॥ २५ ॥ क्रिया ते ॥ कायिकी क्रिया ॥ १ ॥ श्रधिकरणकी क्रिया ॥ २ ॥ पाउसिया ॥ ३ ॥ पारितावणिया ॥ ४ ॥ पाणाइवाय ॥ ५ ॥ श्रारंनिया ॥ ६ ॥ परिग्गहिया ॥ ७ ॥ मायावतिया ॥ ८ ॥ श्रपच्चखाणवतिया ॥ ९ ॥ मिछादंशणवतिया ॥ १० ॥ दिठीया ॥११॥ पुठिया ॥१२॥ पाडुचिया ॥ १३ ॥ सामतोवणिया ॥ १४ ॥ नेसथिया ॥१५॥ सहथिया ॥१६॥ श्रणवणिया ॥१७॥ विदारणिया ॥ १८ ॥ श्रणानोगी ॥ १९ ॥ श्रणवकंखवतिया ॥ २० ॥ श्रनापउगी ॥ २१ ॥ सामुदाणी ॥ २२ ॥ पेजवतिया ॥ २३ ॥ दोसवतिया ॥ २४ ॥ इरियावहिया क्रिया ॥ २५ ॥ एवं ॥२५॥ ने ॥१७॥ बेतालीश नेद श्राश्रव तत्त्वना

जाणवा ॥ इति आश्रवतत्वं समाप्तं ॥५॥ हवेसंवरना सामान्य प्रकार ॥२०॥ भेद कहेछे ॥
समकित ते संवर ॥१॥ व्रतपच्चखाण ते सं० ॥२॥ अप्रमाद ते सं० ॥ ३ ॥ अकषाय ते सं०
॥४॥ शुभजोग ते सं० ॥५॥ जीवदया पालवी ते सं० ॥६॥ सत्यवचन बोलवुं ते सं० ॥७॥
दत्तधन ग्रहण ते सं० ॥८॥ शियल पालवुं ते सं० ॥ ९ ॥ अपरिग्रह ते सं० ॥ १० ॥ इंद्रिय
॥ ५ ॥ जोग ॥ ३ ॥ ए ॥ ८ ॥ नुं संवरवुं ते सं० । एवं ॥ १८ ॥ भंडउपगरणउपधि अजतनायें
लिये मुके ते सं० ॥१९॥ शुचिकुसग्ग न करे ते सं० ॥२०॥ हवे विशेषे ॥५७॥ भेद कहेछे॥
इर्यासुमति ॥ १ ॥ भाषासुमति ॥२॥ एषणासुमति ॥ ३ ॥ आयाणभंडमत्तनिख्खेवणासुमति
॥४॥ उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणपारिठावणीया सुमति ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ने ॥३॥
गुप्ति ते ॥ मनगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ ए ८ प्रवचनमाता आदरवा ते
॥ २२ परिसह सहेवा ॥ ते कहेछे ॥ क्षुधानो परिसह ॥ १ ॥ तृषानो० ॥२॥ टाढनो० ॥ ३ ॥
तापनो० ॥ ४ ॥ दंशमंशनो० ॥ ५ ॥ अचेलनो० ॥ ६ ॥ अरतिनो० ॥ ७ ॥ स्त्रीनो० ॥ ८ ॥
चरियानो० ॥९॥ बेसवानो० ॥१०॥ सेजानो० ॥ ११ ॥ आक्रोश वचननो० ॥ १२ ॥ वधनो०

॥१३॥ जाचवानो० ॥ १४ ॥ अलाजनो० ॥ १५ ॥ रोगनो० ॥ १६ ॥ तृणस्पर्शनो० ॥ १७ ॥ मलनो० ॥ १८ ॥ सत्कार पुरस्कारनो० ॥ १९ ॥ प्रज्ञानो० ॥२०॥ अज्ञाननो० ॥२१॥ दंशण परिसह ॥ २२ ॥ ए ॥ २२ ॥ ने ॥ ८ ॥ पूर्वे कह्या ते । एवं ॥ ३० ॥ खंति ॥ ३१ ॥ मुत्ति ॥ ३२ ॥ अजवे ॥ ३३ ॥ मद्दवे ॥ ३४ ॥ लाघवे ॥ ३५ ॥ सच्चे ॥३६॥ संजमे ॥ ३७ ॥ तवे ॥३८॥ चियाए ॥ ३९ ॥ बंनचेरवासे ॥४०॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जतिधर्म आराधवो ने ॥१२॥ नावना नाववी । तेहना नाम ॥ अनित्यनावना ॥ १ ॥ अशरणना० ॥२॥ संसारना० ॥३॥ एकत्वना० ॥ ४ ॥ अन्यत्वना० ॥५॥ अशुचिना० ॥६॥ आश्रवना० ॥ ७ ॥ संवरना० ॥८॥ निर्जराना० ॥ ९ ॥ लोकना० ॥ १० ॥ बोधना० ॥ ११ ॥ धर्मना० ॥ १२ ॥ ए ॥ ४० ॥ ने ॥ १२ ॥ बावन । शामायकचारित्र ॥५३॥ छेदोपस्थापनिय० चा० ॥ ५४ ॥ परिहारविशुद्ध ॥५५॥ सुक्ष्मसंपराय० ॥ ५६ ॥ जथाख्यात० ॥ ५७ ॥ ए ॥ ५७ ॥ नेद संवरतत्वना जाणवा ॥ इति संवरतत्वं समाप्तं ॥६॥ हवे निर्जराना ॥१२॥ नेद कहे छे ॥ अनशन ॥१॥ उणोदरि ॥२॥ वृत्तिसंक्षेप ॥ ३ ॥ रसपरित्याग ॥४॥ कायक्लेश ॥५॥ पमिसंलिणया ॥६॥ ए ठ नेद बाह्य-

उपनी कथा ॥ हवे छ भेद अभ्यंतरना कहेछे ॥ प्रायश्चित्त॥७॥विनय ॥८॥ वेयावच्च ॥९॥ सज्झाय ॥१०॥ ध्यान ॥११॥ काउसग्ग ॥१२॥ एवं ॥१२॥ भेद निर्जरातत्वना कह्या ॥इति निर्जरातत्व समाप्तं ॥७॥ हवे बंधतत्वना ॥४॥ भेद कहेछे ॥ प्रकृतिबंध ॥१॥ स्थितिबंध॥२॥अनुभागबंध॥३॥ प्रदेशबंध ॥४॥ प्रकृतिबंध ते कर्मनो स्वभाव तथा परिणाम ॥१॥ स्थितिबंध ते जे कर्मनि जेटलि स्थिति छे तेटलि ॥२॥ अनुभागबंध ते रस तिव्र मंद आदि कर्मनो ॥३॥ प्रदेशबंध ते कर्म पुद्गलना दल ॥ ४ ॥ ए ॥४॥ बंधनुं स्वरूप मोदकने दृष्टांते करी बतावेछे ॥ जिम कोइ मोदक घणा प्रकारना द्रव्यने संजोगे निपनो ॥ वायुने तथा पीतने तथा श्लेष्मने जेणे स्वरूपे करि हणे तेने स्वभाव कहिये ॥ १ ॥ तथा तेज मोदक । पक्ष । मास । बेमास त्रणमास च्यारमासमुधि ते रूपे करि रहे तेने स्थिति कहिये ॥ २ ॥ जिम वलि तेज मोदक कोइ कडुवो होय कोइ तीखो होय तेने रस कहिये ॥३॥ जीम वलि तेज मोदक कोइ अल्प दलने परिमाणे निपनो । कोइ वलि बहु दलने परिमाणे निपनो ॥ एमज मोदकने विषे दलनुं परिमाण तेहने प्रदेशबंध कहिये ॥४॥ एणीपरे कर्मनो बंध ॥ ४ ॥ प्रकारे जाणवो ॥ इती

बंधतत्व समाप्तं ॥ ८ ॥ हवे मोक्षतत्व ते ॥ १५ ॥ भेदे सिद्ध थाय ते कहेछे ॥ तिर्थ सिद्धा ॥१
अतिर्थ सिद्धा ॥२॥ तिर्थंकर सिद्धा ॥३॥ अतिर्थंकर सिद्धा ॥४॥ ग्रहस्थलिंग सिद्धा॥५॥
अन्यलिंग सिद्धा ॥६॥ स्वलिंग सिद्धा ॥७॥ स्त्रीलिंग सिद्धा ॥८॥ पुरुषलिंग सिद्धा ॥ ९ ॥
नपुंसकलिंग सिद्धा ॥ १० ॥ स्वयंबुद्ध सिद्धा ॥ ११ ॥ प्रत्येकबुद्ध सिद्धा ॥ १२ ॥ बुद्धबोहि-
सिद्धा ॥ १३ ॥ एक सिद्धा ॥ १४ ॥ अनेक सिद्धा ॥ १५ ॥ तथा ॥ ४ ॥ प्रकारे जीवमोक्ष
जाय ते कहेछे ॥ ज्ञानेकरि ॥ १ ॥ दर्शनेकरि ॥ २ ॥ चारित्रेकरि ॥ ३ ॥ तपेकरि ॥ ४ ॥
तथा ॥ ९ ॥ द्वार मोक्षना कहेछे ॥ सत्पदरूपणा ते ॥ मोक्षगति पूर्वकाले हति हमणा पण
छे । आगमिये काले हशे ते छति अस्ति छे । पण आकाशना फुलनिपरे नास्ति नथि ॥१॥
द्रव्यप्रमाणे ते सिद्ध अनंता छे ॥ अभव्य जीवथि अनंतगुणा अधिक छे । वनस्पति वर्जिने॥२३॥
दंडकथि सिद्धना जीव अनंतगुणा अधिक छे ॥२॥ क्षेत्रद्वार ते सिद्धशिला:प्रमाणे छे ॥ ते।
सिद्धशिला पिस्तालिस लाख जोजननी लांबि पहोलि छे ॥ अने त्रिगुणि झाझेरि परिधि
छे ॥ अने उंचपणे ॥ ३३३ ॥ धनुष ने ॥ ३२ ॥ आंगुलप्रमाणे ॥ एटला क्षेत्रमां सिद्ध रह्या

ठे ॥३॥ स्पर्शना द्वार ते सिद्धक्षेत्रथि कांइक अधिकी सिद्धनिस्पर्शना ठे ॥४॥ कालद्वार ते ॥ एक सिद्ध आश्रि सादिअनंत सर्व सिद्ध आश्रि अनादिअनंत ॥५॥ अंतरद्वार ते फरि सिद्धने संसारमां अवतरवुं नथि ॥ अने एक सिद्ध तिहां अनंता सिद्ध ठे अने अनंता सिद्ध तिहां एक सिद्ध वे ॥ एटले सिद्ध सिद्धमां अंतर नथि ॥६॥ नागद्वार ते सघला जीवने सिद्धना जीव अनंतमे नागे ठे । लोकने असंख्यातमे नागे ठे ॥७॥ नावद्वार ते सिद्धमां क्षायकनाव ॥ केवलज्ञान । केवलदर्शन । क्षायकसमकित ठे । अने परिणामिकनाव ते सिद्धपणो जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प बहुत्व द्वार ते ॥ सर्वथि थोडा नपुंसक सिद्ध ॥ तेथि स्त्री संख्यातगुणि सिद्ध॥ तेथि पुरुष संख्यातगुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुंसक ॥ १० ॥ सिद्ध थाय ॥ स्त्री ॥ २० ॥ सिद्ध थाय ॥ पुरुष ॥ १०८ ॥ सिद्ध थाय ॥ ए ॥ त्रसपणे ॥ १ ॥ बादरपणे ॥ २ ॥ संज्ञिपणे ॥३ ॥ वज्रऋषननाराचसंघयणपणे ॥ ४ ॥ शुक्लध्यानपणे ॥ ५ ॥ मनुष्यगति ॥ ६ ॥ क्षायकसमकित ॥७॥ जथाख्यातचारित्र ॥८॥ पंडितवीर्य ॥ ए ॥ केवलज्ञान ॥ १० ॥ केवलदर्शन ॥११॥ नव्य सिद्धिक ॥१२॥ परमशुक्ललेशी ॥१३॥ चरमशरीरि ॥१४॥ ए ॥१४॥ बोलनो

पणि होयते मोक्ष जाय ॥ जघन्य बे हाथनि अवघणावालो ॥ उत्कृष्ट पांचशें धनुषनि अवघेणावालो । जघन्य नव वरसनो ॥ उत्कृष्ट पूर्वकोडिना आयुषवालो कर्मभूमिनो होय ते मोक्षमा जाय ॥ इति मोक्षतत्वं समाप्तं ॥ ९ ॥ इति नव तत्वना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छकायना बोलनो थोकडो. ॥

अथर्थी छकायना बोल लिख्यते ॥ पहेले बोले इंद्री थावरकाय ॥१॥ बीजे बोले बंभी थावरकाय ॥ ३ ॥ सपि थावरकाय ॥ ४ ॥ सुमति थावरकाय ॥ ५ ॥ पयावच्च थावरकाय ॥६॥ जंगमकाय ए छकायनां नाम कह्यां ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ पृथवी काय ॥ १ ॥ अपकाय ॥२॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ हवे पृथ्वीकायना बे भेद ॥ सुक्ष्म अने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भरयांछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ ज्ञानी जाणे देखे ॥ हवे बादरपृथ्वीकायनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले माटीने मीठानी जात ॥२॥ खडीने खारानी जात ॥३॥ कालमिंढ मरडीया पाहणा ने सिलानी जात ॥४॥ हिं

गलो ने हकनालनी जात ॥५॥ गेरु ने गोपीचंदननी जात ॥६॥ रत्न पर वालानी जात ॥७॥ लोल जातिना रत्न आदि लेइने तेतालीस जातनी पृथ्वीकायछे ॥ तेना एक ककरामां ॥ असंख्याता जीव । श्रीभगवंते कह्याछे ॥ ते जुवार ॥ तथा पीलु ॥ जेटली पृथ्वीकाय लइये ॥ तेमांथी ॥ एकेको जीव निकालीने । पारेवा जेवडी काया करे तो ॥ एक लाख जोजननो जंबुद्विप छे॥ तेमां समाय नही ॥ तेना कुलवारलाख क्रोडछे ॥ तेनुं आउखुं ॥ जघन्य ॥ अंतर्मुहूर्त्तनुं ॥ उतकृष्टुं २२ हजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥१॥ हवे अपकाय ते पाणी ॥ तेना बे भेद ॥ सुक्ष्म ॥ अने बादर ॥ सुक्ष्मते ॥ आखा लोकमां भर्याछे ते आपणी नजरे न आवे ॥ बादर पाणीना नाम कहे छे ॥ पहेले वोले ॥ वरसादने करानां पाणी ॥ २ ॥ झाकल ने धुमरना पाणी ॥ ३ ॥ कुवा नदी तलावना पाणी ॥ ४ ॥ दरिया ने झरणना पाणी ॥ ५ ॥ खारां । खाटां । पाणी ॥ ६ ॥ मीठां मोलां पाणी ॥ ७ ॥ ए आदि लेइने घणी जातिनां पाणी छे ॥ तेना एक बिंदुमां असंख्याता जीव श्रीभगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकालीने ॥ सरसवना दाणा जेवडी ॥ काया करे तो एक

लाख जोजनना जंबुद्धिपमा समाय नही ॥ तेना कुल सात लाख कोमछे ॥ तेनुं आउखुं जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं सातहजार वर्षनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥२॥ हवे तेउ काय ते अग्नी तेना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमां भरयां छे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ हवे बादर अग्नीनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले चूला ने भठीनी अग्नि ॥ २ ॥ धुमाकी तापणीनी अग्नि ॥३॥ चकमक ने वीजलीनी अग्नि ॥ ४ ॥ दीवाने उमाकामी अग्नि ॥ ५ ॥ लोढा धगधगता ने अरणीनी अग्नि ॥ ६ ॥ ए आदिलेइने घणी जातिनी अग्नि छे ॥ तेना एक तणखामां ॥ असंख्याता जीव श्रीभगवंते कह्याछे ॥ तेमांथी एकेको जीव नीकलीने । खसखसना दाणा जेवकी ॥ काया करे तो जंबुद्धिपमां समाय नहि। तेना कुल ॥ त्रण लाख कोमछे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य ॥ अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रण अहोरात्रनुं तेनी दया पालीये तो ॥ अनंता मोक्षनां सुख पामीये॥३॥ हवे वाउकायना बे भेद । सुक्ष्म ने बादर ॥ सुक्ष्मते आखा लोकमां भरयांछे । ते आपणी नजरे न आवे ॥हवे बादर वायराना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले उगमणो ने आथमणो वा ॥२॥

उतर ने दक्षीणनो वा ॥३॥ उंचो निचो ने त्रिछो वा ॥४॥ खंतोलियां ने मंगलीयां वा ॥५॥ गुंजवा ने सुधवा ॥६॥ एआदिकेहने घणी जातिनो वायरो छे ॥ ते सुंकरवे करी हणायछे॥ उघाडे मोडे बोल्ये ॥ कापड नांखवे ॥ सुपडे सोवे काटकवे ॥ कांतवे । विंझवे ॥ तालोटा वगाडवे ॥ विंझणे विंझवे ॥ ढींचोले ढींचकवे ॥ आदिकेहने घणी जातिना शस्त्रेकरी हणाय छे ॥ एकवार उघाडे मोढे बोल्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वडना बीज जेवडी काया करेतो ॥ जंबुद्वीपमां समाय नहि ॥ तेना कुल सात लाख कोड छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं ॥ त्रणहजार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥४॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय तेना बे भेद सुक्ष्म ॥ अने ॥ बादर ॥ सुक्ष्म ते आख्या लोकमां भर्याछे ॥ तेआपणी नजरे न आवे । बादरवनस्पतिकायना बे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण प्रत्येक कोने कहीये । सरीरे सरीरे एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक सरीरे अनंता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकनां नाम कहेछे ॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात॥१॥रिंगणी तलसी ने

गुच्छानी जात ॥४॥ एरंडा थाकडा थनुगनी जात ॥५॥ शहमनेउद्धो ने केशनी जात ॥५॥ धो-
वेलो दाबडो ने भरणानी जात ॥ ६ ॥ कृष्ण कमल ने नागरवेलनी जात ॥ ७ ॥ चोरमी
वेरमी ने कमलानी जात ॥ ८ ॥ कुंवार वाजरो मंत्र मकाइनी जात ॥ ९ ॥
शीशम्भो मूंग मोगरी बाजोर फर्शीनी जात ॥ १० ॥ ए आदि केहन घणी
जातिनी प्रत्येक वनस्पति छे ॥ तेमां जगवाने केइजणना जीव कह्यांछे॥संख्याता॥ अ-
संख्याता तेनी दया पाळीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीए तेनुं आउखुं ज० अंत० उत्० दशह-
जार वर्षनुं॥हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ।१ कंदे बोल्ये जीवकुत्र मंथारनी जात॥ग॥जर
मूळानी जात ॥ कुंगडी समणनी जात ॥ आदुने गरमरनी जात ॥ रताळु पिंडाळुनी जात ॥
कंदाळो थोर सुरमाणी कुंवार मेथरानी जात ॥ मोथ तुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने
कुणी काकडीमुसनी जात ॥ ए आदि केहनं घणी जातिनी साधारण वनस्पति छे ॥ एक
कंदमूळना कणमां अनंता जीव छे॥तेनुं आउखुं जघन्य।उत्० अंतमुहूर्ततुं छेहुना कुळरक्षाय
थोकडे तेनी दया पाळीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे त्रसकायना चार भेद बेइंद्रीय

तेइंद्रीय चौरिंद्रीय पंचेंद्रीय हवे बे इंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ताने प्रजाप्ता ॥बेइंद्रीय तेकोने क-
हीये जेनेकाया जीन्या बेइंद्रीय होय तेने बेइंद्रीय कहीये तेनांनाम॥जलो॥किमा गोरा॥करमीया
लरमिया मामणमुंका। अलसीया। लट। लाल। संख। छीप। कोडा॥आदि लेइने घणी जातिना
बेइंद्रीय जीव छे॥ तेनांकुलसातलाखकोडछे॥ तेनुं आउखुं जघन्य॥अंतर्मुहूर्तनुं उत्कृष्टुं बार
वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये॥ तेइंद्रीयना बे भेद। अप्रजाप्ता॥
ने प्रजाप्ता ॥तेइंद्रीय ते कोने कहीये ॥ काया मुख ने नासिका होय तेने। तेइंद्रीय कहिये
तेनां नाम ॥ जु। लीख। चांचड। मांकड। कीडी। कंथुआ। माटला। धनेडा। जूआ। ईतडी।
गींगोडा ॥ घीमेल। गधैया। कानखजुरा॥संकोडा॥ एआदि लेइने घणी जातिना ॥ ते इंद्रीय
जीव छे॥ तेना कुल ॥ आठलाख कोड छे॥ तेनुं आउखुं ॥ जघन्य। अंतर्मुहूर्तनुं ॥ उत्कृष्टुं
। ओगणपंचास दिवसनुं॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये॥ हवे चौरिंद्रीयना
बे भेद। ते अप्रजाप्ता। ने प्रजाप्ता ॥ चौइंद्रीय ते कोने कहीये॥ जेहने काया। मुख। नासिका
अने आंख। होय तेने चौइंद्रीय जीव कहीये। तेना नाम माखी मसला ॥ डांस। मछर।

नगरा । तीड । पतंग । कंसारी । वींछी । खडमांकडी । वगा । धुडीया । फूदा ॥ एम्यादि केटने घणी जातिना ॥ चौइंद्रीय जीव छे ॥ तेना कुल नवलाख क्रोडछे । तेनुंआउखुं ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्तनुं ॥ उत्कृष्टु ॥ छमासनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ हवे पंचेंद्रीय ते कोने कहीये । जेने काया । मुख नासिका । आंख । कान । ए प्रमाणे होय । तेने पंचेंद्रीय कहीये ॥ तेना बे भेद ॥ अप्रजाता । अने प्रजाता । तेनी ॥४॥ जाति ॥ नारकी । तिर्यंच । मनुष्य । देवता । तेमां ॥ १४ भेद नारकीना ॥४८ भेद तिर्यंचना ॥ ३०३ भेद मनुष्यना ॥ १९८ भेद देवताना ॥ वली तेमां देवताना चार भेद ॥ भवनपति ॥ वाणव्यंतर ॥ जोतिषी ॥ वैमानिक ॥ मनुष्यना चार भेद ॥ १५ ॥ कर्मभूमीना मनुष्य ॥ ३० अकर्म भूमीना मनुष्य ॥ ५६ अंतरद्वीपना मनुष्य ॥ १४ स्थानकना समूर्छिम मनुष्य ॥ हवे नारकीने देवतानी स्थिती ॥ जघन्य दशहजार वर्षनी । उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ तिर्यंचने मनुष्यनी स्थिती । जघन्य अंतर्मुहूर्तनी । उत्कृष्टी त्रण पल्योपमनी तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षना सुख पामीये ॥ इतिश्री छकायना बोल सम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्री लघु दंडक. ॥

॥ ॐनमः सिद्धं ॥ अथर्थी २४ दंडकना थोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहण संघयण ॥ संठाणकसाय तहहुंतिसन्नाउं ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेपपज्ञती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउंगेनहाकिमाहारे ॥ उववायठिइसमुहाए । चवणगइ गगइयेव ॥२॥ ए बे गाथा मूलपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेछे ॥ सरीर कहेता सरीर पांच॥ उदारीक सरीर ॥१॥ वैक्रेय सरीर ॥२॥ आहारक सरीर ॥३॥ तेजस सरीर ॥४॥ कार्मण सरीर ॥५॥ १ ॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अंगुलना असंख्यातमो नाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजन नी जाजेरी ॥ कमलनालोप्तानेन्यायें ॥ वैक्रेय सरीरनितवधारणि अवघेणा । जघन्य अंगुलनों असंख्यातमो नाग ॥ उत्कृष्टी पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अंगुलनो संख्यातमो नाग॥ उत्कृष्टीलाख जोजननि जाजेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुंडा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक

हाथनी ॥ तेजस कार्मण सरीरनी अवघेणा जगन्य अंगुलनो असंख्यातमोभाग । उत्कृष्टी चौद राजलोक प्रमाणे ॥ केवल समुद्घातनी अपेक्षाये ॥ तथा पोतपोताना सरीर प्रमाणे जाणवी ॥ एम अवघेणा जाणवी ॥ २॥ संघयण कहेता संघयण ६ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥१॥ ऋषभनाराचसंघयण ॥ २ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३ ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥ ४ ॥ किलकुसंघयण ॥५॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ६॥३ ॥ संठाण कहेता संठाण ६ समचउरंस संठाण ॥ १ ॥ निगोहपरिमंडल संठाण ॥२॥ सादि संठाण ॥३॥ वामन संठाण ॥ ४ ॥ कुबज संठाण॥५॥ हुंड संठाण ॥ ६ ॥ ४ ॥ कसाय कहेता कषाय च्यार ॥ ४ ॥ क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तहहुंति कहेता तिमज होय ॥ सणाउ कहेता संज्ञा च्यार ॥ आहारसंज्ञा ॥ १ ॥ भयसंज्ञा ॥ २ ॥ मैथुनसंज्ञा ॥ ३ ॥ परिग्रहसंज्ञा ॥ ४॥ ६ ॥ लेसा कहेतां लेस्या ६ ॥ कृष्णलेस्या ॥ १ ॥ नीललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या ॥ ३ ॥ तेजुलेस्या ॥४॥ पद्मलेस्या ॥ ५ ॥ सुकललेस्या ॥६॥७ ॥ इंदिय कहेता। इंद्रिय पांच श्रोतेंद्रिय ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रिय ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रिय ॥३॥ रसेंद्रिय ॥ ४॥ फरसेंद्रिय ॥५॥८॥ समुघाए

कहेता ॥ समुद्घात सात । वेदनी ॥ १ ॥ कषाय ॥२॥ मारणांतिक ॥ ३ ॥ वैक्रय ॥ ४ ॥ तेजस ॥ ५ ॥ आहारक ॥६॥ केवल ॥ ७॥९ ॥ सन्नी कहेता संज्ञी असंज्ञी। मन होय ते संज्ञी । मन न होय ते असंज्ञी ॥१०॥ वेदेय कहेता वेद त्रण ॥ स्त्रीवेद ॥१॥ पुरुषवेद॥२॥ नपुंसकवेद ॥ ३॥११ ॥ पज्जत्ति कहेतां पर्याप्ति ६ आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ सरीरपर्याप्ति ॥ २॥ इंद्रीयपर्याप्ति ॥ ३ ॥ स्वासोस्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥५॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ ॥१२॥ दिठ्ठि कहेता दृष्टि ॥३॥ समकितदृष्टि ॥१॥ मिथ्यातदृष्टी ॥२॥ समामिथ्यातदृष्टी ॥ ३॥१३॥ दंसण कहेता दर्शनच्यार । चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शन ॥२॥ अवधिदर्शन ॥३॥ केवल दर्शन ॥ ४॥१४ ॥ नाण कहेता ज्ञान ॥५॥ मतिज्ञान ॥१॥ श्रुतज्ञान ॥२॥ अवधिज्ञान॥३॥ मनपर्यवज्ञान ॥४॥ केवलज्ञान ॥५॥१५॥ अनाणे कहेता ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥१॥ श्रुतअज्ञान ॥ २ ॥ विभंगज्ञान ॥ ३॥१६ ॥ जोग कहेता जोगपनर । च्यार मनना । च्यार वचनना । सात कायाना ॥ हवे च्यार मनना कहेछे । सत्य मनजोग ॥ १ ॥ असत्यमन जोग ॥ २ ॥ मिश्रमनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारमनजोग ॥४॥ हवे च्यार वचनना कहे छे ॥

सत्यवचनजोग ॥ १ ॥ असत्यवचनजोग ॥ २॥ मिश्रवचनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारवचनजोग ॥ ४ ॥ हवे सात कायाना कहेछे ॥ उदारिक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ वैक्रेय ॥ ३ ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ४ ॥ आहारक ॥५॥ आहारकनो मिश्र ॥ ६ ॥ कार्मणकायजोग ॥ ७ ॥ एवं पनर जोग ॥ १७ ॥ उवयोग कहेता उपयोग बार ॥ पांच ज्ञान ॥ त्रणअज्ञान ॥ च्यार दर्शन ॥ एवं बार ॥१८॥ तहाकिमाहारे कहेता ॥ तिमज अनुक्रमे आहार लीए ॥ जघन्य त्रण दिसनो ॥ उत्कृष्टो छ दिसनो ॥ त्रण दिस ते कइ ॥ उंची नीची ने त्रीछी॥ ए त्रण दिसनो लीए ॥ छदिस ते कइ ॥ पूर्व ॥१ ॥ पछिम ॥ २ ॥ उत्तर॥३॥दक्षण ॥ ४ ॥ उंची॥५॥ नीची ॥६॥ ए छ दिसनो आहार लीए ॥ तथा वलि त्रण प्रकारनो ।आहार । सचेत ॥अचेत ने मिश्र । उज ॥१॥ रोम ॥ २ ॥ कवल ॥ ३ ॥ ए त्रण प्रकारनो आहार ॥ १९ ॥ उववाय कहेता आवीने उपजे चोविस दंडक नो ते आगल कहेवासे ॥२०॥ ठिइ कहेता थिति जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ अने उत्कृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ ते आगल कहेवासे ॥ २१ ॥ समुद्धाए कहेता । समोहियामरण ॥१॥ असमोहियामरण ॥ २ ॥ समोहियामरण ते केहने कहिये

कीमीनीझारनीपरे जीवना परदेसवुटावुटा नीकले ॥ तेहने समोहिया मरण कहियें ॥ १॥ असमोहियामरण ते केहने कहिये बंदुकना वभाकानीपरे जीवना प्रदेश सामटा नीकले ॥ तेहने असमोहियामरण कहिय ॥ २॥२२॥ चवण कहेता चविने जाय जेटला दंडकमां ते आगल केहेवासे ॥२३॥ गइ कहेता गति पांच ॥ नरकनी गति तिर्यंचनी गति ॥ मनुष्यनी गति । देवतानी गति । सिधनी गति । पहमां जे जावुं ते गति ॥ अने आगइ कहेता जेमांथी। आववुं ते आगति च्यार ॥ नरकनी । तिर्यंचनी ॥ मनुष्यनी ॥ देवतानी ॥ २४ ॥ एव कहेता निश्चे ए घे गायानो । अर्थ कह्यो ॥ हवे प्राणदश ।पांच इंद्रीयना पांच प्राण ॥ श्रोतेंद्रीय॥१॥ चक्षु इंद्रीय ॥२॥ घ्राणेंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ मनबल ॥६॥ वचन-बल ॥ ७ ॥ कायबल ॥८॥ स्वासोस्वास ॥९॥ आउखुं ए ॥ १० ॥ ए पचीस द्वार कह्या ॥२५॥ हवे चोविस दंडकना नाम कहेछे ॥ पेहेलो नारकीनो दंडक ॥ ते सात नरकना नाम कहेछे ॥ पहेली घमां ॥१॥ बीजी वंसा ॥ २ ॥ त्रीजि सीला ॥ ३ ॥ चोथी अंजणा ॥ ४ ॥ पांचमी रिठा ॥५॥ छठी मघा ॥६॥ सातमी माघवइ ॥७॥ ए सात नरकना नाम कह्या ॥

हवे सातना गोत्र कहेछे। पहेली रतनप्रज्ञा॥बीजी सकरप्रज्ञा॥त्रीजी वालुप्रज्ञा। चोथी पंकप्रज्ञा ॥ पांचमी धुमप्रज्ञा ॥ छठी तमप्रज्ञा ॥ सातमी तमतमाप्रज्ञा ॥ ए सात मलिने एक दंरुक थयो ॥१॥ हवे दश ज्ञवनपतिना दस दंरुक ॥ तेहना नाम कहेछे ॥ पेहेला असुरकुमार ॥ बीजा नागकुमार ॥ त्रीजा सोवनकूमार ॥ चोथा विजुकुमार ॥ पांचमा अग्निकुमार ॥ छठा दिपकुमार ॥ सातमा उदहिकुमार ॥ आठमा दिसाकुमार ॥ नौमा पवनकुमार ॥ दशमा थणितकुमार ॥ एवं अगियार दंरुक थया ॥११॥ हवे पांच थावरना पांच दंरुक कहेछे ॥ इंदियावरकाय ॥ वंजीथावरकाय ॥ सपीथावरकाय ॥ सुमतिथावरकाय ॥ पयावचथावरकाय॥ ए नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेछे प्रथवीकाय ॥ अपकाय ॥ तेउकाय ॥ वाउकाय ॥ वणसइ काय एवं सोल दंरुक थया ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रीयनां त्रण दंरुक कहेछे ॥ बेइंद्रीय । तेरिंद्रीय ॥ चउरिंद्रीय॥एवं उगणीस दंरुक थया॥१९॥ हवे विसमो तिर्यंच पचेंद्रीयनो दंरुक कहेछे ॥ तिर्यंच पंचेंद्रीयना पांच ज्ञेद ॥ जलचर ॥ थलचर ॥ उरपर ॥ ज्रुजपर। खेचर। हवे जलचर ते केहने कहिये ॥ जे जलमां चाले तेहने जलचर कहिये ॥ तेहना अनेक ज्ञेद ॥ मत्र

कछ गाहा । मगर सुसुमार प्रमुख ॥१॥ हवे थलचर ते केहने कहिए ॥ जे थल पृथ्वी ए चाले ॥
तेहने थलचर कहिये ॥ तेहना च्यार भेद ॥ एकखुरा दुखुरा । गंडीपया ॥सणपया ॥ एकखुरा
ते घोडा खर प्रमुख ॥ दुखुरा ते गाय भेंस प्रमुख ॥ गंडीपया ते सुंडाला पग ॥ सोनीनी अहिर-
ण ने घाट पग होय ते हाथी गेंडा प्रमुख ॥ सणपया ते नोहोराला जीव ॥ ते सिंह वाघ चित्रा
कुतरा बिलाडा प्रमुख ॥ २ ॥ उरपर ते केहने कहिये । हइयाभर चाले ते सर्पनी जात ॥
तेहना बे भेद ॥ एक फेण मांडे ने ॥ एक फेण न मांडे ॥ ३ ॥ भुजपर ते केहने
कहिये । भुजाए तथा हइयाभर चाले ते भुजपर ॥ तेहना अनेक भेद । नोल कोल
कांकीडा । गोह । उंदर ॥ खीसकोली प्रमुख ॥ ४ ॥ खेचर ते केहने कहीये ॥ जे आकासे
चाले ते पंखीनी जाति ॥ ते पंखीना च्यार भेद । चरमपंखी १ । रोमपंखी २ । विततपंखी ३ ।
समुगपंखी ४ ॥ चरमपंखी ते चामडानी पांख ॥ ते ढापा ॥ वागुल प्रमुख ॥ १ ॥ रोमपंखी
ते रोमरायनी पांख ॥ ते सुडा चरकला पारेवा प्रमुख ॥२॥ ए बे पंखी अढी द्वीप मांहे अने
बाहिर छे ॥ वितत पंखी ते जेहनी पांख पोहोली रहे ते वितत पंखी कहिए ॥ ३ ॥ समुग

पंखी ते मापमानीपरे पीर्भीरहे पांख जेहनी ते समुग पंखी॥ए.वे पंखी अढी द्विप बाहारे ज छे॥ ए.पांच तिर्यंच पचेंद्री ते पांच समुर्छिम ने पांच गर्भज जाणवा ए.विसमो तिर्यंच पचेंद्रिनो दंमक थयो ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्य पचेंद्रीयनो दंमक कहेछे ॥ ते मनुष्य पचेंद्रीना च्यार भेद ॥ पनर कर्मभुमि ना मनुष्य ॥ १ ॥ त्रीस अकर्मभुमि ना मनुष्य ॥ २ ॥ छपन्न अंतर द्वीप ना मनुष्य ॥ ३ ॥ चउद थानकना समुर्छिम मनुष्य ॥ ४ ॥ ते एकसो एक क्षेत्रना गरभज मनुष्य अपर्यासा॥ ने एकसो एक पर्यासा एवं २०२ ने एक सो एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्य अपर्यासा । एवं त्रणसें त्रण भेदनो एकविसमो मनुष्यनो दंमक थयो ॥ २१ ॥ हवे बाविसमो वाणव्यंतर नो दंमक कहेछे ॥ तेहनी सोल जाति । पिशाच ॥१॥ भूत ॥२॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किनर ॥ ५ ॥ किंपुरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपनी ॥ ९ ॥ पाणपनी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ इति बाविसमो वाणव्यंतर नो दंमक संपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतीषी नो दंमक कहेछे ॥ तेहनी दस जाति चंद्रमा ॥ १ ॥

सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥३॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए पांच चल ते अढिद्वीप मध्ये छे ॥ अने
पांच स्थिर ते अढिद्वीप बाहीर छे ॥ एवं दस जात ॥ बे चंद्रमाने बे सूर्य जंबूद्वीप मध्ये छे॥
च्यार चंद्रमा च्यार सूर्य लवण समुद्र मध्ये छे ॥ बार चंद्रमा बार सूर्य धातकीखंड मध्ये छे ॥
बेतालिस चंद्रमा । बेतालिस सूर्य कालोदधि समुद्र मध्ये छे ॥ बहुत्तेर चंद्रमा ॥ बेहुत्तेर सूर्य
पुष्करार्द्ध द्विप मध्ये छे ॥ एवं सर्व मलीने मनुष्य क्षेत्रमां । एकसो बत्रीस चंद्रमा ॥ एकसो
बत्रीस सूर्य ॥ परिवार सहित चल छे ॥ परिवार ते जिहां एक चंद्रमा एक सूर्य तिहां अठासी
ग्रह ॥ अठाविस नक्षत्र ॥ छासठहजार नवसें पंच्योतेर कोडा कोडी तारा छे ॥ एवं सर्व
चंद्रमा सूर्यनो परिवार गणवो॥असंख्याता चंद्रमा असंख्याता सूर्य परिवार सहित मनुष्यक्षेत्र
बाहेर असंख्याता द्विपसमुद्र मांहि स्थिर छे ॥ एवं दस जातनो तेविसमो ज्योतिषी नो दंडक
थयो ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वैमानिक नो दंडक कहेछे ॥ तेहना छविस भेद छे ॥ बार
देवलोक ॥ नव ग्रैवेयक ॥ पांच अनुत्तर विमान । एवं छविस । हवे तेहना नाम कहेछे ॥
सुधर्म ॥१॥ इसान ॥२॥ सनंतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥

महासुक ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ९ ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अचुय ॥ १२ ॥ ए बार देवलोक ना नाम कह्या ॥ हवे नवग्रैवेयक ना नाम कहेछे ॥ नंदे ॥ १ ॥ सुनंदे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥७॥ सुपडिबधे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ ए नव ग्रैवेयक ना नाम कह्या ॥ हवे पांच अनुत्तर विमान ना नाम कहे छे । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥ ५ ॥ ए पांच अनुत्तर विमान ना नाम कह्या । ए छविस भेदनो वैमानीक नो दंडक थयो ॥ २४ ॥ हवे पनर परमाधामी ना नाम कहेछे । अंब ॥ १ ॥ अंबरस ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ सबल ॥४॥ रुद्र ॥५॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असी-पत्र ॥९॥ धनुष ॥ १० ॥ कुंभ ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वैतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥१५॥ ए पनर परमाधामी ने असुरकुमार मां जाण्या । हवे दस जातिना जंभका तेहना नाम कहेछे ॥ आणजंभका ॥ १ ॥ पाणजंभका ॥ २ ॥ लयणजंभका ॥ ३ ॥ सयण-जंभका ॥ ४ ॥ वत्थजंभका ॥ ५ ॥ पुप्फजंभका ॥ ६ ॥ फलजंभका ॥ ७ ॥ बीयजंभका

॥ ७ ॥ विजुजंनका ॥ ए ॥ अवीयतजंनका ॥ १० ॥ ए. दस जातिना जंनका ते वाण व्यंतरमा नव्या ॥ ३ किल्विपीना नाम ॥ त्रण पलिया ॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर सागरिया ॥ ३ ॥ ए. त्रणकिलविपी देवलोक अंतरनिवासी माटे विमानीक मां नव्या । नव लोकांतिकना नाम कहेने ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥ २ ॥ विन्ही ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्दतोया ॥ ५ ॥ तोसीया ॥ ६ ॥ अवाबाहा ॥ ७ ॥ अगीचा ॥ ७ ॥ रिठा ॥ ए ॥ ए. नव लोकांतिक वंनलोकवासी माटे उत्तम वैमानिकमां नव्या ॥ इति चोविस दंमकना नाम कया ॥२४॥ हवे सात कोमी बोहोत्तेर लाख नवनपतिना नवन ने । चोरासी लाख नरकावासा ने । असंख्याता वाणव्यंतरना नगर ने ॥ असंख्याता जोतिपीना विमान ने ॥ असंख्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिपीना ने । चोरासी लाख सताणु हजार त्रेवीस विमान वैमानिकना ने ॥ संख्याता वास मनुष्यना ने । सेप दंमक नवना असंख्याता असंख्याता वास ने ॥ ते सर्व वर्णव अन्य सिद्धांतादिकथि जाणवो ॥ २४ ॥ हवे सिद्धसिलाना वार नाम कहेने ॥ इसितिवा ॥ १ ॥ इसिपनारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतिवा ॥ ४ ॥

लिपिनिवा ॥ ५ ॥ सिद्धालणनिवा ॥ ६ ॥ मुनिनिवा ॥ ७ ॥ मुनालणनिवा ॥ ८ ॥ लोयग-
निवा ॥ ९ ॥ लोगमुनियानिवा ॥ १० ॥ लोगपक्रियाहेनिवा ॥ ११ ॥ सवपाणनुयजीवसत्त-
सुहावहेनिवा ॥ १२ ॥ ए वार मोक्षना नाम कह्या ॥ ए नामद्वार किंचितमात्र संपूर्ण
॥ १ ॥ हवे चोविस द्वार ते चोविस दंडक उपर उतारया ते कहे छे ॥ पेहलो नारकीनो
दंडक ॥ ते मांहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण० ॥ अवघेणा तत्रधारणि सरीरनी
ज० अंगु० असं० ॥ उ० पांचसे धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥
उ० हजार धनुषनी ॥ पेहेली नरके तत्रधारणी ज० अंगु० असं० ॥ उ० पोणा आठ धनुष
ने छ आंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० साढापनर धनुष ने बार
अंगुलनी ॥ बीजी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढापनर धनुष ने बार अंगुलनी ॥ अने
उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ त्रीजि नरकेज० अंगु०
असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुषनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ०
साढाबासठ धनुषनी । चोथी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढाबासठ धनुषनी ॥ अने

उत्तरवेक्रेय करे तो । ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० सवासो धनुपनी ॥ पांचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनुपनी ॥ अने उत्तरवेक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० अढीसे धनुपनी ॥ छठि नरकेज० अंगु० असं० उ० अढिसे धनुपनी ॥ अने उत्तरवेक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० उ० पांचसें धनुपनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० असं ॥ उ० पांचसें धनुपनी ॥ अने उत्तर वेक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या ॥ उ० हजार धनुपनी । संघयण क०॥ नारकीअसंघेणी ॥ संठाण एक हुंडसंठाण ॥ कपाय च्यार । क्रोध मान माया ने लोभ ॥ पण नारकीने क्रोध घणो ॥ संज्ञा च्यार आहारसंज्ञा । भयसंज्ञा । मैथुनसंज्ञा । परिग्रहसंज्ञा । पण नारकीने भय घणो । लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥ पेहेली ने बीजी नरके एक कापुत लेस्या॥ त्रीजी नरके बे लेस्या ॥ कापुत घणी अने नील थोडी ॥ चोथी नरके एक नील लेस्या ॥ पांचमी नरके बे लेस्या नील घणी अने कृष्ण थोडी ॥ छठी नरके एकली कृष्ण लेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्ण लेस्या ॥ इंद्रीय पांच । श्रोतेंद्रिय ॥१॥ चक्षुइंद्रीय ॥२॥ घ्राणइंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥४॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ समुद्घात च्यार ॥ वेदनी कपाय मारणांतिक वेक्रेय॥

सनि कहेता पेहेली नरके संज्ञी असंज्ञी बे होय ॥ बीजीथी मांडी सातमी नरक सुधी एकला संज्ञी छे ॥ वेद एक नपुंसकवेद ॥ ५ पर्या साने ते नापा मन जेला बांधे। दृष्टी त्रण ॥ समकीतदृष्टी ॥ मिथ्यातदृष्टी॥समा मिथ्यादृष्टी ॥ दर्शण त्रण ॥ चक्षुदर्शन॥अचक्षुदर्शन। अवधिदर्शन॥ ज्ञान त्रण । मतिज्ञान । श्रुतज्ञान ॥ अवधिज्ञान ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥ श्रुतअज्ञान। विभंग अज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रण कायाना ॥ ते वैक्रेय वैक्रयनो मिश्र ने कार्मणकाय जोग ॥ एवं इग्यार जोग ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन एवं नव ॥ तहा तेमज आहार लेतां जघन्य उत्कृष्टो छ दिसनो । आहार ले ॥ ते बे प्रकारनो ॥ उज आहार ने रोम आहार ॥ तेपण असुज ते अचेत ॥ उववाय ते आवीने उपजे पहेलीनर्के बे दंडकना ते मनुष्य गर्भज ॥ ने तिर्यंचगर्भजने समुर्छिम ॥ ए बे दंडकना आविने उपजे अने बीजीथी मांडीने सातमी सुधी गर्भजतिर्यंच ने गर्भज मनुष्यना आवी उपजे । स्थिति पहेली नरके जघन्य दस हजार वरसनी ॥ उत्कृष्टी एक सागर नी ॥ बीजी नरके ज० एक सागरनी ॥ उ० त्रण सागरनी त्रीजी नरके ज० त्रणसागरनी ॥

उ० सात सागरनी ॥ चोथी नरके ज० सात सागरनी उ० दस सागरनी ॥ पांचमी नरके ज० दस सागरनी ॥ उ० सतर सागरनी ॥ छठी नरके ज० सतर सागरनी । उ० बावीस सागरनी ॥ सातमी नरके ज० बावीस सागरनी ॥ उ० तेत्रीस सागरनी ॥ समोहिया मरण ने असमोहिया मरण । बे मरण छे । चवण ते नारकी चविने पेहेलीथी छठी सुधिना बे दंडकमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ अने सातमी नरकनो एक दंडकमां ते तिर्यंचमां जाय ॥ गइ कहेतां । पेहेलीथी मांडी छठी सुधिना नारकी मरीने बेगतीमां जाय ते ॥ मनुष्यने तिर्यंचमां जाय ॥ आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो सातमी नरकना नारकी बे गतिमांथी आवे मनुष्य ने तिर्यंचना ने जाय एक तिर्यंचनिगतिमां ॥ प्राणदस लाजे॥जोग त्रण मन वचन ने कायाना । ए त्रण ॥ ए प्रथम दंडक नारकीनो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे दस भवनपतिना दस दंडक कहे छे ॥ तेहमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ॥ कार्मण ॥ अवघेणा भवनपतिनी ॥ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टी सात हाथनी । अने उत्तर वैक्रेय करे तो जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग ॥ उत्कृष्टीलाख जोजननी । संघेण नथी।

संठाण एक समचउरंस संठाण ॥ कषाय च्यारे पण देवताने लोभ घणो ॥ संज्ञाच्यारे पण
देवताने परिग्रह संज्ञा घणी । लेस्या च्यार कृष्णलेस्या । नीललेस्या । कापुतलेस्या ॥
तेजुलेस्या । इंद्री पांच छे ॥ समुद्घात पांच ॥ वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस
संज्ञी असंज्ञी वे जाणवा ॥ वेद वे स्त्री ने पुरुष । प्रजा ५ पापामन जेला वांधे ॥ द्रष्टी त्रण॥
दर्शण त्रण ॥ केवल दर्शन एक नही ॥ ज्ञान त्रण ॥ मति ज्ञान श्रुत ज्ञानने अवधि ज्ञान ॥
अज्ञान त्रण ॥ मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ विभंगअज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना ।
च्यार वचनना त्रण कायाना । वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग । एवं इग्यार ॥
उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन ॥ एवं नव ॥ तहा तिमज आहार ले॥
जघन्य ने उत्कृष्टो छ दिसनो आहार ले । वली वे प्रकारे आहार ले । ऊंजआहार ने रोम
आहार ॥ ते पण सुच ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे वे दंडकनो ॥ मनुष्यने
तिर्यंचनो॥ स्थिति भवनपतिमां दक्षण दिसना। असुरकुमारनी। ज० दस हजार वरसनी ॥
उ० एक सागरनी ॥ तेहनी ॥ देवीनी ज० दस हजार वरसनी। उ० साढा त्रण पल्योपमनी ॥

तेहना नवनी कायना देवतानी । ज० दस हजारवरसनी । उ० दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० पोणा पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुरकुमारनी स्थिति ॥ ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागर काझेरानी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वर्षनी । उ० साढा च्यार पल्योपमनी ॥ तेहना नवनिकायना देवतानी ज० दसहजार वरसनी । उ० बे पल्योपम देसे उंणी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० एक पल्योपम देसे उंणीनी ॥ समोहिया मरण अने असमोहिया मरण ॥ ए बे मरण लाभे । चवण ते चविने पांच दंडकमां जाय ॥ पृथ्वी ॥ पाणी ॥ वनस्पति ॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पाचमां जाय ॥ गइकहे० । मरिने बे गतिमां जाय मनुष्यने तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो ॥ मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ प्राण दस लाभे । जोग त्रण ॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे पांचस्थावरना पांचदंडक कहेछे पृथवी ॥ १ ॥ पाणी ॥ २ ॥ तेउ ॥ ३ ॥ वनस्पति ॥ ४ ॥ ए च्यार ने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अने वायराने सरीर च्यार । उदारिक । वैक्रय । तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा पृथ्वी पाणि तेउ

वाउ ए. च्यारेनी ॥ जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो जाग ॥ अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो जाग ॥ उत्कृष्टी हजार जोजननी फाफेरी कमल प्रमुखनी ॥ संघेण एक छेवट्ठ ॥ संठाण एक हुंक । पांचे ना संठाण कहेछे ॥ प्रथवीनुं संठाण मसुरनी दाल तथा चंद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनुं संठाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनुं संठाण सोयना जाराने आकारे ॥३॥ वायरानुं संठाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनुं संठाणनाना प्रकारनुं ॥ ५ ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या पृथवी पाणी वनस्पीत ने अपर्याप्ता वेला च्यार पेहेली ॥ अने पांचे ने लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री एक कायानी । समुद्घात पृथवी पाणी तेउ वनस्पीत ने ॥ ३ ॥ वेदनी कषायमारणांतिक ॥ अने वायराने समुद्घात च्यार वैक्रियनी वधी ॥ संज्ञी ते पांचे स्थावर असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥ पर्या च्यार ॥ आहार पर्या ॥ सरीरपर्या ॥ इंद्रीपर्या ॥ स्वासो स्वासपर्या ॥ द्रष्टीएकमिथ्यात ॥ दर्शन एक अचक्षुदर्शन । ज्ञान नथी। अज्ञान बे । मतीअज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान । जोग पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति ने त्रण ॥ उदारीक ॥१॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥

कार्मण कायजोग ॥३॥ अने वायराने पांच ते ॥ वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ए बे वध्या । उपयोग त्रण ॥ बे अज्ञान ॥ एक अचक्षु दर्शन ॥ एवं त्रण । तहा तिमज आहार ले ज० त्रण दिसनो उ० छ दिसनो ॥ ते वलि बे प्रकारनो उंज १ ने रोम २ ॥ कवलवर्जिने ॥ तथा ३ प्रकारनो ते सचेत ॥ अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । पृथ्वी पाणीने वनस्पतिमां ॥ त्रेविस दंडकना एक नारकी वरजीने ॥ अने तेउ वाउमां दस दंडकना आवीने उपजे ॥ पांच स्थावर ॥ त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने तिर्यंच ॥ एवं दसना ॥ स्थिति पृथ्वीनी ज० अंतर्मुहु-र्त्तनी । उ० बाविस हजार वरसनी ॥ १ ॥ पाणीनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी । उ० सात हजार वरसनी ॥ २ ॥ तेउनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी उ० त्रण अहोरात्रीनी ॥ ३ ॥ वायरानी । ज० अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० त्रण हजार वरसनी ॥४॥ वनस्पतिनी ज० । अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० दस हजार वर्षनी ॥५॥ समोहियामरण अने असमोहियामरण । ए बे मरण ते ॥ चवण ते चविने ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति ॥ दस दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रि ॥ मनुष्य ने तिर्यं-चमां जाय । अने तेउ वाउ नव दंडकमां जाय ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्रीने तिर्यंच ए

५

नय ॥ गइ क० ते मरीने पृथ्वी पाणी ने वनस्पति वे गतिमां जाय मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ अने तेउ वाउ एकगतिमां जाय तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पृथ्वी पाणी ने वनस्पतिमां त्रण गतिनो आवे ॥ देवता मनुष्यने तिर्यंचनो ॥ अने तेउ वाउमां वेगतिनो आवे । मनुष्य ने तिर्यंचनो । प्राण पांचे ने च्यार ॥ एकेंद्रिपणुं ॥ १ ॥ कायबल ॥ २ ॥ स्वासोस्वास ॥ ३ ॥ आउखु ॥ ४ ॥ जोग एक कायजोग ॥ इति पांच स्थावरना पांच दंडक संपूर्ण ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियना ३ दंडक कहेछे वेइंद्रि ॥ तेरंद्री ॥ चोरिंद्रीमां सरीर त्रण ॥ उदारिक । तेजस । कार्मण । अवघेणा वेइंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० बार जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० त्रण गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग । उ० च्यार गाउनी ॥ संघेण एक छेवट्ठ ॥ संठाण एक हुंफ ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री वेरिंद्रीने ॥ वे ॥ काया ॥१॥ जिभ ॥ २ ॥ तेरिंद्रीने इंद्री त्रण । नासिकावधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्रीचार॥ आंख वधि॥ समुद्घात त्रण वेदनी कषायने मारणांतिक ए त्रण ॥ संज्ञी के० ने असंज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥

पर्या पांच मन नही ॥ द्रष्टी बे ॥ समकित द्रष्टीने मिथ्यातद्रष्टी ॥ दर्शन बेइंद्री तेइंद्रीने
एक अचक्षूदर्शन ॥ चउरिंद्रीने बे दर्शन ॥ चक्षूदर्शन ने । अचक्षूदर्शन ॥ ज्ञान । बे मतिज्ञान
ने । श्रुतज्ञान ॥ अज्ञान बे मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान ॥ जोग च्यार उदारिक ॥१॥ उदा-
रिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मणकाय जोग ॥ ३ ॥ व्यवहार वचन ॥ ४ ॥ उपयोग बेइंद्री तेइंद्री
ने पांच ॥ बे ज्ञान बे अज्ञान । एक अचक्षूदर्शन ए. पांच ॥ चउरिंद्रीने उपयोग ६ ॥ बे
ज्ञान ॥ बे अज्ञान । बे दर्शन ए. ६ । तहां कहेता तिमज आहार ले ॥ जघन्य अने उत्कृष्टो
६ दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारनो आहार ले । उज ॥१॥ रोम ॥२॥ ने कवल ॥३॥ उववाय ते
आवीने उपजे दस दंडकना । पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री मनुष्यने तिर्यंच ॥ ए. दस ॥ स्थिति
बेरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी उत्कृष्टी बार वरसनी ॥ तेइंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी ।
उत्कृष्टी उगण पचास दिवसनी । चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ उत्कृष्टी ६ महिनानी ॥
समोहिया मरण । अने असमोहिया मरण बे छे ॥ चवण ते चविने जाय दस दंडकमां ॥
पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । गइ ते मरीने बेगतिमां जाय ॥

मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बेगतिनो मनुष्यने त्रिजंचनो ॥ प्राण चोरिंद्री ने ठ प्राण । बेइंद्रीना चे प्राण ॥ कायबल ॥ स्वासोस्वास ॥ आउखू । वचन । ए ठ । तेरिंद्री ने सात प्राण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीने आठप्राण आंख वधी ॥ जोग बे ॥ वचनजोग ने । कायजोग ॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंमक संपूर्ण ॥ १९ ॥ हवे विसमो तिर्यंच पंचेंद्रीनो दंमक कहेछे । हवे पांचे समुर्छिमने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ॥ ने कार्मण ॥ अने गर्नजने च्यार सरीर वैक्रेय वध्युं ॥ अवघेणा पांचनी कहे ठे ॥ हवे जलचर समुर्छिम ने गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ थलचर समुर्छिमनी ज० अंगु० असं ॥ उ० । प्रत्येक गाउनि ॥ गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० ठ गाउनी । उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक जोजननी ॥ अने गर्नजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ नुजपर समुर्छिमनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक धनुषनी । गर्नजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक गाउनी ॥ खेचर समूर्छिमने गर्नजनी ज० अंगु० असं० । उ० प्रत्येक धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० । उ० नवसें

जोजननी ॥ संघेण समुर्छिमने एक छेवटु ॥ गर्भजने छ संघेण। संठाणसमुर्छिमने। एक हुंड। गर्भजने छ संठाण ॥ कषाय च्यार पण त्रिजंचने माया घणी ॥ संज्ञा च्यार पण त्रिजंचने आहार संज्ञा घणी ॥ लेस्या समुर्छिमने त्रण पहेली। गर्भज ने छ लेस्या ॥ इंद्री पांचे छे ॥ समुदघात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक अने गर्भज ने समुदघात पांच वेदनी कषाय मारणांतिक वैक्रेय ने तेजस ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भजसंज्ञी ॥ समुर्छिममां वेद एक नपुंसक ॥ गर्भजने त्रण वेद ॥ पर्यासमुर्छिमने पांच मन नही ॥ अने गर्भजने पर्या छ ॥ द्रष्टी समुर्छिमने बे ॥ समकितने मिथ्यात ॥ गर्भजने त्रण द्रष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने बे चक्षुदर्शनने । अचक्षुदर्शन ॥ गर्भजने त्रण दर्शन ॥ ज्ञानसमुर्छिमने बे मतिज्ञान॥श्रुतज्ञान। गर्भजने त्रण ज्ञान॥अज्ञानसमुर्छिमने बे। मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान॥ गर्भजने त्रण अज्ञान ॥ जोग समुर्छिमने च्यार ॥ उदारिकना बे ॥ कार्मण ३। व्यवहार वचन ४ ॥ गर्भजने तेर जोग आहारकना बे नही ॥ उपयोगसमुर्छिमने छ। बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन॥ गर्भजने नव उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन। तिमज ॥ आहार ले ॥ जघन्य

उत्कृष्टो ७ दिसनो आहार ले ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार ले । ओज रोमने कवल आहार ले ते पण सचेत अचेतने मिश्र ॥ उववाय ते । आवीने उपजे ॥ समुर्छिममां दस दंडकना ॥ पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने त्रिजंच ॥ गर्नजमां चोविसे दंडकना आविने उपजे । स्थिति जलचर समुर्छिमने गर्नजनी । ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोडनी । थलचर समुर्छिमनी ज० अंत० ॥ उ० चोरासी हजार वर्षनी । अने गर्नजनी ज० अंत० ॥ उ० त्रण पल्योपमनी ॥ उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंत० । उ० त्रेपन हजार वरसनी ॥ अने गर्नजनी ज० अंत० ॥ उ० पूर्वक्रोडनी ॥ नुजपर समुर्छिमनी । ज० अंत० ॥ उ० बेतालिस हजार वरसनी अने गर्नजनी ज० अंत० । उ० पूर्व क्रोडनी ॥ खेचर समुर्छिमनी ज० अंत० उ० बोहोतेर हजार वरसनी ॥ अने गर्नजनी ज० अंत० उ० पल्योपमनो असंख्यातमो नाग । समोहियामरण ने असमोहियामरण ॥ ए बे मरण छे ॥ चवण के० चवीने ॥ समुर्छिम जाय तो बाविस दंडकमां । जोतिषीने विमानीकमां जाय नही ॥ अने गर्नज चोविसे दंडकमां जाय । गइ ते० समुर्छिम ॥ अने गर्नज मरीने च्यार गतिमां

जाय । आगइ ते आंय समुर्छिममां बे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनी ॥ अने गर्भजमां च्यार गतिनो आंय ॥ प्राण समुर्छिमने नव । मन नही । अने गर्भजने प्राण दशे लाने ॥ जोग समुर्छिमने बे ॥ कायजोग ने वचनजोग ॥ अने गर्भजने त्रण जोग ॥ मन वचन ने काय-जोग ॥ इति विसमो तिर्यंचपंचेंद्रीनो दंडक संपूर्ण ॥२०॥ हवे एकविसमो मनुष्यनो दंडक कहेछे ॥ तेमां समुर्छिम मनुष्यमां शरीर त्रण । उदारिक तेजस ने कार्मण । जुगलीयामां सरीर त्रण लहीज ॥ कर्मभुमि मनुष्यमां सरीर पांच लाने ॥ अवघेणा समुर्छिमनि जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने गर्भज मनुष्यनी जगत देवकुरुमां आगनी परे जाणवी ॥ पहेले आरे बेसता त्रण गाउनी ॥ उतरता बे गाउनी ॥ बीजे आरे बेसता बे गाउनी ॥ उतरता एक गाउनी ॥ त्रीजे आरे बेसता एक गाउनी ॥ उतरतां पांचसें धनुष्यनी । चोथे आरे बेसता पांचसें धनुष्यनी ॥ उतरतां सात हाथनी ॥ पांचमे आरे बेसतां सात हाथनी ॥ उतरतां एक हाथनी ॥ छठे आरे बेसतां एक हाथनी ॥ उतरतां मुंढा हाथनी ॥ उतरतो एक हाथनी ॥ ५ महाविदेहमां पांचसें । धनुष्यनी ॥ उत्तर ... बखी जाणवी ॥

त दिसनां तथा वे प्रकारे तेज ने शेम ते पण अचेत ने सुन आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे पेहेला देवलोकथी मांमीने आठमा देवलोक सुधी वे दंमकना मनुष्य ने तिर्यंचना। अने नवमेथी ते सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्यनो आवे ॥ स्थिति पेहेले देवलोके जघन्य एक पल्यनी ॥ उत्कृष्टी वे सागरनी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी । उ० सात पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनो ॥ ज० एक पल्यनी । उ० पचास पल्यनी ॥ बीजे देवलोके ज० एक पल्यनी जाझेरी ॥ उ० वे सा० जाझेरी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाझेरी । उ० नव पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी जाझेरी ॥ उ० पंचावन पल्यनी ॥ त्रीजे देवलोके ज० वे सा० ॥ उ० सात सा० तिहां देवी नथी पण तेमाथी जाय ॥ चोथे देवलोके ज० वे सा० जाझेरी ॥ उ० सात सा० जाझेरी ॥ पांचमे देवलोके ज० सात सा० ॥ उ० दस सा० ॥ छठे देवलोके ज० दस सा० उ० चउद० सा० ॥ सातमे देवलोके ज० चउद० सा० उ० सतर० सा० ॥ आठमे देवलोके ज० सतर० सा० ॥ उ० अढार सा० ॥ नवमे देवलोके । ज० अढार सा० । उ० उगणीस०

॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस साo ॥ दसमे देवलोके ज० उगणीस साo । उ० वीस साo ॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस साo ॥ उ० एकविस साo ॥ बारमे देवलोके ज० एकविस साo । उ० बाविस साo ॥ प्रथम ग्रैवेयके ज० बाविस साo । उ० त्रेविस साo ॥ बीजी ग्रैवेयके ज० त्रेविस साo उ० चोविस साo । त्रीजी ग्रैवेयके ज० चोविस साo ॥ उ० पचीस साo चोथी ग्रैवेयके ज० पचीस साo । उ० छविस साo । पांचमी ग्रैवेयके ज० छविस साo । उ० सत्याविस साo ॥ छठि ग्रैवेयके ज० सताविस साo उ० अठाविस साo ॥ सातमी ग्रैवेयके ज० अठाविस साo । उ० उगणत्रिस साo ॥ आठमी ग्रैवेयके ज० उगणत्रिस साo । उ० त्रिस साo । नवमी ग्रैवेयके ज० त्रीस साo नी । उ० एकत्रिस साo । च्यार अनुत्तरविमानमां ज० एकत्रीस साo । उ० तेत्रिस साo ॥ सर्वार्थसिद्धमां ज० ने उ० तेत्रीस साo । समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छाने । चवण ते चविने पहेला बीजा देवलोकना देवता पांच दंडकमां जाय । पृथ्वी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यंच ए पांच ॥ त्रीजाथी ते आठमा देवलोकना देवता बे दंडकमां जाय मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ नवमेथी मांडीने सर्वार्थसीद्धलगेना देवता ।

एक दंडकमां जाय मनुष्यमां ॥ गइ ते मरीने पेहेलाथी मांडीने आठमा देवलोकना देवता बे गतिमां जाय । अने नवमाथी मांडीने सर्वार्थसिद्ध सुधिना एक मनुष्यनी गतिमां जाय। आगइ ते पेहेलाथी मांडीने आठमां देवलोक लगे बे गतिनो आवे । मनुष्य ने त्रिजंचनो । अने नवमाथी मांडीने सर्वार्थसिद्ध लगे एक मनुष्य नो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इतिश्री चोविसमो वैमानिकनो दंडक संपूर्ण ॥ २४ ॥ हवे सिद्धनो द्वार कहेछे । सीद्धने सरीर नथी ॥ अवघेणा सीद्धनी अरुपि जीवना प्रदेशना घननी । ज० एक हाथने आठ अंगुलनी । मझम च्यार हाथ ने सोल अंगुलनी । अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनुष ने । बत्रीस अंगुलनी ॥ सिद्धने संघयण नथी ॥ सिद्धने संठाण नथी । सिद्धने कषाय नथी । सिद्धने संज्ञा नथी । सिद्धने लेस्या नथी ॥ सिद्धने इंद्रीय नथी ॥ सिद्धने समुद्घात नथी । सिद्धसंज्ञी असंज्ञी नथी ॥ सिद्धने वेद नथी ॥ सिद्धने प्रजा नथी ॥ सिद्ध समकितदृष्टी छे ॥ सिद्धने एक केवल दर्शन छे ॥ सिद्धने एक केवल ज्ञान छे ॥ सिद्धने अज्ञान नथी ॥ सिद्धने जोग नथी । सिद्धने उपयोग बे छे ॥ केवलज्ञान । केवल दर्शन ॥ सिद्धने आहार नथी ॥ उववाय

ते आवीने उपजे । एक दंमक ते मनुष्यनो । सिद्धनी स्थितिनो छेमो नथी ॥ सिद्धने मरण नथी ॥ सिद्धने चववुं नथी ॥ गइ ते मरीने सिद्धने कोइ गतिमां जावुं नथी । आगइ ते सिद्धमां एक मनुष्यनो आवे ॥ सिद्धने प्राण नथी । पण भाव प्राण छे ते केवल ज्ञान ने केवल दर्शन । सिद्धने जोग नथी ॥ इति सिद्धनो द्वार इतिश्री लघुदंमकना बोल संपूर्ण.

॥ अथ श्री गतागतना बोल. ॥

पहेलीनर्के आगत ॥ २५ भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ॥ ५ ॥ संज्ञीतिर्यच ने ॥ ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यच ॥ ए ॥ २५ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ गत ॥ ४० भेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ने ॥ ५ ॥ संज्ञीतिर्यच । ए ॥ २० ॥ ना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ १ ॥ बिजी नर्के आगत ॥ २० भेदनि ते ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यचना प्रजाप्ता वर्ज्यां । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ २ ॥ त्रिजीनर्के आगत ॥ १९ ॥ भेदनि ते । पूर्वे ॥ २० ॥ कह्या तेहमांथि ॥ १ भुजपर वर्ज्यां । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत ॥ ३ ॥ चोथी नर्के आगत १८ भेदनि । ते ।

पूर्वे १८ कह्या तेहमांथि ॥ १ खेचर वर्ज्या । गत ४० नि पुर्ववत् ॥ ४ ॥ पांचमी नर्के आगत १७ जेदनि ते । पूर्वे १८ कह्या तेहमांथि ॥ १ थलचर वर्ज्या ॥ गत ४० नि पुर्ववत् ॥ ५ ॥ छठी नर्के आगत ॥ १६ ॥ जेदनि ते ॥ १७ ॥ पूर्वे कह्या तेहमां थि ॥ १ उरपर वर्ज्या ॥ गत ॥ ४० ॥ नि पुर्ववत् ॥ ६ ॥ सातमी नर्के आगत १६ जेदनि ते ॥१५॥ कर्मजूमी ने ॥ १ जलचरमत्र ॥ ए १६ ना प्रजाप्ता नेमां स्त्री वर्जीने । गत ॥ १० जेदनि ते ॥ ५ संज्ञीतिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥ दश जवनपति ॥ १५ ॥ परमाधामी ॥ १६ ॥ वाणव्यंतर ॥ १० ॥ जंजका । ए ॥ ५१ जातिना देवतामां ॥ आगत १११ जेद-नि ते ॥ १०१ क्षेत्रना संज्ञीमनुष्य ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंच । ए १११ ना प्रजाप्तानि । गत ४६ नि ते ॥ १५ कर्मजूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ए ॥ २० ॥ ने पृथ्वी ॥ १ ॥ पाणि ॥ २ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ २३ ॥ ना अप्र० ने प्रजाप्तानि ॥७॥ दस ज्योतषी ने पहिला देवलोकमां ॥ आगत ॥ ५० जेदनि ते ॥ १५ कर्मजूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ३० अकर्मजूमी । ए ५० ना प्रजाप्तानि । गत ॥ ४६ नि पुर्ववत् ॥ ८ ॥ बिजा देवलोकमां आगत

४० भेदनि ॥ ते पूर्वे ५० भेद कह्या भेदमांथि ॥ ५ देमवय ते ॥ ५ एरणवय । ए १० ना प्र-
जाता वर्ज्या । गत ॥ ४६ ॥ नि पूर्ववत् ॥ १० ॥ पहिला किल्विषीमां आगत ॥ ३० भेदनि
ते । पूर्वे ४० कह्या ॥ भेदमांथि ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमक वास । ए १० प्रजाता वर्ज्या । गत
४६ नि पूर्ववत् ॥ ११ ॥ त्रिजा देवलोकथि आठमा देवलोकसुधि ॥ ६ देवलोक ॥ ए लोकांतिक
॥ २ किल्विषी । ए १७ जातिना देवतामां आगत ॥ २० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५
संज्ञीतिर्यंच । ए २० ना प्रजातानि ॥ गत ४० नि ते पनर कर्मभूमी पांच संज्ञीतिर्यंच
ए वीशना अप्र० प्रजा० एवं ४० ॥ १२ ॥ नवमा देवलोकथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ४ देवलोक
॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तर विमान ॥ ए १८ मां आगत ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजातानि ।
गत ३० नि ते पनर कर्मभूमीना अप्र० प्रजा० एवं ३० ॥ १३ ॥ पृथ्वि ॥१॥ पाणि ॥ २ ॥
वनस्पति ॥३॥ ए ३ मां आगत ॥ २४३ भेदनि ते ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाता
॥१५॥ कर्मभूमीना अप्र० ने प्रजाता । एवं ॥ १३१ ते ॥ ४८ भेदतिर्यंचना । एवं १७९ नी
छट ते ॥ ६४ भेद देवताना ते ॥ १० भवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १०

जंनका ॥ १० ज्योतषी । एवं ६१ ने ॥ २ देवलोक ॥ एक किल्विषी ॥ एवं ॥ ६४ ना प्रजा-
सानि ॥ एवं २४३ नि ॥ गत १७ए लटनि ॥ १४ ॥ तेउ ॥ १ ॥ वाउ ॥ २ ॥ ए २ मां
आगत ॥१७ए लटनि ॥ गत ॥४० नेदतिर्यंचनी ॥ १५॥ त्रण विगलेंडियमां आगत ॥ १७ए
लटनि । गत पण १७ए लटनि ॥ १६ ॥ असंज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ १७ए लटनी ॥ गत
॥ ३एए नेदनि ते ॥ ५६ अंतरद्वीपा ने ॥ ५१ जातिना देवता । ते ॥ १० नवनपति ॥ १५ परमा-
धामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंनका ए ॥ ५१ जातिना देवता ॥ एवं सर्व मिलि १०७ नेद
थया अने ॥ १ पहिली नर्क ॥ एवं ॥ १०० ना अप० ने प्रजासा एवं २१६ अने १७ए लट ।
सर्वमिली ॥ ३एए नेदनि ॥ १७ ॥ संज्ञीतिर्यंचमां आगत ॥ २६७ नेदनि ॥ ते ८१ नेद
देवताना । ते एए मांहिथि ॥ ४ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । ए ॥ १८ वर्ज्या
ने १७ए लट । एवं सर्व मिलि ॥ २६० ने ७ नर्कना प्रजासा ॥ एवं ॥ २६७ नि ॥
पांचे श्रीयंचनी गत जुदी जुदी कहे ने ॥ जलचरनी ५२३ नी ते ५६२ मांहिथि नवमा
देवलोकथी सर्वार्थ सिद्ध सुधि ॥ ए १८ ना अप० ने प्रजा० एवं ३६ वर्ज्या ॥ शेष ५२७

रह्या ॥ थलचरनी गत ॥ ५२१ नी ते ५२७ मांहिथी ॥ पांचमी १ छठी २ सातमी ३ ॥ ए.
त्रण नर्कना अप्र० प्रजा० ए. ७ वर्ज्यां ॥ शेष ५२१ रह्या ॥ उरपरनी गत ५२३ नी ते ॥
५२७ मांहिथि छठी १ सातमी २ ए. बे नर्कना अप्र० प्रजा० ए. च्यार वर्ज्यां शेष ५२३ रह्या ॥
नुजपरनी गत ५१७ नी ते त्रीजी १ चोथी २ पांचमी ३ छठी ४ सातमी ५ ए. पांचना
अप्र० प्रजा० ए. दस वर्ज्यां शेष ५१७ रह्या ॥ खेचरनी गत ५१९ नी ते ५२७ मांहिथि
चोथी १ पांचमी २ छठी ३ सातमी ४ ए. च्यारना अप्र० प्रजा० ए. आठ वर्ज्यां शेष ५१९ रह्या ॥
॥ १० ॥ समुर्छिम मनुष्यमां आगत १७१ नेदनि ते ॥ १७९ लटमांथि ॥ ८ तेउ वाउना
वर्ज्यां । शेष १७१ नि । गत ॥ १७९ लटनि ॥ १९ ॥ संज्ञीमनुष्यनि आगत २७६ ने-
दनि ॥ ते १७९ लटमांहिथि तेउ वाउना ८ वर्ज्यां । शेष १७१ रह्या अने ॥ ९९ जातिना
देवताना प्रजासा एवं ॥ २७० ॥ ने ६ नर्कना प्रजासा ॥ सर्व मिली २७६ नि । गत । ५६३
नेदनि ॥ २० ॥ ३० अकर्मनूमीमां आगत २० नेदनि ते ॥ १५ कर्मनूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ।
ए. ॥ २० ना प्रजासानि ॥ गत जुदी जुदी कहेछे ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उत्तरकुरुनि गत ॥ १२८ ॥

स ॥ १२ देवलोक ॥ ९ लोकांतिक ॥ ९ ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ॥ ३५ ना अप्र०॥
प्रजाता । एवं ॥ ३० नां ॥ २८ ॥ श्रावकमां आगत ॥ २७६ ॥ भेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या
ते । अने ॥ १ छठी नरकथकि । ए २७६ नि ॥ गत ४२ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ते ॥ ९ लोकां-
तिक । ए २१ ना अप्र० । प्रजातानि ॥२७॥ समदृष्टिमां आगत ॥ ३६३ भेदनि ते ॥ ९९
जाति देवनाना प्रजाता ॥ १०१ समूर्छिम मनुष्यना अप्रजाता ॥ १०१ संज्ञी मनुष्यना प्रजाता
॥ १५ कर्मभूमीना अप्रजाता ॥ ७ नरकना प्रजाता । अने ४८ ॥ तिर्यंचमांहिथि तेउ वाउना
८ वर्ज्या । शेष ४० रह्या ते । एव सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २२२ नि ते ॥ ८१ जातिना
देवना ते ९९ मांहीथि १५ परमाधामि ने ३ किल्विषि ए १८ भेद वर्ज्या ॥ ने १५ कर्मभूमी
॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ६ नरक । एवं ॥ १०७ ना अप्र० । प्रजाता एसें चउद अने ॥ ३ विगलेंद्रिना ।
अप्र० । अने ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंचना अप्र० । एवं २२२ नि० ॥ ३० ॥ मिथ्यातिमां आगत
॥ ३७१ भेदनि ते । पूर्वे ॥ ३६३ कह्यां तेहमां तेउ वाउना ॥ ८ ॥ वध्या ॥ गत ५५३ भेदनि
ते ५६३ भेदमांहीथि ॥ ५ अनुत्तर विमानना अप्र० ने प्रजाता । ए ॥ १० वर्ज्या ॥ शेष ५५३

॥ प ॥ वेमां आगत ३७१ नेदनि ते मिथ्यागिना

नि ॥३१॥ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ प ॥ वेमां आगत ३७१ नेदनि ते मिथ्यागिना
परे । गतपुरुषनि ५६३ नि । स्त्रीवेदनि ॥ ५६१ नि ते सातमी नरकना २ नेद वर्ज्या ॥ ३२ ॥
नपुंसकवेदमां आगत ॥ २७५ नेदनि ते ॥ ए९ जाति देवताना प्रजासा ॥ १७९ नि लट ॥७॥
नारकी । प ॥ २७५ ॥ नि ॥ गत ॥ ५६३ ॥ नेदनि ॥ ३३ ॥ नारकी देवता अपर्यासा मरे
नहि माटे अपर्यासा मरती वखते गणया नहि ॥ इति गतागतना बोल संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री गुणस्थानद्वार. ॥

गाथा ॥ नाम१ लरकगुण२ठिइ३॥ किरिया४ सत्ता५बंध६वेदे य७ उदय८ उदिरणा९ चेव ॥ निज्जरा
१०.नाव ११ कारणा १२ ॥१॥ परिसह १३ मग्ग १४ आयाय १५ ॥ जीवाय नेदे १६ जोग १७ उवि-
र्जग १८॥ लेस्सा १९ चरण २० सम्मत्तं २१॥ अप्पावहुअ २२ गुणगणेहिं॥२॥ ए द्वार २२ नी गाथा २
कहि । हवे पहेलो नामद्वार कहे ने ॥ पहेलुं मिथ्यात्व गुणगणुं ॥ १ ॥ बिजुं सास्वा-
दान गु० ॥ २ ॥ त्रिजुं समामिथ्यात्व गु० ॥ ३ ॥ चोथुं अविरति सम्यक्त्वदृष्टि गु० ॥ ४ ॥

पांचमुं देशविरति गु॰ ॥ ५ ॥ ठवुं प्रमत्तसंजति गु॰ ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्तसंजति गु॰ ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टिबादर गु॰ ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्टिबादर गु॰ ॥ ९ ॥ दशमुं सुक्ष्मसंपराय गु॰ ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोह गु॰ ॥ ११ ॥ बारमुं क्षिणमोह गु॰ ॥ १२ ॥ तेरमुं सजोगि केवलि गु॰ ॥ १३ ॥ चउदमुं अजोगि केवलि गुणठाणुं । ए नामद्वार समासं हवे लक्षणगुणद्वार कहे ठे ॥ पहेला मिथ्यात्व गुणठाणाना लक्षण कहेठे ॥ श्रीवीतरागनि वाणिथि उंठुं । अधिक । विपरीत शर्द्धहे परुपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये । उंठि परुपणा ते केहने कहिये । जिम कोइ कहे जे जीव अंगुठा मात्र ठे । तंदुल मात्र ठे ॥ शामा मात्र ठे दीपक मात्र ठे तेहने उंठि परुपणा कहिये ॥१॥ अधिकी परुपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव सर्व लोक ब्रह्मांड मात्रमां व्यापि रह्यो ठे । तेहने अधिकी परुपणा कहिये ॥२॥ विपरीत परुपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंच भूत थकि आत्मा उपनो ठे ॥ अने एहने विनाशे जीव पण विणशे ठे ॥ ते जड ठे । ते थकि चैतन्य उपजे विणशे । इम कहे तेहने विपरीत परुपणा कहिये ॥ ३ ॥ ए मीथ्यात्व इम नव पदार्थनुं विपरीतपणुं सरदहे परुपे फरसे

तेहने मीथ्यात्व कहिये॥ अन जैनमार्ग आमी ...
मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गौतम स्वामि । हाथ जोडि मान मोडी वंदणा नमस्कार करीने
श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंते
कह्युं जे । जीवरूप दडि ने । कर्मरुप ॥ गेडिये करि ॥ ४ गति ॥ २४ दंडक ८४ लाख
जीवाजोनि मांहि वारंवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नहि ॥ १ ॥ हवे बिजा
गुणठाणाना लक्षण कहे छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखांडनुं भोजन जम्यो तिवारपछि
वमन कर्युं ॥ तिवारे कोइक पुरुषे पुछयुं भाइ कांइ स्वाद रह्यो । तिवारे कहे जे थोडो
स्वाद रह्यो । ते समान समकित अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ बिजो
दृष्टांत कहेछे । जेहवो घंटानो नाद पडेलो गहेर गंभीर । पछि रणको रहि गयो ॥
गहेर गंभीर समान समकित ने रणको रहि गयो ते समान मिथ्यात्व ॥ २ ॥ हवे त्रिजो
दृष्टांत आंबानो । जीवरूप आंबो ने प्रणामरूप डाल । समकितरूप फल । ते मोहरूप वायरे
करि॥ प्रणामरूप डालथि । समकितरूप फल त्रुटयुं । मिथ्यात्वरूप धरतीये आवि पड्युं नथि

विचमां छे॥ तिहांसुधि सास्वादान समकित कहिये॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं। तिवारे मिथ्यात्व ॥३॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीजगवंतने पुछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो॥ तिवारे श्रीजगवंत कहेछे। कृष्णपक्षी हतो ते शुक्लपक्षी थयो॥ अर्द्ध पुद्गल संसार जोगववो रह्यो। जिम कोइ पुरुषने माथे लाख कोरुनुं देणुं हतुं ते परदेश जइने कमाइ आव्यो देणुं देतां एक अधेलिनुं देणुं रह्युं तेहनुं व्याज थयुं। तेटलो संसार जोगववो रह्यो। सास्वादान समकित पांचवार आवे॥ २॥ हवे त्रिजा गुणठाणानां लक्षण कहे छे॥ त्रिजुं मिश्रगुणठाणुं। ते बे वस्तु मिलिने मिश्र श्रीखंडनो दृष्टांत॥ श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो। मिठास समान समकित ने खटास समान मिथ्यात्व॥ ते जिनमार्ग पण रुडो जाणे तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे जिम कोइक नगर बाहिर साधु महापुरुष पधारयाछे॥ तेहने श्रावक वांदवा जायछे॥ तेहवामां मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो॥ तिणे पुछ्युं जे किहां जाओछो॥ तिवारे श्रावक कहे जे। साधु महापुरुषने वांदवा जइयेछे। तिवारे मिश्रदृष्टिवालो कहे॥ एहने वांदे सुं थाय॥ तिवारे

श्रावक कहे जे महालाभ थाय ॥ तिवारे कहे जे हुं पण वांदवा आवुं। इम कहिने मिश्रगुणठा-
णावाल ॥ वांदवाने पण उपाड्यां ॥ तेहवामां बिजो महामिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥
तेणे पुछ्युं के क्यांजणि जावशो। तिवारे मिश्रगुणठाणावालो कहे जे। साधु महापुरुषने
वांदवा जइये छे ॥ तिवारे महामिथ्याति कहे जे। एहने वांदे सुं थाय। ए तो मेला घे-
ला छे ॥ इम कहिने तोलवि नांख्यो पाछो वेल्यो ॥ तिवारे साधुज्ञानिने श्रावके वांदिने पुछ्युं
जे स्वामि वांदवा पग उपाड्यां तेहने सुं गुण निपनो। तिवारे ज्ञानिगुरु कहेछे। जे काला
अमद सरिखो हतो ते ॥ ढकिदाल सरिखो थयो। कृष्णपक्षी टलिने शुक्लपक्षी थयो ॥
अनादि कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो। समकित सन्मुख थयो पणि पण तरवा सम-
र्थ नहि ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडि वंदणा नमस्कार करिने श्रीभगवंतने
पुछता हवा। स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो। तिवारे श्रीभगवंत कहेछे ते ॥ जीव ४
गती ॥ २४ ॥ दंडकमां भमिने पण देशे उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनमां उत्कृष्टो संसारनो
पार पामसे ॥ ३ ॥ चोथुं अविरतिसम्यक्त्व दृष्टिगुणठाणुं तेहना सुं लक्षण ॥ ७ प्रकृति ने

क्षयोपशमावे । अनंतानुबंधि क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥६॥ मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने कांइक उदय आवे तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामां दल छे तेहने उपशमावे तेहने क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढांके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांच वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ भावथकि ४ नोकारसी आदि छमासी तप जाणे सरदहे परूपे पण फरसि शके नहि ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकितव्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्तता ॥ ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेदक समकित एकवार आवे ॥ एक समयनि स्थिती छे । पूर्वे जो आयुष नो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बो-

क्षमां बंध पामे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ नवनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यंचनुं आ-
युष ॥ ३ ॥ वाणव्यंतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनुं आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुं-
सकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमां आयुषनो बंध पामे नहि ॥ ते जीव ॥ ८ ॥ आचार
समकितना आराधि । चतुर्विधसंघनि वात्सल्य परमदर्प नक्तिनर थको जघन्य पहेले देव-
लोके उपजे ॥ उत्० । बारमे देवलोके उपजे । पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने
व्रत पच्चखाण करि न शके । पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रव्रज्यानो पालक कहिये ॥
दशाश्रुतस्कंधे श्रावक कह्याछे ते माटे ॥ दर्शन श्रावकने अविरत समदृष्टी कहिये ॥ ४ ॥
पांचमुं देशविरतिगुणठाणुं तेहना मुं लक्षण । इग्यार प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ॥ ७ पूर्वे
कहि ते । अने अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एवं ॥
११ प्रकृतिने क्षय करे तो क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ११ प्रकृ० ढांके उपशमावे तो उपशम
समकित कहिये । अने ११ प्रकृतिने कांइक ढांके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशम समकित
कहिये ॥ पांचमे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि नो-

फागसी आदि देइने ठमासीतप जाणे सरदहे पण्पे शक्तिप्रमाणे फरसे । एक पच्चखाणथि मांमिने ॥१२ व्रत ॥११ श्रावकनि पमिमां आदरे जावत् संलेखणासुधि अनशन करि आराधे तिवारे गौतमस्वामी हाथ जोमि मान मोमि श्रीनगवंतने पुछताहवा । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीनगवंते कह्युं ॥ ज० त्रिजे नवे मोक्ष जाय ॥ उ० ॥ १५ नवे मोक्ष जाय॥ ज० पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्० १२ मे देवलोके उपजे। तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये॥ पण परिणामथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइ ठे ॥ अल्प इछा ॥ अल्प आरंन ॥ अल्प परिग्रही ॥ सुशिल । सुव्रति ॥ धर्मिष्ट । धर्मव्रति । कल्पउग्रविहारी । महासंवेगविहारी ॥ उदासी ॥ वैराग्यवंत ॥ एकांतआर्य ॥ सम्यगमार्गी ॥ सुसाधु । सुपात्र ॥ उत्तम । क्रियावादि । आस्तिक्य । आराधक । जैनमार्गप्रनावक ॥ अरिहंतना शिष्य वर्णव्याठे । गीतार्थ जाणेठे॥ सिद्धांतनि शाख ठे । श्रावकपणुं । एक नवमां प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ५ ॥ ठठुं प्रमत-संजतिगुणगाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ १५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते. ११ प्रकृति पुर्वे कहि ते अने पच्चखाणावरणीय क्रोध ॥१॥ मान ॥२॥ माया ॥ ३ ॥ लोन ॥४॥ एवं ॥ १५ प्रकृतिने

क्षयकरे तो क्षायिकसमकित कहिये। अने १५ प्रकृतिने ढांके तो उपशमसमकित कहिये॥ अने कांइ ढांके ने कांइ क्षय करे तो क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ तिवारे गोतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवंतने पुछता हवा। ते जीवने सुं गुण निपजे। तवारे श्रीभगवंते कह्युं जे। ते जीव द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसी आदि छमासि तप जाणे सद्दहे परूपे फरसे॥ साधुपणुं एक भवमां नवसेंवार आवे। ते जीव जघन्य त्रिजे भवे मोक्ष जाय॥ उत्० १५ भवे मोक्ष जाय ॥ आराधीक जीव। जघ० पहिले देवलोके उपजे। उत्०। अनुत्तर विमाने उपजे॥१७ भेदे संजम निर्मल पाले॥ १२ भेदे तपस्या करे पण जोग चपल। कषाय चपल ॥ वचन चपल दृष्टि चपलताना अंशथे। तेणे करिने यद्यपि उत्तम अप्रमादिपणे रहेछे। तोपण प्रमाद रहेछे माटे प्रमादपणे करि॥ तथा कृष्णादिक लेश्या॥ अशुभ जोग॥कोइक काले प्रणति प्रणमेछे माटे ॥ कषाय प्रकृप्रमत्त थइ जायछे तेहने प्रमत्त संजति-गुणठाणुं कहिये ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण। पांच प्रमाद छांडि निर्मल सातमे गुणठाणे आवे। ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मद विषय कसाया। निद्रा विगहा

पंचमा भणिया । एए पंच पमाया । जीवापरूंति संसार ॥१॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद टाले अने १६ प्रकृतिने उपशमावे ॥ १५ ॥ पूर्वे कहि ते अने संजलनो क्रोध । एवं १६ ॥ प्रकृतिने क्षयोप शमावे ॥ तेहने सुं गुण निपनो। ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यान जुगतपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे। ते जीव जघन्य० । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनि थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्टानने विषे । अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे । तथा शुभ लेश्यापणेज करिने नथि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त संजतिगुणठाणुं कहिये ॥७॥ आठमुं नियट्टि बादरगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ १७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ १६ पूर्वे कहि ते। अने संजलनो मान । ए ॥१७॥ प्रकृति ने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडि मान मोडि । श्रीभगवंतने पुछता हवा । स्वामीनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीभगवंते कह्युं ॥ परिणामधारा । अपूर्व करण ॥ जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्युं नथि । ते श्रेणि जुगत जीवादिक पदार्थ । द्रव्यथि । क्षेत्रथि कालथि भावथि । नोकारसी

आदि दइ असार्मी नप जाणं। मरदई पळ्य फरसे। न जीव। जघन्य। नेज नव [illegible]
॥ उत्त०। त्रिजे नवे मोक्ष जाय। इहांथि श्रेणि ॥२ करे। उपशमश्रेणि॥१॥ ने क्षपक श्रेणि ॥२॥
उपशम श्रेणिवाळा जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणा
सुधिजाय॥पडिवाइ पण थाय। हायमान परिणामपण परिणमे॥ अने क्षपकश्रेणिवाळो जीव
ते। मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुक्ल मुळमांथि निर्जरा करतो। नवमे दशमे
गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय। अपडिवाइज होय। वर्द्धमान परिणाम परिणमेहवे निय-
ट्टिबादरनो अर्थ ते नियट्टिने बादर कषायथि। बादर संपराय क्रियाथि श्रेणि करंत। अन्यंतर
परिणामे। अध्यवसाय स्थिरथने बादर चपळताथि निवृत्तिथि। माटे नियट्टिबादरगुणठाणुं
कहिये। तथा बिजुं नाम। अपूर्व करणगुणठाणुं पण कहिये ॥ मामाटे जे ॥ कोइ काळे
जीवे पूर्वे श्रेणि करि नहति। अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पंडितवीर्यनुं आवरण
क्षयकारणरूप करणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे ॥ तेहने अपूर्वकरण गुणठाणुं कहिये॥८॥
हवे नवमुं अनियट्टिबादरगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ एकविश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥१७

प्रकृति पुर्वे कहि ते अने संजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुसक वेद ॥ ४ ॥ एवं ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गोतमस्वामि हाथ जोमी मान मोमी श्रीनगवंतने पुठता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो ॥ तिवारे नगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने ठमासी तप ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि निर्विकार अमार्गी ॥ विषयनिरवंठापणे । जाणं सरदहे पकपे फरसे ते जीव ॥ जघन्य तेज नवे मोक्षजाय । उत० । त्रीजे नवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टि वादर ते । सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अंश मात्र हजि वादरसंपरायक्रिया रहि ठे माटे अनियट्टिवादर गुणठाणुं कहिये ॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंनिर ठे ॥ ते अन्य पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ए ॥ दशमुं सूक्ष्म संपरायगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ नय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ दुगंठा ॥ ६ ॥ एवं ॥ २७ प्रकृति ने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गोतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि ॥ श्रीनगवंतने पुठता हवा स्वामि

थाय । ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे नगवंते कह्युं । ते जीव ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देइने उमासी तप निरनिलाप निर्वक निर्ध-दकलापणे निराशी अव्यामोह अविभ्रमपणे जाणे सरदहे परुपे फरसे ते जीव । जघन्य० तेज नवे मोक्ष जाय । उत्० । त्रीजे नवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोडिक लगारेक पातलीसी संपराय-क्रिया रहि छे तेहने सुक्ष्मसंपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशांतमोहगुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ॥ २८ प्रकृति ने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने संजलनो लोन ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । जेम जारि प्रवश अग्नि घन । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीनगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने सुं गुण निपनो । तिवारे श्रीनगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि नावथि नोकारसी आदि देइने उमासी तप वीतराग नावे जथाख्यात चारित्रपणे ॥ जाणे सरदहे परुपे फरसे । पडवामां जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमां जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय । अने जो सूक्ष्म लोननो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे

पछि पर्म दशमांथि पर्म नो पहिला गुणठाणासुधि जाय । पण इग्यारमेथि चढवुं तो नथि।
उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि ढांक्यानि परे टाल्यो नहि ढांक्यो ते माटे
उपशांतमोह गुणठाणुं कहिये ॥११॥ बारमुं क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण ज ॥ २८
प्रकृति ने सर्वथा खपावे । क्षपकश्रेणि । क्षायकनाव । क्षायक समकित ॥ क्षायकजथाख्या-
तचारित्र ॥ करणसत्य । जोगसत्य । नावसत्य अमायी। अकषायी। वीतरागी। । नावनिर्ग्रंथ।
संपूर्ण संवृत ॥ संपूर्ण नावितात्मा ॥ महातपस्वी । महासुशिल । अमोही । अविकारी ।
महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ यइ अंतर्मुहुर्त रहे । ए गुणठाणे
काल करवो नथि। पुनर्नव छे नहि । छेहले समये पांच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥
पंचविध अंतरायक्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि । केवल ज्योति
प्रकटे माटे क्षीणतेक्षयकरयोछे मोहसर्वथाजेगुणठाणे तेहने क्षीणमोह गुणठाणुं कहिये ॥१२॥
तेरमुं सजोगी केवलि गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । दश बोल सहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥
सजोगी ॥१॥ सशरिरी ॥ २ ॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुक्ललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ५ ॥

क्षायकसमकित ॥६॥ पंडितवीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त । उत्० । देशउणी पुर्वक्रोडिसुधि ॥ विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने ॥ त्रिजा त्रिजा शुकलध्यानना पायाने ध्याइने चउदमे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोगसहित ते चालाग्य चलोप करण छे । गमनागमनादिक चेष्टा शुभ सहित ते । केवलज्ञान केवलदर्शन । उपयोग सम-यांतर । अविछिन्नपणे शुरू प्रणमे माटे सजोगि केवलिगुणठाणुं कहिये ॥१३॥ हवे चउदमुं अजोगी केवली गुणठाणुं तेहनुं सुं लक्षण । शुक्लध्याननो चोथो पायो समुछिन्नक्रिय अनंतर अप्रतिपाती । अनिवृतिध्याता मनजोग रुंधि वचनजोग रुंधि कायजोग रुंधि आन प्राण निरोध करि रुपातीत परमशुकलध्यान ध्याता ॥ ७ ॥ बोलसहित विचरे । तरमे ॥१०॥ बोल कह्या तेहमांथि । सजोगी ॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुकल लेशी ॥ ३ ॥ ए त्रण वर्जिने शेष ॥ ७ ॥ बोलसहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनि परे । अकंप । अचल । स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशी पणे रहि पंचलघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि ॥ शेष वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥

नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक। तेजस कार्मण। सर्वथा छांमिने समश्रेणि ऋजुगति अन्य आकाशप्रदेशने अवगाहतो अणफरसतो। एक समय मात्रमां। ऊर्द्धगति। अविग्रहगतियें तिहां जाय। एरंडबीज बंधन मुक्तवत्। निर्लेप तुंबिवत्। कोदंड मुक्तबाणवत्॥ इंधनवह्निमुक्तधुम्रवत। तिहांसिद्धक्षेत्रे जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय। बुद्ध थाय॥ पारांगत थाय। परंपरगत थाय। सकल कार्य अर्थसाधि ॥ कृतकृतार्थ। निष्ठितार्थ। अतुल सुखसागर निमग्न ॥ सादिअनंत नांगे सिद्ध थाय ॥ ए सिद्धपदनो नामस्मरण ॥ चिंतन मनन कदा काले मुझने होशे। सो घटि पल धन्य सफल होशे ॥ इवे अजोगी ते। जोगरहित केवलसहित विचरे ॥ तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये ॥ १४ ॥ इति लक्षण गुणठार बीजो संपूर्ण ॥ २ ॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे॥ पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे ॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंतपण नथि ते अनव्यजीव ना मिथ्यात्व आश्रि ॥ १ ॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते नव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ २ ॥

गमं गु० ॥ ७ ॥ कर्म बांधे आयुष वर्जिने ॥ दशमं गुण० ॥ ६ कर्म बांधे । आयुष ॥ १ ॥
ने मोहनीय । ग ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ सातावेदनीय बांधे ॥
चउदमे गुण० । अबंध० ॥ इति ६ नो ॥ बंधद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे ७ मो वेदद्वारने ॥ ८
मो उदयद्वार तेहा कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्म वेदे
ने ॥ ८ नो उदय इग्यारमे बारमे ॥ ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे
चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥
गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार
कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा
नी करेतो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने ।
तथा ६ नि करे तो । आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ग ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदी-
रणा करे ॥ आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ग ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो । आयुष
॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ग ३ वर्जिने॥इग्यारमे बारमे गु० ५ नि उदीरणा॥

हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४॥ क्रिया लाभे । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ बिजे । चोथेगु० ॥ २३ क्रिया लाभे इरियावहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गु० ॥ २२ क्रिया लाभे मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ वर्जिने ॥ छठे गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरंभिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाभे । सातमे गुणठाणेथी ने दशमा गुणठाणा सुधी ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाभे ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाभे । चउदमे गुण० कोइ क्रिया लाभे नहि ॥ इति ४ थो ॥ क्रियाद्वार समाप्तं ॥ ४ ॥ हवे पांचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिलागुणठाणाथिने इग्यारमा गुणठाणा सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । बारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि सत्ता १ मोहनियकर्म वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे गुण० ॥४॥ कर्मनि सत्ता । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ इति पांचमो सत्ताद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो बंधद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिजुं गुणठाणुं वर्जिने ॥ ८ कर्म बांधे । अने जो ॥ ७ बांधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे न-

वमं गु० ॥ ७ ॥ कर्म बांधे आयुष वर्जिनें ॥ दशमे गुण० ॥ ६ कर्म बांधे । आयुष ॥ १ ॥
ने मोहनीय । ग ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ सातावेदनीय बांधे ॥
चउदमे गुण० । अबंध० ॥ इति ६ गो ॥ बंधद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे ॥७ मो वेद द्वारने ॥ ८
मो उदयद्वार बेला कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्म वेदे
ने ॥ ८ नो उदय इग्यारमे बारमे ॥ ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे
चउदमे ॥ ४ ॥ कर्म वेदे ने ॥ ४ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥
गोत्र ॥ ४ ॥ इति ॥ ७ मो वेदने ८ मो उदयद्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार
कहेछे । पहिला गुणठाणाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा
नी करतो आयुष वर्जिने ॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने ।
तथा ६ नि करे तो । आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ग ॥ २ ॥ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदी-
रणा करे ॥ आयुष ॥१॥ मोहनीय ॥२॥ ग ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो । आयुष
॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ग ३ वर्जिने॥इग्यारमे बारमे गु० ५ नि उदीरणा॥

मार्गणाद्वार १४ मो समाप्तं ॥ १४ ॥ हवे पनरमो आत्माद्वार कहेछे ॥ आत्मा ८ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषायआत्मा ॥ २ ॥ योगआत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥४॥ ज्ञानआत्मा ॥ ५ ॥ दर्शनआत्मा ॥ ६ ॥ चारित्रआत्मा ॥ ७ ॥ वीर्यआत्मा एवं ८ ॥ पहेलेत्रिजे गुण० ६ आत्मा । ज्ञान ने चारित्र ए २ वर्जिने विजे चोथे गुण० ॥ ७ आत्मा चारित्र वर्जिने ॥ पांचमे गुणठाणे पण ॥ ७ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥ छठेथि दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ आत्मा। इग्यारमे वारमे तेरमे गु० ॥ ७ आत्मा कषाय वर्जिने ॥ चउदमे गु० ६ आत्मा कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमां ॥ ४ आत्मा । ज्ञानआत्मा ॥ १ ॥ दर्शनआत्मा ॥ २ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥ ४ ॥ इति १५ मो आत्माद्वार समाप्तं ॥ १५॥ हवे १६ मो जीवजेदद्वार कहेछे । पहेले गुणठाणे ॥ १४ जेद लाजे ॥ विजे गुण० ६ जेद लाजे ॥ वेइंद्रिय ॥१॥ तेइंद्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असंज्ञितिर्यंचपंचेंद्रिय ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ ना अपर्जाप्ता ने संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ६ ॥ त्रिजे गुण० ॥ १ संज्ञी पंचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाजे । चोथे गुणठाणे ॥ २ जेद लाजे । संज्ञी पंचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए २ ॥

पांचमांथि ते १४मा गुणठाणासुधि १ संज्ञि पंचेन्द्रियनो पर्जाप्तो लाभे ॥ इति १६ मो जीवभेद द्वार समाप्तं ॥ १६॥ हवे १७मो जोगद्वार कहेछे ॥ पहेले बिजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥१३॥ लाभे वे आहारकना वर्जिने ॥ त्रिजे गुण० १० जोग लाभे ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो । ए ॥ १० लाभे ॥ पांचमे गुणठाणे ॥ १२ जोग ॥ आहारकना ॥ २ ने एक कार्मणनो ए ३ ॥ वर्जीने १२ ॥ लाभे ॥ छठे गुण० ॥ १४ जोग लाभे ॥ १ कार्मणनो वर्जिने । सातमे गुण० ॥ ११ जोग ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो ॥ १ आहारकनो । एवं ११ ॥ आठमांथि मांडिने १२ नां गुणठाणासुधि जोग ॥ ए लाभे ते ४ मनना ॥ ४ वचनना ने ॥ १ उदारिकनो । ए ए ॥ तेरमे गुणठाणे जोग ॥ ७ लाभे ॥ वे मनना वे वचनना । ए ४ ने उदारिकनो १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मणकायजोग ३ ॥ एवं ७ ॥ चौदमे गुण० जोग नथि । इति ॥ १७ मो जोगद्वार समाप्तं ॥ १७ ॥ हवे १८ मो उपयोगद्वार कहेछे ॥ पहेले ने बिजे गुणठाणे ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ अज्ञानने ३ दर्शन । एवं ६ त्रिजे चोथे पांचमे गुण० ६ उपयोग लाभे ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ छठाथि ते बारमा गुण-

गणासुधि उपयोग ७ ॥ लाज्ने ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन। एवं ७ ॥ तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ उपयोग। केवल ज्ञान ॥ १ ने। केवलदर्शन २ ॥ इति १७ मो उपयोगद्वार समासं ॥ १७ ॥ हवे १८ मो लेशाद्वार कहेछे ॥ पहेलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ लेशालाज्ने ॥ सातमे गुण॰ उपलि ॥ ३ लेशा लाज्ने । आठमेथि मांमीने बारमा गुणठाणासुधि ॥ १ शुक्ल लेशा लाज्ने ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ परमशुक्ललेशा लाज्ने । चौदमे गुण॰ लेशा नथि। इति १८ मो लेशाद्वार समासं ॥१८॥ हवे २० मो चारित्रद्वार कहेछे । पहेलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोई चारित्र नथि । पांचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे। छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ चारित्र लाज्ने । सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥२॥ परिहार विशुद्धचारित्र ॥३॥ ए ३ लाज्ने । आठमे नवमे गुणठाणे ॥ २ चारित्र लाज्ने। सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥ २ ॥ दशमे गुण॰ १ सुक्ष्मसंपरायचारित्र लाज्ने ॥ इग्यारमेथि ते चौदमा गुणठाणासुधि १ जथाख्यातचारित्र लाज्ने ॥ इति २० मो चारित्रद्वार समासं ॥ २०॥ हवे २१ मो समकितद्वार कहेछे। पहेले ने त्रिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ बिजे गुण॰ १

सास्वादान समकित लाने ॥ चोथेथि ते सातमा गुणठाणासुधि ॥४ समकित लाने । उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ वेदक ॥ ३ ॥ क्षायकसमकित ॥ ४॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ३ ॥ समकित लाने । उपशम ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ क्षायक ॥ ३ ॥ दशमे इग्यारमे गुणठाणे ॥ २ समकित लाने । उपशम ॥ १ ॥ क्षायक ॥ २ ॥ बारमे तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ १ क्षायकसमकित लाने ॥ इति २१ मो समकितद्वार समाप्तं ॥२१॥ हवे २२ मो अल्पबहुत्वद्वार कहेछे ॥ सर्वथि थोडा इग्यारमा गुणठाणावाला एक समये उपशमश्रेणिवाला ५४ जीव लाने माटे ॥१॥ तेथि बारमा गुणठाणावाला संख्यातगुणा एक समये क्षपकश्रेणिवाला एकसो ने आठ जीव लाने माटे ॥२॥ तेथि आठमा नवमा दशमा गुणठाणावाला संख्यातगुणा ॥ जघन्य बसें ॥ उत्० नवसें लाने माटे ॥ ३ ॥ तेथि तेरमां गुणठाणावाला संख्येजगुणा ॥ जघ० बे क्रोडि ॥ उत्० नव क्रोडि लाने माटे ॥ ४ ॥ तेथि सातमां गुणठाणावाला संख्यातगुणा । जघ० । बसे क्रोडि । उत्० । नवसें क्रोडि लाने माटे ॥५॥ तेथि छठां गुणठाणावाला संख्यातगुणा । जघ० बे हजार क्रोडि । उत्० । नव हजार

ठाणासुधि उपयोग ७ ॥ लाभे ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन। तेम ७ ॥ तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धमां ॥ २ उपयोग। केवल ज्ञान ॥ १ ने। केवलदर्शन २ ॥ इति १८ मो उपयोगद्वार समाप्तं ॥ १८ ॥ हवे १९ मो लेशाद्वार कहे छे ॥ पहेलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ लेशा लाभे ॥ सातमे गुण० उपलि ॥ ३ लेशा लाभे। आठमेथि मांडीने बारमा गुणठाणासुधि ॥ १ शुकल लेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ परमशुकललेशा लाभे। चौदमे गुण० लेशा नथि। इति १९ मो लेशाद्वार समाप्त ॥१९॥ हवे २० मो चारित्रद्वार कहे छे। पहेलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोई चारित्र नथि। पांचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे। छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ चारित्र लाभे। सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥२॥ परिहार विशुद्धचारित्र ॥३॥ ए ३ लाभे। आठमे नवमे गुणठाणे ॥ २ चारित्र लाभे। सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥ २ ॥ दशमे गुण० १ सुक्ष्मसंपरायचारित्र लाभे ॥ इग्यारमेथि ते चौदमा गुणठाणासुधि १ जथाख्यातचारित्र लाभे ॥ इति २० मो चारित्रद्वार समाप्तं ॥ २०॥ हवे २१ मो समकितद्वार कहे छे। पहेले ने त्रिजे गुणठाणे समकित नथि ॥ बिजे गुण० १

एवं ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २॥ ॥५॥ रस ॥८॥ स्पर्श ॥५॥ शरीर ॥५॥ शरीरना व्यापार । एवं ॥३०॥ एवं उदय मलिने ॥३३ ॥ ने ॥ ३० ॥ त्रेशठ जेद उदयजावना कह्या ॥ १॥ हवे उपशमजावे ॥ ११ बोल छे । च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥ ५ ॥ द्वेषनो उपशम ॥ ६ ॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥ ७ ॥ चारित्रमोहनियनो उपशम ॥ ८ ॥ एवं ॥ ८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने उवसमिया दंशणलद्धि ते समकित ॥९॥ उवसमियाचरित्तलद्धि ॥१०॥ उवसमियाअकषा-यछउमलवीतरागलद्धि ॥ ११ ॥ एवं ॥ ११ ॥ हवे क्षायक जावे ३७ बोल छे ॥ ५ ज्ञानावर-णिय ॥ ९ दर्शनावरणिय ॥ २ ॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥ ४ कषायनि ॥ १ दर्शनमोहनीयनि ॥ १ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥२ नामनि २॥ गोत्रनि ५ अंत-रायनि । एवं ३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकजाव कहिये ते ॥ ... समकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यात...

क्रोमि लाजे माटे ॥६॥ तेथि पांचमां गुणठाणावाला असंख्यातगुणा । तिर्यंच श्रावक नथ्या माटे ॥७॥ तेथि बिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा ४ गतिमां लाजे माटे ॥ ८ ॥ तेथि त्रिजा गुणठाणावाला असंख्यातगुणा४ गतिमां विशेष ठे माटे॥९॥ तेथी चोथा गुणठाणा वाला असंख्यातगुणा घणि स्थिति ठे माटे॥१०॥तेथि चौदमां गुणठाणावाला ने सिद्धजग-वंतजि अनंतगुणा ॥११॥ तेथि पहेला गुणठाणावाला अनंतगुणा एकेंद्रिय प्रमुख सर्व मिथ्या-दृष्टि ठे माटे ॥१२॥ इति २२ मो अल्पबहुत्वद्वार समाप्तं ॥ २२ ॥ इतिगुणठाणाना २२ द्वार समाप्तं ॥ हवे जाव ६ कहेठे ॥ उदयजाव ॥१॥ उपशम जाव ॥ २ ॥ क्षायकजाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमजाव ॥ ४ ॥ परिणामिकजाव ॥ ५ ॥ सन्निवाइजाव ॥ ६॥ हवे उदयजावनाना ॥२॥ जेद ॥ जीवउदयनिष्पन्न ॥ १ ॥ ने अजीवउदयनिष्पन्न ॥ २ ॥ जीवउदयनिष्पन्नना ॥ ३३ बोल पामे ॥ ४ ॥ गति ॥ ६ ॥ काय ॥ ६ ॥ लेश्या ॥ ४ ॥ कषाय ॥ ३ ॥ वेद । एवं ॥ २३ ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ अविरति ॥ ३ ॥ असंज्ञिपणुं ॥ ४ ॥ आहारकपणुं ॥ ५ ॥ ठद्मस्थपणुं ॥ ६ ॥ शजोगिपणुं ॥ ७ ॥ संसार-परियट्टणा ॥८॥ असिद्ध ॥९॥ अकेवलि ॥१०॥

नेदं ॥ ३३॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥२॥ गंध ॥५॥ रस
॥८॥ स्पर्श ॥५॥ शरीर ॥५॥ शरीरना व्यापार । एवं ॥३०॥ एवं उनय मलिने ॥३३ ॥
ने ॥ ३० ॥ त्रेशठ नेद उनयनावना काह्या ॥ १॥ हवे उपशमनावे ॥ ११ बोल छे । च्यार
कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥ ५ ॥ द्वेषनो उपशम ॥ ६ ॥ दर्शनमोहनीयनो
उपशम ॥ ७ ॥ चारित्रमोहनियनो उपशम ॥ ८ ॥ एवं ॥ ८ मोहनियनि प्रकृति ॥ अने
उवसमिया दंशणलद्धि ते समकित ॥९॥ उवसमियाचरित्तलद्धि ॥१०॥ उवसमियाअकषा-
यछउमछवीतरागलद्धि ॥ ११ ॥ एवं ॥ ११ ॥ हवे क्षायक नावे ३७ बोल छे ॥ ५ ज्ञानावर
णिय ॥ ९ दर्शनावरणिय ॥ २ ॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥ ४ कषायनि ॥ १
दर्शनमोहनीयनि ॥ १ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥२ नामनि २॥ गोत्रनि ५ अंत
रायनि । एवं ३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकनाव कहिये ते ९ बोल पामे ॥ क्षायकस-
मकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥ ४ ॥ अने
क्षायकदानादिलब्धि ५ ॥ एवं ९ बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमनावे ॥ ३० बोल छे ॥ ४ ज्ञान

प्रथमना ॥३अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ ३ दृष्टि ॥४ चारित्र प्रथमना ॥१चरित्ताचरित्त ते श्रावकपणु पामे ॥ १ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ चौद पूर्व ज्ञाननी प्राप्ति ॥ ५ इंद्रिय नि लब्धि ॥ ५ दानादिलब्धि । एवं सर्व मिली ॥ ३० वोल ॥४॥ हवे परिणामिक नावनाना २ नेद । सादिपरिणामिक ॥ १ ॥ अनादिपरिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपरिणामिकना अनेक नेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तंडुल ए आदि ७३ वोल नगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपरिणामिकनावना १० ॥ वोल ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तीकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ अलोक ॥ ८ ॥ नव्य ॥ ए ॥ अनव्य ॥ १० ॥ एवं २० ॥ ५ ॥ हवेसन्निवाइनावना २६ नांगा ॥ १० ॥ द्विकसंजोगीना १० ॥ त्रिकसंजोगीना ॥ ५ चोकसंजोगीना ॥ १ पंचसंजोगिनो । एवं २६ नांगा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार सिद्धांतथि जाणवो ॥ ६ ॥ हवे ॥ १४ गुणगाणा उपर ॥ १० क्षेपकद्वार उतारेछे । तेहमां प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ २५ कपाय ॥ १५ जोग ॥ एवं ४० ने ॥ ६ काय ॥ ५ इंद्रिय ॥ १ मन ॥ ए १२ अव्रत । एवं ५२ ने ५

मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु ॥ पहेले गुणठाणे ॥ ५५ हेतु ते आहा… गु० ५० हेतु ते ५५ मांहि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥२॥ त्रिजे गु० ४३ हेतु ते ५७ मांहि अनंतानुबंधि ४ ॥ उदारिकनो मिश्र १ वैक्रियनो मिश्र २ ॥ आहारकना २ मिथ्यात्व ५ एवं १४ वर्ज्या ॥ शेष ४३ ॥३॥ चोथे गु० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र १॥ वैक्रियनो मिश्र २ ॥ कार्मण कायजोग ३ ॥ ए ३ वध्या ॥ सर्व मलिने ४६ ॥४॥ पांचमे गुणठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेहमांहि अप्रत्याख्यानीनि चोकडि ४ ॥ त्रसकायनो अव्रत १॥ कार्मणकायजोग १ ॥ एवं ६ घट्या ॥ शेष ४० हेतु ॥५॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या तेहमांहि प्रत्याख्यानावरणियनि चोकडि ४ ॥ पांच स्थावरनो अव्रत ५॥ इंद्रिय ५ नो अव्रत ॥ ५ ॥ ने एक मननो अव्रत ॥ १ ॥ एवं १५ वर्ज्या ॥ शेष २५ रह्या ने ॥ आहारकना २ ॥ वध्या । एवं सर्व मलि २७ हेतु ॥६॥ सातमे गुण० २४ हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेहमांहि ॥ उदारिकमिश्र १ ॥ वैक्रियमिश्र २ ॥ आहारकमिश्र । ए ३ वर्ज्या । शेष २४ हेतु ॥७॥ आठमे गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमांहि । वैक्रियनो १ ॥ आहारकनो २ ॥ ए २ वर्ज्या । शेष

२२ हेतु ॥८॥ नवमे गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमांथि । हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ भय ४ ॥ शोक ५ ॥ दुगंछा ६ ॥ ए ६ वर्ज्या । शेष १६ हेतु ॥९॥ दशमे गुण० १० हेतु ते ॥ ए जोग ने ॥ १ संजलनो लोभ । एवं १० हेतु ॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे गुण० ॥९ हेतु ते ए जोग जाणवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तेरमे गुण० ७ हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चौदमे गुण० हेतु नथि ॥१४॥ इति पहिलो हेतुद्वार समाप्तं ॥१॥ हवे बीजो दंडक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंडक । बिजे गुण० १९ दंडक ते ५ स्थावरना वर्ज्या । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंडक.ते ३ विकलेंद्रिय वर्ज्या । पांचमे गुण० २ दंडक संज्ञिमनुष्य १ संज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ ॥ छठाथि ते चौदमा गुणठा० सुधि १ मनुष्यनो दंडक । इति २ दंडकद्वार समाप्तं ॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहेले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥ बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंद्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा जोनि ॥ पांचमे गुण० ॥१८ लाख जीवा जोनि.। छठाथि ते १४ मा गुणठाणासुधि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतरद्वार कहेछे । पहिले गुण० जघ० अंतरमुहूर्त्तउत्० ६६

सागर काजेरानुं अथवा १३२ सागर काजेरानुं ते ६७ सागर चोथे गुण० रहे ॥ अंत०बीजे गु०
रहि पाछो चोथे गुण० ६६ सागर रहि मिथ्यात्वे आवे ॥बीजाथि मांमिने इग्यारमा गुणठा-
णासुधि ज० अंत०अथवा पल्यनो असंख्यातमो नाग ते पटला काल विना उपसम श्रेणीकरि
ने पमे नहीं उत्० अर्द्धपुजल देशे ऊणुं । बारमे तेरमे ने चोदमे गुण० आंतरुं नथि । ए पक
जीवआश्रि इति ४ अंतरद्वार समाप्तं ॥४॥ हवे ५मो ध्यानद्वार कहेछे पहेले बिजे त्रिजे गुण०
२ ध्यान पहेला॥चोथे पांचमे गुण० ३ ध्यान पहेला ॥ छठे गुण० २ ध्यान आर्त १ ने धर्म ध्यान
॥२॥ सातमे गुण० १ धर्मध्यान० । आठमेथि मांमिने चौदमा गुण० १ शुक्लध्यान । इति ५
मो ध्यानद्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे । पहेलुं गुणठाणुं १४ राजलोक
स्पर्शे ॥ बिजुं गुण० हेठुं पंमगवनथि ते ६ ठि नरक लगे फरसे तथा उंचुं अधोगाम विजयथि
ते ८ग्रैवेयकसुधि फरसे ॥२॥ त्रिजुं गुण० लोकनो असंख्यातमो नाग फरसे॥३॥ चोथुं गुण०
अधोगाम विजयथि १२मा देवलोकसुधि फरसे अथवा पंमगवनथि छठी नरक सुधी फरसे ॥४॥
पांचमुं गुण० पण एमज अधोगाम विजयथि १२ मा देवलोक सुधि फरसे ॥ ५ ॥ छठाथि

ते इग्यारमा गुणठाणावाला अधोगाम विजयथि ५ अनुत्तर विमानसुधि फरसे ॥ बारमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे। तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे । चौदमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समाप्तं ॥ ६ ॥ हवे तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ॥ चोथे पांचमे छठे ने सातमे ॥ ए ४ गुणठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए ९ फरसे इति ७ मो द्वार समाप्तं ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ । ४ । ५ । ६ । १३ । ए ५ शास्वता । शेष ए गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समाप्तं ॥८॥ गुणठाणा १४ मा । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुणठाणा सुधि एकवज्रऋषभ नाराचसंघयण । इति ए मो द्वार समाप्तं ॥ ९ ॥ आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुद्धचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाक लब्धिवंत ॥ ४ ॥ अप्रमादि साधु ॥ ५ ॥ चौद पुर्वी साधु ॥ ६॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ नुं कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समाप्तं ॥१०॥ इति १० क्षेपक द्वार समाप्तं इति गुणठाणाद्वार समाप्तं॥

॥ अथ श्री महोटो वासठियो. ॥

गाथा ॥ जीव १ गइ २ इंदिय ३ काए ४ ॥ जोग ५ वेय ६ कसाय ७ लेस्सा ८ सम्मत्तं ९ नाण १० दंसण ११ संजय १२ उवओग १३ आहारे १४ ॥१॥ भासग १५ परित्त १६ पज्जत्ती १७ सुहुम १८ सन्नि १९ भवत्ति २० चरिमेय २१॥जीवेयपवेस बंधे । पुग्गलए महादंडएचेव ॥ २ ॥ उपली २ गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ समुच्चय जीवमां जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा ॥१४॥ जोग ॥१५॥ उपयोग ॥१२॥ लेश्या ॥६॥ इति प्रथम द्वार ॥ १ नरक गतिमां जीवना भेद ३ । संज्ञीनो अप्र० १ ने प्रजासो ॥ २ । असंज्ञी पहेली नरकनो अप्र० ।३॥ गुण० ४ प्रथम । जोग । ११ । ते ४ मनना ४ वचनना १ वैक्रेय । वैक्रेयनो मिश्र ।१। कार्मणकायजोग । एवं ११ । उपयोग॥९॥ ३ ज्ञान ।३। अज्ञान ३ दर्शन लेश्या ३ प्रथमनी

२ तिर्यंचनि गतिमां जीवना भेद १४॥ गुण० ५ ॥ प्रथमना ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ९ ॥३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

३ तिर्यंचणीमां जीवना भेद २ संज्ञीनो अप० ने पजात्तो गुण० ५ प्रथमना ॥जोग१३॥उप० ए॥ ज्ञान ३ अज्ञान३ दर्श० ३ ॥लेश्या ६

४ मनुष्यनि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप० ने पजात्तो ॥ २ ॥ समुर्छिम मनुष्य असंज्ञीनो अप०॥ ३॥ ए ३॥ गुण० १४। जोग० १५ ॥ उप० १२। लेश्या ६ ॥

५ मनुष्यणीमां जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० १४। जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेश्या ६ ॥

६ देवनानि गतिमां जीवना भेद ३ संज्ञीनो अप० १ ने पजात्तो २ असंज्ञीनो अप०३॥ गुण० ४ पहिला ॥ जोग ११।४ मनना ४ ॥ वचनना। २ वैक्रेयना ॥ १ कार्मणनो ॥ एवं ११ ॥ उप० ए लेश्या ६ ॥

७ देवांगनामां जीवना भेद २ संज्ञीनो अपजात्तो १॥ ने पजात्तो २॥ गुण० ४ प्रथमना॥ जोग ११। ४ मनना ४ वचनना ॥२ वैक्रेयना ने १ कार्मणनो ॥ एवं ११॥ उपयोग ए॥ लेश्या ४ प्रथमनी

८ सिद्धगतिमां जीवना भेद नथि॥ गुणठाणा नथि ॥जोग नथि॥उपयो० २ केवलज्ञान १॥ केवलदर्शन २। लेश्या नथि ॥ पदनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडि मनुष्य-

णी १ ॥ तेह थि मनुष्य समुर्छिम नेलवता असंख्यातगुणा२॥तेह थी नारकिअसंख्यातगुणा ३॥तेह थि तिर्यंचणी असंख्यातगुणि ४ ॥ तेह थि देवता असंख्यातगुणा५॥ तेह थिदेवीसंख्यातगुणि ६॥तेह थि सिद्धजगवंत अनंतगुणा ७ । तेह थि तिर्यंच वनस्पति नेलवतां अनंतगुणा ८ ॥ इति त्रिजो द्वार ॥

९ सइंदियामांजीवनाजेद १४ ॥ गुण० १२ प्रथमना ॥ जोग १५ उपयोग १०॥ केवलज्ञान१केवलदर्शन २ ए २ वर्जीने॥ लेश्या ६॥ एकेंद्रियमां जीवना जेद ४॥ सूक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजासो १ ने प्रजासो २॥ बादरएकेंद्रियनो अप्रजासो ३ ने प्रजासो ४ ॥ गुण० १ प्रथमतुं ॥ जोग ५ उदारिक १ उदारिकनो मिश्र २ वैक्रेय३वैक्रेयनो मिश्र ४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उपयोग ३ ॥ बे अज्ञान ने ॥ १ अचक्षु दर्शन॥ लेश्या ४॥

५ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ए ३ मां ॥जीवना जेद २ पोतपोतानो अप्रजासो१ ने प्रजासो २ ॥ गुण० २ पहेला । जोग४॥ २ उदारिकना ॥१ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्यवहार वचननो । एवं ४॥ उपयोग बेइंद्रिय तेइंद्रियमां ५ । २ ज्ञान ॥ २ अज्ञान ॥ ने ॥

१ अचक्षुदर्शन एवं ५॥ अने चउरिंद्रियमां
६ ते १ चक्षुदर्शन वध्युं एवं ६ ॥ लेशा३॥
६ पंचेंद्रियमां जीवना जेद ४ ॥ संज्ञिनो
अप्रजासो १ ने प्रजासो २ असंज्ञीनो
अप्रजासो ३ ने प्रजासो ४ एवं ४॥ गुण० १२
प्रथमना॥ जोग१५॥ उपयोग१० केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ ए २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥
७ अणिंदियामां जीवनोजेद १ संज्ञिनो प्रजा-
सो ॥ गुणठाणा २ तेरमुं ने चउदमुं ॥ जो-
ग ७ । २ मनना ते सत्य मन १ व्यव-
हार मन २ बे वचनना ते सत्यवचन
१ व्यवहारवचन २ एवं ४ ॥ अने उदा-
रिकनो ५ उदारिकनो मिश्र ६ कार्मण-
कायजोग ए ७ ॥ उपयोग २ ॥ केवलज्ञान
१ केवलदर्शन २ । लेशा १ शुक्ल ॥ एह-
नोअल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा पंचेंड्रिया
१ । तेहथिचउरिंड्रिया विशेषाहिया २
। तेहथि तेइंड्रिया विशेषाहिया ३ तेह-
थि बेइंड्रिया विशेषाहिया ४ । तेहथि
अणिंदिया अनंतगुणा ५ । तेहथि एकें-
ड्रिया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि सइंड्रिया
विशेषाहिया ७ ॥ इति त्रिजोद्वार समाप्त.
१ सकायामां जीवनाजेद १४ ॥ गुण० १४ ॥
जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ पृथ्वीकाय १ अपकाय २ वनस्पतिकाय ३ ॥ ए ३ मां जीवना नेद ४ । गुण० १ । जोग ३ ॥ उप० ३ । लेश्या ४ ॥

६ तेउकाय १ वाउकाय २ ॥ ए २ मां जीवना नेद ४ ४ गुण० १ ॥ जोग तेउमां ३ ने ॥ वाउमां ५ ने २ वैक्रियना वध्या ॥ उप० ३ ॥ लेश्या ३ ॥

७ त्रसकायमां जीवना नेद १० ते ४ एकेंद्रियना वर्ज्या ॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेश्या ६ ॥

८ अकायमां जीवना नेद नथि गुण० नथि । जोग नथि उप० २ लेश्या नथि ए-

ह्नो अल्प बहुत्व । सर्वथी थोमा त्रसकाया १ । तेहथि तेउकाया असंख्यातगुणा २ । तेहथि पृथ्वीकाया विशेषाधिया ३ ॥ तेहथि अपकाया विशेषाधिया ४ ॥ तेहथि वाउकाया विशेषाधिया ५ ॥ तेहथि अकाया अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि वनस्पतिकाया अनंतगुणा ७ ॥ तेहथि सकाया विशेषाधिया ८ ॥ इति चोथो द्वार ॥

१ सजोगीमां जीवना नेद १४ गुण० १३ उपरला वे नही ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेश्या ६ ॥

२ मनजोगीमां जीवनो भेद १ ॥ संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण० १३ जोग १४ एक कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ वचनजोगीमां जीवना भेद ॥ ५ ॥ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ३ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ संज्ञिपंचेंद्रिय ५ ए ५ ना प्रजाप्ता ॥ गुण० १३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

४ कायजोगीमां जीवनाभेद १४ ॥ गुण० १३॥ जोग १५ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

५ अजोगीमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुणठाणुं ॥१॥ चौदमुं ॥ जोग नहि । उपयोग २ केवल ज्ञान ने केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा मन जोगी १ ॥ तेहथि वचन जोगी असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि अजोगी अनंतगुणा ३ ॥ तेहथि कायजोगी अनंतगुणा ४॥ तेहथी सजोगी विशेषाहिया ५ ॥ इति पांचमो द्वार ॥

१ सवेदीमां जीवना भेद १४ गुण० ९ प्रथमना ॥ जोग १५।उ० १० केवलज्ञान ने केवलदर्शन ए बे वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मां ।जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ९ ॥ जोग

पुरुषवेदमां १५ ॥ अने स्त्रीवेदमां १३ ते आहारकना बे वर्जिने ॥ उप० १०॥लेशा ६
४ नपुंसकवेदमां जीवना भेद १४ । गुण० ९ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १ केवलदर्शनवर्जिने ॥ लेशा ६ ॥
५ अवेदीमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्रजाप्तो॥ गुण० ६ नवमाथि ते १४ मां सुधि ॥ जोग ११ ।॥ मनना ४ वचनना ने २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो एवं ॥११॥ उपयोग ९ । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा १ शुक्ल ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥सर्वथि थोडा पुरुषवेदी ॥१॥ तेहथि स्त्रीवेदी संख्यातगुणी २ ॥ तेहथि अवेदी अनंतगुणा३॥तेहथि नपुंसकवेदी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषाधिका ५ ॥ इति वेदो द्वार ॥

१ सकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १० प्रथमना ॥जोग १५॥ उपयोग १०॥ केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥
४ क्रोध १ मान २ माया ३ ए ३ मां जीवनाभेद १४ ॥ गुण ९ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥
५ लोभकषायीमां जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा १० पहेला ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा ६ ॥

दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

३ उपशम सम्यक्त्व दृष्टिमां जीवना भेद २ स

ज्ञीना ॥ गुण० ८ चोथाथि ११ मा सुधि

॥ जोग १५ उपयोग ७ ॥ ४ ज्ञान ॥ ३

दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

५ क्षयोपशम न वेदकसम्यक्त दृष्टिमां जीवना

भेद २ सज्ञीना ॥ गुण० क्षयोपशम सम्य

क्त दृष्टिमां ४ था नवमा सुधि॥ अने वेदकमा

४ था सातमा सुधि जोग १५ उप० ७ लेश्या ६

६ क्षायक सम्य० जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गु-

ण० ११॥ चोथाथि ते १४ मां सुधि॥ जोग १५

उपयोग ९ ॥३ अज्ञानवर्जिने॥ लेश्या ६ ॥

मिथ्यात्व दृष्टिमां जीवना भेद १४ गुण० १

प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥

उपयोग ६ । ३ अज्ञान॥३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

८ समामिथ्यात्व दृष्टिमां ॥ जीवनो भेद १

सज्ञि पंचेंद्रि पर्याप्ता ॥ गुण० १ त्रिजुं ॥ जोग १०।

४ मनना ॥ ४ वचनना १ उदारिकनो ॥ १

कार्मणनो । एवं १० ॥ उप० ६ लेश्या ६॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडासा-

स्वादान समकिति १ तेहथि उपसम सम-

किति संख्यातगुणा २॥ तेहथि मिश्रदृष्टी

संख्यातगुणा ३॥ तेहथि क्षयोपशम सम-

किति असंख्यातगुणा४॥तेहथि वेदकसम-

किति संख्यातगुणा ५॥ तेह थि मिश्रगुणठाणा-
किति अनंतगुणा ६॥ तेहथिं सासुणगठाणा-
किति विशेषाधिका ७ तेहथि मिथ्यात्व-
दृष्टि अनंतगुणा इति १९ मो द्वार ॥

१ समुच्चयज्ञानिमां जीवना भेद ६॥ बेइंद्रिय
१। ते इंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३। असंज्ञीपं-
चेंद्रिय ४॥ एहना अपर्याप्ता॥ ने पर्याप्ता॥
संज्ञी ६॥ गुण० १२ पहेलुं त्रीजुं वर्जिने ॥जोग
१५॥ उपयोग १२॥ ५ ज्ञान ने ४ दर्शन ॥ लेश्या ६

२ मतिज्ञानी १ श्रुतज्ञानीमां २ जीवना भेद
६॥ गुण० १० पहेलुं त्रीजुं तेरमुं चौदमुं
वर्जिने ॥ जोग १५॥ उप० ७॥ लेश्या ६॥

४ अवधिज्ञानीमां जीवना भेद २। संज्ञीना॥
गुण १०॥ जोग १५॥ उपयोग० ७ लेश्या० ६॥

५ मनःपर्यवज्ञानीमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो
पर्याप्तो ॥ गुण ७। छठाथि बारमासुधि ॥
जोग १४ कार्मणनो वर्जिने॥ उप० ७॥ लेश्या ६

६ केवलज्ञानीमां जीवनो भेद १ संज्ञिनो
पर्याप्तो ॥ गुण० २ तेरमुं ने १४ मुं ॥ जोग
७ ॥ उपयोग २॥ लेश्या १ परम शुक्ल ॥

७ अज्ञानीमां जीवना भेद १४। गुण २ पहेलुं
ने त्रीजुं॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने॥
उप० ६। ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेश्या ६॥

८ मतिश्रुत अज्ञानीमां जीवना भेद १४ ॥

उप०ए । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेश्या० १ ॥

७ संजतासंजतिमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्र०गुण० १ पांचमुं॥ जोग १२ आहारकना २ ने १ कार्मणनो वर्जिने॥ उपयोग ६ । ३ ज्ञाने । ३ दर्शन । लेश्या ६ ॥

८ असंजतिमां जीवना भेद १४ । गुण० ४ प्रथमना ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप०ए । ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

ए नोसंजतिनोअसंजतिनोसंजतासंजतिमां जीवनो भेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथि॥ ने । उप० २ ॥ लेश्या नथि॥ एह नो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा सुक्ष्म संपरायचारित्रिया १ ॥ तेहथि परिहारविशुद्धचारित्रिया संख्यात गुणा २॥ तेहथि यथाख्यातचारित्रिया संख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारित्रिया संख्यातगुणा ४॥ तेहथि सामायकचारित्रिया संख्यातगुणा ५॥ तेहथि संजति विशेषाहिया ६ ॥ तेहथि संजतासंजति असंख्यातगुणा ७ ॥ तेहथि नोसंजति ॥ नोअसंजति नोसंजतासंजति ॥ अनंत गुणा ८ ॥ तेहथि असंजति वनस्पति नेळवतां अनंतगुणाए॥इति १२ मो द्वार

१ सागारोवउत्तामां जीवना भेद १४। गुण० १४। जोग १५। उप० १२। लेश्या ६

२ अणागारोवउत्तामां जीवना भेद १४॥ गुण० १३ दशमुं वर्जिने॥ जोग १५॥ उप० १२॥ लेश्या ६॥ एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोडा अणागारोवउत्ता १॥ तेहथि सागारोवउत्ता संख्यातगुणा २ इति १३ मो द्वार॥

१ आहारकमां जीवना भेद १४॥ गुण० १३ पहेला॥ जोग १४ कार्मणनो वर्जिने॥ उप० १२॥ लेश्या० ६॥

२ अणाहारकमां॥ जीवना भेद ८॥ सात

...

८॥ गुण० ५ पहिलुं बिजुं चोथुं तेरमुं ने चोदमुं ए ५॥ जोग १ कार्मणनो॥ उपयोग १०॥ मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षु दर्शन २ ए २ वर्जिने॥ लेश्या ६॥ एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोडा अणाहारक १॥ तेहथि आहारक असंख्यातगुणा २॥ इति १४ मो द्वार॥

१ त्रसमां जीवना भेद ५॥ बेइंद्रिय १। तेइंद्रिय २। चउरिंद्रिय ३। असंज्ञीपंचेंद्रिय ४। संज्ञीपंचेंद्रिय ५। ए ५ ना प्रजासा॥ गुण० १३ प्रथमना॥ जोग १४ कार्म-

णनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

२ अनासकामां जीवना जेद १० ॥ ते १४ मांथि। वेइंड्रिय १ तेइंड्रिय २ चउरिंड्रिय ३ असंज्ञी पंचेंड्रिय ४ ए ४ वर्ज्या ॥ गुण० ५ ते पहिलुं १ बिजुं २ चोथुं ३ तेरमुं ४ चौदमुं ५ ॥ ए ५ ॥ जोग ५॥ २ उदारिकना २ वैक्रेयना । ने । १ । कार्मणनो ॥ उप० । ११ ते ॥ मनपर्यवज्ञान नहि ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा जासका १ ॥ तेहथि अजासका अनंतगुणा २ ॥ इति १५ मो द्वार ॥

१ परीत संसारिमां जीवना जेद १४॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६

२ अपरीत संसारीमां जीवना जेद १४ ॥ गुण० १ ॥ पहलुं। जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ अज्ञान ३ ॥ दर्शन ३ ॥ लेशा ६ ॥

३ नोपरितनो अपरीतमां जीधना जेद नथी गुण० नथी॥ जोग नथि ॥ उप० २ केवलज्ञान केवलदर्शन ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोमा परीत १ ॥ तेहथि नोपरीतनो अपरीत अनंत गुणा २ ॥ तेहथि ॥ अपरीत अ-

नंतगुणा ३ ॥ इति १६ मो द्वार ॥

१ प्रजातामां जीवना नेद ७ ॥ गुण० १४॥ जोग १५ । उप० १२ । लेशा । ६ ॥

२ अप्रजातामां जीवनानेद ७ ॥ गुण० ३। ते । पहेलुं ॥ बिजुं । ने चोथुं ॥ जोग ५ ॥ ते । २ उदारिकना ॥ २ वैक्रियना ने १ ॥ कार्मणनो ॥ उप० ए ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ एवं ए ॥ लेशा६॥

३ नोप्रजाता नोअप्रजातामां । जीवना नेद नथी॥ गुण० नथी ॥ जोग नथी। उप० २ केवलज्ञाननें केवलदर्शन॥ लेशा नथि ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमानो प्रजातानो अप्रजाता १ ॥ तेहथि अप्रजाता अनंतगुणा २ ॥ तेहथि प्रजाता संख्यात गुणा ३ ॥ इति १७ मो द्वार ॥

१ सुक्ष्ममां जीवना नेद २ ॥ सुक्ष्म एकेंद्रियनो अप्रजातो १ ने प्रजातो २ ॥ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग ३ बे उदारिकना ने । १ । कार्मणनो । उप० ३ बे अज्ञान ॥१॥ अचक्षुदर्शन ॥ ए ३ ॥ लेशा३॥

२ बादरमां जीवना नेद १२ ॥ ते २ सुक्ष्म नावर्ज्या । गुण० १४। जोग १५ ॥ उप० योग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ नोसुक्ष्मनोबादरमां जीवना नेद नथी ॥

गुण० नथी जोग० नथि॥ उप० २॥ लेशा नथी॥ एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोमा-नो सुक्ष्मनोबादर १॥ तेहथी बादर अनंतगुणा २॥ तेहथिसुक्ष्म असंख्यातगुणा ३॥ इति १७ मो द्वार॥

१ संज्ञीमां जीवना जेद २॥ गुण० १२ पहेला॥ जोग १५॥ उप० १० केवलना २ वर्ज्यां॥ लेशा ६॥

२ असंज्ञीमां जीवना जेद १२ ते २ संज्ञीना वर्ज्यां॥ गुण० २ प्रथमना॥ जोग ६। २ उदारिकना॥ २ वैक्रियना॥ १ कार्मणनो॥ १॥ व्यवहारवचननो॥ एवं ६। २ उपयोग ६॥ ज्ञान॥ २ अज्ञान॥ २ दर्शन॥ एवं ६॥ लेशा ४ प्रथमनी॥

३ नोसंज्ञीनोअसंज्ञीमां जीवनो जेद १॥ संज्ञीनोप्रजासो॥ गुण० २ तेरमुं चौदमुं॥ जोग ७॥ उपयोग २॥ लेशा १ परम शुक्र॥ एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोमा संज्ञी १॥ तेहथी नोसंज्ञीनोअसंज्ञी अनंत गुणा २॥ तेहथि असंज्ञी अनंत गुणा ३॥ इति १९ मो द्वार॥

१ जव्यमां जीवनाजेद १४। गुण० १४॥ जोग॥ १५॥ उप० १२। लेशा ६॥

२ अनव्यमां जीवना नेद १४ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ लेशा० ६ ॥

३ नोनव्यनोअनव्यमां जीवना नेद नथी ॥ गुण० नथी ॥ जोग नथि ॥ उपयोग २ । लेशा नथि ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अनव्य १ ॥ तेहथि नोनव्यनोअनव्य अनंतगुणा २ ॥ तेहथि नव्य अनंतगुणा ३ ॥ इति २० मो द्वार ॥

१ चरममां जीवना नेद १४ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ । लेशा ६ ॥

२ अचरममां जीवना नेद १४ ॥ गुण० १ प्रथमनुं ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ए ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अचरम १ ॥ तेहथि चरम अनंत गुणा २ ॥ इति २१ मो द्वार ॥

१ समुच्चयकेवलीमां जीवना नेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ११ ॥ उपल्या ॥ जोग १२ ॥ उप० ए । ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ वीतरागिमां जीवनो नेद १ ॥ गुण० ४ उपल्या जोग ११ ॥ उप० ए ॥लेशा १ ॥

३ जुगलियामां जिवना जेद २। संज्ञीना॥ गुण० २ पहेलुं ने चोथुं ॥ जोग ११ ते। ४ मनना । ४ वचना । २ उदारिकना । १ कार्मणनो ॥ एवं ११ ॥ उप० ६ बे ज्ञान । बे अज्ञान । बे दर्शन । एवं ६ ॥ लेशा ४ प्रथमनी ॥

४ असंज्ञीतिर्यंच पंचेंड्रियमां जीवना जेद २। गुण० २ प्रथमना ॥ जोग ४ ते ॥ २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो । ने १ व्यवहार वचमनो ॥ एवं ४ ॥ उपयोग ६ ते २ ज्ञान । २ अज्ञान । २ दर्शन ॥ एवं ६ ॥ लेशा ३ प्रथमनी ॥

५ समुर्छिम मनुष्यमां जीवनो जेद १ अप० ॥ गुण० १ पहेलुं ॥ जोग ३ । ते ॥ २ उदारिकना । ने । १ कार्मणनो ॥ एवं ३॥ उपयोग ३ । ते बे अज्ञान। ने १ अचक्षुदर्शन । एवं ३ ॥ लेशा ३ प्रथमनी ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथिथोमा जुगलीया १ ॥ तेहथि समुर्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि असंज्ञी तिर्यंच पंचेंड्रिया असंख्यातगुणा तेहथि वीतरागी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि समुच्चय केवली विशेषाधिया ५ ॥ द्वार २२

१ उदारिकशरिरमां जीवना जेद १४ ॥

गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥
लेश्या ६ ॥

२ वैक्रियशरिरमां जीवना भेद ४ ॥ ते ॥ २ संज्ञीना । ने । १ असंज्ञी तिर्यंचनो अप्रजाप्तो । अने । १ बादर वाउकायनो प्रजाप्तो । एवं ॥४॥ गुण०७ प्रथमना जोग १२ । ते । २ आहारकना ने १ । कार्मणनो । ए ३ वर्ज्या ॥ उप० १० ते २ केवलना वर्ज्या ॥ लेश्या ६ ॥

३ आहारकशरिरमां जीवनो भेद १ संज्ञीनो प्रजाप्तो ॥ गुण० २ छठुं ने सातमुं ॥ जोग १२ ते । २ वैक्रियना । ने । १ कार्मणनो । ए ३ वर्ज्या ॥ उप० ७ ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ लेश्या ६ ॥

५ तेजसकार्मणशरिरमां जीवना भेद १४ ॥ गुण० १४ ॥ जोग ॥ १५ उपयोग १२ ॥ लेश्या ॥ ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा आहारकशरीरि १ ॥ तेहथि वैक्रिय शरीरि असंख्यातगुणा २ ॥ तेहथि उदारिक शरीरि असंख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि तेजस कार्मण शरीरि मांहोमांहि तुल्य ने अनंतगुणा ५ ॥

॥ इति मह्रोटो वासठियो समाप्तं ॥

॥ अथ श्री अठाणुं बोलनो बासठियो. ॥

१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी संख्यातगुणी
३ बादर तेउकाया पजात्ता असं०
४ अनुत्तर विमानना देवता असं०
५ उपली त्रिकना देवता संख्यातगुणा
६ मझमत्रिकना देवता संख्यातगुणा
७ नीचली त्रिकना देवता संख्यातगुणा
८ बारमा देवलोकना देवता सं०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता सं०
१० दसमा देवलोकना देवता सं०
११ नवमा देवलोकना देवता सं०
१२ सातमी नरकना नारकी असंख्यात०
१३ छठी नरकना नारकी असंख्यात०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पांचमी नरकना नारकी असंख्यात०
१७ छठा देवलोकना देवता असं०
१८ चोथी नरकना नारकी असं०
१९ पांचमा देवलोकना देवता असं०
२० त्रिजी नरकना नारकी असं०

२१ चोथा देवलोकना देवता असं०
२२ त्रिजा देवलोकना देवता असं०
२३ बीजी नरकनां नारकी असं०
२४ सम्मुर्छिम मनुष्य असंख्यातगुणा०
२५ बीजा देवलोकना देवता असं०
२६ बीजा देवलोकनी देवी संख्यात०
२७ पहेला देवलोकना देवता संख्यात०
२८ पहेला देवलोकनी देवी संख्यात०
२९ भवनपति देवता असंख्यातगुणा
३० भवनपतिनी देवी संख्यातगुणी
३१ पहेली नरकना नारकी असं०
३२ खेचर पुरुष असंख्यातगुणा

३३ खेचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३४ थलचर पुरुष संख्यातगुणा
३५ थलचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३६ जलचर पुरुष संख्यातगुणा
३७ जलचरनी स्त्री संख्यातगुणी
३८ व्यंतर देवता संख्यातगुणा
३९ व्यंतरनी देवी संख्यातगुणी
४० जोतिषी देवता संख्यातगुणा
४१ जोतिषीनी देवी संख्यातगुणी
४२ खेचर नपुंसक संख्यातगुणा
४३ थलचर नपुंसक संख्यातगुणा
४४ जलचर नपुंसक संख्यातगुणा

४४ चउरिंद्रिय प्रजाप्ता संख्यातगुणा
४६ पंचेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४७ तेंद्रिय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४८ बेंद्रीय प्रजाप्ता विसेषाहीया
४९ पंचेंद्रीय अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
५० चउरिंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५१ तेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५२ बेंद्रीय अप्रजाप्ता विसेषाहीया
५३ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति प्रजा-
मा असंख्यातगुणा
५४ बादर निगोदीया प्रजाप्ता असं०
५५ बादर पृथ्वी काया प्रजाप्ता अ०
५६ बादर अपकाया प्रजाप्ता असं०
५७ बादर वाउकाया प्रजाप्ता असं०
५८ बादर तेउ काया अप्रजाप्ता अ०
५९ बादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति०
अप्रजाप्ता असंख्यातगुणा
६० बादर निगोदीया अप्रजाप्ता अ०
६१ बादर पृथ्वी अप्रजाप्ता असं०
६२ बादर अपकाया अप्रजाप्ता अ०
६३ बादर वाउकाया अप्रजाप्ता असं०
६४ सुक्ष्म तेउकाया अप्रजाप्ता असं०
६५ सुक्ष्म पृथ्वी अप्रजाप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अपकाया अप्रजाप्ता विसेषा०

६७ सुक्ष्म वाउकाया अप्रजाप्ता विसेषाहीं०
६८ सुक्ष्म तेउकाया प्रजाप्ता संख्यातगुणा०
६९ सुक्ष्म पृथ्वीकाया प्रजाप्ता विसेषाही०
७० सुक्ष्म अपकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७१ सुक्ष्म वाउकाया पर्याप्ता विसेषाहीया
७२ सुक्ष्म निगोदीया अपर्याप्ता अ०
७३ सुक्ष्म निगोदीया प्रजाप्ता सं०
७४ अभव्य अनंतगुणा
७५ पडिवाइ समद्रष्टी अनंतगुणा
७६ सिद्धभगवंतजी अनंतगुणा
७७ बादर वनस्पति प्रजाप्ता अनंत०
७८ बादर प्रजाप्ता विसेषाहीया

७९ बादर वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८० बादर अप्रजाप्ता विसेषाहीया
८१ समुचय बादर विसेषाहीया
८२ सुक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषाहीया
८४ सुक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुचय सुक्ष्म विसेषाहिया
८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वनस्पति जीव विसेषाहीया
९० एकेंद्रीया जीव विसेषाहीया

ए१ तिर्यंच जीव विसेपाहीया	ए५ छद्मस्त जीव विसेपाहीया
ए२ मिथ्यादृष्टी जीव वीसेपाहीया	ए६ सजोगी जीव विसेपाहीया
ए३ अवरति जीव विसेपाहीया	ए७ संसारीक जीव विसेपाहीया
ए४ सकसाया जीव वीसेपाहीया	ए८ सर्व जीव विसेपाहीया

॥ इतिश्री अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छ आराना बोल. ॥

दसकोडा कोडि सागरोपमना छआरा जाणवा । तेहमां पहेलो आरो ॥ ४ ॥ कोडाकोडि सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सुसम सुसमनामा जाणवो । एकलुं सुखमां सुख जाणवुं ॥ ए आराने विषे ३ गाउनुं देहमान । अने ३ पल्योपमनुं आउखुं । उत्तरते आरे २ गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥ ए आरे बसे छपन पांसली। उतरते आरे एकसो अठाविस पांसली जाणवी ॥ ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र ऋषभ-

नाराच संघयण ने ॥ १ ॥ समचउरंस संठाण जाणवुं ॥ स्त्री पुरुषना रूप सौनाग्य । घणा । हिये । ए आराने विषे अठम नक्ते आहारनी इछा उपजे । तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनो सरसाइ साकर सरखी जाणवी । उतरते आरे खांम सरखि जाणवि । ए आराने विषे ॥ १० ॥ दश प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पहोंचाडे । ते कल्पवृक्षनां नाम गाथा । कहे छे मतं गायभिंगा तुडियंगा । दिव जोइ चित्तगा । चित्तरसा मणवेगा । गिहगारा अणियगणाउ ॥ १ ॥ ए गाथा सूत्र पाठे कही तेनो अर्थ कहे छे ॥ मतंगाय कहेता । मिठा मधुरा रसना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ १ ॥ भिंगा कहेता । रत्नजडाव नाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥ तुडियंगा कहेता ॥ ४९ ॥ उंगणपचास जातिनां वाजित्रना । क० थ० ॥ ३ ॥ दिव कहेता । रत्नजडाव दीवीउंना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता । सूर्यनी जोतिना क० ॥ ५ ॥ चित्तगा कहेता । चिंतामणसहित फूलनो माळाना क० ॥ ६ ॥ चित्तरसा क० चितने गमे तेवा रसवति नोजनना । क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नजडाव आनरणना । क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क० । बेतालीस नोमिया अवासना । क० ॥ ९ ॥ अनिय-

गणाठं क० ॥ रत्नजमाव नाकने वायरेतमें एहवा वस्त्रना। क० १०। ए १०। प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख आपे। ए आराने विषे ठेक थाकता जुगलना आउखा आमा ६ मास रहे। तेवारे जुगल परजवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जुगलीणी एक जोमलुं प्रसवे। ते ठोरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे। जुगलजुगलीणी ने क्षण मात्रनो विजोग न पमे। एकने ठीक ने एकने बगासुं आवे मरिने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। गति तो १ देवनी जाणवी॥ ए आराने विषे जुगलीया ने वेर विरोध इर्षा ऊेहेर नही॥इति पहेलो आरो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे पहेलो आरो उतरीने। बीजो आरो बेठो। तेवारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव ॥ अनंता अनंता हीणा थया। ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो। सूसमनामे जाणवो। एकलुं सुख जाणवुं। ए आराने विषे २ बे गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखुं। उतरते आरे ॥ १ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनुं आउखुं। ए आराने विषे वज्ररूषज्ञ नाराच संघयण ॥ समचउरंस संठाण ॥ ए आरे ॥ १२०॥ एकसो अगावीस पांसली॥ उतरते आरे ६४ पासली जाणवि। ए आरे ठठ जत्ते आहारनी इंग्रा उपजे॥

तेवारे शरीरप्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाई खांड सरखि । उतरते आरे गोल सरखि
जाणवी। ए. आरे १० प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सुख पोचाडे ।तेक थाकतां।जूगलना आउखा
आडा ॥ ७ मास रहे। तेवारे जुगल परभवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोडलुं
प्रसवे। तेहनी प्रतिपालण ॥६४ दिन करे। जुगल जुगलीणीने। क्षण मात्रनो विजोग न पडे।
एकने छींक ने एकने बगासूं आवे। मरिने देवता थाय। एना शरीरनुं निहरण देवता करे॥
गति १ देवतानि जाणवि। इति बिजो आरो संपूर्ण ॥हवे बीजो आरो उतरीने। त्रिजो आरो
बेठो तिवारे। अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यव अनंताहीणा थया। ए. आरो ॥ बे कोडाकोड
सागरोपमनो जाणवो। ए. आरो सूखम दुखम नामा जाणवो। सुख घणुं ने दुख थोडुं
जाणवुं ॥ ए. आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ एक पल्योपमनुं आउखुं जाणवुं ॥
उत्तरते आरे ५०० पांचसें धनुषनुं देहमान ने कोड पूर्वनुं आउखुं जाणवुं। ए. आराने विषे
वज्रऋषभनाराच संघयण। ने समचउरंस संठाण जाणवुं। ए. आराने विषे ॥ ६४ चोसठ
पांसली जाणवी। उत्तरते आरे ३२ बत्रिस पांसली जाणवि। ए. आराने विषे चौथ भक्ते

आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे। धरतिनि सरसाइ गोल सरखि जाणवि ॥ उतरते आरे थोडेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछीत सूख पहोंचाडे। ठेक थाकतां जूगलना आउखा आमा ठ मास रहे। तेवारे जूगल परजवनुं आउखुं बांधे। तेवारे जूगलिणी एक जोमडुं प्रसवे ॥ ते ठोरनी प्रतिपालणा ७९ दिन करे। जूगल जूगलिणीने क्षणमात्रनो विजोग न पडे। एकने छीक ने एकने बगासूं आवे तेवारे मरीने देवता थाय। एहना शरीरनो निहरण देवता करे। ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो। ए आराने विषे। जरा रोग कुरूप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपांग विषय सुख भोगवे ते दान पुन्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे ठेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना बाकी रह्या। तेवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी तेत्रीस सागरोपमनुं आउखुं भोगवीने चविने। वनिता नगरी। नाभी कुलगर राजापिता। मरुदेवी मातानी कुंखे रूषभ देवस्वामी उपना। सवानव मासे जन्म्या ॥ प्रथम रूषभनुं स्वप्न देखि रूषभदेव नाम दिधुं। ऋषभदेव स्वामीये जूगला धर्म निवारीने। असि मसि कसि

आदि देईने ७२ बोतेर कला सिखवि । अनुकंपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे कुवरपणे रह्या ॥ ६३ त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य जोगव्युं । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पुरुष संघाते संजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे संजम पाल्यो ॥ केवल पामिने । अष्टापद पर्वत उपरे । पद्मासने वेसीने । दसहजार साधु संघाते स्वामि निर्वाण पधार्यां । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा नक्षत्रमां सर्वार्थसिध विमान थकी चविने माताने कुंखे उपना ॥ १ ॥ बीजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० संजम लिधो ॥ ४ ॥ पांचमे क० उ० केवलज्ञान उपनुं ॥ ५ ॥ ए. ५ ने ६ ठुं क० अभीच नक्षत्रमां मोक्ष पधार्यां । ए ६ ॥ ए. आराने विषे गति पांच जाणवि मोक्षथी । इति त्रीजो आरो संपूर्ण ॥३॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो । तेथारे अनंता वर्ण गंध रस स्फर्सना पर्यवहीणा थया । ए. आरो १ कोडाकोड सागरोपममां बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो । ए. आरो दुसम सूसम नामे जाणवो । दुख घणुं ने सूख थोडुं जाणवुं । ए. आराने विषे ५०० पांचसे धनुषनुं देहमान ने । क्रोड पूर्वनुं आउखुं ॥ उतरते

आरे सात हाथनुं देहमान ने. सो वर्ष झाझेरानुं आउखुं ॥ ए आराने विषे ठ संघयण ने ६ संठाण जाणवा। ए आराने विषे ३२ वत्रिस पांसलि उतरते आरे १६ सोल पांसली जाणवी। ए आराने विषे दिन दिन प्रते आहारनि इठा उपजे। तेवारे ३२ कवळनो आहार करे। धरतिनि सरसाइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि। ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्ष ने साडाआठ महिना बाकी रह्या॥ तेवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनुं आवखूं नोगविने चविने। माहणकुंम गाम नगरने विषे। ऋषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे। महाविरस्वामी उपना ॥ तिहां स्वामी सात्यासी रात रह्या। त्यासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो। तेवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने नीचुक कुले उपना दीठा अनंते काले अठेरु थयुं। तेवारे हरण गमेषी देवताने कह्युं। जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो। साहरीने क्षत्रीकुंम गाम नगरने विषे। सिद्धार्थ राजाने घेर। त्रिसला देवी क्षत्रियाणीनी कुंखे मुको। अने त्रिसलादेवि राणीनी कुंखे। पुत्रिपणे गर्भ ठे ते देवानंदाजीनी कुंखे मुको ॥ तेवारे हरणगमेषी देवता तहतप्रमाण करी। तेज वेलाए आव्यो। आविने जग-

वंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्युं जे स्वामी रुडुं जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरूं छुं । तेवारे माता देवानंदाजीने अवस्वापिनी निद्रा मुकिने नाखिथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्यां तिहां स्वामि सर्व थईने सवानव मासे जन्म्या । त्रिस वर्ष घरमां रह्या । एकाकी पणे संयम लिधो । संयम लेईने साडाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधि । आकरा तप जप ज्ञान ध्यान करिने । स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन पाम्या । बहोंतर वर्षनुं आउखुं भोगविने । चोथा आराना ३ वर्ष ने साडा आठ महिना बाकी रह्या । तेवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना छ कल्याणिक थया । तेमां ५ कल्याणिक तो उतराफाल्गुनी नक्षत्रमां थया । ते च्यवण क० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पांचने । स्वांति नक्षत्रमां निर्वाण पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनुं । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्ज्या पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वखाण सुधर्मास्वामिने केवल ज्ञान उपनुं । ते ॥ ८ आठ वर्ष सुधि केवल

प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या। तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनुं ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्ष सूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या। महाविरस्वामि पठी। न्नर्त-क्षेत्रमां ॥ ६४ चोसठ वर्ष सुधि केवल ज्ञान रह्युं। चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पांचमा आरामां मोक्ष जाय। पांचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामां मोक्ष जाय नही। जंबुस्वामि मोक्ष पहोंता पठी॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया ते। परम अवधि ज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यव ज्ञान॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ परिहारविसुध चारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्म संपराय चारित्र ॥५॥ जथाख्यात चारित्र ॥६॥ पूलाक लब्धी ॥ ७ ॥ क्षायक समकीत ॥ ८ ॥ आहरक शरिर ॥९॥ जिनकल्पी साधु ॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोल इति चोथो आरो संपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पांचमो आरो वेठो। तेवारे अनंता वर्ण गंध रस फर्सना पर्यव हीणा थया। ए आरो दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं। ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो। ए आराने विषे। ७ हाथनुं देह मान ने १ सो वर्ष जाजेरानुं आउखुं। उतरते आरे ॥ १ ॥ हाथनुं देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आराने विषे ॥ ६ ॥ संघयण ने। ७ संठाण जाणवा।

उतरते आरे १ छेवट्ठं संघयण ने ॥ १ ॥ हुंक संठाण जाणवुं । ए आराने विषे ॥ १६ ॥
उतरते आरे १ ठेवट्ठं संघयण ने ॥ १ ॥ हुंक संठाण जाणवुं । ए आराने विषे । दिन दिन लोक पांसळी ॥ उतरते आरे ॥ ८ आठ पांसळिजाणवि । ए आराने विषे । दिन दिन प्रतें आहारनि इछा उपजे । तेवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ । कांइक सारिं जाणवि । उतरते आरे कुंभारना निंभाडानी ठार सरखि जाणवी । हवे पांचमा आरानां लक्षण ३२ कहेछे मोटा नगर ते गामडा सरिखा थाशे ॥ १ ॥ गाम ते मसाण सरिखा थासे ॥ २ ॥ जला कुलनां ठाकुर ते दास दासीपणा करशे ॥ ३ ॥ प्रधान ते लालचि थाशे ॥ ४ ॥ राजा ते जम कंकर सरिखा थाशे ॥ ५ ॥ जला कुलनी स्त्री ते लज्जा रहित थाशे ॥ ६ ॥ जला कुलनी स्त्री वेस्या सरिखि थाशे ॥ ७ ॥ पोताना पुत्र पोताने छांदे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद बोलशे ॥ ९ ॥ दुर्जन लोक सुखि थाशे ॥ १० ॥ सज्जन लोक दुखि थाशे ॥ ११ ॥ दुर्भिक्ष दुकाल घणा पडशे ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादिकनी दाढ घणी थाशे ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थाशे ॥ १४ ॥ हिंसा धर्मना परूपक घणा थाशे ॥ १५ ॥ एक धर्मनां घणा भेद थाशे ॥ १६ ॥ मिथ्याति देवता घणा पूजाशे ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थाशे ॥ १८ ॥ माणसने देवदर्शन दुर्ल-

न थाशे ॥ १९ ॥ विद्याधरनी विद्याना प्रज्ञाव थोमा थाशे ॥ २० ॥ गो रस दुध दहिमां सरसाइ थोमी हरशे ॥ २१ ॥ वलद प्रमुखनां वल आउखा थोमां थाशे ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मांस कल्प तथा चोमासां कर्यां जेवां खेत्र थोमां थाशे ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पमिमा ॥ साधुनी १२ पमिमा विछेद जाशे ॥ २४ ॥ गुरु शिष्यने जणावशे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहकारी थाशे ॥ २६ ॥ अधर्मकारि जगमाकारी कुमाणस घणा थाशे ॥ सुमांणस थोमा थाशे ॥ २७ ॥ आचार्य आप आपणा गछनी परंपरा सामाचारि जूदि जूदि प्रवर्तावसे । तथा मूढ मूर्ख जनने मोहने मिथ्यात्व पासमां पामशे ॥ उत् सूत्र जांखशे आप आपणी प्रसंसामां राचसे निंदक कुबुद्धि होशे ॥ २८ ॥ सरल जद्रिक न्याइ प्रमाणिक माणस थोमा थाशे ॥ २९ ॥ म्लेछनां राज घणा थाशे ॥ ३० ॥ हिंदु राजा अल्प रुधिया थोमा थाशे ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना राजा थाशे ते निच काम करशे । अन्याय अधर्म कुविसनमां घणा राचसे ॥ ३२ ए ॥ ३२ ॥ लक्षण जाणवां । ए आराने विषे धातु सर्वे विछेद जाशे । लोढानी धातु रहेशे चामडानी मोहरो चालशे । जेने घेर सवाशेर कांसु रहेशे ते धनवंत कहेवाशे

। ५ आराने छेहे॥ १ एक उपवास करशे ते मास खमण सरिखो थाशे॥ ५ आराने छेहे ज्ञान
तथा सूत्र सर्व विछेद जाशे। तेमां दसवैकालिकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला उद्देशे । ते उपर
॥४॥ जीव एका अवतारि थाशे। तेनां नाम। दुप्पसह नामा साधु ॥ १ ॥ फल्गुश्री नामा साध्वि
॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका ॥ ४ ॥ ते आषाढ सुद १५ पुनमने दिने
शक्रेन्द्रनुं आसन चलसे। तेवारे शक्रेन्द्र उपयोग मुकि जोसे जे आज पांचमो आरो उतरीने
काले छठो आरो बेससे। तेवारे शक्रेन्द्र आवशे। ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे काले छठो
आरो बेससे । माटे आलवो पडिकमो निसल्यथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने
संथारो करशे। ते वारे संवर्तक वायरो थाशे। तेणे करिने पहाड। पर्वत। गढ कोठा वाव
कुवा सरोवर सर्व सीसराल थाशे॥ वैताढ पर्वत १ गंगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवण समुद्र
निगराई। ५ ५ वर्जिने शेष सर्व स्थानक सुटी पडशे॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने
सुधर्मा देवलोकमां जाशे तेवारे ४ बोल विछेद जाशे पेहले पोहरे। जैन धर्म विछेद जसे ॥ १ ॥ बीजे
पोहरे ॥ ३६३ ॥ पाखंडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जाशे ॥ २ ॥ त्रीजे पोहरे राज नीति

[illegible] जाणवो।
[illegible]
[illegible]
[illegible] जाणवो [illegible]
[illegible]
[illegible] जाणवो। ॥ ए
[illegible] घणा
[illegible] ए आरानें विषे गंगा सिंधु
[illegible] ॥ तेमां [illegible] ते । तेमां मनुष्य त्रीयंच पंखी बीज
मात्र रहेशे ॥ गंगा सिंधुना मार्गावासत जोजननो पट ले ॥ तेमां रथना चिला प्रमाणे
पहोलुं ने गाडाने धुरि बुडे एटलुं उंडुं पाणि रहेशे । तेहमां मच्छ कच्छ घणा थाशे । ते

उर बीलनां मनुष्य सांझे ने प्रभाते । मत्र कत्र काढीने वेलुमां नारसे । सूर्य घणां तपसे टाढ घणी पडशे। तेणे करी सीक थाइ रहेशे। तहनो आहार करशे। तेना हाडका चांमडा तिर्यंच चाटीने रहेशे ॥ मानवीना माथानि तुंबडीमां पाणी लाविने पिशे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पुरा करसे। पांचमा आराना प्राणी नवकार रहित समकित रहित व्रत पच्चखाण रहित हशे ते एहवा छठा आराने विषे आविने अवतरशे । माटे एहवुं जाणिने जे जीव जैन धर्म करशे ते जीव सुखी थाशे ॥ इति छ आराना बोल संपुर्ण ॥

॥ अथ श्री चोविस जिनांतरा. ॥

अढार कोडाकोडि सागरने आंतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया ॥ विनिता नगरीने विषे ॥ नाभी राजा पिता । मरुदेवा राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ वृषभ लंछन । पांचसें धनुषनुं देहमान । चोरासी लाख पूर्वनुं आउखुं ॥ वीस लाख पूर्व कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ।

प्रवर्ज्या लीधा पछि एक हजार वरसे। केवल ज्ञान उपनुं। साधु। साधवी। श्रावक। श्रावीकारूप। चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादशांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ त्रीजा आराना। त्रण वरसने साडाआठ महिना। ठेक थाकता बाकी रह्या ॥ तेवारे महा वद तेरसने दहाडे। दस हजार साधु संघाते अष्टापद पर्वत उपर स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥१॥ पहेला श्री आदीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि। पचास लाख कोडि सागरने आंतरे ॥ बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया। अयोध्या नगरीने विषे। जीत सत्रुराजा पिता ॥ विजयादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ गज कहेतां हस्तिनुं लंछन ॥ साडाचारसें धनुषनुं देहमान ॥ बहोतेर लाख पूर्वनुं आउखुं ॥ तेमां अढार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। त्रेपन लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बार वरसे केवल-ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने। द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पहोंता ॥ २ ॥ हवे बीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछि ॥ त्रीस लाख कोडि सागरने आंतरे। त्रीजा संभव-

नाथ तिर्थंकर थया ॥ सावथी नगरीने विषे जीतार्थ राजा पिता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्ण ॥ अस्व कहेतां घोडानुं लंछन । चारसें धनुषनुं देहमान । साठ लाख पूर्वनुं आयुष्य पनर लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । चुमालीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवज्या लीधा पछि । चौद वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा संभवनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछि । दस लाख कोडि सागरोपमने आंतरे । चोथा अभीनंदन तिर्थंकर थया । विनीता नगरीनेविषे । संवर राजा पिता । सीधार्था राणी माता । हेमवर्ण ॥ वानरनुं लंछन । साडा त्रणसें धनुषनुं देहमान । पचास लाख पूर्वनुं आयुष्य ॥ तेमां साडा बार लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । साडी छत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवज्यां पाली ॥ प्रवज्यां लीधा पछि अढार वर्षे केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने एक हजार साधु संघाते स्वामी निरवाण

मोक्षने विषे पहोता ॥ ४ ॥ हवे चोथा अभिनंदन जिनवर मोक्ष पहोता पछी ॥ नव लाख कोडि सागरने आंतरे । पांचमा सुमतिनाथ जिनवर थया । कोसलपुरी नगरीने विषे । मेघरथ राजा पिता । मंगला देवी राणी माता । क्रौंच पंखीनुं लंछन । त्रणसे धनुष्य देहमान । चालीस लाख पूर्वनुं आयुष । तेमां दश लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या ॥ ओगणत्रीस लाख पूर्व राज पाळ्युं । एक लाख पूर्वनी प्रव्रज्या पाळी । प्रव्रज्या लीधा पछी । वीस वर्ष केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी श्रावक श्राविकानो । चतुर्विध संघ स्थापीने । हजार साधुनी साथे पर्वत ऊपर अनशन करीने । एक मासने अंते मोक्ष पहोता ॥ ५ ॥ पांचमा सुमतिनाथ जिनवर निर्वाण मोक्ष पहोता पछी । नेवुं हजार कोडि सागरने आंतरे । छठा पद्मप्रभ जिनवर थया । कोसंबी नगरीने विषे । धर राजा पिता ॥ सुसीमा देवी राणी माता । रातुं कमळनुं लंछन । अढीसो धनुषनुं देहमान । त्रीश लाख पूर्वनुं आयुष ॥ साडासात लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या । साडीएकवीस लाख पूर्वनुं राज पाळ्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रव्रज्या पाळी । प्रव्रज्या लीधा पछी । छ महीने केवल ज्ञान उपनुं । साधु साधवी ।

श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने द्वादसांगी गणीनी पेटी थापीने। आंहांतर साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ६ ॥ छठा पद्म प्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आंतरं। सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसी नगरीने विषे। पइठ राजा पिता। पृथ्वि देवि राणी माता। हेमवर्णं॥ साथीयानुं लंछन। बसे धनुषनुं देहमान। विस लाख पूर्वनुं आयुष ॥ तेमां पांच लाख पूर्व कुंवरपणे रह्या॥ चौद लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि॥ नव मासे केवल ज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी थापीने। पांचसें साधु संघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ७ ॥ सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछे। नवसें कोडि सागरनें आंतरे। आठमा चंद्रप्रभ तिर्थंकर थया। चंद्रनपुरी नगरीनेविषे। महासेनराजा पिता॥ लखमणादेवी राणी माता॥ उज्वल वर्णं। चंद्रमानुं लंछन। दोढसो धनुष्यनुं देहमान। दशलाख पूर्वनुं आयुष तेहमां अढीलाख पूर्व कुंवरपणे रह्या। साडाछ लाख पूर्वनुं राज पाल्युं। एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा

पढि छठे महिने केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघतिर्थ थापी
ने। द्वादशांगी गणीनी पदवी आपीने। एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या
॥ ८ ॥ हवे आठमा श्री चंद्रप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोता पछी। नेवुं कोडि सागरने
आंतरे ॥ नवमा श्री सुविधिनाथ तिर्थंकर थया। काकंदी नगरीने विषे ॥ सुग्रीव राजा
पिता। रामादेवि राणी माता। उज्वल वर्ण। मगर मत्स्य लंछन ॥ सो धनुष्यनुं देहमान ॥ बे
लाख पुर्वनुं आउखुं तेमां अर्ध लाख पुर्व कुंवरपणे रह्या। अर्ध लाख पुर्वनु राज पाल्युं ॥
एक लाख पुर्वनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवज्या लीधा पछि। चार महीने केवल ज्ञान उपनु ॥ साधु
साधवी श्रावक श्रावीका रुप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादशांगी गणीनी। पदवी
आपीने एक हजार साधु संगाते। स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ ९ ॥ हवे नवमा
सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोता पछि ॥ नव कोडिसागरने आंतरे ॥ दशमा श्री
सितलनाथ तिर्थंकर थया। भदलपुर नगरीने विषे द्रढरथ राजा पिता। नंदा देवी राणी
माता ॥ हेम वर्ण ॥ श्रीवत्स साथीयानुं लंछन ॥ नेवुं धनुष्यनुं देहमान। एक लाख पुर्वनुं

आउखुं। तेमां पा लाख पुर्व कुंवरपणे रह्या। अर्ध लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ पा लाख पूर्वनी
प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछे। त्रण मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक
श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पटी आपीने। एक हजार साधु
संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१०॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थकर। निर्वाण मोक्ष
पोहोंता पछि ॥ एक कोडि सागर तेमां ॥१००॥ सागर। छासठ लाख छविस हजार वरसने उणे-
आंतरे॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थकर थया। सिंहपुरी नगरीने विषे। विष्नु राजा पिता॥ विष्नु
देवी राणी माता। हेम वर्ण। गेंडानुं लंछन॥ एसी धनुष्यनुं देहमान। चोरासी लाख वर्षनुं आयूष॥
तेमां॥ २१ लाख वरस कुंवरपणे रह्या॥ ४२ लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ २१ लाख वरसनी प्रवर्ज्या
पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि ० मासे केवल ज्ञान उपनुं। साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप
चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसांगी गणीनी पटी आपीने। एक हजार साधु संघाते निर्वाण
मोक्षने विषे पोहोंता ॥ १ ॥ हवे इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ ५४
सागरने आंतरे॥ बारमां श्री वासुपूज्य तिर्थंकर थया चंपापुरी नगरीने विषे। वसुपुज्य राजा

पिता । जया देवी राणी माता । रात वर्ण । महिष लंछन । सित्तेर धनुष्यनु । देहमान बोहोंतेर लाख वर्षनुं आयुष ॥ तेमां अढार लाख वरस कुंवरपणे रह्या । चोपन लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि एक मास केवल ज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावी-का रुप चतुर्विध संघ तिर्थ थाप्यो ॥ छासठ गणीनी पदवी थापीने । छसें साधु संघाते स्वा-मी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १२ ॥ हवे बारमा वासुपुज्य तिर्थकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि त्रीस सागरने आंतरे ॥ तेरमा श्री विमलनाथ तिर्थकर थया । कपीलपुर नगरने विषे ॥ कृ-तवर्म राजा पिता ॥ श्यामा देवि राणी माता ॥ हेम वर्ण ॥ वराह के० सुवरनुं लंछन ॥ साठ धनुष्यनुं देहमान ॥ ६० लाख वर्षनु आउखु पनर लाख वरस कुवरपणे रह्या ॥ त्रीस लाख वरसनुं राज्य पाल्यु ॥ १५ ॥ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने केवल ज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारुप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । छा-दसांगी गणीनी पदवी थापीने ॥ ६०० साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमा विमलनाथ तिर्थकर मोक्ष पोहोंता पछी नव सागरने आंतरे ॥ चौदमां अनंत-

नाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीने विषे ॥ संघेसन राजा पिता । सुजसा देवी राणी माता । हेम वर्णं ॥ सकरानुं लंछन अने पचास धनुष्यनुं देहमान ॥ ३० ॥ लाख वरसनुं आयुष । तेमां साडासात लाख वरस कुंवरपणें रह्या । पनर लाख वरसनुं राज पाल्युं । साडासात लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ ३ महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने । सातसें साधु संघातें स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे चौदमा अंनतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ चार सागरने आंतरे ॥ पंदरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीने वीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुवृता देवी राणी माता । हेम वर्णं ॥ वज्रनुं लंछन । पिस्तालिस धनुष्यनुं देहमान ॥ दस लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां अढी लाख वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ साडा ५ लाख वरसनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवल ज्ञान पाम्यां । साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने ॥ आठसें साधु संघाते

वरसने आंतरे ॥१९ मां मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरीने विषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निल वर्ण ॥ कलसनुं लंछन ॥ पचविस धनुषनुं देहमान ॥ पंचावन हजार वर्षनुं आउखु ॥ तेमां सो वरस ना कुंवरी पण रह्या ॥ बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि त्रीजे पोहोरे केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारुप चतुर्विध संघतिर्थ स्थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ पांचसे साधु ॥ अने पांचसे साधवी संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १९ ॥ हवे तेमणीससा मल्लिनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी ॥ ५४ चोपन लाख वरसने आंतरे ॥२० मा मुनिसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीने विषे ॥ सुमित्र राजा पीता ॥ पद्मावति राणी माता ॥ स्याम वर्ण ॥ काछवानुं लंछन ॥ विस धनुषनुं देहमान ॥ त्रीस हजार वर्षनु आउखु ॥ तेमां साडासात हजार वरस कुंवर पणे रह्या ॥ पनर हजार वर्षनुं राज पाल्युं । साडासात हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपन्युं । साधु साधवी । श्रावक श्राविकारुप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण

मोक्ष पधार्या ॥२०॥ हवे वीसमां मुनि सुव्रत तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछी ७ लाख वर्षने आंतरे २१
मां नमिनाथ तीर्थंकर थया ॥ मथुरा नगरीने विषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी
माता ॥ हेम वर्ण ॥ निलोत्पल कमलनुं लंछन । पनर धनुषनुं देहमान ॥ दस हजार वर्षनुं आ-
उखुं ॥ अढि हजार वर्ष कुंवरपणे रह्या ॥ साडा ७ हजार वर्षनुं राज पाळ्युं ॥ एक हजार
वर्षनी प्रवर्ज्या पाळि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ नव महीने केवलज्ञान उपन्युं ॥ साधु साधवी० एक
हजार साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षने विषे पधार्या ॥ २१ ॥ हवे एकवीसमां नमीनाथ
तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी । पांच लाख वर्षने आंतरे ॥ २२ मां नेमनाथ तिर्थंकर थया ।
सोरीपुर नगरीने विषे । समुद्र विजय राजा पीता ॥ सीवा देवी राणी माता ॥ साम वर्णं ।
संखनुं लंछन ॥ दस धनुषनुं देहमान ॥ एक हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमां त्रणसें वर्ष कुंव-
रपणे रह्या ॥ सातसें वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी चोपन दहाडे केवलज्ञान
उपन्युं ॥ साधु० ॥ पांचसें ने छत्रीस साधु संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २२ ॥
हवे बावीसमा नेमनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ पांणी चोरासी हजार वर्षने आं-

गुण ढांक्यो छे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युं छे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्यो छे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रोक्यो छे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्ति गुण रोक्यो छे ॥ ६ ॥ गोत्र कर्मे अगुरु लघु गुण रोक्यो छे ॥ ७ ॥ अंतराय कर्मे अनंत आत्मिकशक्ति गुण रोक्यो छे ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ पहेले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना वांका बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते ज्ञानिनो उपकार ओलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चोथे बोले नाणअंतराएण ते ज्ञाननि अंतराय पडावे ॥ ४ ॥ पांचमे बोले नाणपओसेणं ते ज्ञानि उपर द्वेष करे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणाविसंवायणा जोगेणं ते ज्ञानि साथे खोटा झगडा विखवाद करे ॥ ६ ॥ ए छ प्रकारे बांधे ते ॥ पांच तथा १० प्रकारे जोगवे ॥ ते पांच किया ते कहे छे । मति ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुत ज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधि ज्ञाना वरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ॥ ४ ॥ केवल ज्ञानावरणीय ॥ ५ ॥ ए ५ ज्ञान प्रगट थावा थे नहि ॥ तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहे छे ॥ सोया वरणे ॥ १ ॥ सोय वि-

न्नाणा वरणे ॥ २ ॥ नेत्ता वरणे ॥ ३ ॥ नेत्त विनाणा वरणे ॥ ४ ॥ घाणा वरणे ॥ ५ ॥ घाण वि-
न्नाणा वरणे ॥ ६ ॥ रसा वरणे ॥ ७ ॥ रस विन्नाणा वरणे ॥ ८ ॥ फासा वरणे ॥ ९ ॥ फास वि-
न्नाणा वरणे १० ए. १० ॥ प्रकारे नोगवे । हवे ज्ञानावरणीय कर्मनि स्थिति ॥ जघ० अंतर्मुहूर्त-
नि । उत्० त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनी । अने अबाधा काल करे तो । त्रण हजार वरसनि
स्थिति ॥१॥ हवे दर्शना वरणीय कर्म ॥ ६ प्रकारे बांधे ते कहे छे ॥ पहेले बोले दंशण पमिणी-
याएं ॥ १ ॥ दंशणं निन्हवणयाए ॥२॥ दंशण आसायणाए ॥३॥ दंशण अंतराएणं ॥४॥ दंशण
पउसेणं ॥५॥ दंशण विसंवायणा जोगेणं ॥६॥ ए ॥ ६ प्रकारे बांधे ते ॥९॥ प्रकारे नोगवे ते कहे छे ॥
चक्षु दर्शना वरणीय ॥१॥ अचक्षु दर्शना वरणीय ॥२॥ अवधि दर्शना वरणीय ॥३॥ केवल
दर्शना वरणीय ॥४॥ निद्रा ॥५॥ निद्रा निद्रा ॥६॥ प्रचला ॥७॥ प्रचला प्रचला ॥८॥ थिण-
द्धिनिद्रा ॥९॥ ए. ९ प्रकारे नोगवे ॥ दर्शना वरणीय कर्मनि स्थिति जघ० अंतर्मुहूर्तनि ।
उत्० ३० कोमाकोमि सागरोपमनि । अने अबाधा काल करे तो स्थिति त्रण हजार वरसनि ॥
॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म तेहना २ नेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥

घात करे देश वृतीनी ॥७॥ पचखाणावरणीय क्रोध ते वेलुनि लिटि समान॥१॥ पचखाणावरणीय मान ते लाकमाना स्तंभ समान ॥२॥ पचखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिका समान॥ ३ ॥ पच-खाणा वरणीय लोभ ते गाडाना खंजन समान ॥४॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि॥ स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व वृतीनि ॥१२॥ संज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटि समान ॥१॥ सं-ज्वलनो मानते नेत्रना स्तंभ समान ॥२॥ संज्वलनी माया ते वांसनि ठोइ समान ॥३॥ संज्व-लनो लोभ ते । पतंग तथा हलिद्रना रंग समान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवल ज्ञाननि ॥१६॥ ए १६ कषाय । हवे ॥ ए नो कषाय कहेछे। हास्य ॥ १७ ॥ रति॥ १८ ॥ अरति ॥ १९॥ भय ॥ २० ॥ शोग ॥ २१ ॥ दुगंछा ॥ २२ ॥ स्त्री वेद ॥ २३ ॥ पुरुष वेद ॥ २४ ॥ नपुंसक वेद ॥ २५ ॥ ए चारित्र मोहनीयनी २५ प्रकृति ॥ हवे दंसण मोहनीयनि ॥ ३ प्रकृति कहे छे । समकित मोहनीय १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय २॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ३ ॥ ए ३ दर्शन मोहनीयनि । एवं सर्व मलि ॥ २८ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७० कोडाकोडि सागरोपमनी । अबाधा काल

करे तो । जघ० अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्० ॥७ हजार वरसनि ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म ।
सोल प्रकारे बांधे । तेहमांहि । नारकिनुं आयुष ॥ ४ प्रकारे बांधे ते महारंनयाए ॥ १ ॥
महापरिग्गहियाए ॥२॥ कुणिमाहारेणं ॥ ३ ॥ पंचिंदियवहेणं ॥ ४ ॥ तिर्यचनुं आयुष ॥४
प्रकारे बांधे ॥ माइल्लयाए ॥१॥ नियडिल्लयाए ॥२॥ अलियवयणेणं ॥३॥ कूडतोले कूडमाणे ॥४॥
मनुष्यनुं आयुष ॥४ प्रकारे बांधे । पगइनद्दयाए ॥१॥ पगइविणीयाए ॥२॥ साणुक्कोसयाए ॥३॥
अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानुं आयुष ॥४ प्रकारे बांधे । सराग संजमेणं ॥१॥ संजमासंजमेणं
॥ २ ॥ बालतवोकम्मेणं ॥ ३ ॥ अकाम निजराए ॥४॥ ए १६ प्रकारे बांधे । ते ॥४ प्रकारे नो-
गवे । नारकि देवतानुं आयुष ॥जघ० ॥ १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त अधिकनुं ॥॥ उत्० ॥३३
सागर ने पूर्व कोडिनो त्रिजो नाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ नुं आयुष ॥
जघ० अंतर्मुहूर्तनुं । उत्० ॥ ३ पल्यने पूर्व कोडिनो त्रिजो नाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठुं नाम-
कर्म तेहना २ नेद ॥ शुन नाम ॥१ ॥ अशुन नाम ॥ २ ॥ तेमां शुन नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे
बांधे ॥ कायजुयाए ॥ १ ॥ नासुजुयाए ॥२॥ नावुजुयाए ॥३॥ अविसंवायणा जोगेणं ॥४॥

ते ॥ १४ प्रकारे जोगवे। इठा सद्दा १ इठा रुवा २ इठा गंधा ३ इठा रसा ४ इठा फासा ॥५॥ इठा गइ ॥ ६ ॥ इठा ठीइ ॥७॥ इठा लावणे ॥८॥ इठा जसोकित्ती ॥९॥ इठा उठाण कम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ इठ सरया ॥११॥ कंत सरया ॥ १२ ॥ पियसरया ॥ १३॥ मणुणा सरया ॥१४॥ ए ॥ १४ प्रकारे जोगवे ॥ अशुज नाम कर्म ॥ ४ प्रकारे बांधे॥ कायअणुजुयाए ॥१॥ जासाणुजुयाए ॥ २ ॥ जावाणुजुयाए ॥३ ॥ विसंवायणा जोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ प्रकारे जोगवे । अणिठा सद्दा ॥ १ ॥ अणिठा रुवा ॥ २ ॥ अणिठा गंधा ॥ ३ ॥ अणिठा रसा ॥ ४ ॥ अणिठा फासा ॥ ५ ॥ अणिठा गइ ॥ ६ ॥ अणिठा ठिइ ॥ ७ ॥ अणिठे लावणे ॥ ८ ॥ अणिठा जसोकित्ति ॥९॥ अणिठा उठाण कम्मबलवीरिय पुरिसाकारपरक्कमे ॥१०॥ हिण सरया ॥११॥ दिण सरया ॥१२॥ अणिठ सरया ॥१३॥ अकंत सरया ॥ १४॥९॥ १४ प्रकारे जोगवे॥ हवे नाम कर्मनि ॥९३ प्रकृति कहे छे॥ नरक गति ॥ १ ॥ तिर्यंच गति ॥२॥ मनुष्य गति ॥३॥ देव गति ॥४॥ एकेंद्रिय जाति ॥५॥ बेइंद्रिय जाति ॥६॥ तेइंद्रिय जाति ॥७॥ चउरिंद्रिय जाति ॥८॥ पंचेंद्रिय जाति ॥९॥ उदारिक सरिर ॥१०॥

कार्मण शरिर ॥ वैक्रेय शरिर ॥ ११ ॥ आहारक शरिर ॥ १२ ॥ तेजस शरिर ॥ १३ ॥ कार्मण शरिर ॥
॥१४॥ उदारिक अंगोपांग ॥ १५ ॥ वैक्रेय अंगोपांग ॥१६॥ आहारक अंगोपांग ॥१७॥ उदा-
रिक बंधन ॥१८॥ वैक्रेय बंधन ॥ १९ ॥ आहारक बंधन ॥ २० ॥ तेजस बंधन ॥२१॥ कार्मण
बंधन ॥२२॥ उदारिक संघातन ॥ २३ ॥ वैक्रेय संघातन ॥२४॥ आहारक संघातन ॥ २५ ॥
तेजस संघातन ॥२६॥ कार्मण संघातन ॥२७॥ वज्र ऋषभ नाराच संघयण ॥२८॥ ऋषभ ना-
राच संघयण ॥ २९ ॥ नाराच संघयण ॥३०॥ अर्द्ध नाराच संघयण ॥३१॥ किलक संघयण
॥३२॥ छेवट्ठ संघयण ॥३३॥ समचोरस संठाण ॥ ३४ ॥ निगोह परिमंडल संठाण ॥ ३५ ॥
सादि संठाण ॥३६॥ वामन संठाण ॥ ३७ ॥ कुज संठाण ॥ ३८ ॥ हुंड संठाण ॥ ३९ ॥ कालो
वर्ण ॥ ४० ॥ निलो वर्ण ॥४१॥ रातो वर्ण ॥ ४२ ॥ पिलो वर्ण ॥ ४३ ॥ धोलो वर्ण ॥ ४४ ॥
सुरभि गंध ॥४५॥ दुरभि गंध ॥ ४६ ॥ तिखो रस ॥४७॥ कडवो रस ॥४८॥ कसायलो रस
॥४९॥ खाटो रस ॥५०॥ मिठो रस ॥ ५१ ॥ खरखरो स्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहालो स्पर्श ॥ ५३ ॥
भारे स्पर्श ॥ ५४ ॥ हलुवो स्पर्श ॥५५॥ टाढो स्पर्श ॥ ५६ ॥ उन्हो स्पर्श ॥ ५७ ॥ चोपड्यो

स्पर्श ॥५८॥ लुखो स्पर्श ॥५९॥ नरकानुपूर्वी ॥६०॥ तिर्यंचानुपूर्वी ॥६१॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥६२॥ देवानुपूर्वी ॥६३॥ शुभ विहाय गति ॥६४॥ अशुभ विहाय गति ॥६५॥ ए ॥ ६५ पिंड प्रकृति थइ। पराघात नाम ॥६६॥ उश्वास नाम ॥६७॥ अगुरु लघु नाम ॥६८॥ आताप नाम ॥६९॥ उद्योत नाम ॥७०॥ उपघात नाम ॥७१॥ तिर्थंकर नाम ॥७२॥ निर्माण नाम ॥७३॥ त्रस नाम ॥७४॥ बादर नाम ॥७५॥ प्रत्येक नाम ॥७६॥ पर्याप्त नाम ॥ ७७ ॥ स्थिर नाम ॥७८॥ शुभ नाम ॥७९॥ सौभाग्य नाम ॥८०॥ सुस्वर नाम ॥८१॥ आदेय नाम ॥८२॥ जशो कीर्ति नाम ॥८३॥ स्थावर नाम ॥८४॥ सूक्ष्म नाम ॥ ८५ ॥ साधारण नाम ॥ ८६ ॥ अप्रजास नाम ॥८७॥ अस्थिर नाम ॥८८॥ अशुभ नाम ॥ ८९ ॥ दौर्भाग्य नाम ॥ ९० ॥ दुःस्वर नाम ॥९१॥ अनादेय नाम ॥९२॥ अजशो कीर्ति नाम ॥९३॥ ए ॥ ९३ प्रकृति थइ ॥ तेहमां ॥ १० बंधननि अधिक गणवनां ॥ १०३ प्रकृति पण ग्रंथवाळा कहे छे अथवा नाम कर्मनि ॥ ४२ पण थाय। गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरीर ॥ ३ ॥ अंगोपांग ॥४॥ बंधन ॥ ५ ॥ संघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गंध ॥ ८ ॥ रस ॥ ९ ॥ स्पर्श ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ संठा-

ग ॥१२॥ अनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहाय गति ॥ १४ ॥ ए.॥ १४ अने प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं ४२ थइ। तथा विस्तारे चोदनि ६५ तथा प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं विस्तारे ९३ प्रकृति थइ ॥ नाम कर्मनि स्थिति । जघन्य । आठ मुहुर्त्तनि । उत्० । विश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल करे तो ॥ २ हजार वरसनो ॥६॥ हवे गोत्र कर्मना २॥ नेद ॥ उंच गोत्र ॥१॥ निच गोत्र ॥२॥ तेहमां उंच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ॥ जाइ अमदेणं ॥१॥ कुल अमदेणं ॥२॥ बल अमदेणं ॥३॥ रूप अमदेणं ॥४॥ तव अमदेणं ॥५॥ सूय अमदेणं ॥६॥ लान अमदेणं ॥७॥ इस्सरिय अमदेणं ॥८॥ ए आठ मद अणकरवे करि उंच गोत्र बांधे। ते ॥८ प्रकारे नोगवे ॥ जाइ विसिठिया ॥१॥ कुल विसिठिया ॥२॥ बल विसिठिया ॥३॥ रूव विसिठिया ॥४॥ तव विसिठिया ॥५॥ सूय विसिठिया ॥६॥ लान विसिठिया ॥७॥ इस्सरिय विसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे नोगवे ॥ १ ॥ हवे निच गोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ते। जाइ मएणं ॥ १ ॥ कुल मएणं ॥ २ ॥ बल मएणं ॥ ३ ॥ रूप मएणं ॥४॥ तप मएणं ॥ ५ ॥ सूय मएणं ॥ ६ ॥ लान मएणं ॥७॥

इस्सरिय मएणं ॥८॥ ए ८ मद करवे करि निच गोत्र बांधे। ते ॥ ८ प्रकारे जोगवे ॥ जाइ विहिणया ॥ १ ॥ कुलविहिणया ॥ २ ॥ बलविहिणया ॥ ३ ॥ रूपविहिणया ॥४॥ तपविहिणया ॥५॥ सूयविहिणया ॥ ६ ॥ लाजविहिणया ॥ ७ ॥ इस्सरिय विहिणया ॥ ए ॥ ८ ॥ गोत्र कर्मनि स्थिति। जघ० ॥ ८ मुहुर्त्तनि ॥ उत्० । विश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अवाधा काल करे तो बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मुं । अंतराय कर्म । पांच प्रकारे बांधे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाजांतराय ॥ २ ॥ जोगांतराय ॥ ३ ॥ उवजोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ अंतराय पामवे करि अंतराय कर्म बांधे। ते पांच प्रकारे जोगवे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लाजांतराय ॥ २ ॥ जोगांतराय ॥ ३ ॥ उवभोगांतराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ पामे नहि। ए अंतराय कर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अंतर्मुहुर्त्तनि। उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अवाधा काल करे तो ॥ ३ हजार वर्षनो ॥८॥ बांध्यानि ॥ ८५ प्रकृति ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥ २२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुषनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥८॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एवं

सर्व मलि ॥७५॥ प्रकृति बांध्यानि जाणवि ॥ नोगव्यानि ९३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि
॥१०॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥१६॥ मोहनीयनि ॥१॥ ते सम्मत्तवेयणिज्जो ॥१॥
मिछत्त वेयणिज्जो ॥२॥ सम्मामिछत्त वेयणिज्जो ॥३॥ कसाय वेयणिज्जो ॥४॥ नोकसाय वेयणिज्जो
॥५॥ ए.५॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२७॥ गोत्रनि ॥१६॥ अंतरायनि ॥५॥ ए सर्व मली
॥९३॥ प्रकृति नोगव्यानि जाणवी ॥ अथवा ॥१४७॥ प्रकार पण नोगवे ते ॥ पांच ज्ञाना-
वरणीयनि ॥ दर्शनावरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२७॥ आयुषनि ॥४॥
नाम कर्मनि ॥९३॥ गोत्र कर्मनि ॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं सर्व मलिने ॥१४७॥ प्रकृति जा-
णवि तथा बंधन नामकर्मनि ॥१०॥ प्रकृति ग्रंथांतरे कहि छे ते नेलवतां ॥१५७॥ प्रकृति पण
थाय ॥ अथवा मुल प्रकृति ॥७॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥३१॥ ज्ञानावरणीयनी ॥५॥ दर्शना-
वरणीयनि ॥९॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुषनि ॥४॥ नामनि ॥२॥ गोत्रनि
॥२॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं ॥ ३१ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४७ कर्म प्रकृति जाणवि।
ए बोल सिद्धांत प्रमाणे छे ॥ इति कर्म प्रकृतिना बोल समाप्तं ॥

॥ अथ श्री धर्म ध्यान ॥

उववाई सूत्रपाठ–धम्मेझाणे ॥ धम्मेझाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥ आणाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥२॥ विवागविजए ॥३॥ संठाणविजए ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स चत्तारि लक्खणा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ आणारुइ ॥१॥ निसग्गरुइ ॥२॥ सुत्तरुइ ॥३॥ उवएसरुइ ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि आलंबणा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ वायणा ॥१॥ पुच्छणा ॥२॥ परियट्टणा ॥ ॥३॥ धम्म कहा ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि अणुप्पेहा पन्नत्ता ॥ तंजहा ॥ एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहे छे ॥ धर्म ध्यानना चार भेद ॥ ते मांहि पहेला भेदनो अर्थ कहे छे ॥ आणा विजए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते । वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पंच महाव्रत । भीखुनी बार पडिमा शुभ ध्यान ॥ शुभ योग ॥ ज्ञान दर्सण चारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा ॥ ए ॥ वीतरागनी आज्ञा

आराधवी॥तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥चतुर्विध तीर्थनां गुण कीर्तन करवां ॥ ए धर्म ध्याननो पहेलो नेद कह्यो॥१॥हवे धर्म ध्याननो बीजो नेद कहे छे ॥ अपाय विजए कहेतां संसारमांहि जीव जेह थकि दुःख पामे छे तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अव्रत ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ अशुभयोग ॥ तथा अढार पाप स्थानक ॥छकायनी हिंसा । एह दुःखना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रव मार्ग छांडीने॥संवर मार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव दुःख न पामे॥ए धर्म ध्याननो बीजो नेद कह्यो॥२॥हवे धर्म ध्याननो त्रीजो नेद कहे छे॥विपाकविजए ॥ कहेतां ॥ जीव जे सुख दुःख भोगवे छे ॥ ते स्यायकी तेहनो विचार चिंतववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवे रसे करि पूर्वे ॥ जेहवा शुभाशुभ ज्ञाना वरणीयादिक कर्म उपार्ज्यां छे॥ ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव तेहवां सुख दुःख अनुभवे छे॥ ते अनुभवता थका ॥ कोइ उपर राग द्वेष न आणीये॥ समता भाव आणीए॥ मन वचन कायाना शुभ योग सहित श्री जैनधर्मने विषे प्रवर्तिये॥ जेम निराबाध परम सुख पामीए॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो नेद कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननो चोथो नेद कहे छे ॥ संस्थानविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनुं स्वरूप

चिंतवीए ॥ तेनुं ए स्वरूप ॥ ए लोक सुप्रतिष्ठकने आकारे छे ॥ जीव अजीवे संपूर्ण भर्यो छे ॥ असंख्यात जोजननी कोडाकोडि प्रमाणे तीर्छो लोक छे ॥ तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र छे ॥ तथा असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे ॥ तथा असंख्याता ज्योतिषीना विमान छे ॥ तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे। वली अढी द्वीप माहि तिर्थंकर जघन्य २०॥ उत्कृष्टा एकसो सित्तर होय ॥ तथा केवली जघन्य ब कोडि ॥ उत्कृष्टा नव कोडि तथा साधु जघन्य बे हजार कोडि ॥ उत्कृष्टा नव हजार कोडि ॥ तेहने वंदामि ॥ नमस्सामि ॥ सक्कारेमि ॥ सम्माणेमि ॥ कल्लाणं ॥ मंगलं ॥ देवयं ॥ चेइयं ॥ पज्जुवासामि ॥ तथा तिर्छा लोकमांहि ॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते तिर्छा लोक थकी असंख्यात गुणो अधिको उर्द्ध लोक छे ॥ तिहां बार देव लोक ॥ नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान सर्व थइने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे ॥ तथा ते उपर सिद्ध सिला छे ॥ तिहां सिद्ध भगवंत विराजे छे ॥ तेहने वंदामि ॥ जाव पज्जुवासामि ॥ ते उर्द्ध लोकथी कांइक विशेषे अधिक अधो लोक छे ॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे ॥ सात कोडि बहोंतेर लाख भवन-

पतिना वचन छे॥एहवा त्रण लोकनां सर्व स्थानक समकित रहित करणी विना सर्व जीवे अनंतीवार जन्म मरणे करी फरसी मूक्यां छे॥एम जाणी समकित सहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करीये॥जेम अजरामर पद पामीये॥ए धर्म ध्याननो चोथो भेद कह्यो ॥४॥ हवे धर्म ध्यानना ४ लक्षण॥तेमां धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कहे छे ॥ आणारुइ कहेतां वीतरागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्युं ॥१॥ हवे धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कहे छे ॥ निसग्गरुइ कहेतां ॥ जीवने स्वभावेज तथा जाति स्मरणादिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म करवानी रुचि उपजे॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये॥ए धर्म ध्याननुं बीजुं लक्षण कह्युं॥हवे धर्म ध्याननुं त्रीजुं लक्षण कहे छे ॥ सूत्तरुइ कहेतां॥सूत्रना बे भेद॥अंग पविठ्ठ ॥१॥ अने अंग बाहिर ॥२॥ अंग पविठ ते आचारांगादि १२ अंग ॥तेमां॥११ अंग ॥कालिक॥अने बारमुं अंग दृष्टिवाद ॥ते। उत्कालिक १ अंग बाहिरनां २ भेद॥आवश्यक १ अने॥ आवश्यक व्यतिरिक्त॥ आवश्यक ते सामायकादिक ६ अध्ययन ते उत्कालिक॥तथा उत्तराध्ययनादिक कालिक

सूत्र ॥ तथा उववाइ प्रमुख उत्कालिक सूत्र सांभलवा तथा भणवानी रुचि उपजे॥ तेहने सूत्र रुचि कहिए ॥ ए धर्म ध्याननुं त्रिजुं लक्षण कह्यं ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण कहे छे उवएसरुइ ॥ उवएसरुइ कहेता अज्ञाने करी उपार्ज्या कर्म ॥ ते ज्ञाने करी खपावीए ॥ ज्ञाने करी नवा कर्म न बांधीए । मिथ्यात्वे करी उपार्ज्या कर्म ते समकिते करी खपावीए ॥ समकिते करी नवा कर्म न बांधीए ॥२॥ अव्रते करी उपार्ज्या कर्म ते व्रते करी खपावीए ॥ व्रते करी नवा कर्म न बांधीए॥३॥प्रमादे करी उपार्ज्या कर्म ते अप्रमादे करी खपावीए॥अप्रमादे करी नवा कर्म न बांधीए ॥४॥ कषाये करी उपार्ज्या कर्म ते कषायने अणकरवे करीने खपावीए । कषायने अणकरवे करीने नवा कर्म न बांधीए ॥५॥असुभ योगे करी उपार्ज्या कर्म ते सुभ योगे करी खपावीए ॥ शुभ योगे करी नवा कर्म न बांधीए॥६॥पांच इंद्रीयना स्वादरूप आश्रवे करी उपार्ज्या कर्म ते तपरूप संवरे करी खपावीए ॥ तपरूप संवरे करी नवा कर्म न बांधीए ॥ माटे अज्ञानादिक आश्रव मार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवर मार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेश रुचि कहीए ॥ तथा उगाढ रुचि पण कहीए॥ए धर्म ध्याननुं चोथुं लक्षण

कह्युं ॥ ४ ॥ हवे धर्म ध्यानना चार आलंबन कहे छे ॥ वायणा ॥१॥ पूछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्म कथा ॥४॥ हवे धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबन कहे छे॥ वायणा ते केहने कहिए॥ विनय सहित ज्ञान तथा निर्जराने अर्थे ॥ सूत्रना अर्थना जाण गुर्वादिक समीपे सूत्र तथा अर्थनी वांचणी लेवी ॥ तेहने वायणा कहीए॥ए धर्म ध्याननुं पहेलुं आलंबनकह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्म ध्याननुं बीजूं आलंबन कहे छे ॥ पूछणा ते केहनें कहिए ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जैनमत दीपाववाने अर्थे ॥ तथा संदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवाने अर्थे यथा योग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए॥ ए धर्म ध्याननुं बीजूं आलंबन कह्युं ॥२ ॥ हवे धर्म ध्याननुं त्रीजूं आलंबन कहे छे ॥ परियट्टणा ते केहने कहिए॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र अर्थ भण्या छे ॥ ते असखलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्र अर्थनी वारंवार सज्झाय करे तेहने परियट्टणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननूं त्रीजुं आलंबन कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननूं चोथुं आलंबन कहे छे ॥ धर्मकथा ते केहने कहिए॥ वीतरागे जे भाव जेहवा परुप्या छे ॥ ते भाव पोते

तेहवा सद्दीने सद्दीने विशेषे निश्चय करीने शंका कंखा वितिगिछा रहित पण पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे मना मध्ये ते जाव तेहवा परूपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता थकां अने सांजलीने सद्दहता थकां॥ते बंने वीतरागनी आज्ञाना आराधक होय ॥ ते धर्मकथा संवररूपीउ वृक्ष सर्वीए ॥ जेम मनवंछित सुखपामीए॥ ते संवररूपीउ वृक्ष वखाणीए छइए ॥ ते संवररूपीउ वृक्ष केहवो छे ॥ विशुद्ध समकितरूप मूल छे जेहनुं ॥१॥ धीर्यरूप कंद छे जेहनो ॥२॥ विनयरूप वेदिका छे जेहनी ॥३॥ तीर्थंकर तथा चार तीर्थना गुण कीर्तन रूप खंध छे जेहनो ॥४॥ पांच महाव्रतरूप मोटी शाखा छे जेहनी ॥५॥ पचीस जावनारूप त्वचा छे जेहनी ॥६॥ शुज ध्याननें शुज योगरूप प्रधान पल्लव पत्र छे जेहनां ॥ ७ ॥ गुणरूप फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ शीयलरूप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ९ ॥ आश्रवरहीत फल छे जेहनां ॥१०॥ मोक्षरूप प्रधान बीज छे जेहनुं ॥११॥ मेरु गिरिना शिखर उपरें जेम चूलिका विराजेछे तेम समकितीना हृदयमां संवररूपिउ वृक्ष वीराजे छे ॥ १२ ॥ एहवा संवररूप वृक्षनी शीतल छांया जेहनें परिणमे तेहना जवोजवना पाप टले ॥ ने ते परम अनल सुख पामे इत्यादिक ॥४॥

प्रकारनी कथा अक्षेवणी ॥ १ ॥ विक्षेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निर्वेगणी ॥४॥ ए चार कथा विस्तारपणे कहे तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्मध्याननुं चोथुं आलंबन कह्युं ॥ ४ ॥ अक्षेवणी प्रमुख ४ कथानो विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देशे बीजे सूत्र ५७ मां मध्ये छे ॥ हवे धर्मध्याननी चार अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहीए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य तेहनो स्वभाव स्वरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अणुप्पेहा कहीए ॥ हवे धर्मध्याननी पहेली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकत्वाणुप्पेहा ते केहने कहीए ॥ जीव असंख्यात प्रदेशी अरूपी सदा स उपयोगी छे ॥ चेतन्यरूप एहवो एक माहरो आत्मा निश्चय नये छे ॥ तेम सर्व आत्मा निश्चय नये एहवाज छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते अचेतन जड वर्णादि २० रूप सहित पुद्गलनो संयोगी थको ॥ त्रस ने स्थावर रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे अनेक रूप ॥ अनेक ठांहे प्रवर्ते छे ॥ ते त्रसनो त्रसरूपे प्रवर्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो बे हजार सागर झाझेरा सुधी रहे ॥ अने स्थावरनो स्थावरपणे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो अनंती उत्सर्पणी अवसर्पणी ॥

कालथी क्षेत्रथी अनंता लोक प्रमाण अलोकना आकाश प्रदेश ॥ तेटला काल चक्र ॥ उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी ॥ तेहना असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ अंगुलने असंख्यातमे जागे आकास प्रदेश आवे ॥ तेटला असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ स्थावर मध्ये पुद्गल लइ खेल्यों ॥ ए व्यवहार नयथी जीव जाणीए ॥१॥ वली त्रस स्थावर मध्ये रह्यो थको स्त्री पुरुष नपुंसक वेदे पुद्गलने संयोगे खेल्यो ॥ प्रवर्त्यों ॥ अनेक रूप नवा लाव्यो ॥ तिहां स्त्रीपुरुषना रूप कोण कोण रीतना करी लाव्यो ते कहे छे ॥ कोइक प्रस्तावे देव देवीपणे ॥ तिहां देवीपणे जवनपत्यादिक इसान देव लोक सुधी इंद्रनी इंद्राणी सुरूपवंती अपसरा थई ॥ जघन्य १० हजार वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवांगनाने रूपे अनंतिवार जीव खेल्यो ॥ पुरुष मध्ये देवतापणे जवनपत्यादिक जाव नवमां नव ग्रैवेयक सुधी महर्धिक देव ॥ महा शक्तिवंत इंद्रादिक लोकपाळ प्रमुखपणे रूपवंत देदी॰ण्यमान वंछित जोग संयोग पणे प्रवर्त्यों ॥ जघन्य ॥१०॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम अनंतीवार जोगी थउ ॥ इंद्रमहाराजे एक जवमांहि ७ पल्योपमनी देवी बाविस कोडाकोड पंचासी लाख कोड एकोतेर हजार कोड चारसे

अट्यावीस कोम सतावन लाख चौद हजार वर्स अठधासी उपर पांच पल्यनो ८ प-ल्ली दंधि नोगवी तोपण तृप्ति न पाम्यो ॥ मनुष्य मध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देव कुरु उत्तर-कुरु मध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहां महा मनोहर रूप मनवंछित सुख नोगव्यां ॥ दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख दिधां ॥ स्त्री पुरुषने क्षिण मात्रनो वियोग न पमे ॥ ३ पल्योपम निरंतर सुख विलस्यां ॥ हरिवास रम्यकवास मध्ये २ पल्योपम ॥ हे-मवय क्षेत्र एरणवय क्षेत्र मध्ये १ पल्य ॥ छपन अंतरद्वीपा मध्ये पल्योपमनो असंख्यात-मो नाग ॥ युगल युगलणी पणे अनंती वार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदनां रूप लेइ खेल्यो पण आत्मा तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्तिने घरे स्त्री रत्नपणे लक्ष्मी सरिखा रूप अनं-तीवार ॥ स्त्री वेद पुरुष वेदना रूप जीव लेइ खेल्यो ॥ पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वासुदेव मंमलीक राजा ॥ प्रधान व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्री वेद ॥ मनोज्ञ सुख वंछित नोग ॥ दीर्घ पूर्वकोमा-दिकनां आउखा पणे प्रवर्त्यो ॥ वलि तेहज जीव मनुष्य मध्ये कुरूपवान दुर्नागी निच कुल ॥ दरीद्री नर्त्तार ॥ स्त्री पण अलरूप दुर्नागिणी पणे जीव नटचापणे प्रवर्त्यां ॥ तोहि मनुष्य-

पण स्त्री पुरुषनो अवतार पूरो न थयो ॥ वली तीर्यंच पंचेंद्रीय जलचरादि ५ मध्ये स्त्री वेदे पुरुष वेदे प्रवर्त्यो ॥ वली ते जीव सात नरक ॥ पांच एकेंद्रीय ॥ त्रण विकलेंद्रीय तथा असंज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये नियमां नपुंसक वेद होय अने संज्ञी तिर्यंच मनुष्य मध्ये पण नपुंसक होय ते सर्वे नपुंसक वेदे जीव प्रवर्त्यो ॥ परमार्थे लागत स्त्री वेदे प्रवर्त्यो ते उत्कृष्टो एकसो दस पल्य अने प्रथक पूर्व कोड सुधी स्त्री वेद खेल्यो ॥ जघन्य आठवा नोगव्या आश्री अंतर्मुहूर्त ॥ पुरुष वेदे उत्कृष्टो प्रथक सो सागर झाझेरा सुधी पुरुष वेद मध्ये खेल्यो ॥ जघन्य आठवा नोगव्या आश्री अंतर्मुहूर्त ॥ नपुंसक वेदे उत्कृष्टो अनंता कालचक्र ॥ असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन सुधी नपुंसक वेदे खेल्यो ॥ जघन्य आठवा नोगव्या आश्री अंतर्मुहूर्त ॥ जिहां गयो तिहां एकलो पुद्गलने संयोगे अनेक रुप परावर्त्तन कीधां ए सर्व व्यवहार नय जीवने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तननो मिटावणहार ते श्री जैन धर्मने विषे शुद्ध सद्दहणा सहित शुद्ध उद्यम पराक्रमनुं फोरववुं ॥ एहवा शुद्ध जैनमते करी आत्मानुं साधन थाय ॥ ते वारे सिद्धपणुं पामे ॥ तत्र एकलोज निश्चय

नय आत्मा जाणवो ॥ ते माटे शुद्ध व्यवहारे प्रवर्त्ते ॥ अशुद्ध व्यवहार मटाके ॥ तेवारे सिद्ध होय एहवो माहरो एक आत्मा छे ॥ जे नणी अवर परिवार ते स्वार्थ रूपी छे ॥ अने पडगला १ मीसला २ वीसला ३ पुद्गल ते वर्ण पर्यंव करी जे जेहवे स्वनावे छे ॥ ते तेहवे स्वनावे न रहे ते पण असास्वता ते माटे एक माहरो पोतानो आत्मा पोताना कार्यनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानुं साधन करीये ॥ ए धर्म ध्याननी पहेली अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ अणी आणुप्पेहा ते केहने कहिये रूपी पुद्गलने अनेक प्रकारे यतना करिए ॥ तोपण अनित्य ॥ नित्य एक श्री जैनधर्म परम सुखदायक पोताना आत्माने ॥ ते माटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक संवरे करि पुष्टो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी बीजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्म ध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कहे छे ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने कहिये आ नवने विषे अने परनव पहोंचतां जीवने एक समकित पूर्वक जैन धर्म विना जन्म जरा मरणना दुःख निवारवा बीजो कोइ सरण समर्थ नथी ॥ एम जाणी श्री जैन धर्मनुं सरण करीये ॥

जेम परम सुख उपजे ॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो आलंबन कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्म ध्याननो चोथी अणुप्रेक्षा कहे छे ॥ संसार [illegible] ॥ अनादिरूप संसार समुद्र मांहे ॥ जन्म जरा मरण संयोग वियोग मांहे ॥ [illegible] कषाय मिथ्यात्व तृष्णारूप पाणी जल कल्लोलादिकनो [illegible] च्यार गति चोराशी लक्ष योनि परिभ्रमण करतो जगत जीवने श्री जैन धर्मरूप द्विपनो आधार छे ॥ तथा सम्यक्त्व नावा जिहां शुद्ध समकितरूप निर्यामक नावानो खेवणहार छे ॥ एहवी नावाए करी जीव सिद्धिरूप महा नगरने विषे पहोंचे ॥ जिहां अनंत अतुल विमल सिद्धना सुख जीव पामे ॥ ए धर्म ध्याननो चोथो अणुप्रेक्षा कह्यो ॥ ४ ॥ एहवा धर्म ध्यानना गुण जाणिने सदा धर्म ध्यान ध्याइये जेम परम सुख पामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

अथ श्री पांच बोल.

पहेलो नारकिनो द्वार ॥ १ ॥ बिजो भवनपतिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यंतरनो

हार ॥ ३ ॥ चोथो ज्योतिषीनो द्वार ॥ ४ ॥ पांचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहेलो
नरकनो द्वार कहे छे ॥ पहेले नाम ॥ १ ॥ बिजे गोत्र ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंड
॥ ४ ॥ पांचमे पोलार ॥ ५ ॥ छठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥ ७ ॥ आठमे आंतरा
॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण ने आवलिका बंध ॥ ९ ॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे
नारकि ने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्र वेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधामिना
नाम ॥ १३ ॥ चौदमे जीव अजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नारकि ने अवधिनुं देखवुं
॥ १५ ॥ सोलमे संघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कोण जीव कइ नरके उपजे ॥ १७ ॥ अढारमे
॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहेले नाम कहे छे ॥ घमा ॥१॥ वंशा ॥ २ ॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥
४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उंधा छत्रने आकारे छे ॥ १ ॥ बीजे
गोत्र कहे छे ॥ रत्न प्रभा ॥ १ ॥ शर्कर प्रभा ॥ २ ॥ वालु प्रभा ॥ ३ ॥ पंक प्रभा ॥ ४ ॥
धूम प्रभा ॥ ५ ॥ तम प्रभा ॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ॥ ७ ॥ रत्न प्रभा ते श्यामाटे सोल हजार
जोजननो खरकांड छे ॥ ते ॥ सोल जातिना रत्नमय छे । एकेकुं रत्न हजार हजार जोज-

नतु जाणवां छे ॥ ४ ॥ [illegible] जोजननां थाउ थम ते ॥ श्वने ॥ ०४ ९ आर जोजनना [illegible] हजार जोजनना पृथ्वीना पिंड [illegible] ने रत्नानि पिंडिका [illegible] प्रता ने फांकरानो पिंड ने [illegible] नरम गाव्हनां कांटा सरिखो स्पर्श छे ॥ ३ ॥ वालु प्रता ने वालुना पिंड ने वालुनि पिंडिका ने रेतु कहेवि छे । उन्हि धगधगति । श्वडि नि पर [illegible] प्रता ने कादवनां पिंड ने कादवनि पिंडिका ते कादव कहवां छे । मांहि मय पयमय [illegible] प्रता ने धुमाडानो पिंड ने धुमाडानि पिंडिका ॥ ने धुमाडा कहेवा [illegible] ॥५॥ तम प्रता ने अंधकारनो पिंड ने अंधकारनी पिंडिका ॥६॥ तमतमा प्रता ने [illegible] अंधकारनो पिंड ने अंधकारनी पिंडिका ॥७॥३॥ चोथो पिंड [illegible] पद्र्लो नरक । एक लाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तद्माथि । एक हजार जोजन उंचु मुकिये ॥

॥ ...लाख ने अठोतेर हजार जोजननी पोलार छे ॥
एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे १ लाख ने अठोतेर हजार जोजननी पोलार छे ॥
ते मांहि ॥ १३ पाथडा ने ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख ने बत्रिश
हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तेहमांथि एक हजार जोजन उंचु मुकिये ॥ एक हजार
जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने ३० हजार जोजननि पोलार छे ॥ तेमांहि ११ पाथडा
छे ॥ २५ लाख नरकावासा छे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके एक लाख ने अठयाविश हजार जोजननो
पृथ्वी पिंड छे । तेहमांहि ॥ १ हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे
॥ एक लाख ने छविश हजार जोजननो पृथ्विनो पिंड छे । तेमांहि ॥ ९ पाथडा ने १५ लाख
नरकावासा छे ॥ ३ ॥ चोथि नरके एक लाख ने २० हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे ॥
तेहमांथि ॥ १ हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ एक
लाख ने १० हजार जोजननि पोलार छे । तेमांहि ॥ ७ पाथडा ने ॥ १० लाख नरका वासा
छे ॥ ४ ॥ पांचमि नरके एक लाख ने अढार हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड छे । तेहमांथि एक
हजार जोजन उंचुं मुकिये एक हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे एक लाख ने १६ हजार जो-

जननि पोलार ठे ॥ तेहमांहि ॥ ५ पाथडा ने ॥ ३ लाख नरकावासा ठे ॥ ५ ॥ ठठी नरके एक लाख ने ॥ १६ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड ठे ॥ तेहमांथि । एक हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचुं मुकिये वचे ॥ १ लाख ने ॥ १४ हजार जोजननि पोलार ठे ॥ तेहमांहि ॥ ३ पाथडा ने १ लाखमां ॥ ५ उणां ॥ नरकावासा ठे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १ लाख ने ॥ ८ हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंड ठे ॥ तेहमांथि । साडावावन हजार जोजन उंचुं मुकिये ॥ साडावावन हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ वचे ३ हजार जोजननो जाडो एक पाथडो ठे तेहमांहि ॥ ५ नरकावासा ठे ॥ ७ ॥ ५ ॥ ठठे अलोक कहे ठे ॥ पहेली नरकथि ॥ १२ जोजन जइये तिवारे त्रिठो अलोक आवे ॥१॥ विजी नरकथि ॥ १२ जोजन ने ॥ २ त्रिया भागे त्रिठो अलोक आवे ॥ २ ॥ त्रिजी नरकथि ॥ १३ जोजन ने ॥ १ त्रिया भागे त्रिठो अलोक आवे ॥ ३ ॥ चोथि नरकथि ॥ १४ जोजन त्रिठो अलोक आवे ॥ ४ ॥ पांचमि थी ॥ १४ जोजन ने २ त्रियाभागे त्रिठो अलोक आवे ॥ ५ ॥ ठठीथि ॥ १५ जोजन ने १ त्रिया भागे त्रिठो अलोक आवे ॥६॥ सातमी नरके ॥ १६ जोजने त्रिठो अलोक आवे ॥७॥६॥ सातमे

आधार कहे छे। साते नरक तेने आधार रहि छे ॥ २० हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे॥ असंख्याता जोजननो लांब पणे पहोल पणे छे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघर्या घी सरिखो जाणवो ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घी सरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे उ णयो ॥ असंख्याता जोजननो आकाशास्तिकाय छे। नर्क रहि छे ॥ एकेकि नरके त्रण त्रण वळाका छे ॥ असंख्याता जोजननो आकाशास्तिकाय छे। विश हजार जोजननो घनोदधि जाडपणे छे तेहने जाता छ जोजननो गयो ॥ पहली नरके छ जोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके छ जोजन ने ॥ १ त्रियोनाग ॥२॥ त्रिजी नरके छ जोजन ने ॥ २ त्रियानाग ॥ चोथी नरके ॥ ७ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजन ने ॥ १ त्रियोनाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ जोजन ने ॥ २ त्रियानाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ८ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय छे तेहने जातां साडा चार जोजननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके [illegible] पहेलि नरके साडा चार जोजननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके [illegible] घनवाय छे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ॥ ५ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चोथी

नरके सवा पांच जोजननो घनवाय ठे ॥ ४ ॥ पांचमी नरके साडा पांच जोजननो घनवाय ठे ॥ ५ ॥ ठठी नरके पोणा ठ जोजननो घनवाय ठे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घनवाय ठे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवाय ठे ठेहडे जाना दोढ जोजननो रह्यो ॥ पहेली नरके दोढ जोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोजन ने १ वारिया नाग ॥२॥ त्रिजी नरके दोढ जोजन ने २ वारिया नाग ॥३॥ चोथी नरके दोढ जोजन ने ३ वारिया नाग ॥ ४ ॥ पांचमी नरके दोढ जोजन ने ४ वारिया नाग ॥५॥ ठठी नरके दोढ जोजन ने ५ वारिया नाग ॥ ६ ॥ सातमी नरने २ जोजननो तनुवाय ठे ॥७॥तहने आधारे ७ नरक रहि ठे॥७॥आठमे आंतरा कहे ठे॥पहेली नरके ॥ १३ पाथडा ने ॥ १२ आंतरा ठे ॥ एकेका पाथडाने ॥ ११५८३ ॥ इग्यार हजार पांचसें त्यासी जोजन ने ॥ १ त्रिया नागनुं आंतरुं ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ ११ पाथडा ने ॥ १० आंतरा । एकेका पाथडाने ९७०० सत्ताणुंसें जोजननुं आंतरुं ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ९ पाथडा ने ॥ ८ ॥ आंतरा । एकेका पाथडाने ॥ १२३७५ ॥ बार हजार त्रणसें पंचोतेर जोजननुं आंतरुं ॥ ३ ॥ चोथी नरके ॥ ७ पाथडा ने ६ आंतरा ठे। एकेका पाथडा ने ॥

१३१६६ ॥ सोल हजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ त्रिजा भागनुं आंतरुं ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ ५ पाथरा ने ॥ ४ आंतरा ॥ अकेका पाथराने २५२५० ॥ सवा पचीश हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ पाथरा ने ॥ २ आंतरा ॥ एकेका पाथराने ॥ ५२५०० ॥ साडा बावन हजार जोजननुं आंतरुं ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथरो छे ॥ आंतरुं नथि ॥७॥ हवे नरके पुष्पाविकीर्ण ने आवलिका बंध नरकावासा कहे छे ॥ पहेली नरके २९९५५६७ ॥ ओगणत्रीश लाख पंचाणु हजार पाचसें सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ४४३३ चुमालिसें तेत्रीस पंक्तिबंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके २४९७३०५ ॥ चोविस लाख सताणु हजार त्रणसें पांच पुष्पाविकीर्ण नरका वासा छे । अने २६९५ छविसें पंचाणु पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २५ लाख ॥ २ ॥ त्रिजी नरके १४९८५१५ चौद लाख अठाणुं हजार पांचसें पंदर पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने १४८५ चोदसें पच्यासी पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १५ लाख ॥ ३ ॥ चोथी नरके ९९९२९३ ॥ नव लाख नवाणुं

हजार वसें त्राणुं पुप्पाविकीर्ण नरकावासा छे । अने ७०७ सातसें सात पंक्तिबंध नर-
कावासा छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १० लाख ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ॥ २९९७३५ ॥ बे लाख
नवाणु हजार सातसें पांत्रीस पुप्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ वसें पांसठ पंक्ति-
बंध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मळिने ॥ ३ लाख ॥५॥ छठि नरके ॥ ९९९३२ नवाणुं हजार
नवसें बत्रीस पुप्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ६३ पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मली
९९९९५ ॥६॥ सातमी नरके ॥ ५ पंक्ति बंध छे ॥ साते नरकना ८३९०३४७ ॥ त्यासी लाख नेवुं
हजार त्रणसें सुडतालीस पुप्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ९६५३ ॥ नव हजार
छसें त्रेपन पंक्ति बंध नरकावासा छे ॥ सर्व मळी ८४ लाख नरकावासा जाणवा ॥ ९ ॥
दशमे अंधकार कहे छे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥ अशुभ पुद्गलनो अंधकार ॥ २ ॥ १० ॥
इग्यारमे नारकिने उपंजवाना स्थानक कहे छे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घडाने आकारे ॥
२ ॥ पेटिने आकारे ॥ ३ ॥ कुंभाने आकारे ॥ एवं नाना विध विपम स्थानके उपजे ॥ ११ ॥
बारमे क्षेत्र वेदना कहे छे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृपा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥ दाह

॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ नय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥ ९ ॥ परवश ॥ १० ॥ ए १० प्रकारनि अनंति वेदना छे ॥ १२ ॥ तेरमे ॥ १५ परमाधामिना नाम कहे छे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महा काल ॥८॥ असि पत्र ॥९॥ धनूष ॥१०॥ कुंन ॥११॥ वालु ॥१२॥ वैतरणी ॥१३॥ खर स्वर ॥१४॥ महा-घोष ॥१५॥ ॥१३॥ हवे चोदमे जीव अजीवना परिणाम कहे छे ॥ जीव परिणामना ॥१० नेद छे ॥ गति परिणाम ॥१॥ इंद्रिय परिणाम ॥२॥ कसाय परिणाम ॥३॥ लेसा परिणाम ॥४॥ जोग परिणाम ॥५॥ उपयोग परिणाम ॥६॥ नाण परिणाम ॥७॥ दंसण परिणाम ॥८॥ चरित्त परिणाम ॥९॥ वेद परिणाम ॥१०॥ हवे अजीव परिणामना १० नेद कहे छे ॥ बंधन परिणाम ॥ १ ॥ गति-परिणाम ॥२॥ संठाण परिणाम ॥३॥ नेद परिणाम ॥४॥ वर्ण परिणाम ॥५॥ गंध परिणाम ॥६॥ रस परिणाम ॥७॥ स्पर्श परिणाम ॥८॥ अगुरु लघु परिणाम ॥९॥ शब्द परिणाम ॥१०॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवुं कहे छे ॥ पहेली नरकना नारकि । जघ० साढा त्रण गाउ देखे । उत्० चार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ३ गाउ । उत० साढा त्रण गाउ देखे ॥२॥

त्रिजीना जघ० अढि गाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥३॥ चोथिना । जघ० । बे गाउ । उत्० अढि गाउ देखे ॥४॥ पांचमीना जघ० दोढ गाउ। उत्० ॥ २ गाउ देखे ॥५॥ छठिना जघ०१ गाउ। उत्० दोढ गाउ देखे ॥६॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ गाउ देखे ॥७॥ ॥१५॥ सोलमे संघयण कहे छे ॥ पहेली। बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवट्ठु वर्जिने पांच संघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु ॥ १ ने छेवट्ठु ॥२॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ ४ संघयणनो धणि जाय ॥ पांचमी नरके ॥ ३ संघयणनो धणि जाय ते किलकु ॥ १ ॥ छेवट्ठु ॥ २ ॥ अर्द्ध नाराच ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्र रुषभ नाराच संघयण ॥१॥ ने रुषभ नाराच संघयण ॥ २ ॥ ए ॥ २ नो धणि जाय। सातमीये ॥ १ वज्र रुषभ नाराच संघयणनो धणि जाय ॥१६॥ सत्तरम कोण जीव कइ नरके उपजे ते कहे छे ॥ असंज्ञी तिर्यंच पहेली नरक सुधि उपजे ॥१॥ भुजपर बीजी सुधि उपजे ॥२॥ खेचर तिर्यंच त्रिजी नरक सुधि उपजे ॥३॥ थलचर तिर्यंच चोथि नरक सुधि उपजे ॥४॥ उरपर तिर्यंच पांचमी नरक सुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरक सुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मत्स ने संज्ञि मनुष्य

आवि उपजे ॥७॥१७॥ अढारमे अशुन वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ स्पर्श नोगवता थका नारकि विचरे वे ॥ १७ ॥ इति नारकिनो बोल समासं ॥ १ ॥ हवे बिजो नवनपतिनो द्वार कहे वे ॥ पहेले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ वठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ए॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद् ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायस्त्रिंशक ॥ १३ ॥ चौदमे ४ बोल ॥ १४ ॥ पहेले नाम कहे वे ॥ असुर कुमार ॥ १ ॥ नाग कुमार ॥ २ ॥ सुवर्ण कुमार ॥ ३ ॥ विज्जु कुमार ॥ ४ ॥ अग्नि कुमार ॥५॥ द्वीप कुमार ॥६॥ उदधि कुमार ॥ ७ ॥ दिशा कुमार ॥ ८ ॥ पवन कुमार ॥ए॥ थणित कुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहे वे ॥ असुर कुमारने चुडामणि मुगटनुं चिन्ह ॥१॥ नाग कुमारने फेणनुं चिन्ह ॥२॥ सुवर्ण कुमारने गरुडनुं चिन्ह ॥३॥ विज्जु कुमारने वज्रनुं चिन्ह ॥४॥ अग्नि कुमारने कलशनुं चिन्ह ॥५॥ द्वीप कुमारने सिंहनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ उदधि कुमारने घोडानुं चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशा कुमारने गजनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ पवन कुमारने मगरमठनुं

चिन्ह ॥९॥ थणित कुमारने संपुटनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥ हवे त्रिजे वर्ण कहे छे ॥ असुर कुमारनो श्याम वर्ण ॥ नाग कुमार ने उदधि कुमारनो धोलो वर्ण ॥ विज्जु कुमार अग्नि कुमार ने द्विप कुमारनो रातोवर्ण ॥ सुवर्ण कुमार दिशा कुमार ने थणित कुमारनो पीलो वर्ण ॥ पवन कुमारनो निलोत्पल कमल सरिखो निलो वर्ण ॥३॥ हवे चोथे वस्त्र कहे छे ॥ राता निला पिला धोला विविध प्रकारना ने पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥४॥ हवे पांचमे सामानिक कहे छे ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रने चोसठ हजार सामानिक छे ॥ उत्तर दिशाना बलेंद्रने ॥ ६०००० साठ हजार सामानिक छे॥ धरणेंद्रादिक ॥ १८ ॥ इंद्रने छ हजार सामानिक छे ॥ ५ ॥ छ आत्मरक्षक ते सामानिक थि चोगुणा जाणवा ॥६॥ सातमे देवांगना कहे छे ॥ चमरेंद्र तथा बलेंद्रने पांच पांच देवीओ जाणवी ॥ एकेकि देवी आठ आठ हजार रूप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ धरणेंद्रादिक १८ इंद्रने छ छ देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छ छ हजार रूप वैक्रेय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ कहे छे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥

गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुनट ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे बोले अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ ९ ॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उद्योत ॥ १ ॥ देवीउंनो उद्योत ॥ २ ॥ आजरणनो उद्योत ॥ ३ ॥ गुज गुफानो उद्योत ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे त्रण परिषद कहेछे ॥ दक्षिण दिशाना चमरेंद्रनी ३ परिषद । समीया ॥ १ ॥ चंका ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥ २४ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चंकानो ॥ २८ हजारनो परिवार ॥ २ ॥ जायानो ॥ ३२ हजारनो परिवार ॥३॥ समीया तेकया आवे ने मोकल्या जाय ते साथे गुफ वात करे ॥ १ ॥ चंका तेकया आवे ने अणमोकल्या जाय ते साथे गुफ वात न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जाया अण तेकया आवे ने अणमोकल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि ॥ ३ परिषद तेमांहि अज्यंतर परिषदना ॥ ६०००० ॥ साठ हजार ॥ १ ॥ मध्यम परिषदना ॥ ७०००० ॥ सितेर हजार ॥ २ ॥ बाहिरलि परिषदना ॥ ८०००० ॥ एंसी हजार ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशना चमरेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिषद तेमांहि अज्यंतरनि ॥ ३५० देवीउं १ मध्यम परिषदनी ॥ ३०० देवीउं ॥२॥ बाहिरली परिषदनी

॥ २५० ॥ देवीउं ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीउंनि ॥ ३ परिषद तेमांहि
अभ्यंतरनि ॥ १७५ देवीउं ॥ १ ॥ मजमनि ॥ १५० देवीउं ॥२॥ वाहिरलीनि ॥ १२५ देवीउं
॥ ३ ॥ए सर्व परिवार दक्षिण दिशना चमेंद्रनो जाणवो ॥ एमज उत्तर दिशना वलेंद्रनि ३
परिषद जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहेलीना ॥ २० हजार देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ २४
हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥२७ हजार देवता ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि
॥ ३ परिषद ते पहेलीना ॥ ५० हजार ॥ १ ॥ बिजीना ॥ ६० हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७०
हजार ॥ ३ ॥ वलेंद्रनि देवीउंनी ॥ ३ परिषद ॥ पहिलीनि ॥ ४५० देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि
४०० देवीउं ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० देवीउं ॥३॥ हवे एहना नवनी कायना देवतानि देवीउंनि
॥ ३ परिषद ॥ पहेलीनि ॥ २२५ देवीउं ॥ १ ॥ बिजीनि ॥ २०० देवीउं ॥ २ ॥ त्रिजीनि
॥ १७५ देवीउं ॥ ३ ॥ ११ ॥ वारमे लोक पाल कहे छे । सोम ॥१॥ जम ॥ २॥ वरुण ॥३॥
वेसमण ॥४॥ सोमनो वारो पुर्व दिशे ॥१॥ जमनो वारो दक्षिण दिशे ॥२॥ वरुणनो वारो
पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तर दिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥ १ ॥

जमने वारे मार मरकि ने मेघ घणा होय ॥ २ ॥ वरुणने वारे गरु गुंबरु ने रोग घणा होय ॥३॥ वेसमणने वारे सुगाल सुभिक्ष ने लाज घणा होय ॥४॥१२॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ते ॥ ३३ ते गुरु समान ॥१॥ प्रोहित समान ॥२॥ पुज्य समान ॥३॥ मित्र समान ॥४॥ पिता समान ॥५॥ आज्ञा आराधक छे ॥१३॥ चोदमे शुज वर्ण गंध। रस। स्पर्श। जोगवता थका नवनपति विचरे छे ॥१४॥२॥ हवे त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार कहे छे। पहेले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह ॥२॥ त्रिजे वर्ण ॥३॥ चोथे वस्त्र ॥४॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आत्म रक्षक ॥६॥ सातमे देवांगना ॥७॥ आठमे अणिका ॥८॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषद ॥ ११ ॥ बारमे ॥ ४ बोल ॥ १२ ॥ पहेले नाम कहे छे। पिशाच ॥ १ ॥ भुत ॥ २ ॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किंनर ॥ ५ ॥ किंपुरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्ने ॥ ९ ॥ पाणपन्ने ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ भुइवाइ ॥ १२ ॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महा कंदीय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ बिजे चिन्ह कहे छे ॥ पहेलाने कलंबवृक्षनुं चिन्ह ॥१॥ बिजाने शालिवृक्षनुं चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजाने वडवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चोथाने पाडलिवृक्षनुं

चिन्ह ॥ ४ ॥ पांचमाने अशोक वृक्षनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ छठाने चंपक वृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सातमाने नाग वृक्षनुं चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरु वृक्षनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षिण दिशानां कह्या । एमज ॥ ८ उत्तर दिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते ॥ पहेला त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ नो श्याम वर्ण ॥ बीजानो कालो वर्ण ॥ पांचमानो निलो वर्ण ॥ चोथा ने छठानो धोळो वर्ण ॥ ३ ॥ हवे चोथे वस्त्र कहे छे ॥ निला राता पीळा ने धोला विविध प्रकारना ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ते एकेकाने चार चार हजार सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक ते सामानिकथी चोगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ते एकेकाने चार चार देवीओ छे । एकेकी देवी ॥ १ हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थे धणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ मे ॥ ७ अणिका कहे छे । गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥३॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीप ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे ॥ १० मे उद्योत कहे छे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे

परिषद ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ हजार देवता ॥ १ ॥ चंमाना ॥ १० हजार देवता ॥ २ ॥ जा-
याना ॥ १२ हजार देवता ॥ ३ ॥ आववुं जावुं प्रथमनि रिते जाणवुं ॥ ३ परिषदनुं ॥ ११ ॥
बारमे शुभ वर्ण ॥ गंध ॥ रस ॥ स्पर्श ॥ भोगवता थका वाणव्यंतर विचरे छे ॥ १२ ॥ इति
वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चोथो ज्योतिषीनो द्वार कहे छे। पहेले नाम ॥१॥
बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे
आतम रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांबपणुं ने पहोळपणुं ॥ ७ ॥ आठमे उंचपणुं ने जाडपणुं
॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषद ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥ ११ ॥ बारमे दे-
वीओ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहु ने पर्व राहु ॥ १३ ॥ चौदमे परिवार ॥ १४ ॥ पनरमे अ-
णिका ॥ १५ ॥ सोळमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण ॥ १७ ॥ अढारमे
व्याघात ॥ १८ ॥ ओगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देववुं ॥ २० ॥ एकविशमे चाल
॥ २१ ॥ बाविशमे तपवुं ॥ २२ ॥ त्रेविशमे उंचपणुं ॥ २३ ॥ चोविशमे आंतरुं ॥ २४ ॥
पचीशमे ४ बोल ॥ २५ ॥ पहेले नाम ने चंद्र ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र

॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ १ ॥ बिजे वाहक कहे छे ॥ चंद्रमा सूर्यना विमानने सोल सोल हजार देवता उपाडे छे तेहनो विवरो कहे छे ॥ चार हजार देवता सिंहने रुपे पूर्व दिशे उपाडे छे ॥ १ ॥ चार हजार देवता हाथिने रुपे दक्षिण दिशे उपाडे छे ॥ २ ॥ चार हजार देवता वृषभने रुपे पश्चिम दिशे उपाडे छे ॥ ३ ॥ चार हजार देवता घोडाने रुपे उत्तर दिशे उपाडे छे ॥ ४ ॥ एवं ॥ १६ हजार देवता चंद्रमा सूर्यना विमानने उपाडे छे ॥ आठ हजार देवता ग्रहना विमानने उपाडे छे ॥ चार हजार देवता नक्षत्रना विमानने उपाडे छे ॥ बे हजार देवता ताराना विमानने उपाडे छे । ते चारे दिशे पांचसें पांचसें एवेज रुपे जाणवा ॥ राहु ने चंद्रमानि परे जाणवुं ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहे छे ॥ ज्योतिषीना विमाननो ॥ मांहि कनक वर्ण ने बाहिरनो स्फाटिक रत्न समान जाणवो ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र पूर्वनि परे विविध प्रकारना जाणवा ते पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक देवता ॥ ४ हजार जाणवा ॥ ५ ॥ छठे आत्म रक्षक देवता ॥ १६ हजार जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे बोले लांबपणुं ने पहोलपणुं ते चंद्रमानुं विमान ॥ एक जोजनना ६१

भाग करिये तेह्वा ॥ ५६ नागनुं लांबुं ने पहोलुं छे ॥ १ ॥ सूर्य नुं विमान एकसठिया ४८ नागनुं लांबुं ने पहोलुं छे ॥२॥ ग्रह नुं विमान ॥ २ गाउनुं लांबुं ने पहोलुं छे ॥ ३ ॥ नक्षत्र नुं विमान ॥ १ गाउनुं लांबु ने पहोलुं छे ॥४॥ तारा नुं विमान अर्द्ध गाउनुं लांबु ने पहोलुं छे ॥५॥७॥ आगमे उंचपणुं ने जाडपणुं कहेछे। चंद्रमांनुं विमान एकसठिया ॥ २८ नागनुं उंचुं ने जाडुं ॥१॥ सूर्यनुं विमान एकसठिया ॥ २४ नागनुं उंचु ने जाडुं छे ॥ २ ॥ ग्रह नुं विमान ॥ १ गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥३॥ नक्षत्र नुं विमान अर्द्ध गाउनु उंचुं ने जाडुं छे ॥४॥ तारा नुं विमान पा गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ ५ ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति कहे छे ॥ ८।३।८ ८।३।८नि ॥ ४ पंक्ति छे ॥ १३२ चंद्रमाने ॥ १३२ सूर्य छे ॥ ९ हेठु मळीने ॥२६४॥ हवे गति कहे छे सर्वथि मंद गति चंद्रमानि ॥ १ ॥ तेहथि सूर्यनि शीघ्र गति ॥२॥ तेहथि ग्रहनि शीघ्र गति ॥३॥ तेहथि नक्षत्रनि शिघ्र गति ॥ ४ ॥ तेहथि तारानि शीघ्र गति ॥ ५ ॥ सर्वथि थोडि ऋद्धि तारानि ॥ १ ॥ तेहथि नक्षत्रनि अधिकी ऋद्धि जाणवि ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ३ ॥ तेहथि सूर्यनि अधिक ऋधि जाणवि ॥४॥ तेहथि चंद्रमानि अधिक ऋद्धि

१-

जाणवि ॥ ५ ॥ ए ॥ दशमे परिषद् कहे छे ॥ परिषद ३ ॥ इशा ॥ १ ॥ तुम्बिया ॥ २ ॥ पव्वा ॥ ३ ॥ पहेलीना ॥ ८ सहस्र देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ १० ॥ सहस्र देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ १२ सहस्र देवता ॥ ३ ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत कहे छे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ विमाननो ॥ ५ ॥११॥ बारमे देवीउ कहेछे एकेकाने चार चार देवीउ छे ॥ एकेकि चार चार हजार वैक्रेय रूप करे ॥ धणि पण भोगववाने अर्थे एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहु ने पर्वराहु कहे छे। नित्य राहु ते चंद्रमाने केमे छे। ते अमावास्यानी एकमथी मांभिने एकेकि कळा ढांकतो जाय। पुनमने दिने चंद्रमा १६ कळा संपूर्ण थाय ॥ अने पुनमने पम्वेथि एकेकि कळा दबावतो जाय। अमावास्याने दहाडे १ कळा चंद्रमांनि रहे ॥ अने परव राहु वेहुने आडे आवे चंद्रमानुं ग्रहण। जघ० ६ मासे ॥ उत्० । बेतालिश मासे आवे ॥ अने सूर्यनुं ग्रहण। जघ० ६ मासे। उत्० । अडतालीश वर्षे आवे। तेहमां नित्य राहुना विमान श्याम वर्णा छे। अने पर्व राहुना विमान पंच वर्णा छे ॥ ते नित्य राहुना २ विमान ॥ अने पर्व राहुना ॥ २० विमान—जंबुद्वि

छे ॥ चंद्रमा सूर्यना मांमला क्षेत्र फरसे तो ॥ ५१० जोजन क्षेत्र फरसे तेमांहि ॥ १८० जोजन जंबुद्विप मांहि फरसे अने ३३० जोजन लवण समुद्रमां फरसे। चंद्रमाना ॥ १५ मांमला छे ते मांहि ॥ ५ मांमला जंबुद्विप मांहि करे ॥ अने १० मांमला लवण समुद्रमां करे। मांमलेनो मांमले आवे तो ॥ १५ दिने आवे ॥ सूर्यना १८४ मांमला छे तेमांहि ॥ ६५ मांमला जंबुद्विपमां करे। अने ११९ मांमला लवण समुद्रमां करे॥ मांमलेनो मांमले आवे तो छ मासे आवे॥ सूर्यने मांमले २ बे जोजननुं आंतरुं ॥ चंद्रमा ने मांमले मांमले ३५॥ जोजनने एक सठिया ॥ ३१ नाग अने एकसठीया एक नागना ७ नाग करिये तेहवा ॥ ४ चुरणिया नागनुं आंतरुं ॥ १३ ॥ चौदमे परिवार कहे छे ॥ एक चंद्रमा ने एक सूर्यनो परिवार ॥ २८ नक्षत्र ॥ ८८ ग्रह ॥ अने छासठ हजार नवसें पंचोतेर कोडाकोडि तारा छे ॥ एटलो परिवार जाणवो ॥ १४ ॥ पंदरमे थांके ७ अणिका कहे छे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुभट ॥ ६ ॥ वृषभ ॥ ७ ॥ १५ ॥ सोळमे अणिकाना अधिपति एमज जाणवा ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण कहे छे। छ ये संघयणनो धणि ज्योतिषी थाय

॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात कहे छे ॥ व्याघात सहित आंतरुं पडे तो एक विमानथि बिजा विमानने । जघ० ॥ २६६ जोजननुं आंतरुं ॥ अने उत्० १२ हजार बसे ने ४२ जोजननुं आंतरुं ॥ १८ ॥ ओगणिशमे निव्याघात कहे छे निव्याघात सहित आंतरुं पडे तो । जघ० ॥ ५०० धनुषनुं ॥ उत्० । विमान विमानने ॥ २ गाउनुं आंतरुं ॥१९॥ हवे विशमे देखवुं कहे छे ॥ आषाढ मासे कर्क संक्रांतिने दहाडे ॥ १८ मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १२ मुहुर्त्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ॥ ४७२६३ जोजनने साठिया ॥ २१ भाग वेगळेथि उगतो देखाय ॥ अने पोश मासे मकर संक्रांतिने दहाडे ॥ १२ मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १८ मुहुर्त्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ३१८३१ जोजनने एकसठिया ॥ ३० भाग वेगळेथि उगतो सुर्य देखाय ॥२०॥ एकविशमे चाल कहे छे ॥ आषाढ मासे कर्क संक्रांतिने दहाडे । एकेक मुहूर्ते सूर्य पांच हजार बसें एकावन जोजनने साठिया ओगणत्रिश भाग चाले । आखे दिवशे थइ ने ॥ ९४५२६ जोजनने साठिया ४२ भाग चाले । अने पोष मासे मकरसंक्रांतिने दहाडे । एकेक मुहुर्ते सूर्य ॥ ५३०५ जोजनने साठिया ॥ १५ भाग चाले । आखे दिवसे थइने ॥ ६३६६३ जोजन चाले ॥२१॥ बाविशमे

तपवां कहेले ॥ सूर्य उंचो ॥ १०० जोजन नपे ले ॥ हेठो १००० जोजन नप ले । अने त्रिहो ॥ ४३२६३ जोजनने साजिया ॥२१ जाग तपेले॥२२॥ त्रेविशमे उंचपणुं कहेले । सम जुतल थकि॥७९० जोजन उंचा जइये तिवारे तारामंमल आवे । तिहांथि १० जोजन उंचपणे सूर्यनुं विमान ले। तिहांथि ॥ ८० जोजन उंचपणे चंद्रमानुं विमान ले। तिहांथि ॥ ४ जोजन उंचपणे नक्षत्रना विमान ले ॥ तिहांथि ॥ ४ जोजन उंचपणे बुधनो तारो ले॥ तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे शुक्रनो तारो ले ॥ तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे बृहस्पतिनो तारो ले । तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे मंगलनो तारो ले । तिहांथि ॥ ३ जोजन उंचपणे ठेहलो शनिश्चरनो तारो आवे ए, ११० जोजनमां ज्योतिष चक्र ले ॥ २३ ॥ चोविशमे आंतरुं कहे ले । चंद्रमां चंद्रमांना विमानने॥ सूर्य सूर्यना विमान ने ॥ १ लाख जोजननुं आंतरुं ले ॥ अने चंद्रमा सूर्यना विमानने अर्द्ध लाख जोजननुं आंतरुं ले ॥ २४ ॥ पंचवीशमे बोले शुन वर्ण गंध रस स्परस जोगवता थका ज्योतिषि विचरे ले ॥ २५ ॥ ४ ॥ हवे पांचमो वैमानिकनो द्वार कहे ले ॥ ...
त्रिज वर्ण ॥ ३ ॥ ...

आणपा ॥७॥ आठम सहस्रार ॥ [illegible] नवम [illegible] ॥ [illegible] अवतंसका
ना विमान ॥१०॥ इग्यारम [illegible] ॥११॥ [illegible] ॥१२॥ [illegible] ॥१३॥
सोलम [illegible] ॥१६॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१८॥ सतरमे
अभिशानां [illegible] ॥१९॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥२०॥
[illegible] ॥४ बोल ॥२०॥ [illegible] नाम । [illegible] ॥१॥ [illegible] ॥२॥ सनत कुमार
॥३॥ माहेंद्र ॥४॥ ब्रह्म [illegible] ॥ [illegible] ॥६॥ महा शुक्र ॥७॥ सहस्रार ॥८॥
आणत ॥९॥ प्राणत ॥१०॥ आरण ॥११॥ अच्युत ॥१२॥ नव ग्रैवेयकना नाम । भद्र
॥१॥ सुभद्र ॥२॥ सुजात ॥३॥ सुमाणस ॥४॥ प्रियदंसण ॥५॥ सुदंसण ॥६॥ आ-
मोह ॥७॥ सुपडिबद्ध ॥८॥ जसोधर ॥९॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥
१॥ विजयंत ॥२॥ जयंत ॥३॥ अपराजित ॥४॥ सर्वार्थ सिद्ध ॥५॥ मुक्ति शिलाना
नाम ॥ इसीतीया ॥१॥ इसिपब्भारानीया ॥२॥ तणुतीया ॥३॥ तणुतणुतीया ॥४॥
सिद्धिलोया ॥५॥ सिद्धालयनिया ॥६॥ मुत्तिनिया ॥७॥ मुत्तालयनिया ॥८॥ लोयग्गनिया

॥ ९ ॥ लोगनुनिगलिया ॥ १० ॥ लोगपन्किंदनिया ॥ ११ ॥ सवपाणभुयजीवसत्तमुहावहे
तिया ॥ १२ ॥ १ ॥ त्रिजे आधार कहे छे । पहेला बे देव लोक घनोदधिने आधारे रह्या छे ।
त्रिजुं चोथुं ने पांचमुं ए ॥ ३ देव लोक घनवायने आधारे रह्या छे ॥ छठुं सातमुं ने आठमुं ।
ए ३ देव लोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्या छे ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्ध सुधि एक
आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहे छे । पहेले बिजे देवलोके ॥ ५ वर्ण लाभे
॥ त्रिजे चोथे देव लोके ॥ १ कालो वर्जिने ॥ ४ वर्ण लाभे ॥ पांचमे छठे देव लोके ॥ ३ वर्ण
लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलो ए २ वर्ज्या । सातमे आठमे ॥ २ वर्ण लाभे पीळो ॥ १ ॥ ने धोळो ॥
२ ॥ नवमांथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ धोळो वर्ण लाभे ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र कहे छे ॥ बार
देव लोकना देवताना वस्त्र विविध प्रकारना ने पण संध्याना रंग सरिखा जाणवा ॥ उपरे वस्त्रनुं
कारण नथि ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक कहे छे ॥ पहेला देव लोकना देवताने ॥ ८४००० हजार
सामानिक देवता ॥ १ ॥ बिजाने ८० हजार सामानिक ॥ २ ॥ त्रिजाने ॥ ७२ हजार सामानिक
॥ ३ ॥ चोथाने ७० हजार सामानिक ॥ ४ ॥ पांचमाने ॥ ६० हजार सामानिक ॥ ५ ॥

छठाने ॥ ५० हजार सामानिक ॥६॥ सातमाने ॥ ४० हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमां दशमां ने ॥ २० हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमां बारमांने ॥ १० हजार सामानिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ ५ ॥ हवे बोल आत्मरक्षक कहेछे। सामानिकथि चोगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना नायनळीयानुं जाडपणुं कहेछे । पहेला बिजा देवलोकनुं तळीयुं ॥२७०० जोजननुं जाडुं ॥ त्रिजा चोथा देवलोकनुं तळीयुं ॥२६०० जोजननुं जाडुं ॥ पांचमां छठा देवलोकनुं तळीयुं ॥ २५०० जोजननुं जाडुं ॥ सातमा आठमा देवलोकनुं तळीयुं ॥२४०० जोजननुं जाडुं ॥ नवमां दशमां इग्यारमां बारमां देवलोकनुं तळीयुं ॥ २३०० जोजननुं जाडुं ॥ नव ग्रैवेयकनुं तळीयुं ॥ २२०० जोजननुं जाडु छे ॥ पांच अनुत्तर विमाननुं तळीयुं २१०० जोजननुं जाडुं छे ॥७॥ आठमे महेलनुं उंचपणुं कहेछे ॥ पहला बिजा देवलोकना ॥ ५०० जोजनना उंचा महेल ॥ त्रिजा चोथा देवलोकना ॥ ६०० जोजनना उंचा महेल ॥ पांचमा छठा देवलोकना ॥ ७०० जोजनना उंचा महेल॥ सातमा आठमां देवलोकना ॥८०० जोजनना उंचा महेल ॥ नवमां दशमां इग्यारमां ने बारमां देवलोकना ॥ ९००

जोजनना उंचा महोल ॥ नव ग्रैवेयकना ॥ १००० जोजनना उंचा महोल ॥ पांच अनुत्तर
विमानना ॥ ११०० जोजनना उंचा महोल ॥ प्रतर कहे छे पहेले बिजे देवलोके ॥ १३ प्रतर छे ॥ त्रिजे
चोथे देवलोके ॥ १२ प्रतर छे ॥ पांचमे देवलोके ॥ ६ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ प्रतर ॥
सातमे आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने बारमे ए ६ देवलोके चार चार प्रतर छे ॥ नवग्रैवे-
यकमां ९ प्रतर । पांच अनुत्तर विमानमां ॥ १ प्रतर ॥ ए सर्व मळी ॥ ६२ प्रतर जाणवा ॥८॥
नवमे पुष्पावकीर्ण विमान कहे छे ॥ ८४८९१४९ चोरासी लाख नेवासी हजार एकसो
ओगणपचास पुष्पावकीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिका बंध विमान ॥७८७४ अ-
ढांलेस्मां ने चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषद कहे छे पहेला देवलोकना इंद्रने ॥३॥
परिषद । पहेलीना १२ हजार देवता ॥ बीजीना १४ हजार देवता ॥ त्रिजीना ॥ १६ हजार देवता
॥ १ ॥ बिजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषद ॥ १० सहस्र ॥ १२ सहस्र ॥ १४ सहस्र ॥२॥
त्रीजा देवलोकना इंद्रने ॥ ३ परिषद ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥ १२ सहस्र ॥३॥ चोथे देव-
लोके ॥ ६ सहस्र ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥४॥ पांचमे देवलोके ॥ ४ सहस्र ॥ ६ सहस्र ॥ ८

सहस्र ॥५॥ त्रीजे देवलोके ॥२ सहस्र ॥ ४ सहस्र ॥ ६ सहस्र ॥६॥ सातमे देवलोके १ सहस्र ॥२ सहस्र ॥४ सहस्र ॥७॥ आठमे देवलोके ५००॥ १ सहस्र २ सहस्र ॥ ८ ॥ नवमे दशमे देवलोके २५० ॥५००॥ १००० ॥९॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ॥ १२५ ॥ २५० ॥ ५०० ॥ ११ ॥ बारमे उद्योत कहे छे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ ने विमाननो ॥१२॥ तेरमे देवीउं कहे छे एकेका इंद्रने आठ आठ देवीउं छे ॥ एकेकि देवी सोळ सोळ हजार रूप वैक्रेय करे अणि नागवत्ताने अर्थे पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १३ ॥ चौदमे लोकपाल कहे छे ॥ एकेका इंद्रने चार चार लोकपाल छे ॥ बारा पूर्वनिपरे जाणवा ॥ सोम ने जमनुं ॥ आयुष १ पल्यने १ पल्यना त्रिजा भागनुं अधिक जाणवुं ॥ वरुणनुं देशे उणा ॥ २ पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥ वैशमणनुं पुरा बे पल्यनुं आयुष जाणवुं ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ते पूर्वनि परे जाणवा ॥१५॥ सोळमे अणिका ७ ते । गंधर्व ॥१॥ नट ॥२॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पाळा ॥ ६ ॥ वृषभ ॥ ७ ॥ १६॥ सत्तरमे अणिकाना अधिपति प्रमज जाणवा ॥ १७ ॥ आढारमे संघयण कहे छे पहेलाथि ते चोथा देवलोक सुधि ॥६

संघयणनो धणी जाय ॥ पांचमे छठे देवलोके ॥१ छेवट्ठ वर्जिने पांच संघयणनो धणि उपजे॥
सातमे आठमे देवलोके ॥ ४ संघयणनो धणि जाय ते किलक १ ने छेवट्ठ ॥ ए २ वर्जिने ॥
नवमे दशमे इग्यारमे बारमे देवलोके ॥ ३ संघयण नो धणि जाय ॥ नव ग्रैवेयकमां ॥२ संघयण नो
धणि जाय ॥ पांच अनुत्तर विमानमां ॥ १ वज्र रूषभ नाराच संघयण नो धणि उपजे ॥१८॥
उगणीशमे अवधिनुं देखवुं कहे छे ॥ पहेला बिजा देवलोक ना देवता निचुं पहेली नरकना
तळा सुधि देखे ॥ उंचुं पोताना विमाननी ध्वजा लगे देखे । त्रिछुं असंख्याता द्वीप समुद्र
लगे देखे । त्रिजा चोथा देवलोकनां देवता निचुं त्रिजी नरकना तळा सुधि देखे उंचुं त्रिछुं
तेटलुंज देखे ॥ पांचमां छठा देवलोकना देवता निचुं त्रिजी नरकना तळा सुधि देखे। उंचुं
त्रिछुं तेटलुंज देखे । सातमां आठमां देवलोकना देवता निचुं चोथि नरकना तळा सुधि
देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नवमां दशमा इग्यारमां ने बारमा देवलोकनां देवता निचुं
पांचमी नरकना तळा सुधि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । नव ग्रैवेयकना देवता । निचुं
छठि नरकना तळा सुधि देखे उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे ॥ सर्वार्थसिद्ध महा विमानना देवता

किंचित् उणिलोक नाळी देखे ॥ नारकि त्रापान आकारे देखे ॥ १ ॥ भुवनपति पालाने आकारे देखे ॥ २ ॥ व्यंतर ढोल.ने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पडहाने आकारे देखे ॥ ४ ॥ १२ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नव ग्रैवेयकना देवता त्रिवर्या फुलने आकारे देखे ॥ चार अनुत्तर विमान ना देवता कुमारिका ना कंचुवाने आकार देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे देखे ॥ १९ ॥ विशमे बोल शुन वर्ण गंध रस स्पर्श भोगवता थका वैमानिक विचरे छे ॥ २० ॥ इति पांचमा वैमानिकनो द्वार समाप्तं ॥ ५ ॥ इति पांच बोल समाप्तं ॥

॥ अथ श्री त्रेवीस पदवीना बोल. ॥

तेना नाम कहे छे ॥ प्रथम ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न ॥ ७ पंचेंद्रिय रत्न ॥ ए महोटि पदवी । तेहमां ॥ ७ एकेंद्रिय रत्नना नाम कहे छे । चक्ररत्न ॥१॥ छत्र रत्न ॥२॥ चर्म रत्न ॥३॥ दंड रत्न ॥४॥ असि रत्न ॥ ५ ॥ मणि रत्न ॥ ६ ॥ कांगणि रत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ एकेंद्रिय [illegible]

॥ हवे ॥ ७ पंचेंद्रिय रत्नना नाम कहे छे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥ अश्व ॥६॥ गज ॥ ७ ए ॥७॥ पंचेंद्रिय रत्नना नाम कह्यां ॥ हवे ॥ ए महोटि पदवीना नाम कहेछे ॥ अरिहंतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥२॥ बलदेवनि ॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥७॥ सम्यक्दृष्टिनि ॥ ७ ॥ मंडलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ॥ ए महोटि पदवी कही ॥ एवं सर्व मळी २३ पदवी ॥ हवे ॥ १४ रत्न शुं शुं काम करे ॥ चक्ररत्न षट् खंड साधतां मार्ग बतावे ॥ १ ॥ छत्र रत्न ते ॥ ४७ कोश प्रमाणे छाया करे ॥ २ ॥ चर्मरत्न ते नदी आदे पार उतारे ॥ ३ ॥ दंडरत्न ते तमस गुफाना बार उघाडे ॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥५॥ मणिरत्न ते उद्योत करे ॥ ६ ॥ कांगणि रत्न ते ॥ ४ए मांडला आलेखे तथा तोला माप वधारे ॥७॥ सेनापति ते देश साधे ॥७॥ गाथापति ते धान रसवती निपजावे ॥ए॥ वार्धिक ते आवास घर निपजावे ॥ १० ॥ पुरोहित ते पाव साजा करे तथा शांतिकर्म करे विघ्न टाळे ॥११॥ स्त्रीरत्न ते जोग साधनने काम आवे ॥१२॥ अश्व ने गज बेहु चडवाने काम आवे ॥१४॥ हवे ॥ १४ रत्न किहां किहां उपजे

ते कहेछे ॥ चक्र ॥१॥ छत्र ॥२॥ असि ॥ ३ ॥ दंड ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ आयुधशाळामां उपजे ॥ चर्म मणि ने कांगणि ।ए ३ लक्ष्मीना भंडारमां उपजे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥२॥ वार्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ ए ४ पोताना नगरमां उपजे ॥ स्त्री विद्याधरनि श्रेणिमां उपजे ॥ अश्व ने गज । ए २ वैताढ्यने मुले उपजे ॥ हवे ॥ १४ रत्न नी कायानुं परिमाण कहेछे ॥ चक्र छत्र ने दंड ए ॥ ३ वाम प्रमाणे । वाम ते ॥ ४ हाथ प्रमाणे । चर्मरत्न ते ॥ २ हाथ प्रमाणे ॥ खड्गरत्न ते ॥ ५० अंगुलनुं लांबू ने ॥ १६ अंगुलनुं पहोळुं । ने अर्द्ध अंगुलनुं जाडुं ॥ मणिरत्न ॥ ४ अंगुलनुं लांबू ने ॥ २ अंगुलनुं पहोळुं ॥ कांगणिरत्न ने छ तळां । आठ खुणां । वार हांशो । सोनीनि अहिरणने संठाणे ॥ १ अंगुलनुं लांबू पहोळुं ने उंचुं ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित्त ए ॥ ४ नी अवगाना चक्रवर्ति प्रमाणे उंचि जाणवि ॥ स्त्रीरत्न चक्रवर्त्तिथि ४ अंगुल निचि होय ॥ अश्वरत्न ॥ १०८ अंगुलनो लांबो कानना मूलथि ते पुंछना मूललगे । अने ॥ ८० अंगुलनो उंचो । गजरत्न चक्रवर्तिथि बमणो उंचो होय ॥ए॥ २३ पदवी जे गतिमांहेथि निकल्यो ते केटलि

पद्वी पामे ते कहे छे । पहेली नरकना निकल्या १६ पद्वी पामे । ते ॥ २३ मांहेथि ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या ॥१॥ बिजी नरकना निकल्या ॥ १५ पद्वी पामे । पुर्वे ॥ १६ कहि ॥ तेह मांथि ॥ १ चक्रवर्तिनी वर्जि ॥२॥ त्रिजि नरकना निकल्या । तेर पद्वी पामे ते ॥ १५ मांथि बलदेव ने वासुदेव ए बे वर्ज्या ॥३॥ चोथि नरकना निकल्या ॥ १२ पद्वी पामे ते । तेर मांथि ॥ १ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकल्या । इग्यार पद्वी पामे । ते ॥ १२ मांहेथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥५॥ छठि नरकना निकल्या दश पद्वी पामे । ते साधुजी वर्ज्या ॥६॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ पद्वी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ पद्वी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥३ ना निकल्या । एक विस पद्वी पामे । ते वासुदेव ने ॥१॥ तिर्थंकर ॥ ए २ ॥ वर्ज्या ॥ पृथ्वी । पाणी । वनस्पति । गर्भज मनुष्य । ने गर्भज तिर्यंच । एटला ना निकल्या ॥ १९ पद्वी पामे । ते २३ ॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्ति ॥ २ ॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । चौरिंद्रिय । समुर्छिम तिर्यंच ने समुर्छिम मनुष्य ॥ ए ॥ ५ ना निकल्या ॥ १० पद्वी

पामे। ते १ए ॥ मांथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउवाउ ना निकल्या ॥ ए पदवी पामे ते ॥ ७ एकेंद्रियरत्न ने हाथि १। घोमो २ ॥ ए ए ॥ पदवी पामे ॥ पनर परमाधामि ने पहेला कि- ल्बिपीना निकल्या ॥ १० पदवी पामे। ते ॥ २३ मांथि ॥ ४ उत्तम पुरुष ने ॥ १ केवलि वर्ज्या॥ उपरला २ किल्बिपीना निकल्या ॥ ११ पदवी पामे। ते ॥ १० मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सुधर्म १ इशान ॥२॥ ए २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥ २३ पदवी पामे॥ त्रिजाथि ते आठमां देवलोक सुधिना तथा नव लोकांतिक ना निकल्या ॥ १६ पदवी पामे। ते २३ मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या। शेष ॥ १६ पामे ॥ नवमांथि नव ग्रैवेयक सुधिना निकल्या चौद पदवी पामे ते ॥ १६ मांथि अश्व ॥१॥ ने गज ॥२॥ ए २ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना निकल्या ॥ ७ पदवी पामे। ते ॥ २३ मांथि ॥ १४ रत्न ने ॥ १ वासुदेव वर्ज्या। शेष ॥ ७ पामे ॥ संज्ञिमांहि ॥ १५ पदवी लाजे ते ॥ २३ मांथि ॥ ७ एकेंद्रिय ने ॥ १ केवलिनी। ए ॥ ७ वर्जी ॥ शेष १५ लाजे। असंज्ञि मांहि ॥ ७ पदवी लाजे ते ॥ ७ एकेंद्रिय ने ॥ ५ समकीतनी ॥ ७ लाजे ॥ तिर्थंकर। तथा चक्रवर्तिमां ॥ ६

पदवी लाभे ॥ ते तिर्थंकरनि ॥ १ ॥ चक्रवर्तिनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥३॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केवलिनि । ए ॥ ६ लाभे ॥ वासुदेवमां ॥ ३ पदवी लाभे । वासुदेवनी ॥१॥ समकितनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ लाभे ॥ बलदेवमां पांच पदवी लाभे । बल-देवनि ॥ १ ॥ मंडलिकनि ॥ २ ॥ साधुनि ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥ समकित दृष्टिनि ॥५॥ ए ॥ ५ लाभे ॥ मनुष्य मांहि पदवी ॥ १३ ॥ लाभे ॥ नव महोटि पदवी ने सेनापति ॥१॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ एवं । सर्व मळी ॥ १३ पदवी लाभे ॥ मनुष्यणी मांहि पदवी ॥ ५ लाभे ॥ समकितनि ॥ १ ॥ श्राविकानि ॥ २ ॥ साध्वीनी ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥ स्त्रीरत्ननी ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ इति ॥ २३ ॥ पदवीना बोल समाप्त ॥

॥ अथ श्री सिझणाद्वार. ॥

१ पहेली नर्कना निकळ्या एक समये १० सिझे	३ त्रिजि नर्कना निकळ्या, एक० १०.
२ बिजी नर्कना निकळ्या एक० १०.	४ चोथी नर्कना निकळ्या एक० ४.

५ भवन पतिना निकल्या एक० १०.
६ भवन पतिनि देवीना निकल्या एक० ५.
७ पृथ्वीना निकल्या एक० ४ सिझे
८ पाणिना निकल्या एक० ४ सिझे
९ वनस्पतिना निकल्या एक० ६.
१० संज्ञी तिर्यचना निकल्या एक० १० सिझे.
११ तिर्यंचणीना निकल्या एक० १०.
१२ मनुष्यना निकल्या एक० १०
१३ मनुष्यणीना निकल्या एक० २०.
१४ पुरुष मरी स्त्री थइ सीझेतो एक० १०
१५ पुरुष मरी नपुंसक थइ सीझेतो एक० १०
१६ स्त्री मरी स्त्री थइ सीझेतो. एक० १०

१७ स्त्री मरी पुरुष थइ सीझे तो. एक० १०
१८ स्त्री मरी नपुंसक थइ सीझेतो. एक० १०
१९ नपुंसक मरी स्त्री थइ सीझेतो. एक० १०
२० नपुंसक मरी पुरुष थइ सीझेतो एक० १०
२१ नपुंसक मरी नपुंसक थइ सीझेतो एक० १०
२२ वाणव्यंतरना निकल्या एक० १० सिझे
२३ वाणव्यंतरनि देवीना निकल्या एक० ५
२४ ज्योतिषीना निकल्या एक० १०
२५ ज्योतिषीनी देवीना निकल्या एक० २०
२६ वैमानिकना निकल्या एक० १०८ सिझे
२७ वैमानिकनी देवीना निकल्या एक० २०
२८ स्व लिंगे सिझे तो १०८ सिझे

२ए अन्य लिंगे सिके तो १० सिके
३० गृहस्थ लिंगे सिके तो ४ सिके
३१ स्त्री लिंगे २० सिके
३२ पुरुष लिंगे १०८ सिके
३३ नपुंसक लिंगे १० सिके
३४ उर्द्ध लोके ४ सिके
३५ अधो लोके २० सिके
३६ त्रिछा लोके १०८ सिके
३७ उत्कृष्टि अवगाहना वाला एक० २ सिके
३८ जघन्य अवगाहना वाला ए० ४ सिके
३ए मध्यम अवगाहना वाला एक० १०८ सिके
४० समुद्रमां २ सिके

४१ नदी प्रमुख शेष जलमां ३ सिके
४२ तिर्थमां १०८ सिके
४३ अतिर्थमां १० सिके
४४ तिर्थंकर २० सिके
४५ स्त्री तीर्थंकर एक समय बे सिके.
४६ अ तिर्थंकर १०८ सिके
४७ स्वयं बुद्ध ४ सिके
४८ प्रत्येक बुद्ध १० सिके
४ए बुद्ध बोहि १०८ सिके
५० एक सिद्धाते एक समये १ सिके
५१ अनेक सिद्धा ते एक समये उत्० १०८
५२ विजय विजय प्रते एक समये

विश विश सिझे
५३ भद्रशाल वन १ नंदन वन २ सोमनस
वन ३ ए ३ मा चार चार सिझे.
५४ पंडग वनमां २ सिझे
५५ अकर्म भूमिमां १० सिझे
५६ कर्म भूमिमां १०८ सिझे
५७ पहेले १ बिजे २ पांचमे ३ ठ्ठे ४ ए ४
आरे दस दश सिझे
५८ त्रिजे १ चोथे २ ए २ आरे १०० सिझे
५९ अवसर्पिणी १ ॥ उत्सर्पिणी २ ए २ मां
१०८ एक सो आठ सिझे
६० नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां१००सिझे

६१ एकथि मांभिने ३२ लगे सिझे तो० ८
समय सुधि
६२–३३ थि मांभिने ४८ सुधि सिझे तो ७
समय लगे
६३–४९ थि मांभिने ६० सुधि सिझे तो ६
समय लगे
६४–६१ थि मांभिने ७२ सुधि सिझे तो ५
समय लगे
६५–७३ थि मांभिने ८४ सुधि सिझे तो ४
समय लगे
६६–८५ थि मांभिने ९६ सुधि सिझे तो ३
समय लगे

६७–९७ थि मांभिने १०२ सुधि सिझे तो | ६८–१०३ थि मांभिने १०८ सुधि सिझे तो

२ समय लगे | १ समय लगे

अल्पा बहुत्व ॥ सर्वथी थोका । चोथी नारकीना निकल्या सिद्ध थाय ॥ १ ॥
तेथी त्रीजा नारकीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २ ॥ तेथी बीजी नारकीना
निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ३ ॥ तेथी वनस्पतिना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध
थाय ॥ ४ ॥ तेथी पृथ्वि कायना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ५ ॥ पाणीना
निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥६॥ तेथी भवन पतिनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध
थाय ॥ ७ ॥ तेथी भवन पतिना देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ८ ॥
तेथी वाणव्यंतरनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ९ ॥ वाणव्यंतरना
देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १० ॥ ज्योतषीनी देवीना निकल्या सं-
ख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ ११ ॥ ज्योतषीना देवताना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय
॥ १२ ॥ मनुष्यणीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १३ ॥ मनुष्यना निकल्या सं-

ख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १४ ॥ पहेला नरकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥१५॥
त्रियंचणीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १६ ॥ त्रियंचना निकल्या संख्यात
गुणा सिद्ध थाय ॥ १७ ॥ पांच अनुत्तर वमानना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥१८॥
नव ग्रैवेयकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ १९ ॥ बारमा देवलोकना निकल्या
संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २० ॥ अग्यारमा देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध
थाय ॥ २१ ॥ दशमां देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २२ ॥ नवमां देव
लोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २३ ॥ आठमा देव लोकना निकल्या सं-
ख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २४ ॥ सातमा देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय
॥ २५ ॥ छठा देवलोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २६ ॥ पांचमां देवलोकना
निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २७ ॥ चोथा देव लोकना निकल्या संख्यात गुणा
सिद्ध थाय ॥ २८ ॥ त्रीजा देव लोकना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥ २९ ॥ बीजा
देव लोकनी देवीना निकल्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३०॥ बीजा देव लोकना देवतानां

निकळ्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३१॥ पहेला देवलोकनी देवीना निकळ्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३२॥ पहेला देव लोकना देवतानां नीकळ्या संख्यात गुणा सिद्ध थाय ॥३३॥

॥ इति सिझणा द्वार समाप्त. ॥

॥ अथ श्री विरह द्वार ॥

समुचय चार गतिनो विरह काल ॥ जघन्य ॥ १ समयनो ॥ उत्कृष्टो ॥ १२ मुहुर्त्त-
नो ॥ हवे पहेली नरके ज० ॥ १ समय० ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ बिजी नरके ज० १
समयनो ॥ उ० ७ दिननो ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० १५ दिननो ३ ॥
चोथी नरके ज० १ समयनो उ० १ मासनो ४ ॥ पांचमी नरके ज० १ समयनो उ० २ मा-
सनो ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ४ मासनो ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १
समयनो ॥ उ० ॥ ६ ॥ मासनो ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हवे दस
भवन पतीनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ पांच एकेंद्रीय अविरहिया संख्याताने

ठामे संख्याता उपजे ॥ असंख्याताने ठामे असंख्याता उपजे ॥ अनंताने ठामे अनंता उपजे ॥ समय समय उपजे ॥ समय समय चवे ॥ त्रण विगलेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम मनुष्यनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज मनुष्यनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो वाणव्यंतर ॥ ज्योतषी ॥ वैमानिकमां पहेला ॥ बीजा देव लोक सुधीनो ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो विरह काल ॥ त्रिजे देव लोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० ९ दिन ने वीस मुहुर्त्तनो ॥ चोथे देव लोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० १२ दिन ने १० मुहुर्त्तनो ॥ पांचमे देव-लोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० साडा बावीस दिननो ॥ छठे देव लोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ४५ दिननो ॥ सातमे देव लोके ज० १ समयनो ॥ उ० ८० दिननो विरह काल ॥ आठमे देव लोके ज० १ समयनो ॥ उ १०० दिननो ॥ नवमे दशमे देव लोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता मासनो ज्यां लगे १ वरस न होय ॥ इग्यारमे बारमे देव लोके ज० १ समयनो ॥

उ० संख्याता वरसनो ज्यां लगें सो वरस न होय ॥ पहेली त्रिके ज० १ समयनो उ० संख्याता वर्षना सेंकडा ज्यां लगें हजार वरस न होय ॥ बीजी त्रिके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता हजार वरस ज्यां लगें लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता लाख वरस नो ज्यां लगें कोड वरस न होय ॥ चार अनुत्तर विमानमां ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ॥ पल्यना असंख्यातमा नागनो विरहकाल ॥ सवार्थ सिद्धमां ज० १ समयनो उ० पल्यना संख्यातमा नागनो विरह काल ॥ सिद्धनो विरह जं० १ समयनो ॥ उ० ७ मासनो विरह काल ॥ चार गतिमां पंचेंद्रीय आश्री विरह काल ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ सर्व दंड स्थानकनो विरह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो ॥ इति श्री विरह द्वार समाप्तं ॥

॥ अथ श्री पांच देवना बोल. ॥

पहेलुं नाम द्वार ॥ १ ॥ बिजुं गुण द्वार ॥ २ ॥ त्रिजुं उपपात द्वार ॥ ३ ॥ चोथुं स्थिति द्वार ॥ ४ ॥ पांचमुं ऋद्धि तथा विकुर्वणा द्वार ॥ ५ ॥ छठुं चवण द्वार ॥ ६ ॥

सातमुं संचिठणा द्वार ॥ ७ ॥ आठमुं अंतर द्वार ॥ ८ ॥ नवमुं अल्प बहुत्व द्वार ॥ ९ ॥ ए ए द्वार पांच देव उपर उतारे ठे॥ हवे पहेलुं नाम द्वार कहे ठे॥ नविय द्रव्य देव ॥ १ ॥ नर देव ॥२॥ धर्म देव ॥३॥ देवाधि देव ॥४॥ नाव देव ॥५॥१॥ हवे बिजुं गुण द्वार कहेठे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामां उपजवुं ठे तेहने नविय द्रव्य देव कहिये ॥१॥ चौद रत्न नव निधान जेहने होय तेहने नर देव कहिये ॥२॥ साधुना सत्यावीश गुणे करी सहित होय तेहने धर्म देव कहिये ॥३॥ अढार दोष रहित ने बार गुणे करि सहित होय तेहने देवाधि देव कहिये॥ अढार दोष ते कहे ठे॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोन ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मठर १३ नय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रिमा प्रसंग १७ हास्य १८ ॥ ए १८ दोष रहित ने १२ गुणे करि सहित॥ ते १२ गुण कहे ठे॥ जिहां जिहां नगवंत उना रहे बेसे समोवसरे तिहां तिहां दश बोल सहित ते नगवंतथि बार गुणो उंचो तत्काल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने ठायमो करे ॥ १ ॥ नगवंत जिहां जिहां समोवसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचण प्रमाणे ढगला थाय ॥ २ ॥

नगवंतनि जोजन प्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो संशय दूरे ॥ ३ ॥ नगवंतने चोविश
जोम चामर विंझाय ॥४॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठ सहित सिंहासन स्वामिने आगले
थाय ॥५॥ नामंमल अंबोमाने केमाणे तेज मंमल विराजे दिशोदिशना अंधकार टाळे ॥ ६ ॥
आकाशे साम्रा बार क्रोम गेवि वाजां वागे ॥ ७ ॥ नगवंतनि उपरे त्रण छत्र उपरा उपरि
शीराजे ॥८॥ अनंत ज्ञान अतिशय ॥ ९ ॥ अनंत अर्चा अतिशय परम पूज्यपणुं १० अनंत
वचन अतिशय ॥ ११ ॥ अनंत अपायापगम अतिशय ते सर्व दोष रहितपणुं ॥ १२ ॥ ए
॥ १२ ॥ गुण करि सहित तथा चोत्रीस अतिशय पांत्रीश वचनातिशय आदे दइने अनंत-
गुणे करी सहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥ ४ ॥ नाव देव ते केहने कहीए ॥ नवन-
पति ॥ १ ॥ वाणव्यंतर ॥ २ ॥ ज्योतिषी ॥ ३ ॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ ए ४ जातिना देवताने
नावे प्रवर्ते छे तेहने नाव देव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं उववाय द्वार कहे छे ॥
नविय डव्य देवमां ॥ मनुष्य तिर्यंच जुगलीया ॥ २ ॥ सर्वार्थ सिद्ध ३ ॥ ए ३ ठाम वर्जिने
बाकि सर्व ठामना आवि उपजे ॥ १ ॥ नर देवमां ॥ ४ ॥ जातिना देवताने पहेली नर्क ॥

ए. ५ गामना आवि उपज ॥८॥ धर्मदेवमा छठी सातमी नर्क । ते ७ वा ७ ॥ मनुष्य तिर्यंच जुग
लीया ॥ ए ६ गाम वर्जित होय सव गामना आवि उपज ॥३॥ देवाधिदेवमा । पहेली बीजी
त्रिजी नर्कने किल्बिषी वर्जित ॥ वमानिक देवना आवि उपज ॥४॥ भाव देवमा तिर्यंच पचंद्रिय
१ ने संज्ञि मनुष्य ए ५ गामना आवि उपज ॥५॥६॥ हवे चोथु स्थिति द्वार कहे छे भविय
द्रव्य देवनि जघ० अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥१॥ नर देवनि जघ० सातसे वर्षनि उत्० ॥
चोराशी लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्म देवनि जघ० अंत० । उत्० देश उणा पूर्व क्रोडिनि ॥३॥
देवाधिदेव नि जघ० बहुतर वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥४॥ भाव देवनि जघ० दश हजार
वर्षनि ॥ उत्० ३३ सागरनि ॥५॥६॥ हवे पाचमु ऋद्धि तथा विकुर्वणा द्वार कहे छे ॥ भविय
द्रव्य देवमा जेहने वैक्रेय लब्धि उपनि होय तेहने ॥ नर देवने तो होयज ॥ धर्म देवमां जेहने
होय तेहने ॥ भाव देवने तो होयज ॥ ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० ॥१॥२॥३॥ उ० संख्याता
करे शक्ति तो असंख्याता रूप करवानि छे पण करे नहि ॥ देवाधिदेव नि शक्ति घणि छे
पण करे नहि ॥५॥ हवे छठुं चवण द्वार कहे छे भविय द्रव्य देव चवि देवता थाय १

नर देव चवि नर्के जाय ॥२॥ धर्म देव चवी वैमानिक तथा मोक्षमां जाय ॥ ३ ॥ देवाधि-देव तो मुक्ति जाय ॥४॥ भाव देव चविने॥ पृथ्वी॥ पाणी वनस्पति बादरमां॥ ने गर्भज मनुष्य तिर्यंचमां जाय ॥६॥ हवे सातमुं संचिठणा द्वार कहे छे ॥ संचिठणा ते देवनो देव-पणे रहे तो केटलो काळ रहे ते॥ भविय द्रव्य देवनि ॥ संचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्योपमनि ॥१॥ नर देवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्मदेवनि जघ० १ समयनि ॥ उत्० देशे उणी पूर्व कोडिनि ॥३॥ देवाधि देवनि जघ० बहुतेर वर्षनि॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥४॥ भाव देवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥ उत्० ३३ सागरनि ॥५॥७॥ हवे आठमुं अंतरद्वार कहे छे भवियद्रव्यदेवनुं आंतरुं पडे तो ॥ जघ० दश हजार वर्षने अंतर्मुहूर्त्त अधिक ॥ उत्० अनंता काळनुं आंतरुं पडे ॥१॥ नरदेवनुं जघ० १ सागर झाझेरुं। उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं॥२॥ धर्मदेवनुं जघ० २ पल्य झाझेरुं॥ उत्० अर्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणुं ॥३॥ देवाधिदेवनुं आंतरुं नथि ॥४॥ भाव देवनुं जघ० अंत० उत्० अनंता काळनुं॥८॥हवे नवमुं अल्प बहुत्व द्वार कहे छे॥ सर्वथि थोडा नर देव॥१॥

तेहथि देवाधि देव संख्यात गुणा ॥२॥ तेहथि धर्म देव संख्यात गुणा॥३॥ तेहथि जविय द्रव्य देव असंख्यात गुणा ॥४॥ तेहथि भाव देव असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥९॥ इति पांच देवना थोक संपूर्ण ॥

॥अथ श्री दिशाणु वाइ॥

समुच्चय जीव ॥ सर्वथि थोका पश्चिम दिशे जे जणि पश्चिम दिशे गौतम द्वीप छे तथा चंद्रमा सूर्यना द्वीप छे तेथि पाणि थोकुं छे। ते माटे निल फुल पण योनि छे तेणे करि जीव थोका छे ॥१॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे माटे गौतम द्वीप नथी ॥२॥ तेथी दक्षिण दिशे विशेषाहिया जे माटे चंद्रमा सूर्यना द्वीप पण नथि माटे ॥३॥ तेथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जे जणि उत्तर दिशे संख्यातमे द्वीपे संख्याति जोजन कोमा कोनिनुं मानसरोवर छे तीहां पाणी घणुं छे तेथी निलफुलना जीव घणा छे माटे ॥४॥१॥ पृथ्वी कायना जीव सर्वथी थोका दक्षिण दिशे॥ जे जणि दक्षिण दिशे ॥ ४ कोमिने ६ लाख भवन-

॥ १ ॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे भणि विजय ऊंची छे ते माटे ॥ २ ॥ तेथि
॥ १२ ॥ वाउकाया जीव सर्वथि थोडा । पूर्व दिशे जे भणि भुमि घणि नकोर छे ते माटे
विशेषाहिया जे भणि पश्चिम दिशे अधो गाम विजय छे तिहां जीव घणा छे माटे ॥ ४ ॥
तेथि पूर्व दिशे संख्यात गुणा जे भणि क्षेत्र महोटा छे ते माटे ॥ ३ ॥ तेथि पश्चिम दिशे
थोडा दक्षिण उत्तर दिशे जे भणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाहना छे तेथि । ए २ थोडा ॥ २ ॥
समुच्चय जीवनि परे जाणवा ॥ ए ॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य ॥ २ ॥ सिद्ध ॥ ३ ॥ ए ३ ॥ सर्वथि
त्रसकाय ॥ ३ ॥ बेइंद्रिय ॥ ४ ॥ तेइंद्रिय ॥ ५ ॥ चौउरिंद्रिय ॥ ६ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ७ ॥ ए ॥ ७
भणि गौतम द्वीप छे ते माटे पृथ्वी घणि छे ॥ ४ ॥ २ ॥ एमज अपकाय ॥ १ ॥ वनस्पति काय ॥ २ ॥
पण चंद्रमा सूर्यना द्वीप छे ते भणि पृथ्वी घणि छे ॥ ३ ॥ तेथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जे
थोडि छे ते भणि पृथ्वी घणि छे ॥ २ ॥ तेथि पूर्व दिशे विशेषाहिया जे भणि भवन नथि
पाहिया जे भणि भवन पतिना भवन थोडा छे ॥ ३ कोडि छाशठ लाख भवन छे तेथि पोलार
पतिना भवन छे तिहां पोलार घणि छे तेथि पृथ्वि थोडि छे ॥ १ ॥ तेथि उत्तर दिशे विशे-

उत्तर दिशे पुष्फाविकीर्ण विमान घणा छे ते माटे ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशे विशेषाधिया जे जणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी देवता घणा छे ते माटे ॥ ४॥ १० ॥ पांचमां देवलोकथि मांभिने ७ मां देवलोक सुधिना देवता सर्वथि थोडा ॥ पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तर ३ ए ३ दिशना ॥३॥ तेथि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा जे जणि तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रमुख घणा उपजे छे ते माटे ॥४॥१९॥ नवमां देवलोकथि मांभिने सर्वार्थसिद्ध विमान लगे ४ दिशे सरिखा जाणवा जे जणि सर्व ठेकाणे मनुष्य उपजे छे ते माटे ॥ २० ॥ इति दिशाणुवाइ समाप्तं ॥

॥ अथ श्री खंडा जोयणना बोल ॥

॥ खंडा जोयणादि १० बोलनो विचार विचारिये छिये जंबुद्वीप ॥१ लाख जोजननो लांबो ने पहोळो छे । ते वाटलो तेलना पुडलाने आकारे छे ॥१॥ वाटलो रथना पइडाने आकारे छे ॥२॥ वाटलो कमलनी कर्णिकाने आकारे छे॥३॥वाटलो पूर्ण चंद्रमाने आकारे छे ॥४॥ तेनि परिधि ॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनुष ने साडा तेर

अंगुल जाजेरानि छे ॥ हवे जंबुद्विप १० द्वारे करि वखाणे छे ॥ गाथा। खंडा १ जोयण २ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कूडाय ५ तिथ्थ ६ सेढिओ ७ ॥ विजय ८ दह ९ सलिलाउ १० ॥ पिंड एहोइ संघयणी ॥ १ ॥ ए दश द्वार छे ॥ तेमां प्रथम खंडा द्वार कहे छे। जंबुद्विपनो भरत सरिखा ॥ १९० खांडुवा छे ॥ ते केम ॥ भरतक्षेत्रनुं ॥ १ खांडुं ॥ चुल हिमवंत पर्वतना २ खांडवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ४ खांडवा ॥ महा हिमवंत पर्वतना ८ खांडवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ निषढ पर्वतना ३२ खांडवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खांडवा ॥ निलवंत पर्वतना ३२ खांडवा ॥ रमकवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ रूपि पर्वतना ८ खांडवा ॥ एरण वय क्षेत्रना ४ खांडवा ॥ शिखरि पर्वतना २ खांडवा ॥ इरवत क्षेत्रनुं १ खांडवुं एवं सर्व मळीने थिग्यंज पहोळपणे दक्षिण उत्तरे यहने। भरत जेवडा पहोळपणे १९० खांडवा थाय ॥ इति पहेलो खंडा द्वार समाप्तं॥ १ ॥ हवे विजो जोयण-द्वार कहे छे ॥ जोयण कहता जंबुद्विपना चारे दीशे जोजन जोजनना खंड करिये तवारे सातसें नेवुं कोडि छपन लाख चोराणुं हजार एकसो ने पचास चोरस थाय। उपरे १

कोश पनरसें पनर धनूप वधे । उपर ६० अंगुल वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयण द्वार स-
मासं ॥ हवे त्रिजो वासा द्वार कहे छे । वासा कहेता जंबुद्वीपने विषे ॥ ७ क्षेत्र ते ॥ जरत
॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास ॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ एरणवय
॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ क्षेत्र तथा एक महाविदेहना ४ जाग गणिये तो पूर्व महा-
विदेह ॥ पश्चिम महाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ए ॥ उत्तरकुरु ॥ १० ॥ एवं ॥ ६ ने ॥ ४
जेळवतां ॥ १० क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंजपणुं ॥१॥ वाहा ॥ २ ॥ जीवा ॥ ३ ॥ धनुपपिठ
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ कहे छे ॥ जरतक्षेत्रना २ जेद ॥ दक्षिण जरत ॥ १ ॥ उत्तर जरत ॥ २ ॥
दक्षिण जरतनुं विखंजपणुं ॥ २३८ जोजन ने ॥ ३ कळानुं । एहनि वाहा नथि । तेहनि
जीवा ॥ ए७४८ जोजन ने ॥ १२ कळा तेहनि धनुपपिठ ॥ ए७६६ जोजन ने १ कळा
झाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तर जरतनुं विखंजपणुं ॥ २३८ जोजन ने ३ कळानुं । तेहनि वाहा
॥ १८ए२ जोजन ने साडीसात कळानि । तेहनि जीवा १४४७१ जोजन ने ॥ ६ कळा मा-
ठेरि । तेहनि धनूपपिठ ॥ १४५२८ जोजन ने ॥ ११ कळानि ॥ एवं इरवत क्षेत्रनुं पण ज-

णनुं ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ ।हरणवय २ ए. २ ॥ क्षेत्रनुं पहोळपणुं २१०५ जोजन ने ॥ ५
कळानुं ॥ तेहनि बाहा ॥ ६७५५ जोजन ने ३ कळा तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ जोजन ने १६
कळा ॥ तेहनि धनुःपिठ ॥ ३८७४० जोजन ने ॥ १० कळा ॥ ४ ॥ हरिवास ॥ १ रमकवास
॥ २ ॥ ए. ॥ २ क्षेत्रनुं विष्कंभपणुं ॥ ८४२१ जोजन ने ॥ १ कळा ॥ तेहनि बाहा ॥ १३३६१ जो-
जन ने ॥ ६ कळा ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने १७ कळा तेहनि धनुःपिठ ॥
८४०१६ जोजन ने ॥ ४ कळा ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षेत्रनुं विष्कंभपणुं ॥ ३३६८४ जोजन ने ॥ ४
कळा तेहनि बाहा ॥ ३३७६७ जोजन ने ॥ ७ कळा ॥ तेहनि जीवा ॥ १ लाख जोजननि॥
तेहनि धनुःपिठ ॥ १५८११३ जोजन ने ॥ १६ कळा फाकेरि ॥ ७ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु ए. २
क्षेत्रनुं विष्कंभपणुं ॥ ११८४२ जोजन ने २ कळानुं ॥ तेहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा
॥ ५३००० जोजननि तेहनि धनुःपिठ ॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कळा ॥ ए ॥ इति त्रिजो
बाला द्वार समाप्तं ॥३॥ हवे ॥४॥ चोथो पर्वत द्वार कहे छे ॥ पर्वत २६९ जंबुद्वीपने विषे ॥ २६९॥
पर्वत छे । ते केम ॥ ६ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्र १ विचित्र २ ॥ जमक २ ॥ २००
॥

कोश पनरसें पनर धनूष वधे । उपर ६० अंगुल वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयण द्वार समासं ॥ हवे त्रिजो वासा द्वार कहे छे । वासा कहेता जंबुद्वीपने विषे ॥ ७ क्षेत्र ते ॥ जरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास ॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ क्षेत्र तथा एक महाविदेहना ४ जाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ पश्चिम महाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु ॥ १० ॥ एवं ॥ ६ ने ॥ ४ जेळवतां ॥ १० क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंजपणुं ॥१॥ वाहा ॥ २ ॥ जीवा ॥ ३ ॥ धनुषपिठ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ कहे छे ॥ जरतक्षेत्रना २ जेद ॥ दक्षिण जरत ॥ १ ॥ उत्तर जरत ॥ २ ॥ दक्षिण जरतनुं विखंजपणुं ॥ २३८ जोजन ने ॥ ३ कळानुं । एहनि वाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ९७४८ जोजन ने ॥ १२ कळा तेहनि धनुषपिठ ॥ ९७६६ जोजन ने १ कळा झाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तर जरतनुं विखंजपणुं ॥ २३८ जोजन ने ३ कळानुं । तेहनि वाहा ॥ १८९२ जोजन ने साडीसात कळानि । तेहनि जीवा १४४७१ जोजन ने ॥ ६ कळा माझेरि । तेहनि धनूषपिठ ॥ १४५२८ जोजन ने ॥ ११ कळानि ॥ एवं इरवत क्षेत्रनुं पण जा-

णनुं ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ हिरणवय २ ए. २ ॥ क्षेत्रनुं पहोलपणुं २१०५ जोजन ने ॥ ५
कलानुं ॥ तेहनि वाहा ॥ ६७५५ जोजन ने ३ कला तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ जोजन ने १६
कला ॥ तेहनि धनूपपिठ ॥ ३८७४० जोजन ने ॥ १० कला ॥ ४ ॥ हरिवास ॥ १ रमकवास
॥ २ ॥ ए ॥ २ क्षेत्रनुं विखंजपणुं ॥ ८४२१ जोजन ने ॥ १ कला ॥ तेहनि वाहा ॥ १३३६१ जो-
जन ने ॥ ६ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने १७ कला तेहनि धनूपपिठ ॥
८४०१६ जोजन ने ॥ ४ कला ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षेत्रनुं विखंजपणुं ॥ ३३६८४ जोजन ने ॥ ४
कला तेहनि वाहा ॥ ३३७६७ जोजन ने ॥ ७ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ १ लाख जोजननि ॥
तेहनि धनूपपिठ ॥ १५८११३ जोजन ने ॥ १६ कला फाझेरि ॥ ७ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु ए. २
क्षेत्रनुं विखंजपणुं ॥ ११८४२ जोजन ने २ कलानुं ॥ तेहनि वाहा नथि । तेहनि जीवा
॥ ५३००० जोजननि तेहनि धनूपपिठ ॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कला ॥ ए ॥ इति त्रिजो
वासा द्वार समाप्त ॥३॥ हवे ॥४॥ चोथो पर्वत द्वार कहे छे ॥ पर्वत क० जंबुद्वीपने विषे ॥ २६९॥
पर्वत छे । ते केम ॥ ६ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ विचित्त २ ॥ जमक २ ॥ २००

कन्तरागरि ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मनाई ॥ एव सर्व
गर्जान ॥ [illegible] ने [illegible] जीवा धनपविन
कहे छे। [illegible] ॥ [illegible] पर्वत [illegible] जोजनना उंचा छे ॥ थने पचीश
पचीश जोजनना [illegible] छे । तेमनुं [illegible] ॥ [illegible] जोजन ने [illegible] कळानुं ॥
तेमनि थाहा ॥ [illegible] जोजन ने [illegible] कळा [illegible] जीवा ॥ २०[illegible]३१ जोजन ने थाठ कळा
माठेरि ॥ तेमनि धनपविन ॥ [illegible] जोजन ने ॥ ४ कळा ॥ २ ॥ महाहिमवंत न रुपि ।
ए ॥ २ पर्वत ॥ बसे बसे जोजनना उंचा ॥ थने । पचाश पचाश जोजनना धरनीमां उंडा
छे । तेमनुं विष्कंभपणुं ॥ ४२१० जोजन ने १० कळानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ए२७६ जोजन ने
॥ ए कळा ॥ तेमनि जीवा ॥ ५३ए३१ जोजन ने ६ कळा काळेरि ॥ तेमनि धनूपविन ॥ ५७२ए३
जोजन ने १० कळा ॥ ४ ॥ निषड ॥ १ ॥ निळवंत ॥ २ ॥ ए ॥ २ पर्वत चारसो चारसो
जोजनना उंचा छे । थने सो सो जोजनना धरनीमां उंडा छे ॥ तेमनुं विष्कंभपणुं ॥ १६८४२
जोजन ने ॥ २ कळानुं । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ जोजन ने ॥ २ कळा तेमनि जीवा ॥ ए४१५६

जोजन ने ॥ २ कला । तेमनि धनूपपिठ ॥ १२४३४६ जोजन ने ए कला ॥ ए ॥ ६ पर्वत थया ॥ मेरु पर्वत ॥ १ लाख जोजननो ठे ते मांहि ॥ १ ॥ हजार जोजननो धरतीमांहि उंमो ठे। ते मांहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय ठे ॥ २५० जोजन पाषाणमय ठे ॥ २५० जोजन वज्र हीरामय ठे ॥ २५० जोजन शर्कर पृथ्वीमय ठे ॥ एवं ॥ १ हजार जोजननो उंमो ठे । ए प्रथम कांम ॥ ते उपरे नवाणुं हजार जोजननो मेरु उंचो ठे । ते मांहि । पोणा सोळ हजार जोजन थंक रत्नमय ठे ॥ पोणा सोल हजार जोजन स्फटिक रत्नमय ठे । पोणा सोल हजार जोजन पिळा सुवर्णमय ठे ॥ पोणा सोल हजार जोजन रुपामय ठे । ए ६३ हजार जोजननो बिजो कांम ॥ ते उपरे त्रिजो कांम । ठत्रिश हजार जोजननो जांबुनद राता सुवर्णमय ठे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ १ लाख जोजननो मेरु पर्वत ठे ॥ ते मूल १००ए० जोजन ने ॥ एक जोजनना ११ जाग करिये ॥ तेहवा १० जाग एटलो धरतीने मूळे पहोळो ने ॥ दश हजार जोजननो धरतीएं समजूतळे लांबो पहोळो ठे ॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उंचा जाइये तिहां नव हजार जोजननो

कंचनगिरि ॥ ४ गजदंता ॥ १६ वखारा ॥ ३४ लांबा वैताढ ॥ ४ वाटला वैताढ ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २६९ पर्वत छे । तेहनुं उंचपणुं । उंडपणुं । विष्कंभपणुं बाहा जीवा धनूपपिठ कहे छे । चुलहिमवंत १ शिखरि २ ए ॥ २ पर्वत ॥ सो सो जोजनना उंचा छे ॥ अने पचीश पचीश जोजनना धरतीमां उंडा छे । तेमनुं पहोळपणुं ॥ १०५२ जोजन ने १२ कळानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ५३५० जोजन ने ॥ १५ कळा ॥ तेमनि जीवा ॥२४९३२ जोजन ने अर्द्ध कळा झाझेरि ॥ तेमनि धनूपपिठ ॥ २५२३० जोजन ने ॥ ४ कळा ॥ २ ॥ महाहिमवंत ने रुपि । ए ॥ २ पर्वत ॥ बसे बसे जोजनना उंचा ॥ अने । पचाश पचाश जोजनना धरतीमां उंडा छे । तेमनुं विष्कंभपणुं ॥ ४२१० जोजन ने १० कळानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ९२७६ जोजन ने ॥ ९ कळा ॥ तेमनि जीवा ॥५३९३१ जोजन ने ६ कळा झाझेरि ॥ तेमनि धनूपपिठ ॥ ५७२९३ जोजन ने १० कळा ॥ ४ ॥ निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ ए ॥ २ पर्वत चारसो चारसो जोजनना उंचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमां उंडा छे ॥ तेमनुं विष्कंभपणुं ॥ १६८४२ जोजन ने ॥ २ कळानुं । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ जोजन ने ॥ २ कळा तेमनि जीवा ॥ ९४१५६

छे। तिहां जीन प्रतिमा छे तेहनो वर्णव देववंदो जाव धुपना कडछा छे। ए. कह्युं तम चार दिशे ॥ ४ सिद्धायतन छे ते एमज जाणवा ॥ चारे दिशे मेरु पर्वत थि ॥ ५० जोजन इशान खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडिउं छे ॥ मेरु पर्वत थी ॥ ५० जोजन अग्नि खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावडिउं छे ॥ मेरु पर्वत थी ॥ ५० जोजन नैरुत खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावडिउं छे ॥ मेरु पर्वत थी ५० जोजन वायव्य खुणे वनमां जाय तिहां ॥ ४ वावडिउं छे ॥ ते एकेकि वावडि ॥ ५० जोजननि लांबि। अने २५ जोजननि पहोळी छे ॥ अने दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ ते मांहि चारे दिशे तोरण सहित छे। ते वावडियो ना नाम ॥ पद्मा ॥ १ ॥ पद्म प्रभा ॥ २ ॥ कुमुदा ॥ ३ ॥ कुमुद प्रभा ॥ ४ ॥ ए. ॥ ४ वावडियो मध्ये ॥ २ शक्रेंद्रना ने ॥ २ इशानेंद्रना महोल छे ॥ ते चारे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे। अने अढिसो जोजनना लांबा ने पहोळा छे। उंचा शिखर बंध जाणवां। भद्रशाल वनमां ॥ ८ कुट छे ॥ भद्रशाल वन थकि पांचसें जोजन मेरु उपर जइये तिहां नंदन वन आवे ते नंदन वन ॥ ५०० जोजन चक्रवाल विष्कंभपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे. ते

सांबो ने पहोळो ठे । एम इग्यार इग्यार हजारे एकेक हजार घटाडनां शिखरे १ हजार जोजननो सांबो पहोळो ठे तेहनी त्रिगुणि जाजेरि परिधि ठे । मेरुने ॥ ४ ॥ वन ठे ॥ जद्रशाल वन ॥१॥ नंदन वन ॥२॥ सोमनस वन ॥३॥ पंडग वन ॥४॥ जद्रशाल वन ते । मेरुने चारेकोर धरती उपरे ठे । ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं सांबुं ठे । अने अढिसो अढिसो जोजननुं उत्तर दक्षिणे पहोळुं ठे । तेहने एक पद्मवर वेदिका ठे ॥ एक वन खंडे सघले चारेपासे विंटि ठे ॥ मेरु पर्वत थकि पूर्व दिशे ॥ ५० जोजन वनमां जाय । तिहां ॥ १ ॥ सिद्धायतन ठे । ते ५० जोजननुं सांबुं ने ॥ २५ जोजननुं पहोळुं ठे । अने ॥ ३६ जोजननुं उंचु ठे । अनेक स्तंन ठे । ते सिद्धायतनने ३ बारणा ठे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ए ३ तेहना दरवाजा आठ आठ जोजनना उंचा ठे । ने ॥ ४ जोजनना पहोळा ठे ॥ ते सिद्धायतनना मध्य त्रिजागने विषे एक मणिमय पिठिका ठे । ते ॥ ८ जोजननि सांबि ने पहोळी ठे ॥ ४ जोजननि जाडपणे ठे । सर्व रत्नमय ठे । ते उपरे ॥ १ ॥ देवछंदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ जोजननो सांबो ने पहोळो ठे । अने ॥ ८ जोजननो जाजेरो उंचो

यारक्तिं ने ॥ ४ महोत्र ने ते पूर्वनि परं जाणवुं । पंडग वनमां ॥ ४ अनिषेक शिला छे तेहना
नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥
ए ४ ॥ शिला कहि ने । अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे ने ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो
पांचसो जोजननी लांबि ने ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोंळी छे ॥ उत्तर
दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसां पांचसां जोजननि लांबि ने ॥ अने उत्तर दक्षिणे
अढिसो जोजननि पहोंळी ने ॥ ४ जोजन नि जाडपणे ने । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने आण
दिशे पाम्पिया ने ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन ने । अने उत्तर दक्षिणनि शिला
उपर एकेकुं सिंहासन ने ॥ ते पांचसो पांचसो धनुषना लांबा ने पहोळा ने ॥ अने २५० धनुषना
उंचा ने । तिहां तिर्थंकर देवनां जन्म महोत्सव करे ने । जंबु द्विप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो ।
ने ॥ उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे ने ॥ मेरुना १६ नाम कहे ने ॥ मंदर ॥१॥ मेरु ॥२॥
मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम
॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ९ ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

मेरु पर्वतने ढुंकडुं ढे॥ जिहां घणा देवता देवांगना हास्य रति खेले ढे॥ तिहां पण॥ ४ सिद्धायतन ढे॥ १६ वावडिउ ढे॥ ४ महोल ढे। पूर्वनि परे॥ ए कुट ढे॥ वलि नंदन वन थकि साडा बासठ हजार जोजन उंचा जइये। तिहां सोमनस वन आवे॥ ते॥ ५०० जोजन चक्रवाल विखंजपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे ढे॥ मेरुने विंटि रह्युं ढे॥ ४ सिद्धायतन ढे॥ १६॥ वावडिउ ढे॥ ४ महोल ढे॥ तिहां थकि॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंडग वन आवे ते॥ ४ए४ जोजन चक्रवाल विखंजपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे ढे॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि रह्युं ढे॥ पंडग वन ने विषे॥ १ चुलिका ढे। ते ४० जोजननि उंचि ढे॥ १२ जोजननि मूले पहोली ढे। अने ४ जोजननि मथाले पहोली ढे। आठ जोजननि वचमां पहोली ढे। गायना पुंढने आकारे ढे॥ सर्व वैरुलि रत्नमय ढे॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका ढे उपर घणि समोरमणिक जूमिका ढे। ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन ढे॥ ते १ कोशनुं लांबुं ने। अर्ध कोशनुं पहोलुं ढे अने देशेउणुं कोश उंचुं ढे। अनेक स्तंना ढे जाव धुपना कडुडा ढे॥ ते पंडग वनमां॥ ४ सिद्धायतन ढे॥ १६

गार्किते ॥४ मद्दोत्र ने ते पूर्वनि परे जाणवुं । पंडग वन... ॥ ४ आनेक शिला छे तेहना
नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥
ए ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे ते ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो
पांचसो जोजननी लांबि ते ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ उत्तर
दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि ते ॥ अने उत्तर दक्षिणे
अढिसो जोजननि पहोळी ते ॥ ४ जोजन नि जाडपणे ते । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने श्राण
दिसे पगथिया ते ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन ते । अने उत्तर दक्षिणनि शिला
उपरे एकेकुं सिंहासन ते ॥ ते पांचसो पांचसो धनुषना लांबा ने पहोळा छे ॥ अने २५० धनुषना
ऊंचा ते । तिहां तिर्थंकर देवनां जन्म महोत्सव करे ते । जंबु द्विप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो ।
ते ॥ उत्कृ० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे ते ॥ मेरुना १६ नाम कहे ते ॥ मंदर ॥१॥ मेरु ॥२॥
मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम
॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ९ ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

गिरु पर्वतने दुंकडुं ने ॥ जिहां पण देवना देवांगना हास्य रति क्रीडा करे ॥ तिहां पण ॥ ४ सिद्धायतन ठे ॥ १६ वावडिउ ठे ॥ ४ महोल ठे । पूर्वनि परे ॥ ए कुट ठे ॥ वलि नंदन वन थकि साढा बासठ हजार जोजन उंचा जइये । तिहां सोमनस वन आवे ॥ ते ॥ ५०० जोजन चक्रवाल विष्कंभपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे ठे ॥ मेरुने विंटि रह्युं ठे ॥ ४ सिद्धायतन ठे ॥ १६ ॥ वावडिउ ठे ॥ ४ महोल ठे ॥ तिहां थकि ॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंडग वन आवे ते ॥ ४ए४ जोजन चक्रवाल विष्कंभपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे ठे ॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि रह्युं ठे ॥ पंडग वन ने विषे ॥ १ चुलिका ठे। ते ४० जोजननि उंचि ठे ॥ १२ जोजननि मूळे पहोळी ठे । अने ४ जोजननि मथाले पहोळी ठे । आठ जोजननि वचमां पहोळी ठे । गायना पुंछने आकारे ठे ॥ सर्व वैडुर्य रत्नमय ठे ॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका ठे उपर घणि समोरमणिक चूलिका ठे । ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन ठे ॥ ते १ कोशनुं लांबुं ने । अर्ध कोशनुं पहोळुं ने अने देशोउणुं कोश उंचुं ठे । अनेक स्तंभ ठे जाव धुपना कडछा ठे ॥ ते पंडग वनमां ॥ ४ सिद्धायतन ठे ॥ १६

वावडिछे ॥ ४ महोत्र छे ते पूर्वनि परे जाणवुं । पंडग वनमां ॥ ४ अभिषेक शिला छे तेहना
नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥
ए ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो
पांचसो जोजननी लांबि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ उत्तर
दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे
अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ ४ जोजन नि जाडपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने त्रण
दिशे पगथिया छे ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला
उपर एकेकुं सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूषना लांबा ने पहोळा छे ॥ अने २५० धनूषना
उंचा छे । तिहां तिर्थंकर देवनां जन्म महोत्सव करे छे । जंबु द्वीप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो ।
ने ॥ उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे छे ॥ मेरुना १६ नाम कहे छे ॥ मंदर ॥१॥ मेरु ॥२॥
मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम
॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ९ ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

मेरु पर्वतने ढुंकडुं छे॥ जिहां पण देवता देवांगना हास्य रति खेले छे ॥ तिहां पण ॥ ४ सिद्धायतन छे॥ १६ वावडिउं छे ॥ ४ महोल छे। पूर्वनि परे॥ए कुट छे॥ वलि नंदन वन थकि साढा बासठ हजार जोजन उंचा जइये। तिहां सोमनस वन आवे॥ ते॥५०० जोजन चक्रवाल विखंभपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे॥ मेरुने विंटि रह्युं छे ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावडिउं छे॥ ४ महोल छे ॥ तिहां थकि॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइयें तिहां पंडग वन आवे ते ॥ ४ए४ जोजन चक्रवाल विखंभपणे फरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि रह्युं छे ॥ पंडग वन ने विषे ॥ १ चुलिका छे। ते ४० जोजननि उंचि छे ॥ १२ जोजननि मूळे पहोळी छे। अने ४ जोजननि मथाले पहोळी छे। आठ जोजननि वचमां पहोळी छे। गायना पुंछने आकारे छे॥ सर्व वैडुर्य रत्नमय छे ॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका छे उपर घणि समोरमणिक भूमिका छे। ते चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे ॥ ते १ कोशनुं लांबुं छे। अर्ध कोशनुं पहोळुं छे अने देशोउणुं कोश उंचुं छे। अनेक स्तंभा छे जाव धुपना कडछा छे॥ ते पंडग वनमां ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६

थावर्चित्ते छे ॥ ४ महोल छे ते पूर्वनि परे जाणवुं । पंडग वनमां ॥ ४ अभिषेक शिला छे तेहना नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबल शिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्त कंबल शिला ॥४॥ ए ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चंद्रमा ने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो पांचसो जोजननी लांबि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ उत्तर दक्षिण नि शिला ते पूर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो जोजननि पहोळी छे ॥ ४ जोजन नि जाडपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने त्रण दिशे पगथिया छे ॥ पूर्व पश्चिम नि शिला उपर बबे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला उपरे एकेकुं सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूषना लांबा ने पहोळा छे ॥ अने २५० धनूषना उंचा छे । तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोत्सव करे छे । जंबु द्वीप मध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो ने ॥ उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्म महोत्सव करे छे ॥ मेरुना १६ नाम कहे छे ॥ मंदर ॥१॥ मेरु ॥२॥ मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयंप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ९ ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

ने २ कळाना लांबा ठे। पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा ठे। निपढ निलवंत थकि निकळतां चारसो चारसो जोजनना उंचा ठे। अने सो सो जोजनना धरतीमां उंडा ठे ॥ सिता सितोदा पासे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा ठे। अने सवासो जोजनना धरती मांहि उंडा ठे। पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा ठे वखारापर्वत घोडाना खंधने आकारे ठे ॥ २३१ ॥ चोत्रिश लांबा वैताढ तेमां ॥ १ जरतनो वैताढ ॥ १ इरवतनो वैताढ। अने ३२ विजयना ३२ ॥ एवं ॥ ३४ वैताढ ते पचीश पचीश जोजनना उंचा ठे। अने सवाठ जोजनना धरती मांहि उंडा ठे। पचास पचास जोजनना पहोळा ठे। तेमनि वाहा ४०० जोजन ने १६ कळा जाजेरि ठे। तेमनी जीवा १०७२० जोजन ने १२ कळानि। तेमनि धनूपपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कळा। एकेके वैताढे बचे गुफा ठे। तमस गुफा १ खंम प्रपात गुफा ॥ २ ॥ ए २ गुफाउ। पचास पचास जोजननि लांबिउ ठे। अने १२ जोजननी पहोळिउ ठे। अने आठ जोजननि उंचिउ ठे। तेमांहि बचे नदी ठे। तेना नाम ॥ उमगजला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २॥ एक विश जोजन जइये तिहां उमगजला नदी आवे। ते त्रण जोजनना पहोटमां

ठे। ते मांहि हाथि घोमा बलद मनुष्यनुं कलेवर कचरो पमे तेने त्रिणवार नमाम्हि उंचा-
ळी नांखे ते कारणे उंमगजला कहिये । तिहांथि २ जोजन आघा जइये तिहां निमग-
जला नदी ठे । ते ३ जोजनना पहोटमां ठे ते मांहि हाथि घोमा मनुष्य बलदनुं कलेवर
अनेरुं पुरुष पमे तेने त्रणवार नमाम्हिने हेठुं बेसामे ते कारणे निमगजला कहिये ॥ शेष
॥ ३२ दिर्घ वैताढ महा विदेह क्षेत्र मांहि ठे । ते पण प्र. सरिखा ठे। पण बाहा जीवा धनुष-
पिठ नथि । पलंगने आकारे ठे ॥ २६५ ॥ हवे ४ वाटला वैताढ कहे ठे । सदावइ ॥ १ ॥
वियमावइ ॥ २ ॥ गंधावइ ॥ ३ ॥ मालवंत । प्र. ॥ ४ वाटला वैताढ जुगलियाना क्षेत्रमां
ठे । ते ॥ १ हजार जोजनना उंचा ठे ॥ २५० जोजनना धरती मांहि उंमा ठे । मूळे ॥ १
हजार जोजनना लांबा ने पहोळा ठे । धानना कोठारने आकारे ठे ॥ तेनि ॥ ३१६२ जो-
जन काझेरानि परिधि ठे स्वेत वर्णे ठे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ २६९ पर्वत थया ॥ इति ॥४
चोथो पर्वत द्वार समाप्त ॥४॥ हवे ५ मो कुट द्वार कहे ठे । कुमाय क० । जंबु द्विप मांहि
॥ ५२५ कुट ठे ॥ ते मांहि ॥ ४६७ कुट पर्वत उपरे ठे । तेहनो विवरो कहे ठे ॥ ३४

ने २ कळाना लांबा ळे। पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा ळे । निषढ निलवंत थकि निकळतां चारसो चारसो जोजनना ऊंचा ळे । अने सो सो जोजनना धरतीमां ऊंडा ळे ॥ सिता सितोदा पासे पांचसो पांचसो जोजनना ऊंचा ळे । अने सवासो जोजनना धरती मांहि ऊंडा ळे । पांचसो पांचसो जोजनना पहोळा ळे वखारापर्वत घोडाना खंधने आकारे ळे ॥ २३१ ॥ चोत्रिश लांबा वैताढ तेमां ॥ १ भरतनो वैताढ ॥ १ इरवतनो वैताढ । अने ३२ विजयना ३२ ॥ एवं ॥ ३४ वैताढ ते पचीश पचीश जोजनना ऊंचा ळे । अने सवाळ जोजनना धरती मांहि ऊंडा ळे। पचास पचास जोजनना पहोळा ळे। तेमनि बाहा ४८८ जोजन ने १६ कळा जाजेरि ळे। तेमनी जीवा १०७२० जोजन ने १२ कळानि। तेमनि धनूपपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कळा। एकेके वैताढे बबे गुफा ळे। तमस गुफा १ खंम प्रपात गुफा ॥ २ ॥ ए २ गुफाळ। पचास पचास जोजननि लांबिळ ळे। अने १२ जोजननी पहोळिळ ळे। अने आळ जोजननि ऊंचिळ ळे । तेमांहि बबे नदी ळे। तेना नाम ॥ ऊमगजला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २ ॥ एक विश जोजन जइये तिहां ऊमगजला नदी आवे । ते त्रण जोजनना पहोटमां

अग्नि खुणे ॥ १ ॥ नैरुत खुणे ॥ २ ॥ वायव्य खुणे ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३४ तेरी १०२ तिर्थ थाय ॥
इति ठठो तिर्थ द्वार समासं ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणि द्वार कहे छे ॥ सेढिउ क० जंबु द्वीप
मांहि १३६ श्रेणियो छे। ते वैताढ्य पर्वत उपरे दश दश जोजन उंचा चढिये। तिहां १
दक्षिणे ने ॥ १ उत्तरे एवं ॥ विद्याधरनि श्रेणियो छे ॥ ते मांहि भरतना वैताढ उपरे गगन
वल्लनादिक ॥ ५० नगर दक्षिण नि श्रेणिये छे। अने रथ चक्रवालादिक ६० नगर उत्त-
र नि श्रेणिये छे। एमज इरवतना वैताढ उपरे ६० नगर दक्षिण नि श्रेणिये छे। अने
५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे। महा विदेहना ३२ वैताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रे-
णिये पंचावन पंचावन नगर छे। सर्व मळीने ३७४० नगर विद्याधर नि श्रेणिये छे। एवं
३४ डु ६८ विद्याधरनि श्रेणि छे। वळी विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन उंचा चडिये तिहां
आभियोगिया देवतानि ॥ २ श्रेणि आवे। दक्षिणे १ ॥ ने ॥ १ उत्तरे। एवं ३४ डु ६८
श्रेणि आभियोगिया देवतानि छे ॥ एवं सर्व मळीने ॥ ६८ विद्याधरनि ने ॥ ६८ देवता-
नि। एवं ॥ १३६ श्रेणियो छे। इति ७ मो श्रेणि द्वार समासं ॥७॥ हवे ८ मो विजयद्वार

उत्तरकुरु द्रह ॥ २ ॥ चंद्र द्रह ॥ ३ ॥ एरावत द्रह ॥ ४ ॥ मालवंत द्रह ॥ ५ ॥ एवं १० ने ॥ ६ उपरल्या एवं १६ द्रह थया ॥ हवे १ पद्म अने पुंडरिक द्रह ए २ द्रह ॥ १ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना पहोळा छे ॥ १० जोजनना धरती मांहि उंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तर कुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रह मांहि ॥ १२०५०१२० कमळ छे । सघळा रत्नमय छे । पद्म द्रह मध्ये १ महोटुं कमळ छे ॥ ते श्रीदेवीनुं छे ॥ अने १०८ कमळ श्रीदेवीना जंमारना छे ॥ ४ कमळ महत्तरि काना छे ॥ ७ कमळ अणिकाना छे ॥ १६ हजार कमळ आत्म रक्षक देवना छे ॥ ४ हजार कमळ सामानिक देवना छे ॥ ८ हजार कमळ मांहिली परिषद्‌ना छे ॥ १० हजार कमळ वचलि परिषद्‌ना छे ॥ १२ हजार कमळ बाहिरली परिषद्‌ना छे ॥ तेने फरता ३ कोट कमळना छे ॥ तेमां ३२ लाख कमळ पहेला कोटना छे ॥ ४० लाख कमळ वचला कोटना छे ॥ ४८ लाख कमळ बाहिरला कोटना छे । एवं सर्व मळीने १२०५०१२० कमळ थया ते मांहि महोटुं कमळ ॥ १ जोजननुं लांबुं ने पहोळुं छे । अर्द्ध जोजननुं जाडुं छे १० जोजननुं पाणि मांहि उंडुं छे बे गाउ पाणीथी उंचु छे ॥ १०

जोजन संर्वांगे काळेरं कद्देलुं ठे। ते कमळनुं वज्र रत्नमय मूल ठे। रिष्ट रत्नमय कंद ठे। वैडूर्य रत्न-
मय निलंवरणा बाहेरला पानका ठे। जंबुनंद राता रत्न सुवर्णमय मांहिला पानका ठे ॥ तपाव्या
सोनामय केशरा ठे। नाना प्रकारना मणिमय ते उपरे पात्र कियो ठे। सोनानि कर्णिका ठे। ते कोश-
नि कर्णिका लांबि ने पहोळी ठे ॥ एक कोशनो जाडपणे मोटो ठे ते उपरे घणुं रमणिक ठे।
तेना मध्य देश नागे श्री देवीनुं घर ठे। ते १ कोशनुं लांबु ने अर्ध कोशनुं पहोळुं ठे ॥ अने देशे
ऊणुं कोश उंचुं ठे अनेक स्तंना ठे ठपाव्या सुवर्ण सरिखा सोने ठे ते जोवा योग्य ठे ॥ ते
भुवनने ३ बारणा ठे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ३ ॥ ते बारणा ॥ ५०० धनुषना
उंचा ठे। अढिसे धनुषना पहोळा ठे। ते भुवनमां एक मणि पिठिका ठे। ते ५०० धनुषनि
लांबि ने पहोळी ठे ॥ २५० धनूषनी उंची ठे। ते मणि पिठिका उपरे १ देवशय्या रहेवानो
पलंग ठे ॥ हवे महा पद्म द्रह ॥ १ ॥ महा पुंडरिक द्रह । ए ॥ २ द्रह ॥ एकेको २ हजार
जोजनो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोळो ठे। अने १० जोजननो भरती मांहि उंडो ठे॥
महा पद्म द्रहमां ह्रींदेवी रहे ठे ॥ महा पुंडरिक द्रहमां बुद्धि देवी रहे ठे ॥ पद्मना कमळ

श्रीदेवीनि परे जाणवा। पण कमळनुं मान बमणुं जाणवुं। ने मांहि महोटुं कमळ ॥२ जोजननुं लांबुं ने पहोळुं छे ॥ अने १ जोजननुं जाडुं छे ॥ हवे तिगिछ द्रह ॥ १ ॥ केशरि द्रह ॥२॥ ए २ द्रह एकेका ४ हजार जोजननो लांबो ने ॥ २ हजार जोजननो पहोळो छे ॥ १० जोजननो धरती मांहि उंडो छे ॥ तिगिछ द्रहमां धृति देवी रहे छे। केशरि द्रहमां कीर्त्ति देवी रहे छे। एहनुं महोटुं कमळ ॥ ४ जोजन नुं लांबुं ने पहोळुं छे। अने २ जोजननुं जाडुं छे। कमळ श्रीदेविनि परे जाणवा। एम सोळे द्रहना ॥ १२०५०१२० कमळने १६ गुणाकरतां शाश्वता कमळ ॥ १९२८०१९२० कमळ थाय ॥ अने ५ द्रह देव कुरुमां ॥ ५ ॥ उत्तर कुरुमां ए १० द्रह धरती उपरे छे ॥ तेहने नामे देवना नाम छे। एक पल्यनुं आयुष छे। अने चुलहिमवंत पर्वत उपरे पद्म द्रह छे तिहां श्रीदेवीनो वास छे। शिखरि पर्वत उपरे पुंडरिक द्रह छे ॥ तिहां लक्ष्मी देवीनो वास छे महा हिमवंत पर्वत उपरे महापद्म द्रह छे ॥ तिहां ह्रिंदेवीनो वास छे। रुपि पर्वत उपरे। महा पुंडरिक द्रह छे तिहां बुद्धि देवीनो वास छे। निषढ पर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे तिहां धृति देवीनो वास छे ॥ त्रि-

अनंत पर्वत उपरे केसरि द्रह ने । तिहां कीर्ति देवीनो वास ठे ॥ ए ६ देवीयो जवन पतिनी जातिनि जाणवि । तेहनुं आयुष १ पल्यनुं ठे ॥ इति ए मो द्रह द्वार समासं ॥ ए ॥ हवे दशमो सलिला द्वार कहे ठे ॥ सलिलाउ क० जंबुद्वीप मध्ये ॥ १४५६०७० नदियां ठे ॥ ते मांहि पद्म द्रहने पूर्व दिशिने तोरणेथि गंगा नदी निकळी ॥ ५०० जोजन पूर्व सामुहि गइ । तिहां गंगा वर्तन कुट ठे तिहां अफलाणी । तिहांथि दक्षिण दिशे चालि ते ५२३ जोजन ने ३ कळा दक्षिण दिशे पर्वत उपरे गइ । तिहां महोटा घमाना मुक्तामांथि पाणि पमे ठे ने मोतिना हार सरिखुं महा मगरमछना मुखने आकारे प्रनालि जीनीका मांथि फांइक अधिक १०० जोजन उंचेथि पाणि पमे ठे । ते जीनीका अर्द्ध जोजननि लांबि ठे । अने सवात्र जोजननि पहोळी ठे ॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या तेहने संनाणे ठे सर्व वज्रमय ठे । अति तेजवंत ठे ॥ ते मांहिथि पाणि पमे ठे ॥ तिहां १ महोटो गंगा प्रपात नामा कुंम ठे । ते कुंम ॥ ६० जोजननो लांबो ने पहोळो ठे ॥ १० जोजननो उंमो ठे । ते कुंमनि रुपामय उपकंठपालि ठे । वज्र पाषाणमय तळुं ठे । सुवे

मांहि उतरिये । नाना मणि रत्न करि बांध्यो छे कांठो जेहनो ॥ वज्रमय तळुं छे सुवर्ण-
नो मध्य भाग छे ॥ रुपानि वेलु छे । गंभिर शितल जळ छे अने ते कमळ पानसे ढांयुं
छे । घणा उत्पल कमळ छे । कुमुद नलीन पुंडरिक शतपत्र सहस्रपत्र कमळ घणा छे ।
गंगा कुंडने ३ बारणा छे । त्रण दिशे पगथीया छे । पूर्व दिशे ॥ १ ॥ दक्षिण दिशे ॥
२ ॥ पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ पगथीयानो वर्णव जेम पाषाण तेहनो उपल्यो भाग रिष्ट
रत्नमय छे । वैडूर्य रत्नमय थंभा छे । सोना रुपाना पाटिया छे । लोहिताक्ष रत्नमय
शिला छे । वज्रमय सांधो जडि छे । मणिना आलंबन पकडवा ने पगथिया आगले प्र-
त्येक प्रत्येक तोरण छे । ते मणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभे छे । ते गंगा प्रपात कुं-
डनि वचे ॥ १ गंगा द्वीप नामा द्वीपो कह्यो ने ८ जोजननो लांबो ने पहोळो छे ॥ २
कोश पाणियकि उंचो छे । सर्व रत्नमय छे । गंगा द्वीप उपरे घणुं रमणिक छे । ते उपरे १ गंगा
देवीनुं भवन कह्युं । ते १ कोशनुं लांबु ने अर्द्ध कोशनुं पहोळुं छे अने देशे उणुं कोश उंचुं छे ।
अनेक थंभा छे तेहनो वर्णव भोंदेवीनि परे जाणवो । गंगानो शाश्वतो नाम छे । ते गंगा प्रपात

कुंमना दक्षिण दिशाना बारणाथ गंगा नदी निकळीने

हजार नदी साथे खंड प्रपात गुफाने। वैताढ पर्वतने ठेठे श्रइने ॥ दक्षिणार्द्ध नरत मांहि चहेति
चिजी ७ हजार नदी नळीति थकि सर्व ॥ १४ हजार नदीने परिवारे जगती ने नेदिने पूर्वना
लवण समुद्र मांहि नळी एमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि । सलिलाउं क० । जंबु
द्विप मांहि १४५६०७० नदियो ठे । तेहनो विवरो कहे ठे ॥ गंगा ॥ १ ॥ सिंधु ॥ २ ॥
रक्ता ॥ ३ ॥ रक्तवइ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ नदीयो मूल थकि निकळता सवाठ जोजननि पहोळीउं ।
अने अर्द्ध गाउनि उंडियो ठे । तेहके समुद्रमां नळता साडाबासठ जोजननि पहोळि
अने अढि जोजननि उंडियो ठे । एकेकिनो चौद चौद हजार नदियोनो परिवार जाणवो
॥ सर्व मळीने ॥ १४ ॥ चोकुं ॥ ५६००० हजार नदियो थइ ॥ हवे रोहिया १ रोहितंसा २
ए २ नदि हेमवय क्षेत्रमां ठे । अने सुवर्ण कुला १ ने रूपकुला ॥ ए २ नदीयो हिरणवय
क्षेत्रमां ठे एवं ४ नदी निकलतां साडा बार जोजननि पहोळी अने १ गाउनि उंडियो
ठे ॥ ठेके समुद्रमां नळतां ॥ सवासो जोजननि पहोळी अने अढि जोजननी उंडियो ठे ।

एकेकिनो अट्ठाविश अट्ठाविश हजार नदीयोनो परिवार जाणवो सर्व मळीने एक लाख ने १२ हजार नदीयो थइ ॥ हवे हरिकंता ॥ १ ॥ हरिसलिला ॥ २ ॥ ए नदीयो हरिवास क्षेत्रमां छे ॥ अने नरकंता ॥ १ ॥ नारिकंता २ ए ॥ २ नदीयो रमकवास क्षेत्रमां छे ॥ ए ४ नदीयो मूळे निकळतां पचीश पचीश जोजननि पहोळीयो छे। अने ॥ २ गाउनि उंडियो छे। छेडे समुद्रमां मळतां। अढिसो अढिसो जोजननि पहोळीयो छे। अने पांच पांच जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकि नदीनो परिवार छपन छपन हजार नदीयोनो जाणवो। एवं ४ थइने ॥ २ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए ॥ २ नदीयो महा विदेह क्षेत्रमां छे। ते मूळे ॥ पचास पचास जोजन नि पहोळीयो छे। चार चार गाउनि उंडियो छे ॥ छेडे समुद्रमां मळतां। पांचसो पांचसो जोजननि पहोळीयो छे। दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकिनो पाच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे ॥ एवं २ नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जाणवो ॥ महा विदेह क्षेत्रनि १६ विजयमां। गंगा ॥ १ सिंधु ॥ २ ॥ ते ॥ १६ डु

बत्रिश थइ । अने ॥ १६ विजयमां । रत्ना ॥ १ ॥ रक्तवइ ॥ २ ...
३२ थइ एवं महा विदेह क्षेत्रमां ६४ नदीयो छे ॥ ६४ नुं पहोळपणुं भरत नि गंगा नि परे जाणवुं । ते एकेकिनो चौद चौद हजार नदीयोनो परिवार जाणवो चोसठ ने १४ हजारे गुणतां ८ लाख ने ९६ हजार नदीयो थाय । अने देव कुरुनि ८४ हजार अने उत्तर कुरुनि ८४ हजार । एवं १ लाख ने ६८ हजार अने ८ लाख ने ९६ हजार मांहि भेळविए एटले ॥ १० लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेष १२ नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ९२ हजार एवं सर्व मळीने १४ लाख ५६ हजार नदीयो थाय । अने ९० महोटी नदीयो जाणवी ॥ हवे १२ अंतर नदीयो महा विदेह क्षेत्रमां छे ते ॥ ८ ॥ विजयनुं ॥ १ गाममुं ते मांहि ॥ ३ नदीयो ॥ पूर्व महा विदेहने उत्तर ने गामके ॥ ३ अने दक्षिणने गामके ॥ ३ ए. ६ ॥ एमज पश्चिम महा विदेहने उत्तर गामके ॥ ३ अने दक्षिणने गामके ॥ ३ एवं १२ अंतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहोळीयो छे । अने अढि अढि जोजननि उंडियो छे ॥ १६५९२ जोजन ने २ कळानि लां-

घियां छे ॥ न [illegible] अनर नदीना नाम कहे छे ॥ गाहा वड ॥ १ ॥ दहा वड ॥२॥ पंका वड ॥ ३ ॥ तत जला ॥ ४ ॥ मत्त जला ॥ ५ ॥ उमत्त जला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिंह सोया ॥ ८ ॥ अंतो वाहिणी ॥ [illegible] उमि मालिनी ॥ १० ॥ फेण मालीनी ॥ ११ ॥ गंभीर मालिनी ॥ १२ ॥ [illegible] महानदीयो ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] नदीयो थइ । एहना परिवार सव नदीयाना [illegible] ॥ १४५६००० नदीया थाय ॥ इति १० मो सलिला द्वार संक्षेपथि समाप्त ॥ १० ॥ इति खेत्राजायण समाप्तं ॥

॥ अथ श्री योनी पदनो थोकडो ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद ९ मे योनीनो अधिकार चाल्यो छे योनी त्रण प्रकारनी छे—१. शीतयोनी, २. उष्णयोनी, ३. शीतोष्णयोनी, हवे तेनो विस्तार कहे छे—पहेली नरकथी त्रीजी नरक सुधी शीतयोनीया, चोथी नरके शीतयोनीया घणा, अने उष्णयोनीया थोडा, पांचमी नरके उष्णयोनीया घणा अने शीतयोनीया थोडा, छठी नरके

उष्णयोनीया, सातमी नरके महा उष्ण योनीया. अग्नि वर्जीने चार स्थावर, त्रण विग्ले-न्द्रिय, समुच्चय तिर्यंच अने मनुष्यमां त्रण योनी पामे. तेउकायमां एक उष्णयोनी संज्ञि तिर्यंच संज्ञि मनुष्य अने देवतामां योनी एक शीतोष्णनी. हवे तेनो अल्प बहुत्व कहे-छे—सर्वथी थोडा शीतोष्णयोनीया, तेथी उष्ण योनीया असंख्यात गुणा, तथा अयोनी-या सिद्ध भगवंत अनन्त गुणा. तेथी शीत योनीया अनन्त गुणा. वळी योनी त्रण प्रकारे कही छे.—१. सचेत, २. अचेत, ३. ने मिश्र. नारकी अने देवतामां योनी एक अ-चेत. पांच स्थावर, त्रण विग्लेंद्रिय समुच्चय तिर्यंच; अने समुच्चय मनुष्यमां योनी त्रण पामे छे. हवे संज्ञी तिर्यंच अने संज्ञी मनुष्यमां योनी एक मिश्र. हवे तेनो अल्पबहुत्व कहे छे. सर्वथी थोडा मिश्र योनीया अनंता गुणा. वळी योनी त्रण प्रकारनी—१. संवुडा, २. वियडा, ३. संवुडा वियडा. संवुडा कहेतां ढांकी, वियडा कहेतां उघाडी, संवुडा वि-यडा कहेतां कांइक ढांकी अने कांइक उघाडी. हवे पांच स्थावर देवता अने नारकीमां योनी एक संवुडा, त्रण विग्लेन्द्रिय समुच्चय तिर्यंच अने समुच्चय मनुष्यमां त्रण योनी

पामे. संज्ञी तिर्यंच अने संज्ञी मनुष्यमां योनी एक संवुडा वियडा. हवे तेनो अल्पबहुत्व कहे छे. सर्वथी थोडी संवुडा वियडा, तेथी वियडा योनीया असंख्यातगुणा, तेथी अ-योनीया अनन्तगुणा, तेथी संवुडा योनीया अनन्तगुणा. वळी योनी त्रण प्रकारनी छे. –१. संखा कहेतां शंखने आकारे, २. कछा कहेतां काचवाने आकारे, ३. वंशपत्ता कहेतां वांसना पांदडाने आकारे. चक्रवर्तिनी स्त्रीरत्ननी योनी शंखने आकारे ते योनीवाळी स्त्रीने संतान न थाय ५४ सलाखा पुरुषनी मातानी योनी काचवाने आकारे होय, अने सर्व मनुष्यनी मातानी योनी वांसना पांदडांने आकारे होय. ॥ इति श्री योनी पदनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री तेर बोलनो थोकडो ॥

श्री पन्नवणा सूत्र पद पंदरमे तेर बोलनो विवरो चाल्यो ते कहे छे. श्री वीर भगवानने गौतम स्वामी वंदणा नमस्कार करीने एम पुछे छे के, हे भगवान ! पहले बोले–सो

वर्षना जुग केटला ? संवत्सर केटला ? अयन केटला ? रुतु केटली ? मास केटला ? पक्ष केटला ? अवधालीयां केटलां ? दिन केटला ? पहोर केटला ? मुहुर्त केटलां ? घमी केटली ? अने श्वासोश्वास केटला ? उत्तर-। सो वरसना वीस जुग थाय, सो वरसना सो संवत्सर थाय, बसें अयन थाय. रुतु ठसो थाय, महीना बारसें थाय, पक्ष चोवीसें थाय, अवधालीयां अडतालीसें थाय, दिवस छत्रीस हजार थाय, पहोर बे लाख ने अठ्यासी हजार थाय, मुहुर्त दश लाख ने एंसी हजार थाय, घमी एकवीस लाख ने साठ हजार थाय, श्वासोश्वास चारसें ने सात क्रोड अडतालीस लाख चालीस हजार थाय ॥ बीजे बोले एक दिवस शुद्ध समकित सहित रागद्वेष रहित क्षमा दया सहित पोषो करे तो शुं फळ थाय ? उ०-सत्यावीसें करोड पल्योपम, सत्तोतेर करोम पल्योपम, सीत्तेर लाख पल्योपम, सित्तोतेर हजार पल्योपम सातसें सीत्तेर पल्योपम अने एक पल्योपमना नव जाग करीए तेमांथी आठ जाग जाजेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे ॥ त्रीजे बोले एक पहोरनो शुद्ध समकीत सहीत संवर करे तो तेनुं शुं फळ थाय ? उ०-त्रणसें करोम पल्योपम, तेंतालीस करोम पल्योपम, बावीस

हजार पल्योपम, वर्से ने वावीस पल्योपम अने एक पल्योपमना आठ भाग करीए तेमांथी सात भाग काफेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे॥ चोथे बोले एक मुहुर्त शुद्ध समकीत सहीत सामायक करे तो तेनु शुं फल थाय? उ०—बाणु करोड पल्योपम, ओगण साठ लाख पल्योपम, पचीस हजार पल्योपम, नवसेंने पचीस पल्योपम अने एक पल्योपमना सात भाग करीए तेमांथी त्रण भाग काफेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे॥ पांचमे बोले एक घडीनो संवर करे तो शूं फळ थाय? उ०—छेंतालीस करोड पल्योपम, ओगणत्रीस लाख पल्योपम, बार हजार नवसेंने सडसठ पल्योपम अने एक पलना ठ भाग करीए तेमांथी चार भाग काफेरा शुभ देवतानुं आउखुं बांधे॥ छठे बोले एक नवकारशी तप करे तो शुं फळ थाय? उ०—ओगणत्रीश लाख त्रेसठ हजार वर्से ने सडसठ एक पळनो चोथो भाग शुभ देवतानुं आउखुं बांधे॥ सातमे बोले एक अनुपुर्वी गणे तो शुं फळ थाय? उ०—पांचसे सागरना पाप नासे. आठमे बोले एक उणोदरी तप करे तो? उ०—सो वरसना पाप नासे. नवमे बोले एक उपवास करे तो? उ०—हजार वरसना नारकीना पाप नासे. दशमे बोले एक छठ

करे तो ? उ०—एक लाख वरसना नारकीना पाप नासे. अग्यारमे बोले एक अठम करे तो ? उ०—एक करोड वरसना नारकीना पाप नासे॥ बारमे बोले चार तथा पांच उपवास करे तो ? उ०—कोडान कोड वरसना नारकीना पाप नासे. तेरमे बोले एक घडीना श्वासोश्वास केटला थाय ? उ०—एक हजार आठसें साडी बेतालीस थाय. बे घडीना श्वासोश्वास त्रण हजार सातसें ने तोंतेर थाय. एक दीवस रातना श्वासोश्वास एक लाख तेर हजार एकसो ने नेवु थाय. पोरसीना श्वासोश्वास पंदर हजार ने बाणु थाय. पंदर दिवसना श्वासोश्वास सोल लाख सत्ताणु हजार आठसें ने पचास थाय. एक मासना श्वासोश्वास त्रीस लाख पंचाणु हजार सातसें थाय. नव मासना श्वासोश्वास त्रण करोड चौद लाख दस हजार बसें ने पचीस थाय. एक वरसना श्वासोश्वास चार करोड सात लाख अडतालीस हजार चारसें थाय. सो वरसना श्वासोश्वास चारसें करोड सात करोड अडतालीस लाख ने चालीस हजार थाय॥ हवे श्वासोश्वास उपर सुख दुःखनी वातो कहे छे. ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिनुं आउखु सातसें वरसनुं हतुं. तेना श्वासोश्वास अठावीसे करोड बावन करोड आडत्रीस लाख एंसी हजार थाय.

श्वासोश्वास [illegible] स्थान सातमा नरके अपइठाण नरकावासे तेत्रीस सागरोपमनी स्थितीए गया त्या मनुष्यना नवमा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ए श्वासोश्वास लीधा ते एकेक श्वासोश्वास उपर नरकमा [illegible] छे. श्वासोश्वास लाख तपन हजार नवसे ने पचास पल्योपम एक पल्योपमना त्रीजा भाग जाजेरा नरकमां दुःख भोगवे छे. हवे सुख आश्री कहे छे धन्ना अणगार नव मास संजम पाळ्या तेना श्वासोश्वास त्रण करोड पचास लाख एकसठ हजार ने त्रणसे आठ ते धन्ना अणगार एटला श्वासोश्वास संजम पाळी सर्वार्थ-सिद्ध सुख पाम्या. ते मनुष्यना एक श्वासोश्वास उपर एकसो करोड पल्योपम. सात करोड पल्योपम. सत्ताणु लाख पल्योपम. छनु हजार पल्योपम. नवसे अठाणुं पल्योपम. एक पल्योपमनो छठो भाग माजेरो एटलुं सुख भोगवे ॥ पुंडरीक अणगार त्रण दिवस संजम पाळ्यो तेना श्वासोश्वास त्रण लाख. ओगण चालीस हजार पांचसें ने सित्तेर श्वासोश्वास लीधा. एक श्वासोश्वास उपर सर्वार्थसिद्धमां ते अणगार नव हजार करोड पल्योपम सत्या-वीस करोड पल्योपम छोंत्तेर हजार करोड पल्योपम आठसें ने एकसठ पल्योपम अधीक

एटलुं सुख देवमां नोगवे. एमज एटलुं कुंमरीक संसारमां जवाथी नर्कना दुःख नोगवे छे. ॥ इति श्री तेर बोलनो थोकडो संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री छकायना भवनो थोकडो ॥

श्री गौतम स्वामि वीर नगवानने वंदणा नमस्कार करी पूछे छे के, हे नगवान! छकायना जीव अंतर मुहूर्तमां केटला नव करे? श्री वीर नगवान कहे के हे गौतम! पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायरो ए जघन्य एक नव करे, उत्कृष्टा बार हजार आवसें चोवीस नव एक अंतर मुहूर्तमां करे. अने वनस्पतिना बे नेद ते प्रत्येक अने साधारण. हवे प्रत्येक जघन्य एक नव उत्कृष्टा बत्रीस हजार नव करे अने साधारण जघन्य एक नव अने उत्कृष्टा पांसठ हजार पांचसें छत्रीस नव करे. बेइंद्रिय जघन्य एक नव अने उत्कृष्टा एंसी नव करे. तेइंद्रिय जघन्य एक नव अने उत्कृष्टा साठ नव अने चोरिंद्रिय जघन्य एक नव अने उत्कृष्टा चालीस नव करे

वीस नव करे. संज्ञी तिर्यंच अने संज्ञी मनुष्य जघन्य अने उत्कृष्टो एकज नव करे ॥ इतिश्री छकायना नवनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री छ लेश्यानो थोकडो. ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्यन चोत्रीसमे छ लेश्यानो थोकडो चाल्यो छे तेमां प्रथम लेश्याना अगीयार द्वार कहे छेः—१. नाम, २. वर्ण, ३. रस, ४. गंध, ५. स्परस, ६. परीणाम, ७. लक्षण, ८. स्थानक, ९. स्थिति, १०. गति, ११. चवन, ए अगीयार नाम कह्यां, हवे तेनो विस्तार कहे छे. १ प्रथम नाम द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापुत लेश्या ३, तेजु लेश्या ४, पद्म लेश्या ५, अने शुक्ल लेश्या ६ ॥ २ बीजो लेश्याना वर्ण नो द्वार कहे छे—कृष्ण लेश्यानो वर्ण (रंग)—जेवो पाणी सहित मेघ काळो, जेवां पाडानां शींगडां काळां, जेवां अरीठानां बीज काळां, जेवुं गाडानुं खंजन, आंखनी कीकी ए करतां अनन्त गुणो काळो. १. नील लेश्यानो वर्ण—जेवो अशोक वृक्ष नीलो, जेवी चास पक्षीनी पांख,

जेवुं पोपटनुं पीछुं एथी अनन्त गुणो नील लेश्यानो नीलो वर्ण छे. २, कापुत लेश्या नो वर्ण जेवां अळसीनां फूल, जेवी कोयलनी पांख, जेवी पारेवानी डोक कांइक राती, कांइक काळी ए थकी अनन्त गुणो अधिक कापुत लेश्यानो वर्ण जाणवो. ३. तेजु लेश्यानो वर्ण जेवुं उगतो सूर्य रातो, जेवी सुडानी चांच, जेवी दीवानी शीखा ए थकी अनन्त गुणो अधिक रातो. ४. पद्म लेश्यानो वर्ण–जेवी हरताळ, जेवी हळदर, जेवां शणनां फूल, ए थकी अनन्त गुणो अधिक पीळो. ५ शुक्ल लेश्यानो वर्ण–जेवो शंख, जेवुं अंक रत्न, जेवुं मोगरानुं फूल, जेवुं गायनुं दुध, जेवो रुपानो हार ए थकी अनन्त गुणो अधिक श्वेत ॥६॥ ३ बीजो लेश्या ना रसनो द्वार कहे छे–कृष्ण लेश्या नो रस जेवो कडवो तुंबडो, जेवो कडवो लींबडानो रस, जेवो रोहीणी नामे वनस्पतिनो रस, एथी अनन्त गुणो अधिक कडवो रस. १. नील लेश्या नो रस–जेवो सूंठनो तीखो रस, जेवो पीपर–मरीनो रस, एथी अनन्त गुणो अधिक तीखो रस. २ कापुत लेश्या नो रस–जेवो टुंणी काची केरीनो रस, जेवो काचा कोठनो रस. एथी अनन्त गुणो अधिक खाटो रस. ३. तेजु लेश्या नो

प्रणामे-जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट. तथा नव प्रकारे प्रणामे ते उपर त्रण कह्यां तेना एके-कना त्रण त्रण भेद थाय. जेमके, जघन्यनो जघन्य, जघन्यनो मध्यम, जघन्यनो उत्कृष्ट ए रीते दरेकना त्रण त्रण भेद करतां नव भेद थाय. एम नवना सत्यावीस भेद थाय, एम सत्तावीस ना एकाशी भेद थाय, एम एकाशीना त्रसे ने त्रेंतालीस भेद थाय, एटले भेदे लेश्या परिणामे ॥ ७ सातमो लेश्यानां लक्षणनो द्वार तेमां प्रथम कृष्ण लेश्या नां लक्षण कहे छे-पांच आश्रवनो सेवनार, त्रण अगुप्तिवंत, छकाय जीवनो हींसक, आरंभनो तिव्र परीणामी तथा क्रूरी, पाप करवामां सहासीक, निठोर परिणामी, जीवहींसा शुभ रहित करनार, अजीतेंद्री एवा जोगे करी सहित होय तेने कृष्ण लेश्यानुं लक्षण जाणवुं. नील लेश्या नां लक्षण कहे छे-इर्षावंत, अमृखवंत, तप रहित, मायावी, पाप करतां लाजे नहीं, गृधी, धृतारो, प्रमादी, रसनो लोलपी, मायानो गवेष, आरंभनो अत्यागी, पापने विषे सहासीक, ए नील लेश्यानां लक्षण जाणवां. कापुत लेश्यानां लक्षण कहे छे-वांका बोलो, वांको काम करनार, माया करीने हरखाय, सरळपणा रहित, मोढे जुदो अने

श्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी दश सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; कापुत लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी त्रण सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; तेजु लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी बे सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग अधिक; पद्म लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी उत्कृष्टी दश सागरोपम ने अंतर मुहूर्त अधिक; शुक्ल लेश्यानी स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्तनी, उत्कृष्टी ३३ सागरोपम ने अंतर मुहूर्त अधिक. ए समुच्चय लेश्यानी स्थिति कही, हवे चार गतिनी लेश्यानी स्थिति कहे ते. प्रथम नारकीनी लेश्यानी स्थिति कहे छे- कापुत लेश्यानी स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी, उत्कृष्टी त्रण सागरोपम ने पलनो असंख्यातमो नाग, नील लेश्यानी स्थिति जघन्य त्रण सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग, उत्कृष्टी दश सागर ने पलनो असंख्यातमो नाग; कृष्ण लेश्यानी स्थिति जघन्य दशसागर ने पलनो असंख्यातमो नाग, उत्कृष्टि तेत्रीस सागर ने अंतर मुहूर्त अधिक ए नारकीनी लेश्या कही. हवे मनुष्य तीर्यंचनी लेश्यानी स्थिति कहे छे-पहेली पांच लेश्यानी

[illegible] जघन्य [illegible], अंतर मुहूर्तनी। [illegible] [illegible] [illegible]। जघन्य
अंतर मुहूर्तनी। [illegible] नव वर्ष [illegible] पूर्व कोडने [illegible] लेश्यानी। स्थिति कहे
छे भवनपति [illegible] लेश्यानी [illegible] जघन्य दश हजार वर्षनी। उ-
त्कृष्टी पल्यना असंख्यातमा भागनी. नील लेश्यानी स्थिति जघन्य कृष्ण लेश्यानी। उत्कृष्टी
स्थिति थी एक समय अधिक ने उत्कृष्टी पल्यना असंख्यातमा भाग कापुत लेश्यानी। स्थिति
जघन्य नील लेश्यानी। उत्कृष्टी स्थिति थी एक समय अधिक. उत्कृष्टी पल्यना असंख्यातमा
भागनी; तेजुलेश्यानी। स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी; भवनपति वाणव्यंतरनी। उत्कृष्टि
बे सागर ने पल्यनो असंख्यातमो भाग अधिक; वैमानिक देवनी पद्म लेश्यानी। स्थिति
जघन्य तेजुलेश्यानी उत्कृष्टी स्थिति थी एक समय अधिक, वैमानिक नी उत्कृष्टी दश सा-
गर ने अंतर मुहूर्त अधिक, वैमानिकनी शुक्ल लेश्यानी। स्थिति जघन्य पद्म लेश्यानी
उत्कृष्टि स्थिति थी एक समय अधिक, उत्कृष्टि तेत्रीस सागर उपर अंतर मुहूर्त अधिक.
१०. दशमो लेश्यानी गतिनो द्वार कहे छे-कृष्ण, नील, कापुत ए त्रण [illegible]

लेश्या तेणे करी जीव दुर्गति जाय. तेजु, पद्म, शुक्ल ए त्रण धर्म लेश्या, तेणे करीने जीव सुगतिए जाय. ११. अगीयारमो लेश्याना चवननो द्वार कहे छे-सघळी लेश्या प्रथम समयनी वर्त्तते कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी ॥ तथा लेश्याना छेल्ला समये कोइ जीवने उपजवुं के चववुं नथी॥ परभवने विषे केम चवे ते कहे छे-लेश्या परभवनी आवी थकी अंतर मुहूर्त गया पछी शेष अंतर मुहूर्त्त आउखा बाकी रहे थके जीव परलोकने विषे जाय. ॥ इति श्री लेश्यानो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री चार कषायनो थोकडो. ॥

श्री पन्नवणाजी सूत्र पद चौदमे कषायनो वर्णव चाल्यो छे. कषाय १६ प्रकारे कह्यो छे-१. पोताने माटे, २. परने माटे, ३. तदुभया कहेतां बन्ने माटे, ४. खेत कहेतां उघाडी जमीनने माटे ५. वत्थु कहेतां ढांकी जमीनने माटे, ६. शरीर माटे, ७. उपधिने माटे, ८. निरर्थकपणे, ९. जाणतां, १०. अजाणतां, ११. उपशांतपणे, १२. अणुपशांतपणे, १३. अनंतानुबंधी क्रोध,

१४. अप्रत्याख्यानी क्रोध, १५. प्रत्याख्यानी क्रोध. १६. संजलनो क्रोध, एवं १६. ते १६ समुच्चय जीवआश्री अने चोवीस दंडक आश्री एम २५ ने १६ सोले गुणतां ४०० थाय. हवे कषायना दळीआ कहे छे-चर्णीआ, उपचर्णीआ, बांध्या, वेदया, उदीरीया, निर्जर्या एवं ६. ते भूतकाळ. वर्तमानकाळ. अने भविष्यकाळ आश्री एम ६ ने ३ त्रणे गुणतां १८ थाय. ते एक जीव आश्री अने १८ बहु जीव आश्री एवं ३६ थाय ते समुच्चय जीव आश्री, अने चोवीस दंडक आश्री. एम ३६ ने २५ से गुणतां ९०० थाय. अने ४०० उपर कह्या ते मळी कुल १३०० क्रोधना, १३०० मानना, १३०० मायाना, अने १३०० लोभना, एवं सर्व मळी ५२०० थाय ॥ इति कषायनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री संजयाना बोल ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित ५ पडिसेवणा ६ नाणे ७ ॥
तित्थ ८ लिंगे ९ शरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥

जोगु १६ उवओगे १७ कसाए १८ ॥ लेशा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदेय २२ ॥ कम्मोदीरणा २३ उव संप जहणा २४ ॥ सन्नाय २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरिसे २८ कालं २९ तरेय ३० ॥ समुघाय ३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ भावेय ३४ परिमाणे ३५ खलु ॥ अपाबहुअ ३६ संजयाणं ॥ ३ ॥ इति गाथा त्रण संपूर्ण ॥

॥ ३ ॥ उपली त्रण गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना बे भेद । एक थोडा कालनुं ते प्रथम जिनेश्वरने तथा चर्म जिनेश्वरने वारे ॥ १ ॥ बीजुं घणा कालनुं ते बावीस जिनने वारे । तथा महा विदेह क्षेत्रे ॥ २ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ना बे प्रकार । एक अतीचार सहित ने पंच महाव्रत आरोपीए । बीजुं अतीचार रहित ने पंच महाव्रत आरोपीए २ । परिहार विसुध चारित्रना बे प्रकार । एक तप करता पेठो ॥ १ ॥ बीजो परिहार विसुध चारित्र सेवीने नीकल्यो ते २ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे प्रकार । एक उपसम श्रेणीथी पडतो ॥ १ ॥ बीजो क्षपक श्रे-

[illegible] थाय [illegible] प्रत्याख्यानी थाय [illegible] संजलनो थाय एवं १६. ते १६ [illegible] अने [illegible] आश्री एम [illegible] १६ मांहे गुणतां ८०० थाय. हवे [illegible] चारनी उपचाराश्री [illegible] निर्जरी एवं [illegible] अने [illegible] आश्री एम [illegible] त्रण गुणतां [illegible] थाय [illegible] जीव आश्री एवं [illegible] थाय ते समुच्चय जीव आश्री. अने [illegible] एम [illegible] गुणतां [illegible] थाय अने ८०० उपर कह्या ते मळी [illegible] मानना १३०० मायाना. अने [illegible] लोभना. एवं सर्व मळी [illegible] थाय ॥ इति कषायना थोकडा संपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री संजयाना बोल ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तित्थेय ८ लिंगे ९ शरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥

जोगु १६ वउगे १७ कसाए १८ ॥ लेशा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदेय २२ ॥ कम्मादारिणा २३ उव संप जद्दणा २४ ॥ सन्नाय २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ नव २७ आगरिसे २८ कालं २९ तरेय ३० ॥ समुघाय ३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ नावेय ३४ परिमाणे ३५ नलु ॥ अपावहुअ ३६ संजयाणं ॥ ३ ॥ इति गाथा त्रण संपूर्ण ॥

॥ ३ ॥ उपली त्रण गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना बे भेद । एक थोमा कालनुं ते प्रथम जिनेश्वरने तथा चर्म जिनेश्वरने वारे ॥ १ ॥ बीजुं घणा कालनुं ते बावीस जिनने वारे । तथा महा विदेह क्षेत्र ॥ २ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ना बे प्रकार । एक अतीचार सहित ने पंच महाव्रत आरोपीए । बीजुं अतीचार रहित ने पंच महाव्रत आरोपीए २ । परिहार विसुध चारित्रना बे प्रकार । एक तप करता पको ॥ १ ॥ बीजो परिहार विसुध चारित्र सेवीने नीकल्यो ते २ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे प्रकार । एक उपसम श्रेणीथी पमतो ॥ १ ॥ बीजो क्षपक श्रे-

णीए चमतो ॥ २ ॥ ४ ॥ यथाख्यात चारित्रना बे प्रकार । एक छदमस्थ ॥१॥ बीजो केवळीनो ॥ २ ॥

२ सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय २ सवेदी ने अवेदी बे जो अवेदी होय तो । उपसम वेदीने क्षीण वेदि होय । अने सवेदी होय तो । त्रणे वेदमां होय । अने परिहार विसुध सवेदी होय पण अवेदी न होय । सवेदी होय तो पुरुष १ ॥ पुरुष नपुंसक । ए बे वेदमां होय ॥ सूक्ष्म संपराय १ अने जथाख्यात ए ॥२॥ अवेदी होय उपसम ने क्षीणवेदी होय.

३ आगला ॥ ४ चारित्र ॥ सरागी । अने जथाख्यात वीतरागी ते उपसम ने क्षीण रागी होय ॥

४ स्थीती कल्प ॥१॥ अस्थीती कल्प ॥२॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ स्थिवर कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमां स्थीती कल्पमां ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ अस्थीती कल्पमां ३ चारित्र लाभे सामायक ॥ १ ॥ सुक्ष्म संपराय ॥२॥ जथाख्यात ।ए ३ ॥ लाभे जिनकल्प अने स्थिवरकल्प ए ॥ २ मां आगल्या ॥ ३ चा० लाभे ॥ कल्पातीतमां ॥ ३ चारित्र लाभे सा० ॥ सु० ॥

जथाख्यात । ए ३ लाने ॥
५ पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥ ३ ॥ कषाय कुसील ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथ ॥ ५ ॥ स्नातक ॥ ६ ॥ तेमां । पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥३॥ ए ३ मा बे चारित्र लाने । सामा० ॥१॥ छेदो० । ए २ चारित्र लाने । कषाय कुशीलमां आगल्या ॥ ४ चारीत्र लाने । निर्ग्रंथमां ने स्नातकमां । एक जथाख्यात चारित्र लाने ॥
६ हवे प्रतिसेवणा द्वार कहे छे । प्रतिसेवीमां आगल्या ॥ २ चारित्र ...

तेमां पण मुल गुण उत्तर गुण प्रतिसेवीमां त्रे आगल्या चारित्र लाने ॥ अने अप्रतिसेवीमां तो ॥ ५ चारित्र लाने
७ हवे ज्ञान द्वार कहे छे । आगल्या ॥ ४ चारित्रमां ॥ २ ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञान ॥ ४ ज्ञान लाने । जथाख्यातमां ज्ञान ५ नजना । अज्ञान एके चारित्रमां लाने नही । हवे केटलुं नणे । सामा० ॥१॥ छेदो० २ । सूक्ष्म० ३ । जथाख्यात ॥ ४ । ए ॥ ४ चारित्र जघन्य ॥ ८ प्रवचनमाता । नणे । ...

भाग । ७० । देशे ऊणा ॥ १० पूर्व भाग ॥

८ हवे कालद्वार कहे छे ॥ ...मा पांच चारित्र लाभे । ...मां ... चारित्र लाभे ते सामा० ॥१॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ जथाख्यात ... । निग्रंथ ... ॥ पण ... चारित्र लाभे ॥

९ हवे लिंगद्वार कहे छे । द्रव्यलिंग आश्री सर्वलिंगमां ॥ ५ चारित्र लाभे । अन्य लिंग गृहलिंगमां । परिहार वीसुध वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे । भावलिंग आश्री सर्वलिंगमां ५ चारित्र लाभे । अन्यलिंग गृहलिंगमां एके चारित्र लाभे नहीं ॥

१० हवे शरीरद्वार कहे छे । सामा० । छेदो० । प २ मां ॥ ३ शरीर ॥ ४ शरीर तथा ॥ ५ शरीर पण लाभे । पाछला ॥ ३ चारित्रमां ॥ ३ शरीर लाभे ते ॥ उदारीक ॥ १ ॥ तेज १ ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे क्षेत्रद्वार कहे छे । कर्म भुमीमां जन्म व्रत आश्री ॥ ५ चारित्र लाभे । अकर्म भुमीमां एके चारित्र न लाभे ॥ साहारणआश्री कर्म भुमीमां अकर्म भुमीमां परीहार वीसुध वरजीने ॥ ४ चारीत्र लाभे ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्पिणी ॥ उत्सर्पिणी ॥ ए २ मां ॥ ५ चारित्र लाभे । नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीमां । छे- दोप० । परिहार० । ए २ वरजीने ॥ ३ चारित्र लाभे ॥

तेमां अवसर्पिणी काळमां जन्म आश्री ॥ १ । २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३। ४॥ आरामां ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे । पांचमां आरामां ॥२ चारित्र लाभे । सा- मा० ॥ १॥ छेदो० ॥२ ॥ ए ॥२ चारित्र लाभे। छठे आरे एके न लाभे ॥ हवे उत्त आश्री ॥१।२ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३ । ४ । ५ ॥ आरामां ॥५ चा- रित्र लाभे ॥ छठा आरामां एके चारित्र लाभे नही । साहारण आश्री परिहार वीसुध वरजीने ॥४ चारित्र लाभे । हवे चडता काळमां । जन्म आश्री ॥ १ आरे एके चारित्र न लाभे ॥ २ । ३ । ४ ॥ आ- रामां ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ ५ । ६ ॥ आरा- मां एके चारित्र लाभे नही । हवे उत्त आश्री ॥ १ । २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे ॥ ३ । ४ ॥ आरामां ॥ ५ चारि- त्र लाभे ॥ ५ । ६ ॥ आरामां एके चा- रित्र न लाभे । हवे साहारण आश्री प-

रिहार विसुध वरजीने ॥ ८ ॥ चारित्र लाभे । नाउस्सपिणी । नाअवसर्पिणीमां । जन्म छे ते आश्री ॥ ९ तगलीयाना क्रमा ॥ ५ चारित्र न लाभे ॥ पंचमहाविदेह क्षेत्रमां । छेदो० । परिहार विसुध वरजीने ॥ ७ चारित्र लाभे । हव साहारण आश्री । परिहार विसुध वरजीने ॥ ६ अकर्म भुमि १ महाविदेह पंच ७ क्षेत्रमां ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१३ हवे गति द्वार कहे छे । नरक ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य । ए ३ ॥ गतिमां न जाय । १ देव गतिमां जाय । तेमां । सामा० ने छेदो० । ए २ आराधक आश्री । जघन्य । पहेले देवलोके उत्० । अनुत्तर विमाने जाय । परिहार विसुध । जघन्य० ॥ १ देवलोके जाय । अन । उत्० । आठमे देवलोके जाय । सूक्ष्म संपराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥ २ ॥ ए ॥ २ ज० । उ० । अनुत्तर विमाने जाय । अने जथाख्यात वाळो मोक्ष पण जाय । हवे आराधक पांच पदवी पामे । इंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीक नी ॥ २ ॥ त्राय त्रिंसकनी ॥ ३ लोक पाळनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥५॥ पदवी पामे । तेमां । सामा० ने छेदो० ।

ए. २ ॥ पांच पदवी पामे । परिहार विसुध
१ अहमेंद्रनी वरजीने ॥ ४ पदवी पामे
। सूक्ष्म संपरायने जयाख्यात । ए. २ ॥
१ अहमेंद्रनी पदवी पामे । हवे विराध-
क आश्री पांचे चारित्रवाळा । ज० । ज-
वन पतीमां जाय । उ० । पेहेले देव
लोके जाय । पदवी पांच मांहेली एके न
पामे ॥ हवे स्थिति कहे छे । आवता नय
आश्री । आगल्या २॥ चारित्रनी । ज०
वे पल्यनी । उ० ॥ ३३ सागरनी । परि-
हार वीसुधनी । ज० वे पल्यनी उ० ॥
१८ सागरनी ॥ सूक्ष्म संपराय । जया-

ख्यात । ए. २ चारित्रनी । [illegible]
कृष्टी ॥ ३३ सागरनी ॥

१४ हवे संजमठाण द्वार कहे छे । आगल्या
॥ ३ चारित्रना असंख्याता स्थानक ।
सूक्ष्म संपरायना असंख्याता स्थानक
अंतर्मु० काळ प्रमाणे समय २ प्रते चा-
रित्रनी विशुद्धिना विशेषतायकी ते
असंख्य थाय अने जयाख्यातनुं एकज
स्थानक ॥ हवे अल्प बहुत्व । सर्वथी
थोडा । जयाख्यातना स्थानक ॥ १ ॥
तेथी सूक्ष्म संपरायना असंख्यात गुणा
॥ २ ॥ तेथी परिहार वीसुधना असं-

...ख्यात साथे तुल्य ॥ हवे अल्प बहुत्व । सर्वथी थोडा सामायक । छेदोपस्थापनीक ना ज० पर्यव ॥ मांहोमांहि तुल्य तेथी परिहार वीसुधना । ज० पर्यव अनंत गुणा । तेथी परिहार वीसुधना । उ० पर्यव अनंत गुणा ॥ तेथी सामायक० छेदोपस्थापनिय ना ॥ उत्० पर्यव अनंत गुणा अने मांहोमांहि तुल्य । तेथि सूक्ष्म संपरायना । ज० पर्यव अनंत गुणा । तेथी सूक्ष्म संपरायना उ० पर्यव अनंत गुणा॥तेथी जयाख्यातना ज०।उ०। पर्यव अनंत गुणा ने मांहोमांहि तुल्य ॥

२५

१६ हवे जोग द्वार कहे छे । पांचे चारित्र सजोगीमां ते मन जोग ॥ १ ॥ वचन जोग ॥२॥ काय जोग ॥ ३ मां आगल्या चारित्र ॥ ४ लाभे ॥ अने अजोगीमां एक जयाख्यात लाभे ॥

१७ हवे उपयोग द्वार कहे छे । सागार उपयोगमां पांचे चारित्र लाभे । अणागार उपयोगमां सूक्ष्म संपराय वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१८ हवे कषाय द्वार कहे छे । आगल्या ॥ ४ चारित्र स कसाई । एक ...

मना आ. ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया
॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ थाने ।
अने सूक्ष्म संपरायमां १ संज्वलनो
लोभ लाभे । यथाख्यात गुणमने
क्षिणकषाय हाय ॥

१७ हवे लेश्या द्वार कहे छे । संयममां पांचे
चारित्र लाभे । अलसांमा एक लेश्या ।
सामा० ॥ छेदोपस्थापनीयमां लेश्या ॥
॥६॥ लाभे । परिहार विशुद्धमां पाछली
॥ ३ लेश्या लाभे ॥ उपली ॥ २ मां १
सुक्ल लेश्या लाभे ॥

२० हवे परिणाम द्वार कहे छे । वर्द्धमान
परिणाममां पांचे चारित्र लाभे । हाय-
मान परिणाममां आगला ॥ ४ ॥ चा-
रित्र लाभे ॥ अवस्थित परिणाममां ॥
सूक्ष्म संपराय वरजीने ॥ ४ चारित्र
लाभे ॥ तेमां आगला ॥ ४ नी जघन्य
वृद्धि ॥ १ समो ॥ उत्० ॥ अंतर्मुहू० ।
अने यथाख्यातनी ॥ ज० उ० वृद्धि ।
अंतर्मु० । हवे हायमानमां आगला ॥
४ नी ज० ॥ १ ॥ समो । उ० अंतर्मु० ।
हवे अवस्थितमां आगला ॥ ३ नी ।
ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ॥ ७ सम० ॥
जथाख्यातनी । ज० ॥ १ समो । उत-

[illegible]

मामा० । छेदो० । श्रमजमपणु पामे जथा

[illegible] पान चक्र ना माहमा जाय । पर्क ना ।

सूक्ष्म० । श्रमजमपणु पामे ॥

२५ एवं ससा द्वार कहे छे । सनावउतामां । श्रागह्या ॥ ३ चारित्र लाभे । नोसना-

[illegible] । पांच चारित्र लाभे ॥

२६ [illegible] द्वार कहे छे । पांच चारित्र श्राहारकमां लाभे । एक जथाख्यात श्र-णाहारकमां पण होय ॥

२७ हवे [illegible] द्वार कहे छे । मामा० । छेदो० । ज० ॥ १ नव ॥ उत्कृष्टा ॥ ८ नव कर । श्रार्कां ॥ ३ चारित्रवाळा ज० १ नव । उ० ॥ ३ नव कर ॥

२८ हवे श्राकर्ष द्वार कहे छे । एक नव श्राश्री सामायक० ॥ जघन्य ॥ १ वार श्रावे ॥ उत्० प्रत्येकसे ॥ ९०० वार श्रावे ॥ २ ॥ छेदो० ॥ ज० ॥ २ ॥ उत्० वी-

सपहुतं १२० ॥ २ ॥ परिहार० । ज० १ ॥ उत्० ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १ उ० ४ ॥ ४ ॥ जयाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ० २ ॥ ५ ॥ हवे घणा नव आश्री सामा० । ज० ॥ २ वार आवे ॥ उ० प्रत्येक हजारवार आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० २ ॥ उत्० ए६० ॥ २ ॥ परिहा० ज० २ उ० ७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० २ ॥ उ० ए ॥ ४ ॥ जयाख्यात । ज० २ ॥ उ० ५ ॥५॥

२ए हवे स्थिती द्वार कहे छे। एक वचन आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ समय । उ० । देशे उणी पूर्व कोमनी । परिहा० । ज० ॥ १ समो उ० २ए वरस उणी पूर्व कोम ॥ सूक्ष्म० । ज० ॥ १ समो । उ० । अंतर्मु० ॥ जयाख्यात ज० ॥ १ समो । उ० । देशे उणी पूर्व कोम ॥ घणा नव आश्री । सामायकनि । ज० उ० । सर्वे काळ ॥ छेदोप० । ज० ॥ २५० वरस । उ० ५० लाख कोम सागर ॥ परिहा० । ज० ॥ २०० वरस। उ० देशे उणी ॥ २ पूर्व कोम ॥ सूक्ष्म० । ज० १ समो । उ० । अंतर्मु० ॥ जयाख्यात ज० । उ० । सर्वे-काळ ॥

३० हवे अंतर द्वार कहे छे। एक वचन

आश्री । पांचे चारित्रनुं । ज० ॥ अंतर्मु० ज० । अर्द्ध पुद्गल देशे उणुं आंतरुं पमे। बहुवचन आश्री सामा० ज० । उ० । अंतर नथि ॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० वर्ष ॥ उ० ॥ १८ कोमा कोम सागरनुं। २ ॥ परिहा० । ज० ॥ ८४००० वर्ष । उ० ॥ १८ कोमा कोम सागरनुं ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० जघन्य १ समय ॥ उ० । ६ मासनुं ॥ ४ ॥ जथाख्यातनुं ज० । उ० । आंतरु नथी ॥ ५ ॥

३१ हवे समुद्घात द्वार कहे छे । सामा० । छेदो० । ए ॥ २ मां ६ समुद्घात लाभे। परिहार० ॥ ३ समुद्घात पहेली लाभे । सूक्ष्म० समुद्घात नथी । जथाख्यातमां ॥ १ केवळ समुद्घात लाभे ॥

३२ हवे क्षेत्रद्वार कहे छे । लोकने संख्यातमे भागे के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकने विषे चारित्र लाभे? उत्तर। लोकना असंख्यातमां भागमां तो आगल्या ४ चारित्र लाभे ॥ अने एक जथाख्यात० असंख्यातमे भागे । घणे असंख्यातमे भागे। ते सर्व लोकने विषे लाभे ॥

३६ अल्प बहुत्व द्वार कहे छे। सर्वथी थोडा सूक्ष्म संपराय ॥ १ ॥ तेथी परिहार० संख्यात गुणा ॥ २ ॥ तेथी जथाख्यात० संख्यात गुणा ॥३॥ तेथी छेदो० संख्यात गुणा ॥४॥ तेथी सामा० । संख्यात गुणा जाने ॥५॥ इति संजयाना बोल संपूर्ण॥

॥ अथ श्री नियंठाना बोल. ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ राग ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तीर्थ ८ ॥ लिंग ९ शरीर १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥ जोग १६ उवओग १७ कसाए १८ । लेशा १९ परीणाम २० बंध २१ वेदेय २२ । कम्मोदीरणा २३ उवसंपजहणा २४ । सन्नाय २५ आहार २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरीसे २८ काले २९ अंतर ३० ॥ समुग्घाय ३१ खेत्त ३२ फुसणाय ३३ ॥ भावेय ३४ परीमाणे ३५ खलु । अप्पाबहुत्व ३६ नीयंठाणं ॥ ३ ॥

॥ ३ ॥ उपली ३ गाथानो अर्थ विस्तारी कहे छे.

१ हवे पन्नवणा द्वार कहे छे । पुलाक ॥१॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥ ३ ॥ कषाय कुशील ॥ ४ ॥ नीग्रंथ ५ सनातक ६ ॥ पुलाक ते सडुंसा धानना पुळानी परे ॥ १ ॥ बकुस ते सडुंसा धाननी परे ॥ २ ॥ प्रतीसेवना ते मसल्या धाननी परे ३ कषाय कुशील ते उपण्या धाननी परे ॥ ४ ॥ नीग्रंथो ते कणकी सहित धाननी परे ॥ ५ ॥ सनातक ते अणीसुध चोखानी परे ॥ ६ ॥ पुलाकना बे भेद । लब्धी पुलाक ते चक्रवर्तिनी सेन्या चूरण करण सक्ती संपन्न ते लब्धी पुलाक ॥ १ ॥ प्रतिसेवणा पुलाक ते मुळ गुण उतर गुणमां दोष लगाडे । मुळ गुण ते पांच आश्रव मांहेलो अनेरो दोष लगाडे । उतर गुण दोष ते दश पचखाण मांहेलो अनेरो दोष लगाडे ॥ ते ॥ पुलाकना पांच भेद ॥ ज्ञान पुलाक ॥ १ ॥ दर्शन पुलाक ॥ २ ॥ चारित्र पुलाक ३ लिंग पु० ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म पुलाक ॥ ५ ॥ पुलाक ते ज्ञानादि अतीचार सेवे करी संजम सार रहित करे तेने पुलाक कहीये ॥ १ ॥ बकुस ते शरीर बकुस ॥ शरीरनी सुश्रूषा विभूषा

कर ते ॥ १ ॥ उपकरण बकुस ते वस्त्र- पात्रना उपकरण करे । उपकरणादि अ- धिक संग्रहे वस्त्र पात्रादि प्रक्षालनादि करे ॥२॥ बकुस ना ५ भेद आभोग बकुस ॥ १ ॥ अणाभोग बकुस ॥ २ ॥ संवृत बकुस ॥ ३ ॥ असंवृत बकुस ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥ जाणीने दोष लगाडे ते आभोग बकुस ॥ १ ॥ अण- जाणे दोष लगाडे ते । अणाभोग बकुस ॥ २ ॥ छानो दोष लगाडे ते संवृत ब- कुस ॥ ३ ॥ प्रकट दोष लगाडे ते अ- संवृत बकुस ४ यथा सुक्ष्म ते ॥ किंचित् दोष लगाडे ते यथासुक्ष्म बकुस ॥ ५ ॥ सातिचार नीरतीचार बेने भेला स- हुमा भावनी परे । संजमने कावरुं करे ते बकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवना कुसीलना ५ भेद ॥ ज्ञान प्रतिसेवना ॥ १ ॥ द- र्शण प्रतिसेवना ॥ २ ॥ चारित्र प्रतिसे- वना ॥ ३ ॥ लिंग प्रतिसेवना ४ जथा सूक्ष्म प्रतिसेवना ॥ ५ ॥ इंद्रियादि वस्य अने पिंड विसुध्यादि सुमती भा- वना तपपर्कीमां अर्ती महित एटले उत्तर गुण मुळ गुण विराधता सर्वज्ञ नी आज्ञाथी । न्यूनाधिक प्रवर्त्ते ते

प्रतिसेवना ज्ञानादि ५ जाणवा ॥ ३ ॥
कषाय कुसील ते । संजल ना कषायने
उदये करी कुत्सित जेहने सील स्वभाव
कषाय उदय थाय । अप्रशस्तपणुं थाय
ते माटे कषाय कुसील । दोष लगाड्या
सरीखा निमित्तथासी परिणाम थाय ।
पण प्रवर्त्तन सदेहजमां दोष न लगाडे ॥
ते कषाय कुसीलना ५ भेद । ज्ञान कषा-
य कुसील १ दर्शन कषाय कुसील ॥ २ ॥
चारित्र कषाय कुसील ३ लिंग कषाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथा सूक्ष्म कषाय कु-
सील ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे नियंठो ते मोह-

नी कर्मथी नीकल्यो संपूर्ण ग्रंथ रहित ॥
उपसमीत ॥ १ ॥ यथा निर्मल क्षायक
चारित्र २ कषाय वरजित वीतरागाव-
स्थायेवर्त्ति ते ॥ मुनीनो प्रथम समय
ते पढम समय नियंठो ॥ १ ॥ अपढम
समय ते बीजा समयादिके वर्त्ते ने अप-
ढम समय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुण स्था-
नकने पर्यंत वर्ति समयनो ते चरम स-
मय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणाना छे-
ला समयथी पूर्वला समय वर्ति ते अच-
रम समय नीयंठो ॥ ४ ॥ यथा सुक्ष्म
ते गुणठाणाना सर्व समय वर्त्ती ते यथा

... म नीवनी ॥ ५ ॥ ५ स्नातक ते
घाति ... पग्गाळ्याथी टाळ्याथी
परम पवित्र नाथाने पर उज्वल परीणामी
... ॥ ते स्नातक पंच नाम
... अबवी ते जोग नीरंध्या माटे
अबवी ॥ १ ॥ असबल ते निर्मली चार
कायराम रहित ते माटे असबल ॥ २ ॥
घनघाति कर्म क्षय कर्या ते माटे अक-
र्मांस ॥ ३ ॥ समुद्धनाणदंसण धर । अर-
हाजीन केवली ते । सम्यक् शुद्ध नि-
र्दोष ज्ञान दर्शनना धरणहार ॥ अरहा-
जीने ते रहस्य छानी वात नहीं ते राग

द्वेषना जीतनार माटे केवली कहीये ॥
४ ॥ अपरीश्रावी ते नवा कर्म आवे
नहीं ते माटे अपरीश्रावी सर्व योगना-
रुंधवाथी ५ ॥ ६ ॥ ए नामनी प्रज्ञापना
परुपणा द्वार किंचित् निरूपणं ॥
२ वेद द्वार । आगला ४ सवेदी ॥ उप-
ल्या २ अवेदी ॥ तेमां पुलाक । स्त्रि वे-
दमां नहीं । पुरुष ॥ १ ॥ पुरुष नपुंसक
॥ २ ॥ ए २ मां होय । बकुस ने प्रति-
सेवना । ३ वेदमां होय । कषाय कुशील
सवेदी होय तो त्रणे वेदमां होय । अने
अवेदी होय तो उपसम ने क्षीण वेदमां

होय ॥ निर्ग्रंथ उपसम ने क्षीण वेदमां होय ॥ सनातक क्षीण वेदमां होय । ए द्वा०॥२॥
३ राग द्वार आगल्या ४ नीयंठा सरागी ॥ नीर्ग्रंथ ने सनातक क्षीण रागी होय ए॥३॥
४ कल्प द्वार ॥ स्थिति कल्प ॥ १ ॥ अ-स्थिति कल्प ॥ २ ॥ जिन कल्प ॥३॥ स्थवर कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ५ तेमां स्थिति कल्प अस्थिति कल्प मां ५ ए नी-यंठा लाभे ॥ जिन कल्प मांही बीजो त्रिजो चोथो ए ३ नियंठा लाभे ॥ स्थि-वर कल्पमां आगल्या ४ नीयंठा लाभे । कल्पातीत मां उपल्या ३ नीयंठा लाभे ।४।

५ चारित्र द्वार । सामायक ॥ १ ॥ छेदो-पस्थापनीय ॥ २ ॥ ए २ मां आगल्या ४ नियंठा लाभे । परीहार विसुद्ध ॥१॥ सुक्ष्म संपराय ॥ २ ॥ ए २ मां कषाय कुसिल नीयंठो लाभे । जयाख्यात चा-रित्रमां उपल्या २ नीयंठा लाभे । ए ॥५॥
६ प्रतिसेवी द्वार । आगल्या ३ नीयंठा प्र-तिसेवी ॥ उपल्या ३ नियंठा । अ प्र-तिसेवी । तेमां पुलाक मूळ गुण उत्तर गुणमां दोष लगाडे । बकुस उत्तर गुण मां दोष लगाडे । प्रतिसेवना मळ गुण उत्तर गुणमां दोष लगाडे । उपल्या ३

[illegible]

... श्रमण न प्रतिसेवन ... ज्ञान नो
... प्रमाण मान ... पुव
... जण ॥ कषाय कुशील नायगा
ज० ० प्र० ० उ० १४ पुव पुरा जण ॥ सना-
तक मो धुतपी श्रधिकने सवंझ ने ॥७॥

... श्रुत नव ॥ ७ ॥
... मा
... मा श्रज्ञा
... द्वार ... मा ।
... मातिना अन्य
... मइ ... लिंगमां ३ ॥
... अन अथवा अन्य लिंग
मइ लिंगमा ... न ज्ञान न सलिंग-
मा ... ज्ञान । ॥ द्वार १७ मो ॥
१० मु द्वार ॥ पुलाकमा ३ शरीर लाभे
॥ वकुस न प्रतिसेवना । प. २ मां ३ श-
रीर लाभे ॥ उदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥

२ ॥ कार्मण ॥ ए ३ लाने । तथा ४
लाने तो वैक्रेय वध्युं ॥ अने कषाय कु-
शीलमां शरीर ॥ ३ । ४ । ५ ॥ लाने ।
अने निर्ग्रंथ ने स्नातकमां शरीर ३ लाने
॥ उदारीक तेजस कार्मण ॥ ए द्वार १०॥
११ क्षेत्र द्वार । जन्म आश्री कर्म भूमिमां
ठए नीयंठा लाने । अकर्म भूमीमां एके
न लाने । ठत आश्री पण ठए लाने ।
साहारण आश्री पुलाक वरजीने ५ नी-
यंठा ॥ कर्म भूमी अकर्म भूमी बंने मां
॥ लाने ए द्वार ११ मो ॥
१२ काळ द्वार समुचे अवसर्पिणी ॥ उत्स-

र्पिणी ॥ नो अ ... ॥ उत्सर्पिणी-
मां ६ नीयंठा लाने । तेमां अवसर्पि-
णी उत्तरनो काळ तेमां ६ आरा तिहां
जन्म आश्री पहेला ने बीजा आरा-
मां एके न लाने । त्रीजा ने चोथा
आरामां ६ नीयंठा लाने ॥ पांचमां
आरामां ३ नीयंठा लाने । बीजो ।
त्रीजो । चोथो ए ३ लाने । छठा आ-
रामां एके नही । ठत आश्री पहेला
बीजा आरामां एके नही त्रीजा चोथा
पांचमा आरामां ठ ए नीयंठा लाने ।
छठा आरामां एके न लाने । सा-

नियंठा ॥१५२॥

आरण आश्री पुलाक वरजीने ५ नी-
यंठा ठ ए आगमां लाभे । चकला का-
ठमां जन्म आश्री पहेले आरे एक
नहीं ॥ बीजे त्रीजे चोथे आरे ६
नीयंठा लाभे । पांचमे छठे आरे एक
नहीं । छठ आश्री पहेले बीजे
आरे एक नहीं ॥ त्रीजे चोथे आरे
६ नीयंठा लाभे । पांचमे छठे आरे
एक नहीं । साहारण आश्री । पु-
लाक वरजीने ठ ए आगमां ५ नियं-
ठा लाभे । नो उत्सर्पिणी नो अवस-
र्पिणी काळ । ते हेमवय ॥ १ ॥ एरण-
वय ॥ २ ॥ हरीवास ॥ ३ ॥ रमकवास
॥ ४ ॥ देवकुरु ५ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए
६ क्षेत्रमां जन्म छत आश्री एके नहीं
। अने साहारण आश्री पुलाक वरजीने
५ नीयंठा लाभे ॥ पांच महा वीदेह
क्षेत्रमां ॥ जन्म छत आश्री ठ ए नीयंठा
लाभे । साहारण आश्री पुलाक वरजीने
५ नीयंठा लाभे ॥ ए द्वार १२ मो ॥
१३ गति द्वार । आगल्या ५ नीयंठा आरा-
धक ते एक वीमानीक देव गतिमां
जाय । मनानक मोक्ष जाय । तेमां पुलाक
ज० पहेले देवलोके जाय । उ० आठमे

बोल. ॥१५२॥

देव लोके जाय । बकुस ने प्रतिसेवना ज० पहेले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाय । कषाय कुशील ज० पहेले देवलोके जाय । उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ निर्ग्रंथ ज० उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ सनातक मोक्षमां जाय । आराधक पदवी पांच पामे ॥ इंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी २ त्रायत्रिंशकनी ॥ ३ ॥ लोकपाळनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ मांहेली आराधना ३ नीयंठा पदवी ४ पामे ॥ एक अहमेंद्रनी नही । कषाय कुशील पदवी ५ पामे । नीर्ग्रंथ एक पदवी अहमेंद्रनी पामे ॥ सनातक मोक्ष जाय । वीराधक आराधना ५ नीयंठा ज० भवनपतिमां जाय उ० पहेले देवलोके जाय। पदवी ५ मांहेली एके न पामे । देवतामां जाय तिहां स्थिति केटली पामे ॥ पुलाक ज० प्रत्येक पल्यनी। उ० । १८ सागरनी पामे । बकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे । कषाय कुशील ज० प्रत्येक पल्यनी उ० ३३ सागरनी पामे ॥ निर्ग्रंथ ज० उ० ३३ सागरनी पामे । सनातक मोक्ष जाय ॥

[illegible] स्थान द्वार । आगल्या [illegible] नीयना
ना [illegible] ना [illegible] स्थानक ते ॥ प-
[illegible] ना स्थानक [illegible] । अने निग्रंथ ने
[illegible] स्थानक ३ । अल्प-
[illegible] ॥ [illegible] सर्वथी थाका नि-
[illegible] ने [illegible] ना स्थानक अने मांहो
मांहो तुल्य ॥ १ ॥ तेथी त्रीज बोले
पुलाकना स्थानक । असंख्यान गुणा
॥ २ ॥ तेथी त्रीज बोले बकुसना स्था-
नक असंख्यान गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे
बोले प्रतिसेवना ना स्थानक असंख्यान
गुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले । कषा-

य कुशीलना स्थानक असंख्यान गुणा
॥ ५ ॥ ए द्वार २४ मो ॥
२५ निकास द्वार ते पर्यव द्वार एकेका नियं-
ठाना अनंता पर्यव ते पुलाक । पुलाक
साथे ठगाण वर्मिया । पुलाक बकुस
प्रतिसेवना थी अनंत गुण हीणा ॥ क-
षाय कुशील साथे ठगाण वर्मीया ॥ उ-
पज्या वेथी अनंत गुण हीणा ॥१॥ हवे
बकुस ॥ पुलाक अनंत गुण अधिक ॥
बकुस प्रतिसेवना कषाय कुशील साथे
ठगाण वर्मीया ॥ उपज्या वेथी अनंत
गुण हीणा ॥ २ ॥ प्रतिसेवना पुलाकथी

अनंत गुण अधिक ... प्रतिसेवना
कषाय कुशील साथे ठठाण वडिया।
ऊपला थेथी अनंत गुण हीणा ॥ ३ ॥
कषाय कुशील आगला ४ साथे
ठठाण वडिया ॥ ऊपला थेथी अनंत
गुण हीणा ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथ ने स्ना-
तक। आगल्या चारथी अनंत गुण अ-
धिक ने मांहोमांही तुल्य ॥ ६ ॥
अल्प बहुत्व द्वार ॥ पहेले बोले सर्वथी
थोडा पुलाक ने कषाय कुशील ना ज-
घन्य पर्यव मांहोमांही तुल्य ॥१॥ तेथी
बीजे बोले पुलाकना उत्कृष्टा पर्यव अ-
नंत गुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले ब-
कुस ने प्रतिसेवना ना जघन्य पर्यव
मांहोमांही तुल्य ने अनंत गुणा ॥ ३ ॥
तेथी चोथे बोले बकुसना उत्कृष्टा पर्यव
अनंत गुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे बोले
प्रतिसेवना ना उ० पर्यव अनंत गुणा
॥ ५ ॥ तेथी छठे बोले कषाय कुशील-
ना पर्यव उ० अनंत गुणा ॥६॥ तेथी नि-
र्ग्रंथ ने स्नातक ना उ० पर्यव मांहोमांही
तुल्य ने अनंत गुणा ॥ ७ ॥ ठठाण
वडिया ते सुं ? हीणो होय के अधिको
होय। जो हीणो होय तो अनंत भाग

[illegible] ॥ सम्यक्त्व

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ सम्यक्त्व

[illegible] ॥ सम्यक्त्व [illegible] ॥ ८ ॥ अ

सम्यक्त्व गुण ॥ ७ ॥ अनंत गुण अ

[illegible] ॥ ६ ॥ ए पट गुण दानी वृद्धि

जाणवी । ए द्वार २५ मा ।

२६ जोग द्वार आगल्या ५ नीयंठा । सयोगी

होय तो ३ जोग होय । ने ठठो स्ना-

तक सयोगी होय तो ३ जोग होय ॥

अजाणी [illegible] तो जोग एके नही ॥१६॥

२७ उपयोग द्वार । छ नीयंठामां साकार

उपयोग ने अनाकार उपयोग बेने लाभे

। ए द्वार २७ मा ॥

२८ कषाय द्वार । आगला ३ नीयंठामां

[illegible] नीयंठा न लाभे । [illegible]

चोकडी आगल्या त्रण नीयंठामां होय

अने कषाय कुशीलमा संज्वलना चार

होय । अने जो ३ होय तो क्रोध

वरजीने ॥ बे होय तो मान वरजीने । ने

एक होय तो माया वरजीने तेमां क्रोध

मान मायानी नजना लोभनी नीयमा

होय ॥४॥ निर्ग्रंथ उपसम तथा क्षीण कषाइ होय । स्नातक क्षीण कषाइ होय ॥ ए द्वार १८ मो थयो ॥

१९ लेस्या द्वार । आगला ३ नियंठामां छ-एही ३ लेस्या होय । कषाय कुशील-मां ६ लेस्या होय ने निर्ग्रंथने सुक्ल लेस्या । स्नातकमां परम सुक्ल लेस्या ॥ अने अलेसी पण होय ॥ ए द्वार १९ ॥

२० परिणाम द्वार । आगला नीयंठा मां वर्धमान परिणाम होय तो आगल्या ४ मां ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर मुहूर्त । उपल्या २ ना जघन्य उत्कृष्ट अंतरमुहूर्त । हा-यमान परिणाम । आगल्या ४ ना । ज० एक समो । उ० । अंत० उपल्या २ ना हायमान परीणाम होय नहीं । अवस्थित परिणाम आगल्या ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा । निर्ग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्व क्रोड ए द्वार ॥२०॥

२१ बंध द्वार । पुलाक ७ कर्म बांधे । आ-उखुं वरजीने ॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७ । ८ कर्म बांधे । ७ बांधे तो आउखुं व-रजीने कषाय कुशील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म बांधे । ७ कर्म बांधे तो आउखुं वरजीने

[illegible]

२२ उदीरणा द्वार । पुलाक ६ कर्मनी उदी-
रणा करे आउखु १ वेदनी २ वर्जीने॥
बकुस ने प्रतिसेवना आठ कर्मनी उदी-
रणा करे। अने जो ७ नी करे तो
आउखु वर्जीने । [illegible] नी करे तो आउखु
वेदनी वर्जीने । कषाय कुशील [illegible] कर्म
नी उदीरणा करे ७ नी करे तो आउखुं
वर्जीने ६ नी करे तो आउखु वेदनी
वर्जीने ॥ ५ नी करे तो मोहनी
आउखु वेदनी वर्जीने । अने निर्ग्रंथ
आउखु वेदनी मोहनी ए ३ वर्जीने
पांच कर्मनी उदीरणा करे । तथा
नाम गोत्र २ नी उदीरणा करे । स्नातक
नाम गोत्रनी उदीरणा करे तथा न-
पण करे ॥ उदीरणा ॥ २३ ॥
२४ उवसंपजहणा द्वार । पुलाक यमे तो

कषाय कुशील पणुं पामे। अने जो पमे तो असंजति पणुं पामे ॥ १ ॥ वकुस चमे तो प्रतिसेवना ने कषाय कुशील पणुं पामे ॥ अने जो पमे तो असंजति ने श्रावकपणुं पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चमे तो कषाय कुशीलपणुं पामे ॥ अने जो पमे तो वकुस ॥ १ ॥ असंजति ॥ २ ॥ श्रावकपणुं ३ पामे ३ कषाय कुशील चमे तो नीर्ग्रंथपणुं पामे। अने जो पमे तो पुलाक ॥ १ ॥ वकुस २ प्रतिसेवना ॥३॥ असंजति ४ श्रावक ५ ए ५ थाय ॥४॥ निर्ग्रंथ चमे तो स्नातकपणुं पामे। अने

जो पमे तो कषाय कुशीलपणुं पामे अ-संजति पण थाय ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय पण पमतुं नथी ॥ ए ॥ २४ ॥

२५ संज्ञा द्वार। वीजो १ त्रीजो २ ॥ चोथो ३ ॥ ए ३ नीयंठा सनावउता मां होय। नोसनावउता मां ६ नीयंठा लाने ए ॥२५॥

२६ आहार द्वार॥आगल्या ५ नियंठा आहारक होय। उठो नीयंठो स्नातक आहारक ने अणाहारक होय ॥ ए द्वार ॥२६॥

२७ जव द्वार। पुलाक ज० १ जव करे ॥ उ० ३ जव करे ॥ वकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषाय कुशील ॥ ३ ॥ ए

३ ॥ज०॥ १ जव उ० ८ जव करे। निर्ग्रंथ ज० ॥ १ जव ॥ उ० ॥ ३ जव करे स्नातक मोक्षमां जाय । ए द्वार २७ मो ॥

२८ आकर्ष द्वार । आकर्ष १ जवे पुलाक ज० १ वार ॥ उ० ३ वार आवे। वकुस प्रतिसेवना ॥ कषाय कुशील ॥ ज० ॥१॥ उ० प्रत्येक सो ९०० वार आवे॥ निर्ग्रं-थ० ज० १ उ० २ वार आवे । स्नातक ज० उ० १ वार आवे । घणा जव आश्री ॥ पुलाक ज० २ वार उ० ७ वार आवे। वकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषाय कुशील ए ३ ॥ ज० २ उ० प्रत्येक ७२००० हजार वार आवे। निर्ग्रंथ ज० २ उ० ५ वार आवे । स्नातकने पुनर्जव ठे नही। ए द्वार ॥२८ मो॥

२९ स्थिति द्वार स्थिति १ जव आश्री । पुलाकनी ज० अंत०। उत्० अं० । वकुस प्रतिसेवना कषाय कुशीलनी ज० १ समो उ० देसे उणी पूर्व क्रोम ॥ निर्ग्रंथनी । ज० १ समो। उ० १ अंतर्मु०। स्नातकनी ज० १ अंत०। उ० देशे उणी पूर्व क्रोम । घणा जव आश्री । पुलाक ने निर्ग्रंथनी । ज० १ समो उ० १ अंत० वाकी ने सर्वथा काळ ए २९ मो ॥

३० अंतर द्वार । अंतर एक जीव आश्री आगल्या ५ नियंठाने । ज० अंत० । उ० अर्द्ध पुद्गल देसे ऊणुं आंतरुं पडे। स्नातकने आंतरुं नथी। द्रव्ये घणा जीव आश्री। पुलाकने ज० १ समो ॥ उ० संख्याता वर्षनुं। निर्ग्रंथने ज० १ समो। उ० ६ मासनुं ॥ शेष बाकिने आंतरुं [illegible]। ए द्वार ३० मो थयो ॥

[illegible] द्वार । समुद्घात पुलाकमां [illegible] मारणांतिक ए ॥ ३ [illegible]

निक ॥ ३ ॥ वैक्रेय ॥ ४ ॥ तेजस ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ कषाय कुशीलमां ६ समुद्घात । केवळ वरजीने । निर्ग्रंथमां समुद्घात नथी। स्नातकमां ॥ १ केवळ समुद्घात लाभे । ए द्वार ३१ मो ॥

३२ क्षेत्र द्वार। ते ६ नियंठा लोकने संख्यातमे भागे होय के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकमां होय तेनो उत्तर ॥ ॥ आगल्या ५ नियंठा लोकने असंख्यातमे भागे होय ॥ शेष ४ बोले न होय ॥ स्नातक लोकने असंख्यातमे

...मा । कषाय कुशील ज० होय
॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार ॥
...नग्रंथ ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
...० ॥ १६२ ॥ नमो ॥ १०८ ॥ क्षपक-
...णीना अने ५४ उपसम श्रेणीना ॥
...नातक ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० १०८
...प्रतिपद्यमान आश्री पुलाक होय
॥ । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येक
...जार ॥ बकुश ने प्रतिसेवना होय तो
...० प्रत्येकसे क्रोड ॥ उ० प्रत्येकसे क्रोड ।
...षाय कुशील होय तो । ज० प्रत्येक
...जार क्रोड । उ० प्रत्येक हजार क्रोड ।

निर्ग्रंथ ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्र-
त्येकसें ॥ स्नातक । ज० प्रत्येक क्रोड
उत्कृष्टा प्रत्येक क्रोड होय ए द्वार ३५ मो ॥
३६ अल्प बहुत्व द्वार । सर्वथी थोडा नि-
र्ग्रंथ १ तेथी पुलाक संख्यात गुणा ॥
॥२॥ तेथी स्नातक संख्यात गुणा ॥ ३ ॥

तथा बकुस संख्यात गुणा ॥ ४ ॥ तेथी
प्रतिसेवना संख्यात गुणा ॥ ५ ॥ तेथी
कषाय कुशील संख्यात गुणा ॥६॥ ए छ
नियंठानो अधिकार । सूत्र श्री भगवति
शतक २५ मे उद्देशे छठे छे ॥
॥ इति श्री नियंठा बोल समाप्त. ॥

॥ अथ श्री षट् द्रव्यना बोल ॥

परिणाम जीवमुत्तं ॥ सपएसाएगखित्त किरियाय ॥ निच्चंकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरे-
हिंअप्पवेसा ॥ १॥ ए गाथा । हवे एहनो अर्थ कहे छे । शिष्य आत्मार्थी पंचांग नम्रता
करि पुछे छे जे । हे स्वामिन् । षट् द्रव्यमां परिणामि द्रव्य केटला । अने अपरिणामि द्रव्य
... कहे छे ॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट् द्रव्य । पोत पोताने स्वभावे

स्वरूपे पोत पोताना गुण पर्यायनि परिणति रूपे ठ ए स्वभाव परिणामि । अने व्यवहार नये ॥ एक जीव ॥ १ ॥ ने पुद्गल ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ विभाव परिणामि । शेष ॥ ४ ॥ द्रव्य । अपरिणामि ॥ १ ॥ हवे ठ द्रव्यमां ॥ एक जीवास्तिकाय । जीवद्रव्य चैतन्य । शेष ॥५॥ जम । अजीव द्रव्य ॥ २ ॥ हवे ठ द्रव्यमां मूर्त्तिरूपी एक पुद्गल द्रव्य मुर्ति ॥ शेष ॥ ५ ॥ अमूर्त्ति ॥ ३ ॥ ठ द्रव्यमां एक काळ द्रव्य अप्रदेशी । एक समय द्रव्य ठे माटे ॥ शेष ५ सप्रदेशी ॥ धर्म । अधर्म । असंख्यात प्रदेशी ॥ आकाश लोकालोक प्रमाणे ठे माटे अनंत प्रदेशी ॥ पुद्गल द्रव्य । एक परमाणुं यावत् अनंताणुक खंध माटे । अनंत प्रदेशी । एक जीवात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ ४ ॥ ठ द्रव्य निश्चय नये एक । ठये द्रव्य अनेक । धर्म० अधर्म० । द्रव्यथि एक । गुण पर्याय प्रदेश थि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । प्रदेश असंख्याता ॥ आकाशना प्रदेश पण अनंता । काळ द्रव्य । वर्त्तना लक्षणे एक ॥ गुण पर्याय समयथि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । समय अनंता ते केम एक आवलिका ना चोया असंख्यात प्रमाणे समय थाय । एम यावत् दश कोमाकोमि

सागरोप मों ॥ एक उत्सर्पिणी ॥ दश कोडाकोडि सागरोपमे ॥ एक अवसर्पिणी । विश
कोडाकोडि सागरोपम नो एक कालचक्र थाय ॥ ते एक कालचक्र ना असंख्याता असंख्यात
नंते समय थाय ॥ एहवा अनंता तेंद काल चक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एहवा अ-
नंता पुद्गल परावर्त्तन नो अतीतकाल गयो । वर्त्तमानकाल एक समय ज ॥ अनंत पुद्गल परा-
वर्त्तन नो आगमियो काल आवशे । एम त्रण कालना समय अनंता ॥ हवे पुद्गल द्रव्य
॥ पुद्गल सकल स्वतंत्र एक ॥ गुण पर्याय प्रदेशपि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनंता
॥ प्रदेश अनंता ॥ अनंता परमाणुआ ॥ अनंता द्वि प्रदेशीया । अनंता त्री प्रदेसीया अनंता चो
प्रदेशीया । अनंता पंच प्रदेशीया । एमयावत् अनंता संख्यात प्रदेशीया ॥ अनंता असंख्यात
प्रदेशीया अनंता अनंत प्रदेशीया स्कंध छे ते माटे । एक अनंत प्रदेशिया स्कंधमां अनंत प्रदेशीया
प्रदेश छे माटे पुद्गल अनंत प्रदेशी छे । जीवास्तिकाय चेतन्य लक्षण । द्रव्यथि एक छे ।
गुण पर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ प्रदेश एक जीवना असंख्याता एहवा आत्म
द्रव्य छे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० । आकाश० । ए त्रण । एक । अने काल ॥२॥

कारण छे । एटले जीव ने पांचे द्रव्य कारण रूप छे ॥ जीव तो कारणी छे ॥ पांच द्रव्य अकारणी छे ॥ ए ॥ छ द्रव्यमां । स्वरूप । चलण स्वभाव । स्थिर स्वभाव । अवकाश दान । नवीन पुराण स्वभाव । पुरण गलन स्वभाव ॥ उपयोग लक्षण । चैतन्य स्वभाव छ ए स्वभावना कर्ता छे ॥ अने व्यवहार नये एक जीव द्रव्य परभाव रूपनो कर्ता छे । शेष ५ द्रव्य अकर्ता छे ॥ १० ॥ छ ए द्रव्यमां सर्व व्यापी एक आकाश द्रव्य लोकालोक प्रमाणे छे माटे ॥ शेष ५ द्रव्य लोक व्यापी छे ॥ ११ ॥ इयर अण्णपवेशाकं० । यद्यपि छ ए द्रव्य एक क्षेत्रमां स्थिर निरनि परे एकठा मळी रह्या छे तो पण एक बिजामां कोइ कोइमां भळे नहि ए द्रव्यनो विचार ॥ हवे धर्मास्ति काय ने केहने कहिये ॥ धर्म ते चलण स्वभावरूप ॥ गतिमान् पुरुषवत् ॥ अस्ति के० त्रण काळमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने धर्मास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥१॥ अचेतन्य ॥२॥ अक्रिय ॥३॥ चलण सहाय ॥४॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ १ ॥ एम अ० कहेता नहि धर्म के० चलण स्वभाव प्रतिपक्ष ते स्थिर स्वभाव ॥

प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ तथा बिजा पण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ स्पर्श ॥ ४ ॥ ५ ॥ द्रव्य प्राण नाव प्राणे करि जीवे ते जीव ॥ अस्ति के० त्रण कालमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह तेने जीवास्ति काय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ केवळ ज्ञान ॥ १ ॥ केवळ दर्शन ॥ २ ॥ स्वरूप रमण । स्थिरता चरण ॥ ३ ॥ अक्षायक अनंत शक्ति ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ अव्या बाध ॥ १ ॥ अनावगाह ॥ २ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमां ५ वर्ण मांहिलो १ वर्ण ॥ बे गंध मांहिलो १ गंध ॥ पांच रस मांहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्श मांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणु मळे त्यारे द्वि प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणु मळे त्यारे त्रि प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां त्रण वर्ण ॥ २ गंध ॥ ३ रस ४ स्पर्श ॥ ते शित ॥ १ ॥ उष्ण २। स्निग्ध ॥ ३ ॥ लुक्ष ॥ ४ ॥ चार परमाणु मळे त्यारे चतुः प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पंच परमाणु मळे त्यारे पंचप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ५ वर्ण ॥ २ गंध ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ एम छ

नित्य ॥ अनित्य ॥ एक अनेक ॥ ए ४ पक्ष तो पूर्वे कह्या ॥ तेमज सत् ते छ द्रव्य पो-
त पोताना द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काळ ॥ भाव रूपे छता छे ॥ तेमां धर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य ॥
चलण सहाय गुण ॥१॥ अधर्मास्ति कायनो स्व द्रव्य स्थिर सहाय गुण ॥२॥ आकाश०
स्व द्रव्य अवकाश दान गुण ॥३॥ काळ० स्व द्रव्य वर्तना लक्षण गुण ॥४॥ पुद्गल० स्व-
द्रव्य पुरण गलन गुण ॥ ५ ॥ जीवास्ति काय स्व द्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम
छ द्रव्य स्व क्षेत्र ॥१॥ धर्म० अधर्म० स्व क्षेत्र असंख्यात प्रदेशी ॥२॥ आकाश० स्व क्षेत्र
अनंत प्रदेशी ॥ ३ ॥ काळनो स्व क्षेत्र एक समय ॥ ४ ॥ पुद्गलनो स्व क्षेत्र एक परमाणु
एकवा अनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्व क्षेत्र असंख्य प्रदेशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनो काळ ॥
पोतपोताना अगुरु लघुनि समय समयनी प्रणति फरे छे ते छ द्रव्यनो स्वकाळ ॥ छ द्र-
व्यनो स्वभाव ते छ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामां छे अने बिजा द्रव्यना
४ बोल तेमां नथि ॥ जेम धर्मास्ति कायमां पोताना द्रव्य क्षेत्र काळ भाव ए ४ बोल छे ॥
बीजा ५ द्रव्यना नथि ॥ एम छ ए द्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल छे ॥ बिजा ५ना नथि ॥

पण अंत नथि ते सादि अनंत चोथो नांगो ॥ ४ ॥ धर्मास्ति कायमां ४ गुण अनादि अनंत नांगो नथि ॥ पर्याय ४ खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥ ४ ॥ ए ४ सादि सांत त्रिजे नांगे छे सिद्धना जीवमां धर्मास्ति काय ना प्रदेश सादि अनंत चोथे नांगे छे ॥ एमज अधर्म द्रव्यमां ॥ आकाशमां पण ए रीते जाणवुं पण एटलो विशेष खंध अनादि अनंत पहेले नांगे जाणवो ॥ काळ द्रव्यमां गुण ४ अनादि अनंत छे पहेले नांगे ॥ अने पर्यायमां अतीत काळ अनादि सांत त्रिजे नांगे छे ॥ वर्तमान काळे सादि सांत त्रिजे नांगे छे ॥ अनागत काळ सादि अनंत चोथे नांगे छे ॥ पुद्गल द्रव्यमां ४ गुण अनादि अनंत प्रथम नांगे छे ॥ जीव पुद्गलनो संबंध अनव्य जीवने अनादि अनंत प्रथम नांगे छे ॥ अने पुद्गल संधनि ते सादि सांत त्रिजे नांगे छे ॥ जघन्य १ समय उत्कृष्टो असंख्य काळ ते माटे सादि सांत नांगो सादि अनंत नांगो पुद्गलमां नथि ॥ अने नव्य जीवने पुद्गलनो संबंध अनादि सांत चोथे नांगे छे ॥ जीव द्रव्यमां गुण ४ अनादि अनंत प्रथम नांगे छे ॥ जीवने कर्मनो संयोग ॥ नव्य जीवने अनादि सांत जे कारणे के वारे कर्मथि छुटशे ॥

नरक तिर्यंचना जव करशे ते सादि सांत त्रिजे नांगे जाणवा ॥ अने जीवमां सिद्धपणु प्र-
कटे ते सादि अनंत चोथे नांगे जाणवुं ॥ एम षट द्रव्यनो विचार लेश मात्र छे ॥
आत्म द्रव्यनो विचार ॥ आत्मा ३ ॥ एक वहिरात्मा ॥ १ ॥ वीजो अंतरात्मा ॥ २ ॥
त्रिजो परमात्मा ॥ ३ ॥ तेमां वहिरात्मा ते ॥धन॥ स्वजन॥ शरीर ॥ कर्म ॥ सर्व पर वस्तु
पुद्गलिक माहरि अने हुं पण एहनो एहथी परिणामनिं लोल्यतापणे ॥ अज्ञान मोह मि-
थ्यात्वे परिणम्यो॥ तेने वहिरात्मा कहिये॥ दुहा॥ पुद्गलसु रातो रहे ॥ जाणे एह निधान
तस लाने लोन्यो रहे ॥ सो वहिरातम अनिधान ॥ १ ॥ पुद्गल विषय विलास द्रव्य कुटुं-
वादि मां रातो ने रातो तल्लाईन परिणामे ॥ मग्न रहे एह पुद्गल मनोज्ञ मळे थके जाणे जे
एह उपरांत विजुं कांइ निधान नथि॥ ते पुद्गलना लाज मांज लोन्नि रहे ॥ तेनुं नाम व-
हिरात्मा॥ ते पहेला गुणठाणा थि त्रिजा गुणठाणा सुधि जाणवो ॥ १ ॥ हवे वीजा अंत-
रात्मानुं लक्षण कहे छे ॥ दुहा ॥ पुद्गल खल संगी परे ॥ सेवे अवसर देख ॥ तनुं अशक्त-
ज्युं लकडी ॥ ज्ञान नेद पद लेख ॥ १ ॥ पुद्गल नो संवंध खल निच दुर्जन—मनुष्यनि

संगति सरिखो जाणे ॥ पण अग चाइये पुद्गलनो संग करे ॥ जेम शरिरे असमर्थ
छाकनि राखे ते छाजतो थको ॥ पण समर्थाइ यें राखे नहि ॥ तेम परिणाम थि
ज्ञान सम्यक्त्वे करि पुद्गलीक वस्तु जीव वस्तुनो नेद करि ॥ अंतरंग परिणाम थि ॥ उ-
दासी परिणामे ॥ आत्मीक वस्तु न्यारि ठेलखि ने ॥ तेनुं ध्यान करण रुचि वाळा ने ॥ अं-
तरात्म पद प्रकटे ॥ ते चोथे गुणठाणे थि मांमिने १२ मां गुणठाणा सुधि जाणवो ॥ २ ॥
हवे त्रीजा परमात्मानुं लक्षण कहे छे ॥ दुहो ॥ न्यारो आप स्वरूप मे ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥
सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जस नव को मेल ॥ १ ॥ आत्म स्वरूपने विषे मग्न ॥ दुहो ॥
समता रमता उर्धता ॥ ज्ञायकता सुख जास ॥ वेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीव विलास ॥१॥
एटला बोल प्रगट थया छे ॥ शुद्ध प्रणतिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता
मनता वचनता ॥ जमता जम समेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खेल ॥ १ ॥
ए सर्व पर वस्तु मात्र कर्म चैतन्यताथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि नवादि सर्व मेल रहित ते
परमात्मा ॥ तेरमे चौदमे गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा कहिये ॥ ३ ॥ तेमां द्रव्यात्मा

असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परिणम्यो ते बहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्मा पण कहियें॥१॥एमज कषायात्मा ते निश्चय व्यवहार सर्व रिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा निश्चय नये तो बहिरात्मा ॥ व्यवहार नये शुद्ध योग ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध योग ते बहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोग आत्मा तेमां ज्ञानात्माना उपयोगमां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवळज्ञान परमात्मा ॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शननो उपयोग शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवळ दर्शनना उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानात्मामां ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवळज्ञान परमात्मा ॥ ५ ॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शन शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्ध प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवळ दर्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ ॥ चारित्र क्षयोपशमनि परिणतिये अंतरात्मा ॥ अने जथाख्यात चारित्र क्षायक केवळी चारित्रनि परिणतिनि अपेक्षाये ॥ परमात्मा ॥ ७ वीर्यात्मामां ॥ बाळ वीर्यनि परिणति ते ॥ बहिरात्मा ॥ बाळ पंडित वीर्यनी श्रावकनि शुद्धपरिणति ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध परिणति ते बहि-

पंमित वीर्य अंतरात्मा ॥ पंमित वीर्य क्षयोपशम परिणतिनि अपेक्षाये ज्ञमस्तनुं पंमित वीर्य अंतरात्मा ॥ पंमित वीर्य क्षयोपशम परिणतिनि अपेक्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आत्र आत्मा नो लेश मात्र अधिकार कह्यो ॥ षट् द्रव्य ॥ आत्म बोधनो विचार लेश मात्र अने क्षायक केवळी पंमित वीर्यनि परिणतिनी अपेक्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आत्र आ- रमा नो लेश मात्र अधिकार कह्यो ॥ षट् द्रव्य ॥ आत्म बोधनो विचार लेश मात्र निरूपणे ॥ विस्तार रुचिये ॥ सात नय चार प्रमाण चार निक्षेप ॥ ॥ षट उपक्रम नव अनुगम ॥ उंघनिष्पन ॥ नाम निष्पन ॥ सूत्रआयक निष्पन ॥ निक्षेप निर्युक्ति ॥ स्याद्वादि ॥ असंख्य प्रदेशी ॥ अनंत नयात्मक वाणी सिद्धांतनि ॥ विस्तार रुचिनो वर्णव करतां पार न पामिए पण सारभूत एटलुं जे असंख्य प्रदेशी अनंत केवळ ज्ञान ॥ अनंत केवळ दर्शन ॥ अनंत स्वरूप स्थिरता रमण ॥ अनंत क्षायक शक्ति अनंत परम- क्षमा अनंत परम मार्दव ॥ परमार्जव । परम संतोष । परम समता ॥ परम शीतल दसा ॥ परम शांति ॥ परम दांति । परम क्षायक सम्यक्त ॥ परम क्षायक भाव ॥ परम शुद्ध परिणामिक भावमयि ॥ शुद्ध सत्तानि रासि । निसृद्धि ॥ स्वतंत्री । इछा रोध निरासंसी ॥ नाहं मम ॥ अरागी अद्वेषी अमोहि अविकारी ॥ सहजानंदि स्वरूप विलासी ॥ स्वरूप

मोक्ष कर्ता ॥ स्वरूप मोक्ष जोक्ता ॥ स्वरूप तत्व रमणीय ॥ तत्वानंदि । तत्व विश्रामि ॥ स्वरूप स्थायि ॥ तत्व विलासी तत्वानुजवी ॥ अठंद अजेद ॥ अप्रतिहत अविनासी ॥ अजरअमर ॥ निःकलंकी ॥ अगम्य अलक्ष अकल अगोचर अगाध॥ सच्चिदानंद पूर्णानंद पुर्णब्रह्म ॥ आत्म द्रव्य अनंत गुणी ॥ अनंत पर्यायमयि ॥ अनंत शुद्धात्म धर्ममयि ॥ आत्म सत्तानि सद्दहणा प्ररूपणा स्पर्शना करवी ॥ एहवी शुद्ध सत्ता ॥ केवळ ज्ञानादि ॥ आत्म द्रव्य ने न माने तेनी साध्य शुन्य साधना क्रिया जेम घृत अथवा लुण विना रसवति न सोने ॥ तेम सत्तायें केवळ ज्ञान न माने ॥ ते जीव पूर्वे तेटली क्रीया करे ॥ द्रव्य ज्ञाननो अभ्यास करे ॥ पण जो केवळ ज्ञानज सत्ताए नथी ॥ ने घीजा द्रव्य तो जम ठे । तवारे शुं प्रगट थशे ते माटे शुद्ध सत्ता प्रगट करवी ॥ तेज कारज विना तो करणी सर्वे शुजाश्रव पुन्य फळनी दाता ठे ॥ ते तो परजाव ठे अनंत वार जीव पाम्यो ॥ ते पाम्यानुं शुं आश्चर्य ठे ॥ ते माटे आचारांग नंदि मोक्षमार्गा ध्ययन जगवति पन्नवणा अनुयोगद्वारादि दशवैकालिक आनमां ध्ययनादि ॥ सकळ आगमनी शाखे ॥ आत्मार्थि

मोक्षार्थि निर्जरार्थिने तो ॥ एकांतहित ॥ पार्श्वमणी चिंतामणी रसकूंपि अमृत रस कुंभ ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथानल ॥ सीद्ध मंत्रथी अधिक अनोपम ॥ सार सर्व ज्ञाननुं तत्व ए जे केवळ ज्ञान सत्ताए मानिने ॥ शक्ति प्रमाणे शुद्ध व्यवहार क्रिया करीने शुद्ध सत्ता प्रगट करवि ॥ ए सर्व सद्दहणाथी ॥ कोटि गमे युक्ति वाळा मळे ॥ सद्दहणा सत्ताना प्रति पक्षे पण न चळवुं ॥ फरी फरीने जीवने आतम द्रव्यनी शुद्ध केवळ अकळा यथी महा दुर्लभ छे ॥ ते माटे ज्ञानामृतमां झीली ॥ सकळ जंतुनी रक्षा करी गुणीना गुणग्राम करी ॥ आत्मानी निंदा करी ॥ सकळ जीवने उपगार बुद्धि चिंतवी ॥ सर्व ठर्यां कोइ जीवना अवर्णावाद मात्रनो निषेध करी ॥ सकळ उपगारी पुरुषनो क्षण क्षण उपगार समरी ॥ सरव स्वनाथी उदासी नाथे रहिने ॥ पूर्वे अनंत जीव सत्ताने वर्या वरे छे आगमी ए काळे वरसे ॥ घणुं शुं कहिए ॥ ए विचारणा तो पोताना जीवने हाथ छे ए सिद्धांतण प्रमाण करे ॥ तेहना सकळ कार्य सिद्ध थाय ॥ इति षट् द्रव्य वीचार संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री रूपि अरूपीना बोल. ॥

॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मणवय जोगाय कम्मदेहा ॥ एसाचौफासा ॥ घणतणुवाय घणोदही ॥ १ ॥ उरालाय चौदेहा ॥ पुग्गलथ्थिकाय दवलेसा ॥ तह काय जोगोय ॥ नायवा अठ फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अद्धापावठाणावत्तिय ॥ दिठिपचुगाणा ॥ उवउंग जावलेसाय ॥ ३ ॥ उग्गहासन्ना बुद्धी ॥ चौचौ एगेगसठीय ॥ ए ए सनणीया॥ अरु वितथ्थनायवा॥४॥ए चार गाथानो अर्थ कहे छे ॥ कर्म ॥८ ॥ पाप ॥१८ ॥ मन जोग॥ १ ॥ वचन जोग ॥ १ कार्मण शरीर ॥ १ ॥ ए ॥२ए॥ बोलमां ४ स्पर्श लाभे ॥१॥ घन वाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक ॥ १ ॥ वैक्रय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ४ शरीर ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ द्रव्य लेशा ६ ॥ काय जोग ॥ १ ॥ ए १५ ॥ बोलमां ॥ ८ ॥ स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ ए ४४ बोल रूपिना जाणवा ॥ धर्मास्ति काय ॥ १ ॥ अधर्मास्ति काय ॥ १ ॥ आकाशास्ति काय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥

काळ ॥ १ ॥ अढार पापनि निवृत्ति १८ ॥ दृष्टि ३ ॥ उठाण ॥ १ ॥ कम ॥ १ ॥ बळ
॥ १ ॥ वीर्य ॥ १ ॥ पुरुषाकार प्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग १२ ॥ नाव लेश्या ६ ॥ अवग्रह
॥ १ ॥ इहा ॥ १ ॥ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥ १ ॥ संज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातनी ॥ १ विनयनी
॥ १ ॥ कर्मनी ॥ १ ॥ पारिणामिनी ॥ ए ४ बुद्धि ॥ ए ॥ ६१ ॥ बोल अरूपीना जा-
णवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्तं. ॥

॥ अथ श्री पचीस बोलनो थोकडो. ॥

॥ १ पहेले बोले महावीर प्रभुए एका एक दीक्षा लीधी अने मोक्ष पण एकाएक
गया. ऊर्ध्वलोके सर्वार्थ सिद्ध विमान एक लाख जोजननुं छे, त्रिछा लोके जंबुद्वीप एक
लाख जोजननो छे, अधो लोके सातमी नरके अपइठाण नरकावासो एक लाख जोज-
ननो छे. चित्रा नक्षत्र, शांति नक्षत्र, आरद्रा नक्षत्र ए त्रण नक्षत्रनो एकेको तारो कह्यो
——ी करती वखते बे दीशा सन्मुख बेसी करवी ते पूर्व अने उत्तर.

बे प्रकारे धर्म कह्यो छे; गृहस्थ धर्म अने साधु धर्म. बे प्रकारे जीव कह्या छे, सिद्धना जीव अने संसारी जीव. बे प्रकारे दुःख कह्युं छे, ते शारीरिक दुःख अने मानसिक दुःख. पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र, उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र, पूर्वा भाद्रपद अने उत्तरा भाद्रपद ए चार नक्षत्रना ब बे तारा कह्या छे. ३ त्रीजे बोले श्रावक त्रण मनोरथ चिंतवे ते एवी रीते के, हे भगवान ! हुं आरंभ अने परिग्रह क्यारे छांडीश ? हे भगवान ! हुं पंच महा व्रतधारी क्यारे थइश ? हे भगवान ! हुं आलोयणा करी संथारो क्यारे करीश ? ते वखतने धन्य छे. त्रण प्रकारना जीन कह्याः-१. अवधीज्ञानी जीन, २. मनःपर्यवज्ञानी जीन, ३. केवळज्ञानी जीन. त्रण प्रकारना पात्र साधुने खपे ते-१. माटीनुं, २. तुंबड़ानुं, ३. काष्टनुं. सात नक्षत्रना त्रण त्रण तारा कह्या छे. अभिच, श्रवण, अश्वनी, भरणी, मृगशर, पुष्प, ज्येष्टा ए सात नक्षत्र. ४ चोथे बोले श्रावकने चार विसामा कह्या छे भार वहेनारने दृष्टांते. एवी रीते के भार एक खभेथी बीजे खभे ले ते एक विसामो १, कोइ जग्याए ठेकाणे के चोतरे बोजो मुकीने पीशाब करवा जाय के झाडे फरवा जाय ते बीजो विसामो.

२, गाम दुर होय रस्तामां धर्मशाळा के जक्षनुं देवळ आवे त्यां रात रहे ते त्रीजो विसामो. ३, पोताने के धणीने त्यां नार मूके ते चोथो विसामो, ४. हवे ए दृष्टांत श्रावकना उपर उतारे छे. ते जेम नार खीधो तेम श्रावक ने बोजो ते अढार पाप रूप. तेना चार विसामा नीचे प्रमाणे—श्रावक आठम, पाखी अपवास, एकासणुं करे ते पाप रूप बोजो-एक खांधथी बीजे खांधे लेवा रूप ते पहेलो विसामो. केमके अपवास कर्यो ने पोतानी जात ने माटे खावानुं बंध कर्युं अथवा पाप बंध कर्युं पण बीजाने माटे करवुं पडे छे, तेथी पहेलो विसामो जाणवो. १, श्रावक एक सामायक बे सामायाक अथवा बे घडीनुं चार घडीनुं देशावगासिक करे ते बीजो विसामो जाणवो. केमके एटलो वखत पाप मांथी रोकायो. २, श्रावक आठम पाखीना पोषध करे ते रात रहेवा रूप त्रीजो विसामो. ३, श्रावक आलोयणा करी संथारो करे ते वारे सर्व पापथी निवर्त्यो ए नार घेर मुक्या रूप चोथो विसामो, ४. श्रावकने चार प्रकारनुं रात्रिभोजन कह्युं छे ते जेमके रात्रिए रांधे अने दिवसे खाय ते अशुद्ध. १, दीवसे रांधे अने रात्रिए खाय ते पण अ-

शुद्ध. २, रात्रे रांधे अने रात्रे खाय ते पण अशुद्ध. ३, दीवसे रांधे अने दीवसे खाय ते शुद्ध. ४, वळी एज चार भांगा बीजी रीते कहे छेः—अंधारी जग्याए रांधे अने अजवाळे खाय ते अशुद्ध. १, अजवाळामां रांधे अने अंधारी जगाए खाय ते पण अशुद्ध. २. अंधारी जग्याए रांधे अने अंधारी जग्याए खाय ते पण अशुद्ध. ३, अजवाळी जग्याए रांधे अने अजवाळी जग्याए खाय ते शुद्ध. ४. पुर्वाषाढा नक्षत्र, उत्तराषाढा नक्षत्र, अनुराधा नक्षत्र ए त्रणना चार चार तारा कह्या छे. ५ पांचमे बोले समकितना लक्षण पांच. सम १, संवेग २, निर्वेग ३, अनुकंपा ४, आस्ता ५. पांच समकितना दुषण कह्या छे॥ मिथ्यात्वी ए बोलाव्या पहेलां पोते तेने बोलावे ते. १. मिथ्यात्वीना सामुं वारंवार जोवुं ते. २. मिथ्यात्वीने पहोंचाडवा जवुं ते. ३. कामविना तेना मकान उपर जवुं ते. ४. वारंवार तेना मकान उपर जवुं ते. ५. ए पांच दुषण. पांच समकितना भुषण कहे छे. धर्मने विषे चतुराइ राखे ते समकितनुं भुषण. १. जीनशासन ने अनेक रीते दीपावे ते, २. साधुनी सेवा करे ते. ३. धर्मथी डगमगताने स्थीर करे ते. ४. साधु साधर्मीनी वैयावच्च करे ते.

ना गुणग्राम न करे. १. अन्य तीर्थीने माने वांदे ने पूजे नहि. २. अन्य तीर्थीए बोलाव्या विना पोते बोले नहि. ३. वारंवार ए साथे अलाप सलाप करे नहि. ४. अन्य तीर्थीने तरण तारण मानी अन्न पाणी आपे नहि. (दयाबुद्धी अनुकंपानो आगार) ५. अन्य तीर्थीने धर्मबुद्धि ए वस्त्र पात्र आपे नहि साता नीमीते आपे. ६. छ लेश्याना विचार कहे छे. कृष्ण लेश्या वाळाने जीव हींसा करवानी ईच्छा होय. १. नील लेश्या वाळाने चोरीनी इच्छा होय. २. कापुत लेश्या वाळाने मैथुन नी इच्छा होय. ३. तेजु लेश्या वाळाने तपश्चर्या करवानी इच्छा होय. ४. पद्म लेश्या वाळाने दान देवानी इच्छा होय. ५. शुक्ल लेश्या वाळाने मोक्षनी इच्छा होय. ६. कृतिका, अश्लेषा ए बे नक्षत्रना छ छ तारा छे. ७ सातमे बोले सात कारणे छद्मस्त जाणवो. प्राणातीपात लगाडे. १. मृषावाद लगाडे. २. अदत्तादान लगाडे. ३. शब्द रूप गंध रस स्पर्श तेनो स्वाद ले. ४. पुजा सत्कार वांछे. ५. निर्वद्य परूपे पण सावद्य लागे. ६. जेवुं परूपे तेवुं करी शके नहि, ए सातबोल जेनामां होय ते छद्मस्त जाणवो. सात प्रकारे आउखुं घटे ते कहे छे. ध्रास्को पडवाथी मरे. १. शस्त्रथी मरे.

पूर्वनो नणेलो उत्कृष्ट चउद पूर्वनो नणेलो एकलो रहे. ३. चार ज्ञाननो धणी एकलो रहे. ४. महा बळनो धणी एकलो रहे. ५. क्लेश रहीत होय ते एकलो रहे. ६. संतोषी होय ते एकलो रहे. ७. धैर्यवंत होय ते एकलो रहे ८. आठ ठेकाणे मनुष्य (घेलापणुं) उत्पन्न थाय ते कहे छे नरनारी परस्पर वातो करे त्यारे घेला. १, बाळकने रमाडे त्यारे घेला. २. क्लेश करे त्यारे घेला. ३, दारु जांग केफी पदार्थ पीए त्यारे घेला. ४ पेच पंथ पाघडी बांधीने फरे त्यारे घेला. ५. अरीसामां मुख जुए त्यारे घेला. ६. शयन समय घेला. ७. होळीमां पुरुषो अने आषाढी पुनमे स्त्रीउं. ८. देखता आठ प्रकारे अंध कह्या ते कहे छे. कामांध ॥१॥ क्रोधांध ॥२॥ कृपणांध ॥३॥ मानांध ॥४॥ मद्यांध ॥५॥ चोरांध ॥६॥ जुगट्यांध ॥ ७ ॥ जुगट्यांध ॥ ८ ॥ ए आठ आंधळा जाणवा । आठ महा पापी कहे छे—आत्मघाती महा पापी. १ विश्वासघाती महा पापी. २, गुण उंळवनार महा पापी ३. गुरु द्रोही महा पापी. ४, कुडी साक्षी पुरे ते महा पापी. ५, खोटी सलाह आपे ते महा पापी. ६. पच्चख्वाण वारंवार जांगे ते महा पापी. ७, हींसामय धर्म परुपे ते महा पापी

पडे. २. सामायिक पडिक्रमणुं करे नहि तो पस्तावुं पडे. ३. आहार पाणी असुझतो होय तो पस्तावुं पडे. ४. जणवानी जोगवाय होय अने जणे नहि तो पस्तावुं पडे. ५. साधर्मीनि खबर से नही तो पस्तावुं पडे ६. धर्म जागरण जागे नहि तो पस्तावुं पडे. ७ साधुनी विनय जक्ति करे नहि तो पस्तावुं पडे. ८. साधुनी सार संजाळ से नहि तो पस्तावुं पडे ९. साधु विहार करी जाय ने खबर न पडे तो पस्तावुं पडे. आ दस कारणे देवतानुं आयुष्य बंधाय ॥ १०. दश प्रकारे ज्ञानमां वृद्धि करनार नक्षत्रनां नाम. मृगसर १. आर्द्रा. २. पुष्प. ३. पूर्वा जाद्रपद. ४. पूर्वा पाढा ५. पूर्वाफाल्गुनी ६. मूळ. ७. अश्लेषा. ८. हस्त. ९. चित्रा. १० ए दश नक्षत्रमां ज्ञान जणे तो वृद्धि थाय ने विघ्न जाय. ११ अगीआरमे बोले महावीरना ११ गणधरना नाम कहे छे इंद्रजुती. १. अग्निजुति. २. वायुजुति. ३. व्यक्त. ४. सुधर्मा स्वामी ५. मंडित पुत्र. ६. मौरीपुत्र. ७. अकंपीत. ८. अचळ ज्राता. ९. मेतार्य. १०. प्रजास. ११. अगिआर बोले ज्ञान वधे ते कहे छे. उद्यम करता ज्ञान वधे. १. निद्रा तजे तो ज्ञान वधे. २. अणोदरी करे तो

[illegible] पद ८. श्रावकमां [illegible] निरंतर ना परम क[illegible] थाय [illegible] ज्ञानि गज्ञानां पद. ९ [illegible] श्रावक [illegible] परम कल्याण [illegible] अनार्यां निग्रथनां पद १० परिग्रह [illegible] परम कल्याण थाय—मनोग्न मुनि नां पद ११. तपणा उत्पन्न थइ मन पाछां वाळे ना परम कल्याण थाय—कपोल करतां. पद. १२॥१३ तरस बोले तेर तणग्या कहे छे—जन्मरूपी कथन मरण रूपी तणग्यो. १ सजोग रूपी कथन विजोग रूपी तणग्यो २. साता रूपी कथने असाता रूपी तणग्यो. ३. संपदा रूपी कथन आपदा रूपी तणग्यो. ४. हरख रूपी कथने सोग रूपी तणग्यो. ५. शील रूपी कथने कुशील रूपी तणग्यो. ६. ज्ञान रूपी कथनं अज्ञान रूपी तणग्यो ७, समकित रूपी कथने मिथ्यात्व रूपी तणग्यो. ८. संजम रूपी कथनं असंजम रूपी तणग्यो ९. तपस्या रूपी कथने क्रोध रूपी तणग्यो. १०. विवेक रूपी कथने अभिमान रूपी तणग्यो. ११. खेद रूपी कथने माया रूपी तणग्यो. १२. संतोष रूपी कथने लोभ रूपी तणग्यो. १३. ए तेर तणग्या. हवे तेर काठीआ कहे छे. जुगार. १. आळस. २. शोक. ३. भय. ४. वीकथा. ५. कौतक. ६. क्रोध ७. कृपण बुद्धि. ८. अज्ञान. ९. वहेम. १०. निद्रा. ११ मद. १२. मोह.

होय. १३. विनयवंत होय. १४. लज्जावंत इंद्रिनो दमनार होय. १५ ॥ १६. सोळमे बोले सोळ प्रकारना वचन जाणवा ते कहे छे–एक वचन घट, पट, वृक्ष. १. द्विवचन घटौ, पटौ, वृक्षौ. २. बहुवचन घटा, पटा, वृक्षा. ३. स्त्री लिंगे वचन॥ कुमारी, नगरी, नदी. ४. पुरुष लिंगे वचन देव, नर, अरिहंत, साधु. ५. नपुंसक लिंगे वचन कपट, कमळ, नेत्र. ६. अतीत काळ वचन (गयो काळ) करेलुं, थएलुं. ७. अनागत काळ वचन (आवतो काळ) करशे, थशे, जांगशे. ८. वर्तमानकाळ वचन॥ करे छे, थाय छे, जाणे छे. ९. परोक्ष वचन ए कार्य तेणे कर्युं. १०. प्रत्यक्ष वचन एमज छे. ११. उपनित वचन ए पुरुष रुपवंत छे. १२. अपनीत वचन जेम ए पुरुष कुरुपवंत छे. १३. उपनीत अपनीत वचन जेम ए रुपवंत पण कुशीलिओ छे. १४. अपनीत उपनीत वचन जेम ए पुरुष कुशीलिओ पण रुपवंत छे. १५. अध्यात्म वचन जश बोले (तुटेलुं वचन) रु बाणीआनी पेरे रु पा. १६ ॥ १७ सत्तरमे बोले सतर प्रकारनो संयम कहे छे–पृथ्वीकायनी दया पाळवी ते संयम. १. अपकायनी दया पाळवी ते संयम. २. तेउकायनी. ३. वायुकायनी. ४. वनस्पतिकायनी. ५, बे-

७. शरीर वांकु राखे तो दोप. ८. साधुनी बरावर रहे तो दोप. ९. गाफानी उथनी पेरे उनो रहे तो दोप. १० केफेथी वांको उभो रहे तो दोप, ११. रज हरण उंचो राखे तो दोप. १२. एक श्रासने न रहेतो दोप. १३. श्रांख ठेकाणे न राखे तो दोप. १४. माथुं हलावे तो दोप. १५. खोंखारो करे तो दोप. १६. मीस हलावे तो दोप. १७. मरके तो दोप. १८. शून्य चित्त राखे तो दोप. १९ ॥ २० वीसमे बोले वीस प्रकारे जीव तिर्थंकर गोत्र बांधे ते कहे छे:—श्ररिहंतना गुण ग्राम करे तो कर्मनी कोम खपावे, उत्कृष्ट रस श्रावे तो तिर्थंकर गोत्र बांधे १, सिद्धना गुणग्राम करे तो, २ सिद्धांतना गुणग्राम करे तो ३, गुरुना गुणग्राम करे तो ४, स्थिवरना गुणग्राम करे तो ५, बहुसूत्रीना गुणग्राम करे तो ६, तपस्वीना गुणग्राम करे तो ७, ज्ञान उपर उपयोग वारंवार राखे तो ८, शुद्ध समकित पाळे तो ९, विनय करे तो १०, बे वखत पडिक्कमणुं करे तो ११, व्रत पच्चखाण चोख्खां पाळे तो १२, धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यावे तो १३, बार भेदे तप करे तो १४, सुपात्रने दान दे तो १५, वयावच्च करे तो १६, सर्व जीवने सुख उपजावे तो १७, अपूर्व

ज्ञान नणे तो १८, सूत्रनी नक्ति करे तो १९, तिर्थंकरनो मार्ग दीपावे तो २०, ए वीस. २१ एकवीशमे बोले श्रावकना एकवीश गुण कहे छेः—अक्षुद्र १, जशवंत २, सौम्य प्रकृति ३, लोकप्रिय ४, स्वनाव आकरो नहि ५, पापथी मरे ६, श्रद्धावंत ७, लब्धलक्ष ८, लज्जावंत ९, दयावंत १०, मध्यस्थ ११, गंनीर १२, सौम्य दृष्टि १३, गुणरागी १४, धर्म कथक १५, साचानो पक्ष करनार १६, शुद्ध विचारी १७, घरकानी रीते चालनार १८, विनयवंत १९, कोधेला गुणने नुले नही २०, परहितकारी २१, ए एकवीश. २२ बावीसमे बोले बावीस जण साथे वाद न करवो ते कहे छेः—धनवंत साथे १, बळवंत साथे २, घणा परिवार साथे ३, तपस्वी साथे ४, हलका माणस साथे ५, अहंकारी साथे ६, गुरु साथे ७. स्थीवर साथे ८, चोर साथे ९, जुगारी साथे १०, रोगी साथे ११, क्रोधी साथे १२, जुगारोला साथे १३, कुसंगी साथे १४, राजा साथे १५, शीतळ लेशावाळा साथे १६, तेजु लेशावाळा साथे १७, मोढे मीठाबोला साथे १८, दानेश्वी साथे १९, ज्ञानी साथे २०, गुणका साथे २१, बाळक साथे २२, ए बावीस. २३ त्रेवीसमे बोले पांच इंद्रीयना त्रेवीश

विषय कहे छेः—श्रोतेंद्रियना त्रण विषय—जीव शब्द १, अजीव शब्द २, मिश्र शब्द ३; चक्षु इंद्रियना पांच विषय—काळो १, पीळो २, लीलो ३, रातो ४, धोळो ५; घ्राणेंद्रीयना बे विषय—सुर्भी गंध १, दुर्भीगंध २, कुल दश. फरस इंद्रीयना आठ विषय ते खरखरो ११, सुंहाळो १२, हळको १३, भारे १४, टाढो १५, उनो १६, लुखो १७, चीकणो १८; रसइंद्रीयना पांच विषय—तीखो १९, कडवो २०, कषायलो २१, खाटो २२, मीठो २३.

२४ चोवीसमे बोले चोवीस टोटा कहे छेः—भणवा गणवानी आळस करे तो ज्ञाननो टोटो वहु सूत्रीनी शाख. १, साधु साध्वीना दर्शन न करे तो समकितनो टोटो—सोमिल ब्राह्मणनी शाख. २, वखतसर पडीक्कमणुं न करे तो वृत पच्चखाणनो टोटो—उत्तराध्ययन अध्य० २९ नी शाख. ३. साधु साध्वी मांहोमांही वयावच्च न करे तो तीर्थनो टोटो—ठाणांगनी शाख ४. तपस्यानी ने आचारनी चोरी करे तो देवतामां उंची पदवीनो टोटो—दशवैकालिक, भगवतीनी शाख ५, कठण कलुश भाव राखे तो शीतळतानो टोटो—समवायंगनी शाख ६, अजतनाथी चाले तो जीव दयानो टोटो—दशवैकालीकनी शाख ७, रूपनो ने

यौवन नो मद करे तो शुभ कर्मनो टोटो–पन्नवणानी शाख. ८, मोटानो विनय न करे तो तीर्थंकर नी आज्ञानो टोटो–व्यवहार सूत्रनी शाख. ९, माया कपट करे तो जश कीर्तिनो टोटो–आचारंगनी शाख. १०, पाछली रात्रे धर्म जाग्रिका न जागे तो धर्म ध्यानना टोटो–नीशीथनी शाख. ११, क्रोध क्लेश करे तो स्नेह नायनो टोटो–चेन्ना कुर्णीकनी शाख. १२, मन ऊंचु नीचुं करे तो अफलनो टोटो–भृगु प्रोहीतनी शाख. १३, स्त्रीना लालचुने ब्रह्मचर्यनो टोटो–उत्तराध्ययन नी शाख. १४, साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका मांहोमांही हेत मेळाप न राखे तो जैन धर्मनो टोटो–शंख पोखलीजीनी शाख. १५, सुपात्र ने उलट भावे दान न आपे तो पुण्य प्रकृति नो टोटो–कपीला दासीनी शाख. १६, साधु गाम नगर विहार न करे तो धर्म कथानो टोटो–शेलक राजऋषिनी शाख. १७, नाणे गणे नहि तो जीनशासन नो टोटो–समाचारीनी शाख. १८, व्रत पच्चखाणनी आलोयणा करे नहि तो मोक्षना सुखनो टोटो–पार्श्वनाथनी घसे उण्पन साध्वीनी शाख. १९, अरीहंत, धर्म, ने चार तीर्थना अवर्णवाद बोले तो सत् धर्मनो टोटो–ठाणांगनी शाख. २०,

सा।न वचन सत्न नहि ना वचो गनिनो टाटा-अध्यदत्तनो शाख. २१, साधु–साध्वी, ११ गुरुणीनी आज्ञा अंगे नो आगधकपणानो टोटो- गुरुमालीकानो माख तथा स्वंधकजीनो शाख. २२ नगरान ना वचन उपर श्रद्धा न राखे तो शुद्ध मार्गनो टोटो– जमालीनो शाख. २३, नाणु वारवार सतार नहि ना मळवो। विद्यानो टोटो– जय र्षिनो शाख. २४ ॥ २५ पचीसमे बोल साडापचीस आर्य देश तथा तेनो नगरीना नाम कहे छे- मगध देश राजग्रही नगरी १. अंग देश चंपानगरी २ वंग देश तामलीप्त नगरी ३. कलींग देश – कंचनपुर नगर ४. काशी देश वणारसी नगरी ५ कोशळ देश अयोध्या नगरी ६, कुरु देश –गजपुर नगरी ७, कुशवर्त देश सौरीपुर नगरी ८ पचाळ देश–कंपीलपुर नगरी ९, जंगल देश–अहछत्ता नगरी. १०. कच्छ देश कासंबी नगरी ११. मार्कंल देश–नंदीपुर नगरी १२, माळव देश–नदिलपुर नगरी १३. वच्छ देश–वैराटनगरी १४, दशारण देश–मृगावती नगरी १५, वरण देश–इछापुर नगरी १६, विदेह देश–शिवावती नगरी १७, सिध देश–वितीभय पाटण नगरी १८, सौवीर देश–मथुरा नगरी १९, विदेह देश–मीथीला नगरी २०, सुरसेन देश–पावापुर नगरी

२१, अंग देश–गोरापुर नगरी २२, पाटण देश–कोशाम्बी नगरी २३, कुणाल देश–सावत्थी नगरी २४, सोरठ देश–द्वारका नगरी २५, केकाई देश–सितांबीका नगरी २६, ए साडीप-चीस आर्य देश. ॥ इति श्री पचीस बोलनो थोकडो समाप्तः ॥

॥ श्री वाटे वहेतां जीवना बोल ॥

वाटे वहेतां जीवने समकित चार लाभे ते केवल वर्जीने १ वाटे वहेतां जीवने शरीर बे लाभे तेजस ने कारमण २ वाटे वहेतां जीवने गुणस्थानक त्रण लाभे पहेलुं बीजुं ने चोथुं ३ वाटे वहेतां जीवने जोग एक लाभे ते कारमण ४ वाटे वहेतां जीवने उपयोग दस ॥ मनपर्यव ने चक्षु दर्शन ए बे वर्जीने ५ वाटे वहेतां जीवने लेश्या छ ६ वाटे वहेतां जीवने दृष्टि बे लाभे ते समदृष्टि ने मिथ्यादृष्टि ७ वाटे वहेतां जीवमां अज्ञान त्रण लाभे ८ वाटे वहेतां जीवमां समुद्घात बे पहेली लाभे ९ वाटे वहेतां जीवमां ज्ञान चार लाभे मन पर्यव टालीने १० वाटे वहेतां जीवमां दर्शन त्रण चक्षुदर्शन

वर्जिने ११ वाटे वहेतां जीवमां वेद त्रण लाभे १२ वाटे वहेतां जीवमां प्रर्याप्ति एके नहि १३ वाटे वहेतां जीवनी स्थिती जघन्य एक समयनी उत्कृष्टि चार समयनी १४ वाटे वहेतां जीवमां कपाय चार लाभे १५ वाटे वहेतां जीवमां इंद्री एके नहि १६ वाटे वहेतां जीवमां जीवना भेद सात अपर्याप्ता लाभे १७ वाटे वहेतां जीवमां समकिती अने मिथ्यात्वी १८ वाटे वहेतां जीवमां प्राण एक आयुष्य लाभे १९ वाटे वहेतां जीवमां असंनी ने संनी वे लाभे २० वाटे वहेतां जीवमां त्रस स्थावर ए वे लाभे २१ वाटे वहेतां जीवमां आत्मा सात ते चारित्र आत्मा वर्जिने २२ वाटे वहेतां जीवमां चारित्र एके नहि २३ वाटे वहेतां जीवमां संज्ञा चार लाभे २४ वाटे वहेतां जीव एक अनासका होय २५ वाटे वहेतां जीवमां करण अठयावीस लाभे २६ वाटे वहेतां जीवमां हेतु तेत्रीस लाभे २७ वाटे वहेतां जीवमां सुक्ष्म नें वादर वे लाभे २८ वाटे वहेतां जीवमां अणाहारीक पणु लाभे २९ वाटे वहेतां जीवमां किरीया एके नहि ३० वाटे वहेतां जीवमां जोग एक कारमणनो ३१ वाटे वहेतां जीव मन रहित होय ३२ ॥ वाटे वहेतां जीवना बोल समाप्त. ॥

॥ अथ श्री प्रमाण बोधनो थोकडो ॥

नव्य जीवना बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपम नुं मान सूत्र अनुयोग द्वारथी कहे छे॥ तेमां प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम॥ आत्म अंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥२॥ प्रमाणांगुल ॥३॥ आत्म अंगुलनुं मान कहे छे ॥ भरतादि १५ क्षेत्रने ॥ तिहां जे काळे जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्य पोतपोताने १२ अंगुले १ मुख थाय ॥ अने ए मुखे एक पुरुषनुं उंचपणानुं मान थाय ॥ एटले १२ नवा १०८ आत्म अंगुल-नो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुष ने प्रमाणोपेत कहिये ॥१॥ मान युक्त पुरुष केहने कहिये॥ पुरुष प्रमाणे उंडि कुंडि होय तेने जले करि परिपूर्ण भरिये ॥ तेमां पुरुष बेसे ॥ तवारे एक द्रोण प्रमाणे जल कुंडि मांहिथि बाहिर निकळे ॥ तथा एक द्रोण प्रमाणे जले करि कुंडि उंणि होय ने कुंडिमां ते पुरुष बेसे परिपूर्ण जले भराय॥ तेने मानोपेत पुरुष कहिये॥ द्रोण ते केवडो होय ते कहे छे ॥ बे असलीये १ पसली थाय ॥ बे पसलीये १ सेइ थाय॥ चार सेइये १ कुडव थाय ॥ चार कुडवे १ पाथो थाय ॥ चार पाथे १ आढो थाय ॥ चार

थांढे १ डोण थाय॥ ए डोणनुं मान कह्युं॥ ए रीते मानोपेत पुरुप कहिये ॥२॥ उन्मानंयुक्त पुरुप केहने कहिये॥ जे पुरुप तोळ्यो थको अर्द्ध नार थाय तेने उन्मान युक्त पुरुप कहिये॥ अर्द्ध नारनुं मान कहे छे ॥ एक हजार ने पचाश पले अर्द्ध नार थाय ॥ ए अर्द्ध नारनुं मान कह्युं ॥ ३॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षण साथियादिक व्यंजन मस तिलादिक॥ गुण क्षमा दानादिक सहित जे पुरुप होय ते उत्तम पुरुप जाणवो॥ उत्तम पुरुप १०८ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥१॥ मध्यम पुरुप १०४ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥२॥ जे पुरुप १०० आत्म अंगुल थि न्युनाधिक होय॥ स्वर आदेय वचन १ सत्वधीर्य ॥ २ ॥ सार ते रूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होय ते परनो दास किंकर थाय॥ एहवा ६ आत्म अंगुले १ पगना मध्य नागनुं पहोळपणुं थाय ॥ बे पगे १ वेंत थाय॥ वे वेंते॥ १ हाथ थाय॥ वे हाथे १ कुक्षि थाय॥ वे कुक्षिये १ धनुप थाय॥ वे हजार धनुपे १ गाउथाय॥ चार गाउ ए १ जोजन थाय॥ जे काळे मनुष्यनुं आत्म अंगुल होय ते आत्म अंगुले ते वखतना॥ नगर॥ गाम वन॥ कुवा॥ तळाव॥ वाव॥ गढ॥ पोळ॥ कोठा॥ यान॥ रथ॥ गाडादिक ३३ बोलना

जाफपणुं थाय ॥ आठ देवकुरु उत्तर कुरुना वाळाग्रे १ हरिवास रमकवास क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जाफपणुं थाय ॥ आठ हरिवास रमकवासना वाळाग्रे १ हेमवय एरणवय क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रनुं जाफपणुं थाय ॥ आठ हेमवय एरणवयना वाळाग्रे १ पूर्व पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना मनुष्यना वाळाग्रनुं जाफपणुं थाय ॥ आठ पूर्व पश्चिम महाविदेहना वाळाग्रे १ जरत इरवतना मनुष्यना वाळाग्रनुं जाफपणुं थाय ॥ एहवा ० वाळाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जु थाय ॥ आठ जुये-१ जवमध्य थाय ॥ आठ जव मध्ये १ अंगुल थाय ॥ ० अंगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय ॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४० अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार धनुषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउ ए १ जोजन थाय ॥ ए उत्सेधांगुले २४ दंफकनी अवघेणा वर्णवी छे ॥ प्रमाणांगुलनुं मान कहे छे ॥ जरतादिक चक्रवतीनुं कांगणिरत्न होय ॥ ते ० सोनइया जार छे ॥ सोनइयानुं तोल कहे छे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेत सरसव थाय ॥ १६ सरसवे १ अफद थाय ॥ २ अफदे १ गुंजा थाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो थाय ॥ १६

तेने ७ तळा ॥
मासे १ सोनइयो थाय ॥ एहवा ७ सोनइया नारनुं कांगणिरत्न होय ॥ तेने ७ तळा ॥ ते कांगणिरत्न नी एकेकी हांस
खुणा ॥ १२ हांस छे ॥ सोनीनी अहिरणने संठाणे छे ॥ ते समण नगवंत महावीरनुं अर्द्धअंगुल
उत्सेधांगुलनि पहोळो छे ॥ अने जे उत्सेधांगुल ते समण नगवंत महावीरस्वामीना पांचसे
थाय ॥ तेने हजार गुणुं करियें ॥ तेवारे १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पांचसे
आत्मअंगुले १ प्रमाणांगुल थाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पग थाय ॥ १२ अंगुले १ वेंत थाय
॥ २४ अंगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षि थाय ॥ ९६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजार
धनूषे १ गाउ थाय ॥ ४ गाउये १ जोजन थाय ॥ ए प्रमाणांगुले ॥ पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥
नरकावासा ॥ द्विप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देवलोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीन रत्न
प्रनादिक २७ जोजनुं तथा द्विपसमुद्रादि ॥ २७ जोजनुं ॥ लांब पणुं ॥ पहोळपणुं ॥ उंच-
पणुं ॥ उंडपणुं ॥ परिधि प्रमुखना मान माप्या छे ॥ ३ ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ते
...जेक प्रदेशना त्रण त्रण नेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥१॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥३॥ तीहां
... असंख्याता जोजन कोडाकोडि प्रमाणे लांबी ॥ अने एक आ-

काश प्रदेश नि पहोळी ॥ जाफ़पणे लोकांत सुधि होय तेने श्रेणि कहिये ॥ १ ॥ ते श्रेणिने श्रेणि गुणो करिये तेने प्रतर कहिये ॥ २ ॥ ते प्रतरने श्रेणि गुणो करिये तेने घन कहिये ॥ ३ ॥ ते घनीकृत लोक ने संख्यात गुणो करिये ॥ तेवारे संख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते संख्याता लोकने असंख्यात गुणा करियें त्यारे असंख्याता लोक अलोकमां थाय ॥ ते असंख्याता लोकने अनंत गुणा करिये ॥ तेवारे अनंता लोक अलोकमां थाय ॥ अने ते अनंता लोकना जेटला आकाश प्रदेश छे ॥ तेटला निगोदना एक शरीर मांहि निगोदिया जीव छे ॥ असंख्याता सुक्ष्म निगोदे १ वादर निगोद थाय ॥ एक निगोदमां अनंता जीव जाणवा ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल कह्या ॥ ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कहे छे ॥ तेमां पल्योपमना ३ भेद ॥ उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ अद्धापल्योपम ॥ २ ॥ क्षेत्रपल्योपम ॥ ३ ॥ एक एकना बबे भेद ॥ सुक्ष्म ने वादर प्रथम वादर उद्धार पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक जोजननो उत्सेधांगुले लांबो पहोळो ने उंडो एहवो १ पालो कल्पिये ॥ तेनि त्रि गुणी झाझेरी परिधि होय ॥ ते पालो देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयाना मस्तकना केश ते एक दिनथि

महोटा ॥ अने जेवडुं एक बादर पृथ्वी कायना जीवनुं शरीर तेवडा वालाग्रना खंड नाहना थाय ॥ ते वालाग्रना खंड अग्निये बळे नहि ॥ वायरे उडे नहि ॥ ते वालाग्रने खंडे करि पालो ठांसी भरिये ॥ ते पाला मांहियी ॥ समये समये एकेको वालाग्रनो खंड काढिये ॥ एम काढतां जेटले काळे ते पालो खाली थाय ॥ तेटला काळने सुक्ष्म उद्धार पल्योपम कहिये ॥ ए पल्योपम असंख्याता समयनो थाय एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमे द्वीप समुद्रनुं मान वर्णव्युं छे ॥ अढि उद्धार सागरोपमना जेटला समय थाय तेटला द्वीप समुद्र त्रिछा लोकमां छे ॥ जंबुद्वीप एक लाख जोजननो लांबो ने पहोळो एम ठाम बमणो लवण समुद्र बे लाख जोजननो ॥ धातकि खंड ४ लाख जोजननो ॥ एम ठाम बमणा असंख्याता द्वीप समुद्र जाणवा ॥ ए सुक्ष्म उद्धार पल्योपम ॥ २ ॥ अद्धा पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे तेना २ भेद ॥ सुक्ष्म ने बादर तेमां बादर अद्धा पल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो ने उंडो चारे हांशे सरखो पूर्ववत् पालो कल्पीये देवकुरु उत्तरकुरु जुगलीया मनुष्यना बा-

तरिये ते पाला मांहिला वालाग्रना फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरना जेटले काळे ते पालो खालि थाय ॥ तेटला काळने ॥ बादर क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ एवा पालो खालि थतां असंख्याति अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपम थाय ॥ केवल प्ररूपणा मात्र छे मतांतरे जीव द्रव्यना परिणाम दाख्या छे ॥ १ ॥ सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमनुं स्वरूप कहे छे ॥ एक जोजननो लांबो पहोळो ने उंडो पूर्ववत् पालो कल्पिये ॥ तेमां देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियाना वाळाग्रना असंख्याता खंड करि तरिये ॥ ते पाला माहिला वाळाग्रना फरस्या आकाश प्रदेश तथा अण फरस्या आकाश प्रदेश छे ते फरस्या अण फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अप हरिये ॥ जेटले काळे पालो खालि थाय ॥ तेटला काळने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र सागरोपम थाय ॥ ए सागरोपमना दृष्टिवाद सूत्रे भाव वरणव्या छे ॥२॥ ए ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कह्युं ॥ इति प्रमाणबोध समासः ॥

उत्कृष्टा एक पक्षे काळेरो श्वासोश्वास लीए छे. वाणव्यंतर ने नवनीकायना देवता जघन्य सात थोक, उत्कृष्टा प्रत्येक मुहूर्ते. ज्योतिषी ज० अने० उ० प्रत्येक मुहूर्ते, पहेले देवलोके ज० प्रत्येक मुहूर्त अने उ० बे पक्षे. बीजे देवलोके ज० प्रत्येक मुहूर्त काळेर. उ० बे पक्ष काळेर. त्रीजे देवलोके ज० बे पक्षे, अने उ० सात पक्षे. चोथे देवलोके ज० बे पक्षे काळेर. अने उ० सात पक्ष काळेर. पांचमे देवलोके ज० सात पक्षे. उ० दश पक्षे. छठे देवलोके ज० दश पक्षे. उ० चौद पक्षे. सातमे देवलोके ज० चौद पक्षे उ० सत्तर पक्षे, आठमे देवलोके ज० सत्तर पक्षे, उ० अढार पक्षे. नवमे देवलोके ज० अढार पक्षे, उ० ओगणीस पक्षे. दशमे देवलोके ज० ओगणीस पक्षे. उ० वीस पक्षे. अगियारमे देवलोके ज० वीस पक्षे. उ० एकवीस पक्षे. बारमे देवलोके ज० एकवीस पक्षे, उ० बावीस पक्षे. पहेली त्रीकमां ज० बावीस पक्षे, उ० पचीस पक्षे. बीजी त्रीकमां ज० पचीस पक्षे, उ० अठावीस पक्षे. त्रीजी त्रीकमां ज० अठावीस पक्षे, उ० एकत्रीस पक्षे. चार अनुत्तर विमानमां ज० एकत्रीस पक्षे. उ० तेत्रीस पक्षे. सर्वार्थ सिद्धमां ज० अने उ० तेत्रीस पक्षे. एम तेत्रीस पखवाडीये श्वास उंचो ले अने तेत्रीस पखवाडीये श्वास नीचो मुके. ॥ इति श्री श्वासोश्वासनो थोकडो संपूर्ण. ॥

॥ इति श्रीसिद्धांतप्रकरणसंग्रह समाप्त ॥

अमदावाद-टंकशाळ धी युनियन प्रिन्टींग प्रेस कंपनी लीमीटेडमां
शाह मोहनलाल चीमनलाले छाप्युं.